# बी.एड. स्पेशल (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा)

## स्व-अधिगम सामग्री

SECM-06

Second Year

# सामाजिक विज्ञान शिक्षण

## (Pedagogy of Teaching Social Studies)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

# बी.एड. स्पेशल (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा)

## स्व–अधिगम सामग्री

# SECM-06

## Second Year

# सामाजिक विज्ञान शिक्षण
# (Pedagogy of Teaching Social Studies)


मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय,

भोपाल (म.प्र.)

**संरक्षक**
**डॉ० रवीन्द्र कान्हेरे**
कुलपति

**मार्गदर्शन**
**श्री अरुण सिंह चौहान**
कुलसचिव

## संपादक मण्डल

**संयोजक**
**डॉ० वर्षा सागोरकर**
निदेशक, बहुमाध्यमीय शिक्षा विभाग

**समन्वयक व सलाहकार**
**डॉ० हेमलता दिनकर**
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

**समन्वयक**
**डॉ० कंचन जिज्ञासी**
रीडर (शिक्षा)

**समन्वयक**
**डॉ० सालेहा सिद्दीकी**
लेक्चरर (शिक्षा)

*Printed by :* **P Square Solutions** Mini Industrial Area, Barari, Mathura-281005

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| अध्याय-1 | सामाजिक विज्ञान की अवधारणा, क्षेत्र, प्रकृति तथा सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अन्तर | 5-23 |
| अध्याय-2 | विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य | 24-58 |
| अध्याय-3 | मुख्य विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान का महत्व | 59-90 |
| अध्याय-4 | एक समतावादी समाज के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षक की भूमिका | 91-101 |
| अध्याय-5 | विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम का संगठन | 102-108 |
| अध्याय-6 | निर्देशन योजना की अवधारणा, आवश्यकता एवं महत्त्व | 109-130 |
| अध्याय-7 | ईकाई योजना तथा पाठ योजना की आवश्यकता एवं महत्व | 131-157 |
| अध्याय-8 | इकाई योजना तथा पाठ योजना की प्रक्रिया | 158-174 |
| अध्याय-9 | बच्चों की अक्षमता के लिए इकाई तथा पाठ योजनाओं का अनुकूलन | 175-190 |
| अध्याय-10 | सीमावर्ती दृष्टिकोण: (ए) एमन्वय (बी) कोरल (सी) सांद्रिक (घ) सार्पिल (ई) एकीकृत (च) रेग्रेसिव | 191-196 |
| अध्याय-11 | सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ | 197-218 |
| अध्याय-12 | सामाजिक विज्ञान शिक्षण की उपकरण एवं तकनीकियाँ | 219-238 |
| अध्याय-13 | सामाजिक विज्ञान शिक्षण में विकलांग बच्चों के लिए आवश्यक आवास एवं दृष्टिकोण | 239-255 |
| अध्याय-14 | सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए निर्देशात्मक सामग्री | 256-284 |
| अध्याय-15 | विकलांग बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री के रूपान्तरण | 285-301 |
| अध्याय-16 | सामाजिक विज्ञान में सीखने के उद्देश्य | 302-324 |
| अध्याय-17 | सामाजिक विज्ञान शिक्षण में विद्यार्थी उपलब्धियों की मूल्यांकन तकनीतियाँ | 325-340 |
| अध्याय-18 | आंकलन | 341-356 |

| | | |
|---|---|---|
| **अध्याय-19** | **अध्यापक निर्मित परीक्षा का निर्माण** | **357-380** |
| **अध्याय-20** | **नैदानिक परीक्षण** | **381-390** |
| **अध्याय-21** | **वैयक्तिक अध्ययन एवं शिक्षक प्रोफाइल** | **391-400** |

# 1 सामाजिक विज्ञान की अवधारणा, क्षेत्र, प्रकृति तथा सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अन्तर

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- सामाजिक विज्ञान की अवधारणा
- सामाजिक विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र
- सामाजिक विज्ञान का महत्त्व
- सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता
- सामाजिक अध्ययन तथा सामजिक विज्ञान में अन्तर
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**— इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- सामाजिक विज्ञान की अवधारणा
- सामाजिक विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र
- सामाजिक विज्ञान का महत्त्व
- सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता
- सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान में अन्तर

NOTES

## प्राक्कथन

आज के चकाचौंध करने वाले भौतिक युग में छात्र व छात्राओं को मानव सभ्यता के इस विकास से परिचित कराना अत्यन्त जरूरी है, जिससे वह अपने अस्तित्य को समाज में पहचान सके, साथ-ही-साथ उसे यह भी ज्ञान हो जाए कि उनके पूर्वजों ने कितने कठिन प्रयास किये और इन कठिन प्रयासों के परिणामस्वरूप ही हम वर्तमान स्थिति में पहुँचे हैं। उनको यह भी ज्ञान हो जाए कि वर्तमान में मानव समाज ने उसकी भलाई, सुख और सुविधा के लिए कितना योगदान दिया है।

## सामाजिक विज्ञान की अवधारणा (CONCEPT OF SOCIAL SCIENCES)

सामाजिक विज्ञान (Social Sciences) शब्द, दो शब्दों से मिलकर बना है। Social का अर्थ है— सामाजिके और Sciences का अर्थ है 'विज्ञान'। सामान्यत: सामाजिक विज्ञान शब्द का प्रयोग मानव एवं समाज से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के अध्ययन के लिए कर लिया जाता है, किन्तु सही अर्थ में यह शब्द उन वैज्ञानिक पद्धतियों का संकेत देता है जिनका प्रयोग मानवीय सम्बन्धों के जटिल एवं पेचीदा ताने-बाने तथा संगठनों के उन रूपों के अध्ययन हेतु किया जाता है जो व्यक्तियों को समाज के साथ रहने में सहायता करते हैं। सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत वे विषय शामिल किए जाते हैं जो मानव के सामाजिक जीवन के विविध पक्षों से सम्बन्धित है, जैसे—समाजशास्त्र, मानशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, मानव भूगोल, सामाजिक मनोविज्ञान, इतिहास, शिक्षा कानून आदि। दूसरे शब्दों में ज्ञान-विज्ञान के वे विषय में जो मनुष्य के सामाजिक जीवन के विविध पक्षों का अध्ययन करते हैं जो सामाजिक जीवन के विश्लेषण में सहायता देते हैं।

## सामाजिक-विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा (MEANING AND DEFINITIONS OF SOCIAL SCIENCES)

सामाजिक विज्ञानों के विश्वकोश के अनुसार "सामाजिक विज्ञानों को उनके मानसिक या सांस्कृतिक विज्ञानों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो व्यक्ति की क्रियाओं का उसके समूह का सदस्य मानकर अध्ययन करते हैं।

**गिलिन एवं गिलीन**—के अनुसार, "समस्त सामाजिक विज्ञान मुख्य रूप से मानव क्रियाओं और व्यवहारों का उसके सामाजिक समूहों के रूप में अध्ययन करता है। वे आपस में मुख्य रूप से अपनी रूचियों की व्यवस्था के कारण अलग है।"

नवीन ब्रिटेनिका विश्वकोश के अनुसार, "सामाजिक विज्ञान के अपने सामाजिक और सांस्कृतिक पहलूओं में निम्नलिखित विषयों—अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवशास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान,

सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल को सम्मिलित करके मानवीय व्यवहार से व्यवहार करता है।''



**सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र (Scope of Social Science)**

व्यक्ति के सन्तुलित विकास के लिए आज सभी देशों की शिक्षा पद्धति में सामाजिक अध्ययन के विषय पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिया जा रहा है। हम इस बात की पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि सामाजिक विज्ञान के विषयों इतिहास, नागरिकशास्त्र, भूगोल और अर्थशास्त्र के अन्तर्गत मनुष्य जीवन के समस्त पहलू आ जाते हैं, जिनका सम्बन्ध भूतकालीन क्रिया-कलापों या विचारों या घटनाओं से होता है, जो उसके प्राकृतिक वातावरण से सम्बन्धित अथवा फिर मनुष्य के सामाजिक या राजनैतिक जीवन से सम्बन्धित है। हम सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत मनुष्य की भूत तथा वर्तमान काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक सभी समस्याओं तथ पहलुओं का अध्ययन करते हैं। इस विष के बारे में यह बात सभी को स्वीकार है कि सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र अन्य किसी भी विष की तुलना में अधिक व्यापक है।

मनुष्य परिवर्तन में विश्वास करता है और यही कारण है कि उसे प्रगतिशील प्राणी कहा जाता है। उसे उन्नीत करने में सुख और आनन्द की अनुभूति होती है। इसके लिए वह हमेशा शारीरिक और मानसिक रूप से अथक परिश्रम करने में विश्वास करता है। इस परिश्रम के द्वारा ही वह प्रगति की ओर अग्रसर रहता है। इस प्रगतिशीलता और परिवर्तनशीलता के बल पर उसने अनेक प्रकार के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक ढांचों में मूलभूत बदलावा किये हैं और विकास करने में आई हुई बाधाओं, समस्याओं और कठिनाइयों का डटकर सामना, किया है और वर्तमान अवस्था तक पहुँचा है।

आज के चकाचौंध करने वाले भौतिक युग में छात्र व छात्राओं को मनाव सभ्यता के इस विकास से परिचित कराना अत्यन्त जरूरी है, जिससे वह अपने अस्तित्व को समाज में पहचान सके, साथ-ही-साथ उसे यह भी ज्ञान हो जाए कि उनके पूर्वजों ने कितने कठिन प्रयास किये और इन कठिन प्रयासों के परिणामस्वरूप ही हम वर्तमान स्थिति में पहुँचे हैं। उनको यह भी ज्ञान हो जाए कि वर्तमान में मानव समाज ने उनकी भलाई, सुख और सुविधा के लिए कितना योगदान दिया है, जिनको ऋण के रूप में उनको चुकाना है। स्मस्त छात्र-छात्राओं को यह सभी ज्ञान सामाजिक अध्ययन के अध्ययन और उसके अध्यापन से मिलता है जिसकी विषय सामग्री का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसकी विषय सामग्री यह है कि मानव समाज का किस प्रकार संगठन एवं विकास हुआ और आज भी किस तरह तीव्र गति से विकास की ओर अग्रसर है।

अमेरिकन इतिहास संघ (American Historical Association) की रिपोर्ट में बड़े स्पष्ट रूप से सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र पर प्रकाश डाला गया है। अमेरिका की शिक्षा-प्रणाली में सुधार करने हेतु बीसवीं शताब्दी के शुरू में ही संघ बना और इस संघ ने सन् 1934 में अपने सुझावों को एक रिपोर्ट के रूष्प में प्रकाशित किया। उस रिपोर्ट में सामाजिक विज्ञानों की विषय-सामग्री तथा क्षेत्र को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है।

''विद्यालय के पाठ्यक्रम में अन्य विषयों की अपेक्षा सबसे अधिक महत्त्वूपर्ण स्थान समाज विज्ञान के विषयों को देना चाहिए क्योंकि इनका प्रत्यक्ष रूप से मानव-जीवन, उसकी संस्थाओं, उसके विचार तथा उसकी आकांक्षाओं पर असर पड़ता है, साथ ही राष्ट्रों की नीति निर्धारण में भी पूर्ण सहायता मिलती है। समाज विज्ञान का क्षेत्र इतना व्यापक है कि वह मानव इतिहास के प्रारम्भ से लेकर आज तक के सभी पहलुओं को स्पर्श करता है। इसके अन्तर्गत प्रारम्भिक मनुष्यों के रीति-रिवाजों से लेकर वर्तमान समय तक की सभ्यता संस्कृति आती है। इस तरह सामाजिक विज्ञान व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से भी मानव से सम्बन्धित शास्त्र है।''

सामाजिक विषयों के अध्ययन से छात्र-छात्राओं को मानव की भूतकालीन तथा वर्तमान समस्याओं का ज्ञान हो जाता है और इसके साथ-ही-साथ यह भी मालूम हो जाता है कि सभ्यता के विकास में मनुष्य ने किस प्रकार अपने वातावरण से संघर्ष करके विजय पाई, किस प्रकार उसने उपलब्ध साधनों को समाज की उन्नति में लगाया, किस प्रकार विश्व के सम्पूर्ण राष्ट्रों के निवासियों में एकता ही लहर व्याप्त हुई। सारांश रूप में यह कहना उचित होगा कि सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत मानव जीवन के सभी पहलुओं का सामूहिक रूप से अध्ययन किया जाता हैं। सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में जीवन के किसी भी पहलू को अछूता नहीं रखा जा सकता। संक्षिप्त रूप में, सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र के व्यापक रूप को निम्न व्याख्या से समझा जा सकता है—

(1) मानव प्राकृतिक प्राणी होने के साथ-साथ सामाजिक प्राणी भी है। इसका विकास समाज में होता है और आवश्यकताओं की पूर्ति भी समाज में होती है। इसलिए उसको समाजिक वातावरण का ज्ञान होना जरूरी है। सामाजिक अध्ययन में उन सभी विषयों का समावेश होता है, जिनसे मनुष्य को सामाजिक वातवरण को समझने में मदद मिलती है, जिनसे उसमें सामाजिक गुणों के साथ-साथ चरित्र का विकास भी होता है और सामजिक जीवन के आदर्शों के महत्त्व को भी समझता है।

NOTES

(2) सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत इतिहास, नागरिकशास्त्र और भूगोल का अध्ययन किया जाता है इसलिए इसका क्षेत्र इन सभी विषयों तक व्याप्त है इसमें मानव-समाज की वे समस्त क्रियाएँ आती हैं जो मानव ने सभ्यता की आदि अवस्था से लेकर आज तक की है और वर्तमान में जो कुछ कर रहा है।

(3) सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र व्यक्ति, परिवार तक सीमित न होकर इसके अन्तर्गत राज्य और राष्ट्र भी आ जाते हैं जिनका सामाजिक विकास में पर्याप्त रूप से योगदान है। इस विषय के अध्ययन का उद्देश्य यह है कि छात्र-छात्राएँ अपने वातावरण से पूर्ण रूप से परिचित हो जाएँ और वे समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में यथा आवश्यक योगदान दे सकें। वे अपने पारिवारिक जीवन को समझें और उसकी समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने की प्रवृत्ति पैदा होगी।

(4) आज के भौतिक युग में विज्ञान और तकनीकी की उन्नति ने देश काल की दूरी के भेद-भाव को समाप्त कर दिया है। सभी राष्ट्रों के नागरिक एक-दूसरे के निकट आ रहे है और पारस्परिक सम्बन्धों के महत्त्व को समझने का प्रयास कर रहे हैं। भूतकाल की अपेक्षा वर्तमान में वे अपनी समस्याओं का समाधान एक-दूसरे के सहयोग से करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रकार से सामूहिक प्रगति लक्ष्य का रूप धारण कर रही है विश्व-बन्धुत्व की भावना को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यही कारण है कि आज सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक व्याप्त हो गया है। वर्तमान युग में एक आदर्श नागरिक स्वयं अथवा अपने से सम्बन्धित हितों की बात नहीं सोचता बल्कि वह सम्पूर्ण मानवता के हितों के बारे में सोचता है। आज छोटे-से लेकर बड़े देश तक सभी शान्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। **पण्डित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में "विश्व के राष्ट्रों की अधिकांश जनता ऐसी शान्ति की कामना करती है, जिसमें जीत सबकी हो ओर हार किसी की भी न हो।"** आज अध्किांश राष्ट्र निःशस्त्रीकरण के पक्ष में हैं। भारत के प्रधानमन्त्री नेहरू जी ने अन्तर्राष्ट्रीय संघ की सभा में बोलते हुए गम्भीर स्वर में कहा था कि "आज विश्व के सामने दो रास्ते हैं—शान्ति अथवा सर्वनाश।" इसलिए विश्व को नष्ट होने से बचाने के लिए निःशस्त्रीकरण अत्यन्त आवश्यक हैं। इस युग में राष्ट्र एक-दूसरे के इतने निकट आ गये हैं कि किसी भी देश के साथ किया गया अन्याय एवं अत्याचार असहनीय हो जाता है। इसलिए गुलामी, पराधीनता, अमानुष व्यवहार और अनाधिकार चेष्टा इत्यादि सभी ऐसा काम निन्दनीय तथा अनैतिक समझे जाते हैं। इन सब

बातों पर विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य की सामाजिक भावना का क्षेत्र बहुत व्यापक है।

(5) आज सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में वे सभी गतिविधियाँ एवं क्रियाएँ आ जाती हैं, जिनका सम्बन्ध मानव जीवन के अनेक पहुलओं से होता है। इसलिए जो विषय इन विभिन्न क्रियाओं एवं पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं उन सबका क्षेत्र ही सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र है। सामाजिक विषयों में सर्वप्रथम इतिहास आता है और इतिहास में प्राचीन काल में मानव की आदि अवस्था से लेकर आज तक का लेखा-जोखा होता है नागरिशास्त्र का सम्बन्ध मनुष्य के वर्तमान जीवन तथा उन संस्थाओं से है जो मनुष्य के जीवन को नियमित, संगठित, सदाचारी बनाने में सहायक होती है।

## सामाजिक विज्ञान का महत्त

आज के भौतिकी एवं वैज्ञानिक युग में विद्यालयों के पाठयक्रम में नागरिकशास्त्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस विषय का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि इसके अध्ययन से छात्र-छात्राएँ सचेत तथ जागरूक नागरिक बनते हैं जिसकी आवश्कता प्रत्येक राष्ट्र को होती है। एक अक्ष्छे नागरिक के गुणों पर प्रकाश डालते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति **जोन केनेडी** ने कहा था कि ''यह मत पूछा कि तुम्हारा देश तुम्हारे लिए क्या कर सकता है? अपितु अपने आप से हय पूछो कि तुम देश के किस काम आ सकते हो?''

इस विषय के अध्ययन से विद्यार्थियों में सदाचार, मनुष्यता तथा देश-भक्ति के भाव जागृत होते हैं, जिससे राष्ट्र की उन्नति निश्चित रूप से होती हैं क्योंकि आज का छात्र कल का होने वाला देश का नागरिक या कर्णधार होता है जो राष्ट्र के भविष्य के निर्माण में सम्पूर्ण, योगदान देने में समर्थ होता है। इसलिए इस विषय को मूल्याकंन की दृष्टि से किसी भी रूप में कम नहीं आंका जाना चाहिए क्योंकि अन्य विषयों की तरह इसके अध्ययन से छात्र-छात्राओं की तर्क-शक्ति, विचार-शक्ति, निर्णय-शक्ति और कल्पना-शक्ति का विकास होता है। इसके अध्ययन से छात्र-छात्राएँ अपने वर्तमान को समझने में समर्थ होते है। उनको ज्ञात हो जाता है कि वर्तमान में किस प्रकार की उन्नति हो रही है और इस उन्नति का क्या आधार है। इन सब बातों का ध्यान में रखते हुए 21वीं शताब्दी में सामाजिक अध्ययन विषय का अध्ययन हमारे विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस विषय का अध्ययन हमारे लिए इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि निम्नलिखित योग्यताओं का विकास होता है—

(1) **सामूहिक जीवन के महत्त्व का ज्ञान (Knowledege of the Group Life)**—सामाजिक अध्ययन एक सामाजिक शास्त्र है जिसका सम्बन्ध

सामाजिक व्यवहार, सामाजिक जीवन तथा सामाजिक प्रगति से है। इसकी शिक्षा से विद्यार्थी सामूहिक जीवन के महत्व को समझ जाते हैं उनको इस बात का ज्ञान हो जाता है कि मनुष्य की व्यक्ति और समाज के हित में कोई भी विरोध नहीं है। वे अपने कर्त्तव्यों का पालन लोकहित की दृष्टि से करते हैं, उनके अधिकार कर्त्तव्य की सीमा से बंधे हुए होतो हैं। इसलिए समाज में किसी तरह से संघर्ष का भय नहीं रहता।

(2) **जनसाधारण के लिए उपयोगित (Utility for Masses)**—इस विषय की शिक्षा जनसाधारण के लिए भी उपयोगी है क्योकि प्रत्येक व्यक्ति (पागल, दिवालिया तथा देशद्रोही को छोड़कर) नागरिक होता है। उसे सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकार मिले होते है, जिनका सही अथवा गलत उपयोग उस व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर होता है, जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों को भूलकर केवल अधिकारों की ही मांग करता है, ऐसा व्यक्ति स्वार्थी है व सामाजिक उन्नति में बाधक है। सामाजिके अध्ययन की शिक्षा व्यक्ति में स्वार्थ, त्याग की भावनाएँ भरती है, जिससे व्यक्ति में मनुष्यता तथा सहयोग की भावनाएँ आती हैं।

(3) **आदर्श नेतृत्व विकसित करने की आवश्यकता (Necessary for Development of Ideal Leadership)**—कुछ विशेषज्ञों का यह भी मत है कि सामाजिक अध्ययन की शिक्षा से विद्यार्थी, राष्ट्र-निर्माता, देश-भक्त एवं समाज-सुधारक भी बनते हैं। वे देश-विदेश की सामाजिक, आर्थिक तथ राजनीतिक समस्याओं से भी परिचित हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप उनमें राष्ट्र-प्रेम, मानव-प्रेम, सहानुभूति तथा एकता के भाव दृढ़ हो जाते हैं। यह शास्त्र तो सामाजिक रहन-सहन का शास्त्र है। इसके अन्तर्गत नागरिक के उन समस्त कर्त्तव्य एवं अधिकारों पर प्रकाश डाला जाता है, जो सामाजिक हित के लिए आवश्यक है, जो सफल सामाजिक जीवन में सहायक होते हैं।

(4) **प्रजातन्त्र में सामाजिकशास्त्र के अध्ययन का महत्त्व (Importance in Democracy)**—आज का युग प्रजातांत्रिक है। जनता की मान्यता है कि वर्तमान सरकार का निर्माण कुछ लोगों पर निर्भर नहीं है वरन् सम्पूर्ण जनता पर निर्भर है। देश की जनता ही शासकों को चुनती है, वे ही देश के कर्णधार होते हैं, देश का उत्थान व पतन इन चुने हुए शासकों पर निर्भर होता है। ऐसी दशा में कुशल, सावधान, पक्षपात रहित, देश प्रेमी सेवक एवं परोपकारी नागरिकों की जरूरत है, जो देश के सामाजिक हित के लिए स्वेच्छा से काम करें। नागरिक शास्त्र की शिक्षा प्रजातन्त्रात्मक राज्य के नागरिकों को अधिकार और कर्त्तव्यों का ज्ञान कराती है। उन्हें इस

NOTES

शास्त्र की शिक्षा पाने के पश्चात ही नागरिक स्वयं के लिए उपयोगी हो सकते है और योग्य शासक चुन कर सम्पूर्ण देश समाज का हित कर सकते हैं।

(5) **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific Attitude)**—इस विषय में विद्यार्थी को नागरिक की समाज सम्बन्धी क्रियाओं का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन करने का अवसर मितला है। विद्यार्थी नागरिक की समस्या पर विचार करता है, उन समस्याओं का हल सोचता है और फिर उनको कार्य रूप में बदलने की कोशिश करता है। इस तरह वह सामाजिक समस्याओं के एक निष्कर्ष पर पहुँच जाता हैं। विज्ञान के विद्यार्थी की भांन्ति इस विष के विद्यार्थी को भी समस्याओं के परिणामों को निकालने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाना पड़ता है अन्याय न तो वह किसी तथ्य को प्राप्त कर सकता है और न किसी समस्याउ के परिणाम पर पहुँच सकता है।

(6) **व्यावहारिक उपयोगिता (Practical Utility)**—आज का युग प्रयोजनवाद का युग है। यही कारण है कि मनुष्य ऐसे ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है जिसकी व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता हो। इस उपयोगिता का सम्बन्ध धनोपार्जन से नहीं है, बल्कि उस ज्ञान को प्राप्त करने से है, जिससे मनुष्य अपने जीवन को शान्त तथा सुखमय बना सके। सामाजिक अध्ययन विषय के अन्तर्गत ऐसे प्रश्न उठते हैं, जिनके समाधान के लिए सुख-शान्ति प्राप्त कर सकता है? क्या वह दूसरों का शोषण करके सही रूप में उन्नति कर सकता है? इस प्रकार के प्रश्नों का हल सामाजिक अध्ययन विषय के द्वारा ही सम्भ्व है, क्योंकि इस विषय के अध्ययन करने से छात्र-छात्राओं को सामाजिक ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान से अच्छे-बुरे, सत्य-असत्य और सदाचार-अत्याचार का ज्ञान हो जाता हैं। छात्र-छात्राएँ नैतिकता की ओर बढ़ने लगते हैं। इसका कारण यह है कि वे अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के बारे में समझने लगते हैं। और व्यावहारिक जीवन में वे अपने आपको आर दूसरें को समझते हुए सद्व्यवहार करने की ओर प्रेरित होते हैं इसके अलावा सामाजिक अध्ययन छात्र-छात्राओं को इस योग्य बनाता है वे परिवार और समाज के महत्त्व को सझें और उनके प्रति अपने उत्तरदायित्वों का ठीक प्रकार से निर्वाह करें।

अन्त में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सामाजिक अध्ययन की शिक्षा विद्याथियों को कर्त्तव्यनिष्ठ, सदाचारी, सच्चा तथा आदर्श नागरिक बनाने में सक्रिय योगदान देती है।

## आधुनिक युग में समाजिक विज्ञान की आवश्यकता (Need for Social Sciences in Modern Period)

NOTES

आधुनिक तकनीकी के युग में मानव ने यातायात, उद्योग, संचार माध्यमों तथा अन्य क्षेत्रों में तीव्रता से बदलाव करके प्राकृतिक विज्ञानों में आश्चर्यजनक की है। परन्तु सामाजिक विज्ञान में इस प्रकार की प्रगति नहीं हुई है। यद्यपि मानव ने संसार में एक महान् भौतिक सभ्यता का निर्माण कर लिया है, तथापित वह वर्तमान औद्योगिक युग की जटिलताओं को सुलझाने में सर्वथा असमर्थ रहा हैं। उसने भौतिक सुविधाओं में विशेष वृद्धि करके जीवन के स्तर को उच्च और महान् बनाया है उसने अणु शक्ति का आविष्कार करने में सफलता प्राप्त कर ली है, वह चन्द्रलोक तक जा पहुँचा है और वहाँ पर बस्तियाँ बसाने के स्वप्न देख रहा है, परन्तु उसने सामाजिक पद्धतियों को व्यवस्थित करने तथा उन्हें अपने अधिकार में लाने में विशेष कठिनाई का अनुभव किया है यदि मानव-जगत अपनी विचार-शक्ति तथा विवेक का प्रयोग करके समाज विज्ञानों में भी उतनी ही प्रगति करे जितनी कि उसने प्राकृतिक विज्ञानों में की है, तो वह निश्चय ही समाज विज्ञानों की कमी को पूरा कर सकेगा: और पतन की ओर अग्रसर होती हुई मनुष्य जाति को नष्ट होने से बचा जा सकेगा। विद्वानों का मत है कि सामाजिक विज्ञान के ज्ञान द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है। क्योंकि ये विज्ञान मानवीय सम्बन्धों का विवेचन करते है और स्पष्ट करते हैं कि सफल सामाजिक जीवन क्या है? इनके द्वारा मानव समाज को कल्याण की ओर अग्रसर किया जा सकता है। इनके ज्ञान से मानव इन अविष्कारों का समाज के कल्याण के लिए उपयोग करना सीख सकता है। इस कारण सामाजिक विज्ञान की विश्व को अधिक जरूरत है। इस जरूरत के कारण शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सामाजिक विज्ञान की सामग्री विभिन्न नामों से रखी गयी है।

,सामाजिक विज्ञान की इस महत्वपूर्ण आवश्यकता के अतिरिक्त इसमे शामिल माध्यमिक स्तर पर कुछ विषयों; जैसे—इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र आदि हैं। माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों में सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों के शिक्षण की जरूरत होती हैं—

(1) सामाजिक विज्ञान में **इतिहास** शिक्षण की आवश्यकता

(2) सामाजिक विज्ञान में **भूगोल** शिक्षण की आवश्यकता

(3) सामाजिक विज्ञान में **नागरिकशास्त्र** शिक्षण की आवश्यकता

(4) सामाजिक विज्ञान में **अर्थशास्त्र** शिक्षण की आवश्यकता

(5) सामाजिक विज्ञान में **समाजशास्त्र** शिक्षण की आवश्यकता

सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत उपरोक्त (इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र) विषयों के शिक्षण की आवश्यकता को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है—

**(1) सामाजिक विज्ञान में इतिहास शिक्षण की आवश्यकता**—सामाजिक विज्ञान में इतिहास शिक्षण की आवश्यकता इस प्रकार है—

(i) इतिहास का अध्ययन बालकों के अन्दर राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के साथ विश्व बन्धुत्व की सम्भावना का भी विकास करता है, इसके अतिरिक्त प्रजातन्त्रिका राष्ट्रीय उद्देश्यों एवं मूल्यों का विशेष महत्व है।

(ii) सफल जीवन-यापन इतिहास का अपना एक विशेष महत्व है क्योंकि महापुरूष, कूटीनीतिक, समाजसुधारक, लोक कल्याणकर्ता को अपना कार्य कुशलतापूर्वक करने के लिए इतिहास की जरूरत होती है।

(iii) इतिहास में जीवन की बहुमुखी समस्यओं के पढ़ने से एक सुयोग्य नागरिक भी बनाये जा सकते हैं।

(iv) इतिहास उच्च आदर्शों को उपस्थिति करके नैतिक जीवन के स्तर को ऊँचा उठाता है जिससे व्यक्ति का सांस्कृतिक विकास होता है।

(v) इतिहास प्रत्येक स्थान पर मानवीय सम्बन्धों को निर्धारित करने में पारस्परिक निर्भरता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

(vi) इतिहास स्थान एवं समय के द्वारा ऐसे ढाँचे का निर्माण करता है जिसमें घटनाएँ घटित होती हैं।

**(2) सामाजिक विज्ञान में भूगोल शिक्षण की आवश्यकता**—सामाजिक विज्ञान में भूगोल शिक्षण की आवश्यकता इस प्रकार है—

(i) भूगोल हमें मनुष्य तथा उसके परिवेश के विषय में ज्ञान देता हैं। साथ-ही-साथ परिवेश सम्बन्धी समस्याओं एवं परिस्थितियों के समाधान में मदद करता है।

(ii) भूगोल शिक्षण से भौगोलिक साधन; जैसे—शक्ति के साधन, पशु व खनिज आदि के उचित प्रयोग एवं वितरण के बारे में उचित जानकारी मिलती है।

(iii) भूगोल शिक्षण पृथ्वी का भौगोलिक, ढाँचा, प्राकृतिक सम्पदा, सांस्कृतिक तथा आर्थिक घटनाओं को समझने में मदद प्रदान करता है।

**पी.ई. जेस्म** के अनुसार सामाजिक विज्ञान शिक्षण में भूगोल शिक्षण की जरूरत इस प्रकार है—

(i) भूगोल मानव एंव पृथ्वी के सम्बन्धों को समझने में सहायता प्रदान करता है।

(ii) भूगोल पृथ्वी के धरातली के सम्बन्धों को समझने की सहायता प्रदान करता है। मानचित्र, रेखाचित्र, आदि को पढ़ने अथवा समझने में सहायता देता है।

**(3) सामाजिक विज्ञान में नागारिकशास्त्र शिक्षण की आवश्यकता**—सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत नागरिक शास्त्र की निम्न आवश्यकता होती है—

**(i) राजनीतिक चेतना के विकास के लिए**—नागरिकशास्त्र जनसाधारण में राजनीतिक चेतना के विकास के लिए बहुत ही लाभकारी है, क्योंकि इसको पढ़ने से व्यक्ति को देश की शासन व्यवस्था व न्यायिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है और यह भी पता चलता है कि पालन करना अच्छी प्रकार से सीखना है। नागारिक शास्त्र इस बात पर बल देता है कि इसके कर्त्तव्य पालन पर ही उसकी तथा उसके देश की प्रगति निर्भर करती है। इस प्रकार नागरिक शास्त्र, व्यक्तियों को राजनीतिकशास्त्र के तौर पर जागरूक बनाता है।

**(ii) लोकतन्त्र की सफलता के लिए**—लोकतन्त्र की सफलता के लिए एक स्थायी सेना की उतनी आवश्यकता नहीं पड़ती जितनी की शिक्षित नागरिक की है, क्योंकि किसी भी देश का लोकतन्त्र योग्य नागरिकों पर ही निर्भर है। इस विषय पर माध्यमिक शिक्षा आयोग ने कहा है कि "लोकतन्त्र ने नागरिकता एक चुनौतीपूर्ण दायित्व है जिसके लिए प्रत्येक नागरिक को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया जाना जरूरी है।" अथवा लोकतन्त्र सफल बनाने के लिए लोकतान्त्रिका नागरिकता का विकास करना आवश्यक है इसके लिए नागरिकता का विकास करना जरूरी है। इसके लिए नागरिकों में नैतिक, मानसिक एवं बौद्धिक गुणों का विकास करना अनिवार्य है। इस प्रकार नागरिक शास्त्र का शिक्षण इन गुणों का विकास करना अनिवार्य है। इस प्रकार नागरिक शास्त्र का शिक्षण इन गुणों के विकास में बहुत सहायक है, इसलिए लोकतान्त्रिक देश अपने-अपने विद्यालयों के पाठ्यक्रम में नागरिक शास्त्र को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।

**(iii) नेतृत्व के विकास के लिए**—लोकतन्त्र जब तक सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकता जब तक उसके अधिकांश सदस्य अपने उत्तरदायित्वों

का निर्वाह पूर्ण रूपेण नहीं करते। अतः नागरिक शास्त्र शिक्षण शासन में सहयोग को स्पष्ट करता है तथा यह बताता है की प्रत्येक नागरिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आदि क्षेत्र में अपने दायित्वों को समझने व उसको पूर्ण करने की तत्परता आदर्श नेतृत्व के लिए जरूरी है।

**(4) सामाजिक विज्ञान में अर्थशास्त्र शिक्षण की आवश्यकता**—प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. मार्शल ने अर्थशास्त्र की आवश्कता का दो क्षेत्रों में वर्णन किया है—

**(i) अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक महत्व के आधार पर**—अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक महत्व के आधार पर निम्न दो भागों में बाटाँ गया है—

**(अ) सैद्धान्तिक ज्ञानवर्धन**—अर्थशास्त्र शिक्षण से छात्रों को आर्थिक पदों तथा अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त होता है, इसके ज्ञान से वह यह जानने में समर्थ होता है कि हमारे देश में किस प्रकार की आर्थिक व्यवस्था है? अमुक्त आर्थिक व्यवस्था को क्यों अपनाया गया है। इस प्रकार आज के भारत में नियोजन पर जोर दिया है। अतः इसके अध्ययन से छात्र आर्थिक नियोजन को समझ सकता है।

**(ब) मानसिक शक्तियों का विकास**—समूह मनोविज्ञान के अनुसार मस्तिष्क विभिन्न विभागों का चिन्तन-शक्ति, स्मरण-शक्ति, विभेद-शक्ति, निर्णय-शक्ति एवं अभियोजन शक्ति का समूह है। इस प्रकार अर्थशास्त्र के शिक्षण से छात्रों की मानसिक शक्तियों का पर्याप्त रूप से विकास होता है।

**(ii) अर्थशास्त्र के व्यावहारिक महत्व के आधार पर**—अर्थशास्त्र के व्यावहारिक महत्व के आधार पर निम्न दो भागों में बाँटा गया है—

**(अ) व्यक्ति महत्व के आधार पर**—इसके अन्तर्गत गृह-स्वामी, व्यापारी, श्रमिक राजनीतिक समाज सुधारक आते हैं। इनसे सम्बन्धित महत्व को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है—

— गृहस्वामी अर्थशास्त्र के ज्ञान से अपने आय-व्यय को संतुलित करने का ढंग सीख जाता है ।

— व्यापारी अपने व्यापार को सफल बनाना है।

— श्रमिक अपने आप को श्रमिक संघों से संगठित करके पूँजीपतियों के शोषण से अपने को बचाते हैं।

— राजनीतिक बजट, करनीति, मुद्राप्रासार और आयात निर्यात आदि समस्याओं को सुलझाया जाता है।

— समाज सुधारक दहेज प्रथा तथा बेकारी की समस्या के समाधान में सफल होता है।

NOTES

(ब) **सामाजिक महत्व के आधार पर**—क्योंकि अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जिससे व्यक्ति की क्रियाओं का सामूहिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला जाता है।

इसके अलावा समाजवादी व्यवस्था आर्थिक विकास की योजनाएँ तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थान आदि आज इस अर्थशास्त्र की देन है।

(5) **सामाजिक विज्ञान में समाजशास्त्र शिक्षण की आवश्यकता**—सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत समाजशास्त्र की निम्न आवश्यकता होती है—

(i) **समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन करता है**—समाजशास्त्र के उद्‌भव से पहले समाज का कभी भी वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययेन नहीं किया जाता था और समाज भी विज्ञान का विषय सामग्री नहीं था। अत: समाजशास्त्र द्वारा ही समाज का वास्तविक अध्ययन सम्भव है। इसके अतिरिक्त आधुनिकता की विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित होने के कारण समाजशास्त्र ने इतना अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्रपत कर लिया है कि समाजशास्त्रीय आयाम को अन्य सभी सामाजिक शास्त्री को समझने का श्रेष्ठतम् आयाम माना जाता हैं इस तरह समाजशास्त्र का वैज्ञानिक ज्ञान मानव सम्बन्धों को समझने के लिए किसी भी समाज की पहली जरूरत है।

(ii) **समाज सम्बन्धी ज्ञान तथा उसमें आयोजन के लिए समाज का महत्व अनिवार्य**—जटिल तथा विचित्र समाजिक रचना की विभिन्न समस्यओं को समझना एवं समाधान कर पाना समाजशास्त्र के अध्ययन के बिना सम्भव नहीं है। किन्हीं भी सामाजिक नीतियों के क्रियान्वयन से पहले समाज के सम्बन्धों में कुछ ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है जैसे—जन्मदर को घटाने के लिए उत्तम साधन का निर्णय केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं किया जा सकता क्योंकि परिवार व्यवस्था, रीति-रिवाज और गतिविधियों को ध्यान में रखने के लिए समाजशास्त्रीय ढंग से विश्लेषण करना आवश्यक है।

## सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध (Relations with Other Subjects of Social Studies)

स्कूल स्तर पर कोई ऐसा विषय नहीं, कोई ऐसा कार्य क्षेत्र नहीं, जिसका सामाजिक अध्ययन के साथ सम्बन्ध न हो। वस्तुतः सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मानव का अध्ययन करना सामाजिक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है इसलिए समस्त विषयों के साथ सामाजिक अध्ययन का सम्बन्ध स्वतः सिद्ध है। स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों को विज्ञान (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान) भाषाएँ, कला, गणित आदि का शिक्षण दिया जाता है। इन सबका 'सामाजिक अध्ययन' के साथ गहरा सम्बन्ध है।

(1) सामाजिक अध्ययन एवं भाषा,

(2) सामाजिक अध्ययन एवं गणित,

(3) सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान तथा,

(4) सामाजिक अध्ययन एवं एवं कला।

**(1) सामाजिक अध्ययन एवं भाषा (Relation of Social Studies with Lanaguage)**—भाषा विचारों को ग्रहण करने और अभिव्यक्ति करने का सशक्त साधन है। **भाषा साहित्य का माध्यम है और साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है।** भाषा की पाठ्य-पुस्तक में संकलित निबन्ध, कहानियाँ, कवितायें आदि समाज के विविध पहलुओं को ही प्रकट करती हैं। भाषा के बिना अध्यापक के लिए सामाजिक अध्ययन की शिक्षा देना सम्भव नहीं है। वह बोलकर अथवा प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों को समाज की रचना तथा उसकी परिवर्तन प्रक्रिया को ज्ञान प्रदान करता है। भाषा द्वारा विद्यार्थी सामाजिक प्रश्नों पर चिन्तन करके उन पर अपने विचार प्रकट करते हैं। भाषा के अध्यापक को केवल व्याकरण का ही ज्ञान देना होता है, जिन्होंने महान कवियों, विचार को तथा साहित्यकारों को जन्म दिया। इस तरह सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को अपनी विषय-सामग्री उन लेखकों से भी लेनी पड़ती है। जिनकी साहित्यिक क्षेत्र में ख्याति है। अतः भाषा और सामाजिक अध्ययन का सम्बन्ध है।

**(2) सामाजिक अध्ययन एवं गणित (Relation of Social Studies with Mathematics)**—वैज्ञानिक विषयों के साथ-साथ गणित की शिक्षा भी प्राथमिक कक्षाओं से शुरू हो जाती है। यह समाज में गणित के अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान का द्योतक है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ गणित की जरूरत न हो। अतः गणित को केवल गणित के लिए नहीं पढ़ाया

NOTES

जाता, बल्कि उसकी सामाजिक उपयोगिता को दृष्टि में रखकर उसका शिक्षण दिया जाता है। जीवन की विभिन्न स्थितियों के साथ गणित को सम्बन्धित करके पढ़ाने से विद्यार्थियों को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने में मदद मिलती है। साधारण विचार, डाकखाने में बचत-खाता, बैकिंग, आदि प्रकरण घरेलू-बजट बनान में बहुत सहायक सिद्ध होते हैं। घरेलू-बजट बनाने का शिक्षण प्राप्त करके व्यक्ति धीरे-धीरे न्यायपालिका, राज्य तथा देश की बजट-प्रक्रिया को समझने लगता हैं समाज की विभिन्न समस्याओं को समझने, उनका विश्लेषण करने तथा उचित समाधान ढूँढने में गणित का ज्ञान अत्यन्त जरूरी हैं

(3) **सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान (Relation of Social Studies with Seience)**—आज का मनुष्य विज्ञान औश्र तकनीक के युग में रहता है। उसे आधुनिक युग के विभिन्न कार्य-क्षेत्रों को समझने तथा उसे विकास में सहयोगात्मक भूमिका निभाने के योग्य बनाने हेतु उसे विज्ञान की शिक्षा देना जरूरी है। यही कारण है कि शिक्षाविद् तथा सामाजिक नेता प्राथमिक स्तर के विज्ञान की शिक्षा देने पर जोर देतें, परन्तु विज्ञान की शिक्षा केवल विज्ञान के लिए नहीं दी जाती अपितु मानवीय तत्वों को सामने रखकर इसकी शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थियों को केवल विज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों , सूत्रों तथा अनुसन्धानों का ही ज्ञानन प्रदान नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें यह भी समझाया जाता है कि विज्ञान मानवता के लिए कितना उपयोगी है और कितना हानिकारक अणुबम बनाना विज्ञान का विषय है, परन्तु इस बम के प्रयोग ने मशीन बनाई और विश्व को उद्योगीकरण की ओर अग्रसर कर दिया, परन्तु इस उद्योगीकरण से मानव-समाज को कितना लाभ हुआ और किन विकट समस्याओं का सामना करना पड़ा, यह 'सामाजिक अध्ययन' का विषय है। रेडियो, फिल्म दूरदर्शन कम्प्यूटर प्रेस आदि विज्ञान के चमत्कारी अविष्कार हैं, परन्तु इनका मानव-समाज पर क्या असर पड़ा? इस प्रश्न का उत्तर विज्ञान को 'सामाजिक अध्ययन' के निकट ले आता है। अतः इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि विज्ञान तथ सामाजिक विज्ञान' का परस्पर गहरा सम्बन्ध है।

(4) **सामाजिक अध्ययन एवं कला (Relation of Social Study with Arts)**—स्कूल पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार की कलाओं का भी महत्पूर्ण स्थान है। ड्राइंग, पेंटिग, संगीत तथा अन्य ललित कलाओं का विद्यार्थियों को शिक्षण प्रदान किया जाता है, परन्तु कलाओं का अध्ययन केवल कलाओं के लिए नहीं किया जाता है, अपितु उनके माध्यम से विद्यार्थियों निर्माणत्मक प्रवृत्तियों को विकसित किया जाता है। कला-शिक्षण के यह सभी उद्देश्य 'सामाजिक अध्ययन' के उद्देश्यों से मेल खाते हैं। कलाएँ एवं सामाजिक

NOTES

अध्ययन दोनों मानव-विकास के लक्ष्य पर केन्द्रित है। सामाजिक अध्ययन का शिक्षण प्रदान करते समय अध्यापक उन संगीतज्ञों, मूर्तिकारों, चित्रकारों, शिल्पकारों, आदि विभिन्न कलाकारों की उपेक्षा नहीं कर सकता, जिन्होंने मानवीय सभ्यता तथा संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिकाए निभाई हैं। विभिन्न स्थानों से प्राप्त कला-कृतियों के खण्डहर विभिन्न युगों की विशेषताओं को समझने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं। सामाजिक-अध्ययन का कुशल अध्यापक इन खण्डहरों के माध्यम से सामाजिक अध्ययन की शिक्षा को विद्यार्थियों के लिए सुबोध एवं प्रभावपूर्ण बनाता है। कलाएँ सामाजिक अध्ययन के शिक्षण को सरलता सरसता तथा सुन्दरता प्रदान करती है। क्रियात्मक दृष्टिकोण से कलाओं का सामाजिक अध्ययन से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

सामाजिक अध्ययन पढ़ते समय विद्यार्थी केवल पाठ्य-पुस्तक तथा मौखिक शिक्षण तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि उन्हें कई प्रकार के चित्र, मॉडल मानचित्र आदि भी बनाने होते है। औश्र इन सब का सम्बन्ध कलाओं के साथ है। आजकल इस बात पर बल दिया जा रहा है कि शिक्षण क्रिया-आधारित होनी चाहिय। कलाएँ सामाजिक अध्ययन के शिक्षण को क्रिया का आधार प्रदान करती हैं, यह नहीं कि सामाजिक अध्ययन ही कलाओं से शिक्षण-सामग्री तथा प्रेरणा प्रदान करता है, कलायें भी सामाजिक अध्ययन से बहुत कुछ प्राप्त करती है। कलाकारों को सामाजिक विषय से रचनात्मक प्रेरणा मिलती है। कलाकारें की अमर कृतियों के पीछे सम्बन्धित युग की छाया स्पष्ट रूप से झलकती है जो इस बात का सशक्त प्रमाण है कि उन्होंने अपने समय की समाजिक समस्याओं, चेतावनियों चुनौतियों एवं उपलब्धियों से प्रेरित होकर अपनी कृतियों को जन्म दिया होगा। कला का शिक्षक विभिन्न कलाकारों की कलाओं का करते समय कलाकरों के युग की समाजिक आर्थिक राजनैतिक तथा संस्कृतिक स्थितियों का उल्लेख अवश्य करता है। ऐसा करके वह अपने शिक्षण को सार्थक तथा प्रभावपूर्ण बनाता है। सामाजिक अध्ययन तथ कलाओं का परस्पर आदान-प्रदान इस बात को सिद्ध करता है कि दोनों में गहरा सम्बन्ध है।

## सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान में अन्तर (DIFFERENCE BETWEEN SOCIAL STUDIES AND SOCIAL SCIENCES)

सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में अन्तर स्पष्ट करते हुए वैस्ले ने बताया-''सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय सम्बन्धों की विवेचना करते हैं, परन्तु प्रथम (सामाजिक विज्ञान) प्रौढ़ज्ञवस्था पर तथ दूसरा (सामाजिक अध्ययन) बालकों के स्तर पर। अत: यह स्पष्ट है कि सामाजिक

अध्ययन मूलतः सामाजिक विज्ञानों से अपनी विषयवस्तु ग्रहण करता है सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान है, जिसको निर्देशात्मक अभिप्रायों के लिए सरलीकृत एवं पुनः संगठित किया गया है। अतः सामाजिक विज्ञानों तथा सामाजिक अध्ययन में दार्शनिक अथवा सैद्धान्तिक अन्तर नहीं है वरन् केवल व्यावहारिक एवं सुविधा के दृष्टिकोण से अन्तर है।''

NOTES

सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञानों के अन्तर कमो निम्नलिखित रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है—

| अन्तर का आधार | सामाजिक विज्ञान | सामाजिक अध्ययन |
|---|---|---|
| 1. लक्ष्य | इसका लक्ष्य सामाजिक उपयोगिता है। | मुख्य लक्ष्य शैक्षणिक उपयोगिता है। |
| 2. स्तर | माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए इसकी विषय वस्तु होती है। | निम्न माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए। |
| 3. क्षेत्र | अत्यन्त व्यापक | सीमित |
| 4. प्रकृति | सैद्धान्तिक विषय | व्यावहारिक विषय है। |
| 5. बौद्धिक | यह मानवीय सम्बन्धों का उच्चतर एवं विद्वतापूर्ण अध्ययन है, जिसमें खोज प्रयोग के लिए स्थान होता हैं। | यह विद्यालय पाठ्यक्रम का अंग है, और जिसमें सामाजिक विज्ञानों के तत्वों एवं विधियों को शिक्षण की सुविधा की दृष्टि से रखा जाता है। |
| 6. कार्य | मानवीय सम्बन्धों के नए तथ्यों की खोज करना। | पूर्व खोजों को व्यावहारिक प्रयोग में लाना। |

## भारत में सामाजिक विज्ञान के विषय में वर्तमान अनुभूति और विद्यालयी पाठ्यक्रम में इन क्षेत्रों के समावेश की तकसंगतता (PRESENT PERCEPTION ABOUT SOCIAL SCIENCES AND RATIONAL FOR INCLUDING THESE AREAS IN CURRICULUM IN INDIA)

सामाजिक अध्ययन में समाज की संरचना एवं विकास का अध्ययन किया जाता है अर्थात् सामाजिक पर्यावरण एवं उसके सदस्यों के परस्पर सम्बन्धों के अध्ययन के साथ-साथ समाज के विकास के लिए समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में नागरिकों की भूमिका का अध्ययन किया जाता है। इस दृष्टि से सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण को अनिवार्य किया जाना जरूरी है। यद्यपि सामाजिक ज्ञान के अध्यापन की बात संसार के अन्य देशों में 19वीं सदी के दूसरे दशक से प्रारम्भ हो गई थी परन्तु भारत वर्ष में अंग्रेज सरकार की शिक्षानीति, जो भारत में

NOTES

भारतीयता के स्थान पर अंग्रेजी भाषा, रहन-सहन और विचारधारा को स्थापित करने की रही थी, के कारण इस विषय का विद्यालयी पाठ्यक्रम में समावेश काफी विलम्ब से हुआ।

दूसरे दशक के शुरू से गाँधीजी ने बुनियादी शिक्षा योजना दी। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र के भावी नागरिकों में उन गुणों का समावेश करा देना था, जिससे वे न केवल राष्ट्र का ही कल्याण करने में समर्थ हों अपितु अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द्र बढ़ाने तथा विश्वसबन्धुत्व की भावना का प्रसार करने में भी योगदान दे सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सामाजिक ज्ञान के नए विषय की स्थापना की गई। उस समय सामाजिक ज्ञान से तात्पर्य इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र से था। सितम्बर 1952 में मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की गई जिसमें सामाजिक ज्ञान के स्वरूप को इस प्रकार स्पष्ट किया गया—"सामाजिक ज्ञान इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र का सम्मिश्रण न होकर उनका ऐसा एकीकृत पूर्ण विषय होगा, जो छात्रों को यह समझा सकने में समर्थ हो कि समाज ने अपना वर्तमान रूप किस प्रकार धारणा किया और जिन सामाजिक शक्तियों और आन्दोलनों के बीच वे रहते हैं उनकी विवेकपूर्ण ढंग से व्यवस्था कर सकें।

इस प्रकार सामाजिक ज्ञान के विषय को राजकीय मान्यता प्राप्त हुई और वह सभी राज्यों में पढ़ाया जाने लगा। सर्वप्रथम पंजाब सरकार ने अपने शिक्षा सलाहकार बोर्ड (1949) की पाठ्यक्रम पुनर्गठन की सिफारिशों को मानते हुए राज्य में सभी स्तरों पर सामाजिक ज्ञान का अध्यापन निश्चित किया। सन् 1964 में **डॉ. डी. एस. कोठारी** की अध्यक्षता में गठित आयोग ने बताया कि—"सामाजिक ज्ञान का उद्देश्य छात्रों को उनके वातावरण का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देना, मानव सम्बन्धों की समझ उत्पन्न कराना और समुदाय, राज्य राष्ट्र और विश्व, के मामलों में विवेकपूर्ण ढंग से सम्मिलित हो सकने के लिए महत्त्वपूर्ण अभिमत एवं मूल्यों का निर्माण करना है।"

## सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में विशिष्ट उपागम का एकीकृत अनुभाग (THE INTEGRATED SECTION OF TEH SPECIALISED APPROACH IN SOCIAL SCIENCES THEACHING)

सामाजिक विज्ञान शब्द का जब एक वचन में प्रयोग किया जाता है तब उसका अर्थ एक ऐसी विषय से होता हैं जिसमें सभी विषयों (इतिहास, राजनीतिकशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र समाजशास्त्र) की सामग्री को मानव तथा अन्य सामाजिक घटकों के सम्बन्ध को समन्वित ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है। सामाजिक विज्ञान शब्द का बहुवचन के रूप में अर्थ सामान्य रूप से सभी सामाजिक

विज्ञानों की सामग्री से होता है जो सामाजिक योग्यता प्रदान करने में सहायक हो।



**परीक्षापयोगी प्रश्न**

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—**

1. सामाजिक विज्ञान की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसके महत्व का वर्णन कीजिए।
2. सामाजिक विज्ञान से आप क्य समझते है? इसकी आवश्यता की उल्लेख कीजिए।

**लघु उत्तरीय प्रश्न—**

1. सामाजिक विज्ञान को परिभाषित कीजिए।
2. सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र का उल्लेख कीजिए।
3. सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

●●

NOTES

# 2 विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**


- उद्देश्य।
- प्राक्कथन।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण के सामान्य उद्देश्य
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य
- इतिहास शिक्षण के उद्देश्य
- नागरिक शास्त्र शिक्षण के उद्देश्य
- भूगोल शिक्षण के उद्देश्य
- सामान्य उद्देश्यों का व्यावहारिक रूप
- अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य
- भारत में अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य
- परीक्षपयोगी प्रश्न


**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य
- इतिहास शिक्षण के उद्देश्य
- नागरिक शास्त्र शिक्षण के उद्देश्य
- भूगोल शिक्षण के उद्देश्य
- सामान्य उद्देश्यों का व्यावहारिक रूप
- अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य
- भारत में अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य

## प्राक्कथन

NOTES

शिक्षण एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। प्रत्येक शैक्षणिक क्रिया के विशिष्ट उद्देश्य होते हैं। विद्यालों में अनेक विषय इतिहास, भूगोल, भाषा, वाणिज्य, अर्थशास्त्र तथा गणित आदि पढ़ाए जाते हैं। इन सभी विषयों का उद्देश्य बालकों में ज्ञान पैदा करना होता है, जिसका सम्बन्ध बालक के मानसिक ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों से समग्र रूप में होता है। विषयों का विभाजन विभिन्न शिक्षण उद्देश्यों की सुविधा के लिए किया गया है। **उदाहरणार्थ**-इतिहास, भूगोल के शिक्षण से ज्ञान उद्देश्य की पूर्ति की जाती है और भाषा के शिक्षण से कौशल उद्देश्य की पूर्ति होती है। विज्ञान शिक्षण द्वारा बालकों की आलोचनात्मक व परीक्षणात्मक शक्तियों का विकास किया जाता है। गणित शिक्षा द्वारा मानसिक एवं तार्किक-शक्ति का विकास होता है। इसी तरह इतिहास शिक्षण से निष्पक्ष विचार शक्ति, कल्पना-शक्ति या सर्जनात्मक शक्तियों का विकास किया जाता है।

## सामाजिक विज्ञान शिक्षण के सामान्य उद्देश्य (General Objective of Social Science Teaching)

प्रत्येक विषय के लक्ष्य सामान्य शिक्षा के लक्ष्यों के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं। शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति किसी एक विषय के अध्ययन द्वारा नहीं हो सकती है। प्रत्येक विषय किसी-न-किसी रूप में उनकी प्राप्ति में सहायक होता है। इसी कारण उसको पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया जाता है। सामाजिक अध्ययन प्रत्यक्ष रूप से रोटी तथा मक्खन देने वाला विषय नहीं है, परन्तु इसके द्वारा शिक्षा के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नागरिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान की जाती है। इसके प्रमुख लक्ष्यों का विवरण निम्नलिखित है—

1. उत्तम नागरिकता का विकास करना
2. सामाजिक विरासत एवं समस्याओं का ज्ञान देना
3. विभिन्न वृत्तियों तथा कौशलों का विकास करना
4. वर्तमान को स्पष्ट करना।
5. अपने पन की भावना का विकास करना।
6. राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करना।
7. पारस्परिक सम्बन्धों की भावना का विकास
8. सामाजिक चरित्र का विकास करना।
9. पर्यावरण का ज्ञान।
10. तर्क एवं चिन्तन शक्ति का विकास करना

11. मानवीय मूल्यों का विकास

## सामाजिक विज्ञान शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य
## (Behavioral Objectives of Social Science Teaching)



सामाजिक विज्ञान शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं—

(1) ज्ञान उद्देश्य,

(2) बौद्धिक योग्यताओं का विकास,

(3) व्यावहारिक कौशल अथवा प्रायोगिक कौशल का विकास

(4) व्यक्तिगत तथा सामाजिक गुणों का विकास।

### (1) ज्ञान उद्देश्य

सामाजिक अध्ययन में तथ्यों, पदों (terms), अवधारणों (concepts), परम्पराओं अथवा अभिसमयों (concentions), प्रवृत्तियों (tends), सिद्धान्तों तथा सामान्यीकरणों, पूर्व-धारणाओं, उपकल्पनाओं (hypothesis), समस्याओं, प्रक्रियाओं आदि का ज्ञान प्राप्त करना।

**व्यावहारिक रूप** (Behavioural form)–

1. तथ्यों, पदों, अवधारणाओं या संकल्पनाओं, सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों आदि का प्रत्यास्मरण करेगा।
2. तथ्यों, पदों, अवधारणाओं, सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों आदि को पहचानेगा।
3. विभिन्न प्रकार के संकेतात्मक स्वरूपों-मानचित्र, चार्ट, तालिकाएँ, ग्राफ आदि से सूचनाओं का अध्ययन करेगा।

### (2) बौद्धिक योग्यताएँ उद्देश्य

1. सामाजिक अध्ययन में तथ्यों, पदों अवधारणाओं, परम्पराओं तथा प्रवृत्तियों, सिद्धान्तों एवं सामान्यीकरणों, पूर्व-धारणाओं, परिकल्पनाओं, समस्याओं, प्रक्रियाओं आदि के लिए समझदारी विकसित करना।
2. अलभिज्ञ (Unfamiliar) परिस्थितियों में अर्जित ज्ञान एवं समझदारी का प्रयोग करना।

**उद्देश्य (1) व्यावहारिक रूप—**

1. विभेदीकरण करना,

NOTES

2. वर्गीकृत करना,
3. तुलना करना,
4. सम्बन्धों को पहिचानना,
5. तर्कों की प्रवृत्तियों का ज्ञान करना,
6. उदाहरण देना,
7. अशुद्धियों को निकालकर उनका सुधार करना,
8. विश्लेषण करना,
9. तर्क प्रस्तुत करना,
10. विभिन्न स्वरूपों में आँकड़ों अथवा प्रदत्तों (data) को प्रस्तुत करना।

**उद्देश्य (2) व्यावहारिक रूप—**

1. परिस्थिति या समस्या का विश्लेषण करना—
   (अ) दी हुई परिस्थिति तथा आवश्यक स्थिति (requred) क्या है? को निकालना या खोज करना,
   (ब) परिस्थिति के अनुकूल ज्ञान का प्रत्यास्मरण करना,
   (स) समस्या के समाधान हेतु प्रदत्तों या प्रमाणों की उपयुक्तता का निर्णय करना,
2. सम्बन्ध स्थापित करना।
3. समस्या-समाधान के लिए वैकल्पिक सुणव प्रस्तुत करना।
4. समस्या-समाधान के लिए सबसे उपयुक्त एंग का चयन करना।
5. निष्कर्ष निकालना तथा सामान्यीकरण करना।
6. एक दी हुई परिस्थिति के परिणाम के विषय में भविष्यवाणी करना।

**(3) व्यावहारिक कौशल अथवा प्रायोगिक कौशल का विकास करना**

1. सामाजिक अध्ययन के लिए व्यावहारिक कौशल अर्जित करना।

**उद्देश्य का व्यावहारिक रूप**

1. दिये हुए प्रदत्तों में मानचित्र, चार्ट, तालिकाएँ, रेखाचित्र, ग्राफ, आदि बना लेना।

2. प्रतिरूप (Model) बना लेना।
3. प्रदत्तों को दूसरे रूप में अभिव्यक्त करना।

**(4) व्यक्तिगत तथा सामाजिक गुणों का विकास करना**

NOTES

1. व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्धित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं एवं विषयों में रुचि विकसित करना।

**उद्देश्य का व्यावहारिक रूप**

1. सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना।
2. आर्थिक मामलों तथा समस्याओं को जानने हेतु अपने अवकाश का उपयोग करना।
3. स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक परिवर्तनों की अनुभूति करना। साथ ही सामाजिक प्रक्रिया का निरीक्षण करना।
4. सरस्वती यात्राओं, भ्रमण तथा क्षेत्रीय पर्यटनों (फार्म, कारखाने तथा मेलों आदि हेतु) में उत्साह के साथ भाग लेना।
5. विषय से सम्बन्धित प्रिय-व्यापारों में रुचि प्रदर्शित करना।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों का विशिष्ट रूप घटकों के अनुसार भी दिया गया है। इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र एवं अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य इस प्रकार है—

**(1) इतिहास शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of History Teaching)**

इतिहास के शिक्षण उद्देश्यों का विवेचन करने से पूर्व इन शब्दों के अर्थ का स्पष्टीकरण जरूरी है, क्योंकि साधारणत: छात्राध्यापकों में इन शब्दों के प्रयोग में भ्रम रहता है।

**लक्ष्य** (Aim) एक दार्शनिक प्रत्यय है, जिसका सम्बन्ध शिक्षा की चेतनाशीलता से होता है। शिक्षण-उद्देश्यों से सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से नहीं होता है। लक्ष्य का सम्बन्ध जीवन के उच्च आदर्शों से होता है, इनको शिक्षा की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जा सकता है और नहीं भी किया जा सकता है; जैसे—

(1) चरित्र निर्माण (2) आत्मानुभूति

(3) व्यक्तित्व का विकास (4) व्यावसायिक क्षमता का विकास

(5) नेतृत्व का विकास (6) राष्ट्रीय एकता का विकास

उद्देश्य (Objectives) एक मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है, जिसका सम्बन्ध शिक्षण द्वारा उनको प्राप्त किया जा सकता हैं इनका सम्बन्ध मानसिक पक्षों से होता है। किसी कार्य को करते समय अपने मन में जो प्रयोजन रखते हैं, वह उस कार्य का उद्देश्य होता है, जैसे-

NOTES

(1) ज्ञान उद्देश्य

(2) कौशल उद्देश्य

(3) अभिरुचि एवं अभिवृत्ति विकास-उद्देश्य, मूल्य (value) एक सामाजिक प्रत्यय है।

उद्देश्य की पूर्ति के समय या पूर्ति हो जाने पर जो परिणाम होते हैं, वे मूल्य कहलाते हैं। उद्देश्य एक हो सकता है और मूल्य अनेक होते हैं। दानों में मौलिक भेद यह है कि प्रत्येक अपने-अपने स्थान पर स्वतन्त्र हैं; जैसे—

(1) नैतिक मूल्य (2) राष्ट्रीय मूल्य

(3) अनुशासनात्मक मूल्य (4) शैक्षिक मूल्य आदि।

इतिहास शिक्षण के ज्ञान उद्देश्य की पूर्ति करने पर इन अधिकांश मूल्यों की प्राप्ति हो सकती है। शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति भी उद्देश्यों की पूर्ति से होती है। अत: शिक्षण उद्देश्यों का विशेष महत्व है।

**शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षण उद्देश्यों का महत्व**

विद्यालय के कई विषयों द्वारा बालक को विशेष प्रकार के सीखने के अनुभव प्रदान किए जाते हैं। इन अनुभवों से बालकों को ज्ञान-वृद्धि होती है, सोवन का तरीका बदलता है, कार्य शैली बदलती है और उनकी अभिरुचि तथा अभिवृत्ति का विकास होता है। इस सम्पूर्ण विकास को व्यवहार-परिवर्तन की संज्ञा दी जाती है। बालक के व्यवहार-परिवर्तन मं ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों मानसिक पक्ष शामिल है।

अत: इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों का विश्लेषण तथा निर्धारण उपरोक्त दृष्टि से होना चाहिए। परन्तु इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य पुस्तकीय ज्ञान, अतीत की घटनाओं, राजाओं, युद्धों की कथाओं की सूचना तक ही सीमित मानते हैं। बालकों के व्यवहार में बदलाव लाना शिक्षकों की दृष्टि में नहीं होता हैं यह दोष शिक्षण तथा परीक्षण दोनों क्रियाओं में है परीक्षक प्रश्न-पत्र बनाते समय यह बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं कि बालकों के किन-किन व्यवहार-परिवर्तन का परीक्षण करना चाहते हैं। इन दोषों को मूल्यांकन विधि के प्रयोग से दूर किया जा सकता है, क्योंकि मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षणिक परीक्षणों व प्रयोगों

द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिक्षण और परीक्षण की क्रियायें साथ-साथ सम्पन्न की जाएँ तथा दोनों क्रियायें उद्देश्य-केन्द्रित हों। इसका प्रभाव बालक, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान पर पड़ता है। अतः इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों के व्यावहारिक पक्ष पर ही अधिक जोर देना होता है। परन्तु यह खेद की बात है कि शिक्षक-उद्देश्य निर्धारण की चिन्ता भी नहीं करते हैं। जबकि शिक्षा में निरुद्देश्य क्रियाओं का कोई स्थान नहीं होता है। शिक्षण कला और विज्ञान दोनों ही है जिसके द्वारा छात्रों में मानवीय व्यवहार-परिवर्तन लाया जाता है। इससे शिक्षक को उद्देश्यों को स्पष्ट रूप में समझ लेना चाहिए। इतिहास शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण निम्नलिखित है—

**इतिहास शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण**

**(अ) बालक के मानसिक विकास की दृष्टि से**

1. ज्ञान-उद्देश्य,
2. कौशल-उद्देश्य,
3. ज्ञान प्रयोग उद्देश्य,
4. अभिरुचि तथा अभिवृत्ति विकास उद्देश्य।

**(ब) समाज तथा राष्ट्र के उत्थान की दृष्टि से**

1. स्वदेश प्रेम एवं राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास।
2. विश्व-बन्धुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास।
3. सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास।
4. नैतिकता का विकास।
5. समयानुसार मानव-जीवन क अनुकूलन की क्षमता का विकास।
6. अवकाश के समय का सदुपयोग तथा ऐतिहासिक पर्यटन की इच्छा का विकास।
7. सुयोग्य नागरिक तैयार करना।
8. मानसिक अनुशासन तथा मानसिक अन्तरिक्ष के विचार हेतु प्रशिक्षण देना।

**(स) विद्यालय के विभिन्न स्तरों की दृष्टि से**

विद्यालय की दृष्टि से इतिहास शिक्षण उद्देश्यों को निम्नलिखित स्तरों पर बाँटा जा सकता है—

**(1) प्राथमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण उद्देश्य—**

1. छात्रों में इतिहास के प्रति रुचि का विकास।
2. छात्रों में कल्पा-शक्ति का विकास।
3. समय, स्थान तथा समाज का बोध कराया जाए।
4. स्वदेश प्रेम की भावना का विकास।

NOTES

प्राथमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण **कहानी-पद्धति** द्वारा किया जाना चाहिए।

**(2) माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के उद्देश्य—**

1. छात्रों में इतिहास के प्रति वास्तविक अभिरुचि का विकास।
2. छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क, निर्णय आदि मानसिक शक्तियों का विकास।
3. 'सत्यमेव जयते' की भावना का विकास।
4. अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने की योग्यता का विकास।
5. स्वदेश प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास।

**(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के उद्देश्य—**

1. इतिहास के प्रति दृढ़, विश्वास का विकास करना।
2. छात्रों की तर्क, निर्णय, कल्पना, सर्जनात्मक, मानसिक शक्तियों का विकास एवं मानसिक अन्तरिक्ष का विस्तार करना।
3. राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास।
4. अतीत के आधार पर वर्तमान को समझना और भविष्य के बारे में अनुमान लगाने की योग्यता का विकास।
5. समय, स्थान, दूरी के प्रत्यय का विकास।
6. नैतिक और 'सत्यमेव जयते' की भावना का विकास।
7. सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं को समझने तथा समाधान करने की योग्यता का विकास।

इतिहास एक गतिशील विषय है। अतीत काल से जीवन मूल्यों में बदलाव होते रहे, हमारी सभ्यता और संस्कृति भी बदलती रही है। इसी कारण इतिहास शिक्षण के उद्देश्य भी बदलते रहे हैं। शिक्षण उद्देश्यों का प्रतिपादन तत्कालीन सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु किया जाता है।

NOTES

**उदाहरणार्थ**–अतीत काल में स्वदेश तथा देश–भक्ति होने की अधिक आवश्यकता थी और आज भी है। परन्तु संकुचित राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता सद्‌भावना में बाधक है। आज दोनों राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय सद्‌भावना की जरूरत है। इसलिए इतिहास शिक्षण उद्देश्य में दोनों को ही महत्व दिया जाता है। अतः यहाँ तत्कालीन शिक्षण–उद्देश्यों का उल्लेख करना वांछनीय है। जो वर्तमान समाज की जरूरतों की पूर्ति कर सकते हैं।

**वर्तमान में इतिहास शिक्षण के उद्देश्य**

वर्तमान में इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है—

1. समय–दूरी और समाज के प्रत्यय का वास्तविक बोध करना।
2. मानसिक चिन्तन तथा समझ का विकास करना।
3. बौद्धिक अभिवृत्तियों का विकास करना।
4. बौद्धिक–अन्तरिक्ष का विस्तार करना।
5. बालकों का समाजीकरण करना।

(1) **समय-दूरी और समाज के प्रत्यय का वास्तविक बोध करना**—इतिहास एक ऐसा विषय है जो बालकों को समाज, स्थान तथा समय के प्रत्यय का भली प्रकार ज्ञान करता है। अतीत का इतिहास वर्तमान का प्रतिपादन करता है। क्योंकि अतीत का इतिहास निरपेक्ष अध्ययन होकर वर्तमान का सापेक्ष अध्ययन वर्तमान को भली प्रकार समझने के लिए अतीत का अध्ययन जरूरी है, क्यों कि वर्तमान कोइ निरपेक्ष कालखण्ड नहीं है।

इतिहास समय, दूरी और समाज के प्रत्यय के बिना बोधगम्य नहीं हो सकता है। इतिहास के अध्ययन के द्वारा ही समाज के भविष्य की गतिविधियों का अनुमान लगाया जा सकता है। अतः इतिहास का मौलिक सम्बन्ध वर्तमान और भविष्य से है, अतीत से नहीं।

(2) **मानसिक चिन्तन तथा समझ का विकास करना**—जब तक व्यक्ति में स्व–चिन्तन एवं समझ का विकास नहीं होता तब तक उसे पूर्ण व्यक्ति नहीं कह सकते हैं। इसके विकास हेतु ऐतिहासिक पृष्ठ–भूमि ही क्षेत्र प्रदान करती है। मानव की अभिरुचि, स्वभाव तथा अभिवृत्तियाँ अतीत की क्रियाओं तथा घटनाओं का परिणाम है। इसलिए अतीत का अध्ययन व्यक्ति में वर्तमान के लिए सोचने, समझने तथा निर्णय लेने के लिए योग देता है।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना वंशानुक्रम होता है, इसलिए जब तक अपनी जाति,

राष्ट्रीय, संस्कृति तथा पारिवारिक परम्पराओं को नहीं जानता तब तक व अपने स्वयं के लिए एक अजनबी रहता हैं 'भारतीयता' का अर्थ है-इसके समझने के लिए सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक स्तरों तथा मूल्यों को बोध होना आवश्यक है। इसके लिए इतिहास के अध्ययन की ही एक मात्र जरूरत होती है।

NOTES

इतिहास एक 'जीविकोपार्जन' का विषय नहीं है। फिर भी सोचने और समझने के लिए क्षेत्र प्रदान करता है। अतीत के महान, पुरुषों के साहसिक कार्यों तथा वीरगाथाओं के अध्ययन और सांस्कृतिक उपलब्धियों से बालकों में स्वयं चिन्तन तथा समझ का विकास होता है।

(3) **बौद्धिक अभिवृत्तियों का विकास करना**-इतिहास एक ऐसा साधन तथा माध्यम है, जिससे बालकों में अमूल्य बौद्धिक अभिवृत्तियों का विकास किया जा सकता है। इतिहास के अध्ययन से यह जानकारी होती है कि सामाजिक-प्रक्रिया अधिक जटिल है। परन्तु फिर भी मानव-व्यवहार और बौद्धिक-अभिवृत्तियों में किस प्रकार प्रगति हुई है इस विषय का अध्ययन निर्णय तथा प्रभावों के मूल्यांकन पर अधिक ध्यान देता है, जिससे बौद्धिक-अभिवृत्तियों का विकास होता है।

(4) **बालकों का समाजीकरण करना**—शिक्षा की आधुनिक प्रवृत्ति समाजीकरण की है। इसमें इतिहास का विशेष महतव है। इसलिए 'समाजीकरण' करना इतिहास शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य माना जाता है।

छात्रों को अपनी जाति के प्रयासों, युद्धों और बलिदानों का सही बोध होता है। छात्रों को शिक्षक यह बतला सकता है कि किस प्रकार सामाजिक-जीवन के लिए आदिकाल से मनुष्यों ने व्यक्तिगत रुचियों को दबाकर समाज तथा राष्ट्र प्रेम के लिए बलिदान किए। उन्होंने अपने हितों को पीछे रख और समाज एवं राष्ट्र के हितों को प्रधानता दी। इससे बालकों में पारस्परिक सम्बन्धों के लिए बढ़ावा मिलता है।

(5) **मानसिक प्रशिक्षण**—विद्यालय के पाठ्यक्रम में इतिहास ही एक विषय है जिसके अध्ययन से बालकों को मनोवैज्ञानिक एवं मानसिक अनुशासन का प्रशिक्षा को अपने हाथ में लेने के लिए किए थे। परन्तु उससे मानव तथा समाज का अहित ही होता रहा है। इस तरह इतिहास से बालकों में तर्क-शक्ति, निर्णय शक्ति तथा सर्जनात्मक विचार-शक्ति का विकास होता है। बालकों में वैज्ञानिक-अभवृत्ति का विकास होता है, तथ्यों तथा घटनाओं को वस्तुनिष्ठ रूप में विवेचन की वृत्ति हो जाती है।

NOTES

(6) **योग्य नागरिकों को तैयार करना**—इतिहास शिक्षा का मुख्य उद्देश्य, प्रजातन्त्र हेतु सुयोग्य नागरिकों को तैयार करना हैं भारतीय जनत् की सफलता के लिए यह प्राथमिक जरूरत है कि वे राष्ट्रीयता को समझें और जीवन में आचरण भी करें। इतिहास राजनैतिक घटनाओं को विषय है; अत: नागरिक शास्त्र तथा इतिहास शिक्षण द्वारा अच्छे नागरिक पैदा किए जा सकते हैं।

(7) **नैतिक सिद्धान्तों की शिक्षा देना**—इतिहास शिक्षण द्वारा बालकों को नैतिक-प्रशिक्षण दिया जाता है। इतिहास बालकों को 'सत्यमेव जयते' का पाठ पढ़ा है, जिससे नैतिक-जीवन का स्तर ऊँचा उठता है। महान पुरुषों ने अपने उच्च आदर्शों हेतु किस प्रकार हँस-हँसकर बलिदन किया इसके लिए वे अपने स्वार्थ, ध्येयप्रियता, न्याय, धर्म के कारण आज भी जीवित हैं और रहेंगे।

माध्यमिक तथा पूर्व माध्यमिक स्वत: कहानियों द्वारा बालकों को नैतिक-सिद्धान्तों का बोध कराया जा सकता है। शिक्षक के आदर्श भी उच्च होने चाहिए।

भारतवर्ष का तात्कालिक आवश्यकताओं की दृष्टि से इतिहास-शिक्षण के यह उद्देश्य होने आवश्यक हैं। परनतु शिक्षक की दृष्टि से शिक्षण-उद्देश्य मूल्यांकन विधि पर आधारित है। क्योंकि शिक्षण जगत में इस विधि ने एक क्रान्तिकारी बदलाव किया है। इसमें शिक्षण के उद्देश्यों के व्यावहारिक-पक्ष पर अधिक महत्व दिया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने इतिहास के शिक्षण के जिन व्यावहारिक उद्देश्यों का निर्माण किया है, वे इस प्रकार हैं—

### इतिहास शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्य

1. शिक्षार्थी को विषय से सम्बन्धित पदों, प्रत्ययों, तथ्यों, घटनाओं, सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना।
2. विद्यार्थियों में इतिहास से सम्बन्धित प्रत्ययों, सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं आदि के ज्ञान को नवीन परिस्थितियों में प्रयुक्त करने की क्षमता लाना।
3. विद्यार्थी में इतिहास के शिक्षण द्वारा अपेक्षित कौशल लाना।
4. विद्यार्थी में इतिहास के द्वारा तर्कपूर्ण चिन्तन लाना।
5. इतिहास के अध्ययन द्वारा सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सद्भावना की अभिरुचि तथा अभिवृत्तियों को पैदा करना।

### उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखना

इन उद्देश्यों को माध्यमिक तथा उच्चतर-माध्यमिक स्तरों पर भली प्रकार सम्पादित किया जा सकता है, क्योंकि सामूहिक रूप में समस्त उद्देय इतिहास शिक्षण को

प्रगतिशील एवं प्रभावशाली बनाते हैं। इनको व्यावहारिक-पक्ष बालक ज्ञानामक, भावात्मक तथा क्रियात्मक मानसिक पक्षों से सम्बन्धित होते हैं जो शिक्षा के अन्तिम मूल्यों, सत्यम्, शिवम् तथा सुन्दरम् की प्राप्ति में योग देते हैं। इसलिए इतिहास शिक्षक को इन उद्देश्यों के विशिष्ट-व्यावहारिक रूप को समझ लेना अधिक जरूरी हैं इन उद्देश्यों के व्यावहारिक रूप की समीक्षा इस प्रकार है—

**प्रथम उद्देश्य**—ऐतिहासिक तथ्यों, पदों, प्रत्ययों, सिद्धान्तों एवं घटनाओं का बोध कराना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षार्थी में अधोलिखित विशिष्ट व्यवहार-परिवर्तन वांछनीय है—

1. वह ऐतिहासिक तथ्यों एवं सिद्धान्तों का प्रत्यास्मरण कर लेता है।
2. वह इन तथ्यों एवं सिद्धान्तों को पहिचान लेता है।
3. वह ऐतिहासिक तथ्यों, उदाहरणों को भी पहिचान लेता है।
4. वह सम्बन्धों को पहिचान लेता है; जैसे—

   (अ) भूतकाल एवं वर्तमान।

   (ब) प्रेरणा तथा क्रिया।

   (स) साधन एवं साध्य।

   (द) समय के क्रम आदि।
5. वह ऐतिहासिक तथ्यों का वर्गीकरण भी कर लेता है।
6. वह सांकेतिक रूप में सूचनाओं को अनुवाद भी कर लेता है।
7. वह ऐतिहासिक तथ्यों एवं विचारों का भी विभेदीकरण कर लेता है।
8. वह ऐतिहासिक मानचित्र, चार्ट, चित्र, समय रेखा को समझ लेता है।

**द्वितीय उद्देश्य**—शिक्षार्थी में इतिहास सम्बन्धी पदों, प्रत्ययों, सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं आदि के ज्ञान को नई परिस्थितियों में प्रयुक्त करने की क्षमता लाना।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विशिष्ट व्यवहार परिवर्तन इस प्रकार है—

1. वह ऐतिहासिक परिस्थिति का विश्लेषण कर लेता है।
2. वह परिस्थिति सम्बन्ध महत्वपूर्ण तथ्यों का चयन कर लेता है।
3. वह परिस्थिति का वर्णन कर लेता है और सम्भाव्य समाधान का प्रतिपादन भी कर लेता है।

4. वह भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों, कारण एवं प्रभाव, साधन एवं क्रिया तथा समयानुक्रम स्थापित कर लेता है।

5. वह ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर महत्वपूर्ण निष्कर्ष भी निकाल लेता है और मूल्यांकन कर लेता है।



6. वह ऐतिहासिक तथ्यों की परिस्थिति के वर्णन के लिए पर्याप्तता और अपर्याप्तता को समझ लेता है।

7. वह ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर वर्तमान को समझ लेता है तथा भविष्य की गतिविधियों के बारे में सम्भाव्य अनुमान भी लगा लेता है।

8. वह ऐतिहासिक तथ्यों के निष्कर्षों तथा परिणामों के आधार पर समाजीकरण भी कर लेता है।

**तृतीय उद्देश्य**—शिक्षार्थी में इतिहास के शिक्षण द्वारा अपेक्षित कौशल लाना है। इसके लिए विशिष्ट व्यवहार उद्देश्य इस प्रकार है—

1. वह ऐतिहासिक मानचित्रों, चार्टों, चित्रों एवं प्रदर्शनातमक साधनों का उपयोग सुचित रूप में कर सकें।

2. वह ऐतिहासिक मानचित्रों, समय-रेखा तथा रेखाचित्रों का निर्माण कर सकें।

3. वह सहायक इतिहास की पुस्तकों तथा सन्दर्भ ग्रन्थों की पुस्तकों को भी पढ़ सकें।

4. इतिहास के नियमों, सिद्धान्तों को सही तरीके से व्यक्त करने की कुशलता का होना।

**चतुर्थ उद्देश्य**—शिक्षार्थी में इतिहास के अध्यापन में अपेक्षित अभिरुचि एवं अभिवृत्ति पैदा करना। इस उद्देश्य का विशिष्ट व्यवहार-उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. वह इतिहास के पढ़ने, समझने तथा अपने शब्दों में प्रस्तुत करने के लिए आकर्षित हो।

2. वह इतिहास के विधि ग्रन्थों तथा मौलिक रचनाओं के प्रति रुचि लें।

3. आधुनिक घटनाओं को अतीत की घटनों के आधार पर वाद-विवाद में रुचि लें।

4. महान पुरुषों की जीवनियों तथा शहीदों की वीरगाथाओं के पढ़ने में रुचि लें।

**पंचम उद्देश्य**—शिक्षार्थी में इतिहास के शिक्षण से तर्कपूर्ण चिन्तन लाना।

इस उद्देश्य का विशिष्ट व्यवहार-उद्देश्य इस प्रकार हैं—

NOTES

1. वह ऐतिहासिक घटनाओं एवं तथ्यों का विश्लेषण तर्कपूर्ण तरीके से कर लेता है।
2. वह ऐतिहासिक प्रदत्तों के आधार पर तार्किक तरीके से निर्णय ले लेता है।
3. वह ऐतिहाकसक परिस्थितियों को अध्ययन वैज्ञानिक तरीके से कर लेता है।
4. वह ऐतिहासिक घटनाओं का विवेचन समय, दूरी तथा समाज के मानदण्डों के आधार पर तार्किक तरीके से कर लेता है।

आधुनिक समय में शिक्षण के क्षेत्र में इन उद्देश्यों को ही विशेष महत्व दिया जाता है, क्योंकि यह उद्देश्य शिक्षण की प्रक्रिया तक ही सीमित नहीं है अपितु परीक्षण की प्रक्रिया में भी इनका प्रयोग किया जाता है। बालक के व्यवहार में बदलाव शिक्षण की प्रक्रिया द्वारा ही लाया जाता है। यह व्यवहार-परिवर्तन गुणात्मक तथा परिणात्मक दोनों ही प्रकार का होता है। इसलिए व्यवहार परिवर्तन के मूल्यांकन के लिए शिक्षण-उद्देश्यों को ही ध्यान में रखना होता है तथा शिक्षण के गुणात्मक और परिणात्मक विकास के लिए जरूरी है कि शिक्षण उद्देश्यों के ववहारिक पक्ष को ाली प्रकार सम समझना चाहिए, तभी शिक्षण एवं परीक्षण क्रियाओं में समन्वय स्थापित कर सकेगा। सीखने के अनुभवों तथा व्यवहारबदलाबों का प्रतिपादन शिक्षण-उद्देशों के आधार पर किया जा सकता है।

### (2) नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Civics Teaching)

लक्ष्य के स्वाभावादि तथा शिक्षा के लक्ष्यों के सम्बन्ध में थोड़ा-सा ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद अब हम देखेंगे कि वर्तमान परिस्थितियों में नागरिकशास्त्र के शिक्षण द्वारा किन-किन लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है?

नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को विभिन्न विद्वानों ने पृथक्-पृथक् रूप से वर्णन किया है। इन लक्ष्यों के सम्बन्ध में बिनिंग तथा बनिंग (Bining and Bining) लिखते हैं—"**नागरिकशास्त्र शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य अचछे नागरिक पैदा करना है तथा छात्रों की इस प्रकार सहायता करना है जिससे उनमें नागरिकता के गुणों का विकास हो।**" इस प्रकार के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्रों को समाज तथा शासन-व्यवस्था का पूरा-पूरा देना आश्यक है। आगे लक्ष्यों का ही वर्णन करते हुए यही दोनों विद्वान लिखते हैं-"नागरिकशास्त्र के शिक्षण के द्वारा छात्रों को इस योग्य बना दिया जाए कि वे सामाजिक समस्याओं की जटिलताओं

NOTES

को समझ सकें और उनके समाधान में महत्वपूर्ण योगदाना दे सकें।" इसी तरह विभिन्न विद्वानों ने पृथक्-पृथक् लक्ष्यों का वर्णन किया है। उन सबका यहाँ पर उल्लेख करने से पुस्तक का आकार अत्यधिक बढ़ जाने का भय है, किनतु उन सब के सार-रूप में हम कह सकते हैं कि वर्तमान युग में नागरिकशास्त्र शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य होने चाहिए—

(1) आदर्श नागरिकता की शिक्षा।

(2) सामाजिक जटिलताओं को समझाने की योग्यता का विकास।

(3) राष्ट्रीय सद्भावना का विकास।

(4) देश की शासन-प्रणाली का ज्ञान।

(5) विकसित दृष्टिकोण का निर्माण।

(6) सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान।

(7) आदर्श नेतृत्व का विकास।

(8) चरित्र-निर्माण करना।

(9) तर्क एवं निर्णय-शक्ति का विकास।

इनका विस्तृत उल्लेख यहाँ दिया गया है—

(1) **आदर्श नागरिकता की शिक्षा**—नागरिकशास्त्र के शिक्षण द्वारा आदर्श नागरिकता की शिक्षा बड़ी सरलता से दी जा सकती है। नागरिकशास्त्र के शिक्षण के द्वारा हम छात्रों में प्रजातन्त्रात्मक गुणों का बड़ी सरलता से विकास कर सकते हैं। वैसे तो सभी सामाजिक विषयों का लक्ष्य ही बालकों को आदर्श नागरिक बनाना है, किन्तु नागरिकशास्त्र के द्वारा यह कार्य बड़ी सुगमता से किया जा सकता है। इसका प्रमख कारण है कि नागरिकशास्त्र हमें अनेक राजनैतिक तथा सामाजिक तथ्यों का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करता है और एक अच्छे नागरिक को कुछ आवश्यक तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त जरूरी है। बिना तथ्यों के ज्ञान के, न तो समस्याओं का समाधान ही हो सकता है और न छात्रों की चिन्ता-शक्ति का ही विकास हो सकता है। इसके अतिरिक्त नागरिकशास्त्र के द्वारा हम अपने छात्रों में उन अन्य गुणों का भी विकास अधिकसरलता से कर सकते हैं जो एक आदर्श नागरिक में हाने चाहिए। इन गुणों में सहिष्णुता, उदारता, सहानुभूति, सहकारिता, उत्तरदायित्व लेने की योग्यता एवं अन्य अनेक अच्छी आदतों का निर्माण तथा विकास प्रमुख हैं।

(2) **सामाजिक जटिलताओं को समझाने की योग्यता का विकास**—जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता जा रहा है और उद्योगों की प्रगति होती जा रही है, वैसे ही सामाजिक व्यवस्था तथा समस्याएँ दिन-प्रति-दिन जटिल होती जा रही हैं। गाँवों की आबादी घट रही हैं, नगरों में आबादी बढ़ रही है, नयी-नयी सामाजिक संस्थाएँ बन रही हैं। नये-नये समूहों का निर्माण होता जा रहा है। प्राचीन सामाजिक परम्पराओं का अन्त होता जा रहा है तथा नये-नये सामाजिक सम्बन्ध उभर रहे हैं। इन परिस्थितियों में सामाजिक व्यवस्था की जटिलता को समझना बड़ा कठिन हो गया है, किन्तु एक सफल नागरिक के लिए इन जटिलताओं को समझना जरूरी है, बिना इन्हें समझे वह अपने कर्तव्यों का न तो पालन ही कर सकता है औ न विभिन्न समस्याओं का समाधान ही कर सकता है और न समाज की प्रगति में किसी प्रकार का सहयोग ही दे सकता है। अत: नागरिकशास्त्र का दूसरा प्रमुख लक्ष्य छात्रों को इस योग्य बनाना है कि वे वर्तमान समाज की अपने जटिलताओं को समझ सकें, उनके समाधान के लिए प्रयास करें और इस प्रकार वे समाज के एक योग्य तथा उपकारी अंग बन सकें।

(3) **राष्ट्रीय सद्भावना का विकास**—अब हम एक प्रजातन्त्र देश के स्वतन्त्र नागरिक हैं। हमें अब अपने अन्दर पूर्ण राष्ट्रीय भाचना जागृत करनी है। जबतक हमें राष्ट्रीय भावना जागृ त नही होगी व जब तक हम हृदय से यह अनुाव नहीं करने लगेंगे कि यह मेरा अपना देश है, तब तक हम देश के राजनैतिक और सामाजिक उत्थान में कभी भी भाग नहीं ले सकेंगे और संकुचित विचारधारा के मरीज बने रहकर परम्परा से झगड़ते ही रहेंगें इन परस्पर झगड़ों को अन्य कोई विदेशी अनुचित लाभ उठाकर हम पर प्रशासन करेगा। अत: देश के अत्थान हेतु जरूरी है कि हम देश के प्रति उदासीन न रहें। इसलिए नागरिकशास्त्र के शिक्षण द्वारा हमें अपने छात्रों में पूरी-पूरी राष्ट्रीयता का विकास करना चाहिए। हमें नागरिकशास्त्र शिक्षण के द्वारा छात्रामें में यह भावना पैदा कर देनी चाहिए कि वह कम-से-कम यह अनुभव करने लगे कि यह मेरा अपना देश है।

(4) **देश की शासन-प्रणाली का ज्ञान**—देश के प्रत्येक नागरिक के लिए देश की शासन-व्यवस्था तथा सरकारी कार्य-प्रणाली का ज्ञान अत्यन्त जरूरी है। गणतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत नागरिकों को इस प्रकार के ज्ञान की ओर आवश्यकता हो जाती है। जब तक नागरिकों को देश की शासन-व्यवस्था का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं होगा, वह कभी भी शासन-व्यवस्था के अनुसार कार्य न कर पायेगा, और न शासन-व्यवस्था में सक्रिय रूप से कोई भाग ही ले पायेगा। गणतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था में प्रत्येक नागरिक

को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष-रूप से शासन-व्यवस्था में भाग लेना पड़ता है। ुलतः शासन व्यवस्थाओं, के समुचित ज्ञान के अभाव में क्ाु अहित होने की सम्भावना है। नागरिकशास्त्र को इस उद्देश्य की प्राप्ति अवश्य करनी चाहिए।

NOTES

(5) **विकसित दृष्टिकोण का निर्माण**—वर्तमान युग में जबकि हम 'विश्व-बन्धुत्व' की भावना का विकास करने के उपदेश देते हैं, कई व्यक्तियों के संकुचित दृष्टिकोण को देखकर हमें मानसिक आघात होता है। जबलपुर के दंगे, असम के संघर्ष तथा सिक्खों एवं बंगालियों के कलकत्ते में ुए दंगे, भाषावादिता तथा प्रन्तीयता आदि हमारी संकुचित दृष्टिकोणों के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इससे हमारी सुनागरिकता की भाचना को ठेस लगती हैं इससे राष्ट्रीय भावना क्षीण होती है। हमें नागरिकशास्त्र शिक्षण के द्वारा छात्रों में ऐसी भाचना का विकास कर देना है कि वे यह समझ सकें कि हम सभी देशवासी एक हैं। सभी भाषा, प्रांत, धर्म आदि अपनी-अपनी सम्पत्ति हैं। उन्हें हमको आदर की दृष्टि से देखना चाहिए, तभी राष्ट्र का कल्याण सम्भव है।

(6) **सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान**—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं समाज से अलग व्यक्ति का कोई भी अस्तित्व नहीं है। एक अकेला व्यक्ति कुछ भी नहीं होता है। उसे हर हालत में समाज में रहना पड़ेगा, किन्तु समाज में रहना भी एक कला है। इस कला के द्वारा व्यक्ति अपने समाज में समायोजित करता है। समाज में अपने को ठीक से समायोजित करने हेतु समाज की संचालन-प्रणाली तथा व्यवस्था का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है, जिस व्यक्ति को समाज की व्यवस्था का ज्ञान नहीं है, वह समाज में ठीक प्रकार से समायोजित नहीं कर सकता है। अतः छात्रों को इस प्रकार की शिक्षा की जरूरत है, जो छात्रों को समाज की व्यवस्था का ठीक-ठीक ज्ञान प्रदान करें। इस कार्य को जितनी सफलतापूर्वक नागरिकशास्त्र सम्पन्न कर सकता है, शायद अन्य सामाजिक विद्वानों द्वारा यह कार्य इतनी सफलतापूर्वक सम्पन्न करना सम्भव नहीं है। अतः नागरिकशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि वह छात्रों को अपनी सामाजिक व्यवस्था का बोध प्रदान करे।

(7) **आदर्श नेतृत्व का विकास**—किसी भी देश की प्रगति में सबसे प्रमुख हाथ देश के नेतृत्व का होता है। नेतृत्व पर न केवल देश की उन्नति ही निर्भर करती है वरन् जहाँ कहीं भी नेतृत्व की आवश्यकता पड़ती है, वहीं पर सफलता भी नेतृतव पर निर्भर कर जाती है। नेता ऐसा हो जिसमें उच्च चरित्र हो, दृढ़ता हो, तर्क, चिन्तन तथा विश्लेषण की शक्ति हो, परिस्थितियों को समझने एवं उनके अनुसार कार्य करने की क्षमता हो, जो आशावाी, ईमानदार,

दयालु तथा सहयोगी हो। देश, समुदाय, समाज तथा अन्य संस्थाओं की प्रगति के लिए हमें आदर्श नेता का निर्माण करना है। नागरिकशास्त्र इस कार्य को भली-भाँति कर सकता है। इसलिए नागरिकशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि वह देश में आदश नेतृत्व के निर्माण की पूर्ति करे।

NOTES

(8) **विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास**—द्रुतगामी यातायात के साधनों तथा युद्ध के आधुनिकतम भयंकर अस्त्र-शास्त्रों ने हमें यह सोचने के लिए विवश कर दिया है। कि अब हिटलर के समान 'अनध-राष्ट्रीयता' (Blind Nationalism) की भावना से काम नहीं चल सकता है। यदि वर्तमान में कोई भी शासन इस प्रकार की 'अन्ध-राष्ट्रीयता' की भावना के प्रवाह में आकर कोई अनुसूचित कदम उठा लेता है तो उसके फलस्वरूप करोड़ों प्राणियों को अपने जाने से हाथ धोना पड़ेगा। मानव जीवन तथा मानव-कल्याण हेतु यह जरूरी हो गया है कि हम समस्त मानव जाति को आदर की दृष्टि से देखें। इतिहास साक्षी है, जिस किसी भी देश ने जब कभी भी अन्ध राष्ट्रीयता का दृष्टिकोण अपनाया है, वह समाप्तप्राय: हो गया है। इसके अलावा वर्तमान में सभी राष्ट्र एक-दूसरे पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष से इतने सम्बन्धित हो गये हैं कि एक देश की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्रियाओं का प्रभाव अनिवार्य रूप से विश्व के अन्य देशों पर पड़ता है। इन सब तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान युग 'वसुधैव् टुम्बकम्' का युग है। फलत: इस विचारधारा का विकास हमें अपने छात्रों में करना चाहिए नागरिकशास्त्र के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह एक सामाजिक प्राणी होने के नाते इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयास करे।

(9) **चरित्र-निर्माण करना**—चरित्र किसी राष्ट्र की सबसे बड़ी सम्पदा होती है। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के जीवन में चरित्र का बड़ा महत्व है। मानव-जाति पर जब भी विपत्तियाँ आयी हैं, उनका मूल कारण केवल क ही रहा है कि मनुष्य चरित्रहीन हो गया था। चरित्रहीनता तो विपत्तियों की जड़ है। जीवन में चरित्र के इतने बड़े महत्व को देखते हुए ही शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा के कई उद्देश्यों में चरित्र-निर्माण के उद्देशें को भी शामिल किया। नागरिकशास्त्र शिक्षण द्वारा बालकों में अनेक चारित्रिक गुणों का विकास बड़ी सरलता से किया जा सकता है। अत: नागरिकशास्त्र शिक्षण का अन्य लक्ष्यों के अतिरिक्त एक लक्ष्य दात्रों के चरित्र का निर्माण करना है।

(10) **तर्क एवं निर्णय-शक्ति का विकास**—नागरिकशास्त्र शिक्षण का अन्तिम उद्देश्य छात्रों में तर्क एवं निर्णय-शक्ति का विकास करना है। सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में इनका बड़ा महतव है। सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन

NOTES

में अनेक समस्याएँ आती हैं। इनके समाधान के लिए उचित रूप से समस्या के विभिन्न पहलुओं पर तर्क करना पड़ता है एवं अन्त में एक निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है। इस प्रकार सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं के समाधान हेतु तर्क एवं निर्णय-शक्ति का विकास करना जरूरी है। नागरिकशास्त्र छात्रों के सम्मुख अनेक इसी प्रकार की समस्याएँ प्रस्तुत करे।

छात्रों को तर्क एवं निर्णय लेने के कई अवसर प्रदान कर सकता है। नागरिकशास्त्र का एक प्रमुख उद्देश्य छात्रों में उचित तर्क तथा निर्णय-शक्ति का विकास करना भी है।

## जनतन्त्रीय भारत में नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching Civics in Democratic India)

वर्तमान जनतन्त्रीय भारत में नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को दो समूहों-व्यक्तिगत तथा सामाजिक में विभाजित कर सकते हैं। इन समूहों के अन्तर्गत कई उद्देश्यों का समावेश किया जा सकता है, किन्तु भारत की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, जिन उद्देश्यों की विस्तृत व्याख्या किसी न किसी रूप में ऊपर की जा चुकी है। इसलिए इन उद्देश्यों की व्याख्या को पुनः दुहराना व्यर्थ ही होगा। नीचे केवल उद्देश्यों का वर्गीकरण मात्र ही दिया जा रहा है।

**(1) व्यक्तिगत उद्देश्य (Individual Objectives)**

1. चारित्रिक विकास
2. मानसिक विकास
3. तर्क एवं निर्णय शक्ति का विकास
4. व्यक्तित्व-विकास

**(2) सामाजिक उद्देश्य (Social Objectives)**

1. सामाजिक परिस्थिति का ज्ञान
2. शासन-व्यवस्था का ज्ञान
3. नेतृत्व का विकास
4. जनतान्त्रीय नागरिकता का विकास
5. राष्ट्रीयता का विकास
6. भावात्मक एकता का विकास

## विभिन्न स्तरों पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Different Levels of Civics Teaching)

NOTES

अभी तक हमने नागरिकशास्त्र शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों की चर्चा की है। किन्तु कभी-कभी यह समय भी सामने आ जाती है कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर नागरिकशास्त्र-शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए? शिक्षा के अनेक स्तर हैं, जैसे-प्राथमिक स्तर?, माध्यमिक स्तर, उच्च माध्यमिक स्तर तथा उच्च स्तर। भारतीय परिवेश के अन्तर्गत प्राय: समस्त राज्यों में नागरिकशास्त्र का शिक्षण केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर तक ही सीमित रहता है। अत: स्तरानुकूल उद्देश्यों की चर्चा केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर तक ही सीमित रहेगी। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए, इसकी चर्चा की गई है—

### (1) प्राथमिक स्तर (Primary Stage)

प्राथमिक स्तर में पहली से पाँचवीं कक्षा तक आती है। इन कक्षाओं में छात्र की आयु करीब छ: वर्ष से ग्यारह वर्ष तक रहती है। इस आयु के बालकों में भाव-बोध का विकास नहीं हो पाता है। फलस्वरूप, वे स्थूल ज्ञान ही प्राप्त करना पसन्द करते हैं। इसके लिए कहानी, रोचक विवरण, चित्रमय लघु-कथाएँ आदि अधिक पसन्द करते हैं। उनका भाषागत विकास भी इस आयु में सीमित ही होता है। अत: वे अधिक पढ़ भी नहीं सकते हैं। इसलिए उन्हें मौखक या व्यवहार में ही ज्ञान प्रदान करना चाहिए। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर प्राथमिक स्तर पर नागरिकशस्त्र शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं—

1. बालकों में स्वस्थ आदतों का निर्माण करना।
2. बालकों में सामाजिकता, समाज-व्यवहार एवं सामाजिक कुशलता का विकास करना।
3. उनका चारित्रिक विकास करना।
4. उनमें देश-प्रेम तथा अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना।
5. अनुशासन का व्यावहारिक ज्ञान तथा अभ्यास विकसित करना।
6. देश-विदेश की महान् विभूतियों से परिचित कराना।

### (2) जूनियर हाईस्कूल स्तर (Junior High School Stage)

जूनियर हाईस्कूल या उच्च प्राथमिक विद्यालयों में डठी से आठवीं तक की कक्षाएँ होती हैं। इन कक्षाओं में 13 से 15 वर्ष तक की आयु के वे बालक

पढ़ते हैं जो किशोरावस्था प्राप्त करना प्रारम्भ करते है। इस स्तर पर उनका शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक तथा नैतिक विकास काफी अच्छा हो गया होता है। उनमें स्मरण-शक्ति, भाषा-ज्ञान, अनुभव, तर्क-शक्ति आदि का भी पर्याप्त विकास हो चुका होता है। इन सब बातों को ध्यान मेंरे रखते हुए इस स्तर हेतु नागरिकशास्त्र शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं—

1. राष्ट्र की शासन-व्यवस्था का सामान्य ज्ञान प्रदान करना।
2. स्थानीय तथा राष्ट्रीय समस्याओं तथा उनके समाधान के उपयोग से अवगत कराना।
3. देश-विदेश और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का परिचय देना।
4. नागरिक गुणों का विकास करना।
5. नागरिकता का विकास करना।

### (3) माध्यमिक स्तर (Secondary Stage)

इस स्तर पर नवीं तथा दसवीं की कक्षाएँ आती हैं। इन कक्षाओं में आते-आते बालक पूरी तरह किशोर बन जाता है, जिसकी शारीरिक, मानसिक कल्पना, तर्क तथा निर्णय से सम्बन्धित शक्तियाँ अपनी चरम सीमा पर होती हैं। वह अपने उत्तरदायित्व तथा सूक्ष्म विचारों को भी समझने लगता है। उसमें दूरदर्शिता की भावना भी विकसित हो जाती है। भाषा का उसे अच्छा बोध हो जाता है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक स्तर के लिए नागरिकशास्त्र शिक्षण के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं—

1. राष्ट्र की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का ज्ञान प्रदान करना।
2. नागरिकशास्त्र के सामान्य पदों, प्रत्ययों तथा सम्बन्धों का ज्ञान प्रदान करना।
3. राष्ट्र-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास करना।
4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना।
5. स्थानीय शासन का ज्ञान कराना।
6. नागरिक गुणों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।
7. राजनैतिक दलों, उनक उद्देश्यों एवं सरकार का प्रदान प्रदान करना।

### (4) उच्च माध्यमिक स्तर (Higher Secondary Stage)

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आते-जाते बालकों की समस्त शक्तियाँ अपनी पूर्णता प्राप्त कर चुकी होती हैं। उसमें भाषा-ज्ञान, तर्क-शक्ति, निर्णय-शक्ति, सूक्ष्म-चिन्तन, विश्लेषण शक्ति तथा दूरदर्शिता का पर्याप्त विकास हो चुका होता है। अत: उसे इन विकसित शक्तियों के अनुसार शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इस स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य होने चाहिए—



1. नागरिकशास्त्र के व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान कराना।
2. नागरिक कुशलता तथा दाँयित्वों का बोध कराना।
3. नैतिक चरित्र, अनुशासन तथा अधिकार एवं कर्तव्यों के प्रति समुचित एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करना।
4. देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास करना।
5. सामाजिक कुरीतियों का ज्ञान कराना तथा उन कुरीतियों के प्रति नकारात्मक भावना का विकास करना।
6. लोकतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था के अनुरूप जीवन-दर्शन विकसित करने की क्षमता पैदा करना।
7. देश के विभिन्न राजनैतिक दलों के सिद्धान्त, उद्देश्य तथा उनकी अच्छाइयों तथा बुराइयों से अवगत कराना।

### (3) भूगोल शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Geography Teaching)

भूगोल के शिक्षण उद्देश्यों का विश्लेषण करने पर उनको दो मुख्य भागों में विभाजित कर सकते हैं—

**(1) बालक के मानसिक विकास की दृष्टि से—**

1. ज्ञान-उद्देश्य
2. ज्ञान-प्रयोग का उद्देश्य
3. अभिरुचि तथा अभिवृत्ति विकास उद्देश्य
4. सामाजिक उद्देश्य।

**(2) भूगोल शिक्षण के सामान्य उद्देश्य—**

1. स्वदेश प्रेम तथा राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास।

NOTES

2. विश्व-बन्धुत्व एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास।
3. जीवकोपार्जन की क्षमता का विकास।
4. भूगोल की शिक्षा द्वारा व्यवसाय, कृषि तथा उद्याग धन्धों की उन्नति में सहयोग एवं जीवन परिस्थितियों के भौगोलिक तथ्यों के प्रति सूझ का विकास।
5. अवकाश के समय का सदुपयोग तथा पर्यटन की इच्छा की जागृति।
6. सुयोग्य नागरिक तैयार करना।

यहाँ इन उद्देश्यों का संक्षिप्त में विवेचन किया गया है—

(i) भूगोल के शिक्षण द्वारा बालक के ज्ञानकोश को विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है। इसके द्वारा बालकों को भूगोल के तथ्यों, सिद्धान्तों के नियमों तथा विशिष्ट शब्दावली से परिचित कराते हैं। उदाहरणार्थ-भूगोल के पद (terms) जलवायु, वायुमण्डल, सौरमण्डल, महासागर, महाद्वीप, कछार, पहाड़, दैनिक गति, वार्षिक गति, आर्द्रता, मानचित्र, प्रक्षेप आदि।

**भूगोल के सिद्धान्त एवं नियम**—दिन-रात का छोटा बड़ा होना, ऋतु परिवर्तन, वायु भार की पेटियों का खिसकना, ध्रुवों पर छः माह का दिन तथा छः माह की रात, अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा। प्रमणिक समय, जलवायु एवं मानवीय निवास।

(ii) भूगोल शिक्षण का दूसरा उद्देश्य अधिक महत्वपूर्ण है; क्यांकि वह ज्ञान व्यर्थ है, जिसका जीवन में प्रयोग नहीं हो पाता है। भूगोल के तथ्यों, प्रत्ययों, सिद्धान्तों तथा नियमों का पुस्तकीय ज्ञान भले ही कर लें किन्तु जब तक हम उनको अपने व्यावहारिक जीवन में प्रयोग नहीं करेंगे तब तक उनका वास्तविक मूल्य कुछ भी नहीं है। भूगोल की शिक्षा का जीवन से गहन सम्बन्ध है। दैनिक जीवन में भूगोल के तथ्यों का विशेष महत्व हैं परन्तु वर्तमान शिक्षण परीक्षा-केन्द्रित है। अत: शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि भूगोल की शिक्षा को सामाजिक महत्व देते हुए बालकों के व्यावहारिक जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करें। तभी भूगोल शिक्षण बालक के विकास की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

(iii) भूगोल के अध्ययन से कारण एवं प्रभाव में सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता का विकास होता है, जिससे बालकों में वस्तुनिष्ठ रूप में चिन्तन करने की शक्ति का विकास होता है और उनका व्यापक दृष्टिकोण हो जाता है। क्योंकि विश्व की मानव जातियों की विषमताओं का कारण

भौगोलिक तत्वों का प्रभाव है। मानवीय क्रियाओं का अध्ययन तुलानात्मक तरीके से करता है। इस प्रकार भूगोल के शिक्षण से बालकों तथा बालिकाओं की अवलोकनात्मक, तार्किक, विचारातमक शक्तियों का विकास होता है।

NOTES

(iv) भूगोल की विषय-वस्तु मानव एवं वातावरण है। इसलिए इसे सामाजिक विषय कहना अधिक उचित होगा। बालकों के इस विषय की शिक्षा द्वारा मानवता, सहकारिता, सहिष्णुता, उदारता, एकता व सद्व्यावहारिकता आदि गुणों का सृजन किया जाता है। भारतीय जनतंत्र के सामाजिक गठन में इन सामाजिक मूल्यों की अधिक जरूरत है। विश्व-नागरिकता का सृजन भूगोल की शिक्षा द्वारा ही सुगम है। भूगोल की व्यवस्थित शिक्षा द्वारा देश के नागरिकों में राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास सरलता से किया जा सकता है। अतः भूगोल शिक्षण के समय इस उद्देश्य पर जोर देना अत्यन्त आवश्यक है।

उपयुक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि भूगोल की शिक्षा का बालक के व्यक्तिगत जीवन में विशेष महत्व है। अब हम राष्ट्रीय स्तर की दृष्टि से भूगोल की शिक्षा के महत्व का अध्ययन करेंगे।

### (2) राष्ट्रीय स्तर के लक्ष्यों की दृष्टि से भूगोल शिक्षण के उद्देश्य

(i) भूगोल के अध्ययन के समय बालक व बालिकायें अपने देश के प्राकृतिक, दृश्यों, विशाल पर्वत, नदियाँ, वन, खनिज पदार्थ, पशु व मानव के सम्बन्ध में जानकारी करते हैं। इस भौगोलिक वातावरण में मानव ने किस प्रकार उन्नति की है तथा विश्व में किन-किन वसतुओं के उत्पादन में ख्याति प्राप्त कर ली है। इस प्रकार के अध्ययन से बालक व बालिकाओं में स्वदेश-प्रेम की भावना स्वतः ही जागृत हो उठती है। अध्यापक को यह भी ध्यान में रखना है कि यदि राष्ट्रीय एकता की भावना को संकुचित रूप में विकसित किया तो वह अपने अन्तिम लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के प्राप्ति में सफल नहीं हो सकेगा। शिक्षक को विश्व-बन्धुत्व का आदर्श सामने रखना चाहिए।

(ii) भूगोल के अध्यापन के समय छात्रों को यह ज्ञान कराना चाहए कि कोई राष्ट्र विश्व में अकेला नहीं रह सकता है। कोई भी राष्ट्र आ आत्म-निर्भर नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र को अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः आधुनिक युग में दूसरे देशों के निवासियों से प्रेम एवं सहयोग की भावना रखना उचित है। मानवीय जैविक तथा सामाजिक विषमता होते हुए भी मानव स्वभाव में कोई भी अन्तर नहीं है। प्रत्येक

NOTES

विश्व का नागरिक जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत करना चाहता है। इस प्रकार की शिक्षा से विद्यार्थियों को अपने देश तथा विश्व का सुयोग्य नागरिक बनाया जा सकता है।

(iii) भूगोल के शिक्षण को ऐसा ज्ञान देना चाहिए जो कई भावी जीवनयापन में सहायक हो सके। भूगोल के अध्ययन में प्राकृतिक-साधनों की खोज तथा उनके उपयोग विधि का सुझाव देना है। इस प्रकार के ज्ञान के कृषि, खनिज, वन उद्योग तथा वाणिज्य आदि उद्योग-धन्धों के लिए प्रोत्साहन मिलता है। योग्य शिक्षक अध्यापन के समय ही ज्ञान-प्रयोग पक्ष पर भी जोर देता रहता है।

(iv) भौगोलिक परिस्थितियों के अध्यापन के समय शिक्षक को यह भी व्याख्या करना जरूरी है कि मानव ने अपने को इन परिस्थितियों में किस प्रकार समायोजित किया है। जापान निवासी भूकम्पों से बचने के लिए लकड़ी के मकान बना कर रहते हैं। वातावरण के साथ अनुकूल करने पर अपने जीवन को सुखी एवं प्रगतिशील बना सकते हैं। यद्यपि मानव प्राकृतिक बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रत्यनशील है। इस प्रकार बालकों में उनकी कार्य-क्षमताओं की दृष्टि से अनुकूल शक्ति का विकास करना जरूरी है।

(v) भूगोल की शिक्षा द्वारा देश की कृषि, व्यवसाय तथा उद्योग धन्धों के बारे में बोध होता है कि किस प्रका मानव ने इस सबाक ।विकास किया है। भविष्य में किन-किन धन्धों के विकास के लिए अधिक क्षेत्र है। कोयला, लोहा एवं तेल शक्ति के भण्डार समाप्त होने वाले हैं। अतः कारखानों का भविष्य अन्धकार रूप है। इस रूप के कारण जल-विद्युत शक्ति के विकास पर अधिक जोर दिया जा रहा है। इस प्रकार के उदाहरणों से बालकों में रचनात्मक शक्ति के लिए सूत्र की क्षमता का विकास किया जा सकता है।

(vi) भूगोल की शिक्षा अवकाश के सद्पयोग के लिए विशाल क्षेत्र प्रदान करती है। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, विश्व विभिन्न जातियों के रहन-सहन रीति-रिवाज, विाह प्रणाली के अध्ययन से अधिक मनोरंजन होता है। प्राकृतिक दृश्यों के भ्रमण एवं पर्यटन से समय का सदुपयोग होता है। गर्मियों के लम्बे अवकाश में अध्यापक एवं छात्र पर्वतीय प्रदेशों में मनोरंजन के लिए तथा प्राकृतिक दृश्यों को देखने जाते है। सामान्य पत्रों के पढ़ने तथा विश्व घटनाओं को समझने के लिए भूगोल का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक हैं प्रातः एवं सायंकाल व्यायाम तथा टहलने के लिए

मानवीय वातावरण से परे प्राकृतिक वातावरण ही अधिक उपयोगी होता है।

NOTES

भूगोल शिक्षण के उद्देश्यों का विवेचन बालक तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से किया गया, परन्तु अध्यापक की दृष्टि से शिक्षण उद्देश्य मूल्यांकन-प्रत्यय (Evaluation Concept) पर आधारित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षण जगत में मूल्यांकन विधि ने एक महान बदलाव किया है। इसमें शिक्षण के उद्देश्यों के व्यावहारिक पक्ष को अधिक महत्व दिया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक, अनुसन्धान एपं प्रशिक्षण परिषद् ने भूगोल के शिक्षण के लिए अधोलिखित सामान्य उद्देश्यों को प्रतिपादन किया है।

**भूगोल शिक्षण के सामान्य उद्देश्य**

1. भौगोलिक तथ्यों एवं सिद्धान्तों का बोध करना। (ज्ञान-उद्देश्य)
2. भौगोलिक तथ्यों के ज्ञान से दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधन ढूंढना। (ज्ञान-प्रयोग का उद्देश्य)
3. भौगोलिक तथ्यों के प्रति निरीक्षण और जीवन के तथ्यों को भौगोलिक सिद्धान्त के रूप में समझना। (गुणों के विकास का उद्देश्य)
4. भौगोलिक वातावरण के प्रति रुचि एवं मानवीय क्रियाओं पर सांस्कृतिक प्रभाव को समझना (अभिरुचि विकास उद्देश्य)
5. भौगोलिक तथ्यों पर मानवीय निर्भरता की सराहना की क्षमता का विकास करना। (अभिवृत्ति विकास उद्देश्य)

**सामान्य उद्देश्यों का व्यावहारिक रूप**

उपर्युक्त सामान्य उद्देश्यों में प्रथम दो उद्देश्यों को जूनियर तथा माध्यमिक स्तर पर भली प्रकार सम्पादित किया जा सकता है, परनतु सामूहिक रूप से सभी उद्देश्य भूगोल शिक्षण को प्रगतिशील तथा प्रभावशाली बनाते हैं। इसलिए भूगोल शिक्षक को इन उद्देश्यों के विशिष्ट व्यावहारिक रूप को समझ लेना जरूरी है। तभी वह इनकी प्राप्ति करने में व्यावहारिक पक्ष का विवेचन किया गया है।

**प्रथम उद्देश्य**—भौगोलिक तथ्यों एवं सिद्धान्तों का बोध कराना।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बालक-बालिकाओं में अधोलिखित विशिष्ट व्यवहार परिवर्तन होने चाहिए—

1. भौगोलिक तथ्यों, सिद्धान्तों और परिस्थितियों को पहिचानने एवं उन्हें स्मरण रखने की क्षमता का विकास करना।

NOTES

2. प्राकृतिक दृश्यों एवं भौगोलिक तथ्यों के उल्लेख करने की क्षमता का विकास करना।
3. अपने भौगोलिक वातावरण का विश्लेषण तथा भिन्नता समझने की क्षमता का विकास करना।
4. कारण एवं प्रभाव को जानने और सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता का विकास करना।
5. भौगोलिक विषमता या भौगोलिक तथ्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन की क्षमता का विकास करना।
6. भौगोलिक तथ्यों के वर्गीकरण तथा श्रेणीबद्ध की क्षमता का विकास करना।

**द्वितीय उद्देश्य**—भौगोलिक तथ्यों, सिद्धान्तों, शब्दावली, प्रत्ययों एवं धारणाओं को समझकर अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने की योग्यता का विकास करना।

शिक्षा की दृष्टि से इस उद्देश्य का विशेष महत्व है क्योकि इसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान–प्रयोग उद्देश्य है। अतः इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु बालक बालिकाओं में निम्नलिखित व्यवहार–परिवर्तन होने चाहिए—

**द्वितीय उद्देश्य का व्यावहारिक रूप**

1. भौगोलिक परिस्थिति के विश्लेषण की क्षमता का विकास करना।
2. परिस्थिति सम्बन्ध तथ्यों तथा सिद्धान्तों को पहिचानना और उनकी स्मरण–शक्ति का विकास करना।
3. समस्या सम्बन्धी तथ्यों के चुनाव की क्षमता का विकास करना।
4. समस्या सम्बन्ध कारण एवं प्रभाव का सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता का विकास करना।
5. विशेष तथ्य तथा सिद्धान्त समस्या के समाधान में पूर्ण रूप में या आंशिक रूप में सहायक हैं, इसकी पर्याप्ता की क्षमता का विकास करना।

**तृतीय उद्देश्य**—शिक्षार्थी में भूगोल–शिक्षण द्वारा अपेक्षित कौशल लाना है।

इस उद्देश्य के लिए विशिष्ट व्यवहार–उद्देश्य इस प्रकार है—

1. वह भूगोल के मानचित्रों, चार्टो, चित्रों, प्रदर्शनात्मक साधनों का प्रयोग समुचित रूप में कर सकें।

2. वह भूगोल के मानचित्रों, रेखाचित्रों, मॉडल आदि का निर्माण कर सके।
3. वह भूगोल के सन्दर्भ ग्रन्थों, पत्रिकाओं को भी पढ़ सके।
4. वह भूगोल के नियमों एवं सिद्धान्तों को सही तरीके से व्यक्त करने की कुशलता प्राप्त कर सके।
5. वह भौगोलिक परिस्थितियों को शीघ्र समझ सके।

NOTES

**चतुर्थ उद्देश्य**—शिक्षार्थी में भूगोल के शिक्षण से अपेक्षित अभिरुचि एवं अभिवृत्ति पैदा करना।

इस उद्देश्य को विशिष्ट-व्यवहार-उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. वह भूगोल के पढ़ने, समझने एवं अपने शब्दों में प्रस्तुत करने के लिए रुचि हो।
2. वह भूगोल के मौलिक ग्रन्थों, विविध पत्रिकाओं के पढ़ने में रुचि ले।
3. भौगोलिक घटनाओं तथा परिस्थितियों के समझने में रुचि ले।

**पंचम उद्देश्य**—शिक्षार्थी में भूगोल के अध्यापन से तर्कपूर्ण चिन्तन का विकास कराना।

इस उद्देश्य के विशिष्ट व्यवहार रूप इस प्रकार है—

1. वह भौगोलिक परिस्थितियों एवं तथ्यों का विश्लेषण तर्कपूर्ण तरीके से कर सके।
2. वह भौगोलिक प्रदत्तों के आधार पर तार्किक ढंग से निर्णय ले सके।
3. वह भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से कर लेता है।
4. वह भौगोलिक परिस्थितियों को कारण एवं प्रभाव के रूप में तार्किक ढंग से समझ लेता है।

आधुनिक समय में शिक्षण के क्षेत्र में इन उद्देश्यों को ही विशषे महत्व दिया जाता है, क्योंकि यह उद्देश्य शिक्षण की प्रक्रिया तक ही सीमित नहीं है। अपितु परीक्षण की प्रक्रियाओं में भी इनका प्रयोग होता है। बालक को व्यवहार में बदलाव शिक्षण की प्रक्रिया द्वारा ही लाया जाता है। यह व्यवहार परिवर्तन गुणात्मक तथा परिणात्मक दोनों प्रकार का होता है। इसलिए व्यवहार परिवर्तन के मूल्यांकन में शिक्षण उद्देश्यों को ही ध्यान में रखना होता है; तथा शिक्षा के गुणात्मक विकास एवं परिणात्मक विकास के लिए यह जरूरी है कि शिक्षण एवं परीक्षण की क्रियायें साथ-साथ

सम्पादित हो। परीक्षण शिक्षण पर ही आधारित हो इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक को शिक्षण-उद्देश्यों के व्यावहारिक पक्ष को भली प्रका समझना चाहिए। तभी शिक्षण एवं परीक्षण में समन्वय स्थापित कर सकेगा। सीखने के अनुभवों, तथा व्यवहार-परिवर्तनों का निरूपण इन्हीं शिक्षण उद्देशें के आधार पर किया जा सकता है।

### (4) अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Economics Teaching)

शिक्षण का निर्देशन करने के लिए उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। अर्थशास्त्र शिक्षण एक प्रक्रिया है। इसमें भी पथ का निर्देशन कराने हेतु उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। दूसरे, अर्थशास्त्र शिक्षण एक सविचार तथा सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, फलतः इसके उद्देश्य भी होने जरूरी हैं। अर्थशास्त्र क्योंकि सामाजिक शास्त्र है इसलिए इसके उद्देश्य भी सामाजिक आदर्शों के अनुकूल होंगे। यहाँ हम अर्थशास्त्र शिक्षण के कुछ इसी प्रकार के उद्देश्यों का वर्णन करेंगे।

अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों का उल्लेख करते हुए **बिनिंग** तथा **बिनिंग** (Bining and Bining) ने लिखा है, ''माध्यमिक विद्यालयों में अर्थशास्त्र शिक्षण का उद्देश्य अर्थशास्त्र के आधुनिक सूत्रों का अध्ययन, निरीक्षण तथा प्रचलित पद्धतियों के अनुसार करना होना चाहिए।''

अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों का ही आगे वर्णन करते हुए उक्त विद्वान लिखते हैं कि अर्थशास्त्र शिक्षण के द्वारा ''छात्रों को इस योग्य बनाया जाए कि वे आर्थिक सिद्धान्तों को अपने व्यावहारिक जीवन में प्रयोग कर सकें।''

इस प्रकार लेखक द्वारा अर्थशास्त्र शिक्षण के व्यावहारिक पक्षों पर ही अधिक जोर देते हैं।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल (Marshall) ने अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए लिखा है-''अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य प्रथम ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करना हैं और द्वितीय विशेषतः सामाजिक जीवन में मनुष्य को व्यावहारिक जीवन व्यतीत करने के लिए निर्देशन देना है।''

अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों का विवेचन करते हुए **मुफात** (M.P. Moofatt) ने स्पष्ट रूप से अर्थशास्त्र शिक्षण के निम्नांकित पाँच उद्देश्यों का उल्लेख किया हैं—

(1) बालक तथा बालिकाओं का कुशल उपभोक्ता बनाना।

(2) उन्हें राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने के उपायों से अवगत कराना।

(3) उन्हें बजट के सम्बन्ध में उचित ज्ञान देना।

(4) छात्रों को विभिन्न आर्थिक साधनों से अवगत कराना।

इसी प्रकार सी **सी.ई.एम. जाड** (C.E.M. Zoad) ने अर्थशास्त्र शिक्षण के तीन उद्देश्यों का वर्णन किया है—

(1) प्रत्येक छात्र-छात्रा को अपनी जीविकोपार्जन करने योग्य बनाना।

(2) उन्हें गणतन्त्रात्मक राज्य को सफल नागरिक बनाना।

(3) उन्हें प्रकृति प्रदत्त साधनों तथा शक्तियों के विकास करने तथा प्रयोग करने योग्य बनाना।



**पीगू** (Pigou) ने अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए लिखी है कि अर्थशास्त्र में से दो उद्देश्यों का प्रमुख महत्व हैं—(1) ज्ञान प्राप्त करना तथा (2) व्यावहारिक जीवन की कई समस्याओं का सुलझाना।

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने अर्थशास्त्र-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों को वर्णन किया हैं। सारांश रूप में, हम यहाँ मुख्य उद्देश्यों का स्पष्ट रूप से उल्लेख कर सकते हैं-

(1) छात्रों को देश से अवगत कराना।

(2) छात्रों को जीविका-निर्माण योग्य बनाना।

(3) छात्रों को कुशल उपभोक्ता बनाना।

(4) आर्थिक-समस्याओं का समाधान प्रदान करना।

(5) सहयोग एवं सहकारिता की भावना जागृत करना।

(6) आर्थिक नागरिकता का विकास करना।

(7) तर्क एवं निर्णय-शक्ति का विकास करना।

(8) आर्थिक व्यवस्थाओं का बोध करना।

(9) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।

(10) उत्तरदायित्व की भावना का विकास।

**(1) छात्रों को देश से अवगत कराना—**अर्थशास्त्र शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य छात्रों तथा छात्राओं को देश की आर्थिक स्थिति से अवगत कराना है। देश में प्रकृति प्रदत्त साधन एवं शक्तियाँ क्या हैं, कहाँ-कहाँ उपलब्ध हैं, देश की आर्थिक व्यवस्था में उनका क्या महत्व है, उनका उपयोग किस तरह किया जा रहा है, उन्हें किस प्रकार विकसित किया जा सकता है आदि बातों का ज्ञान हम

NOTES

अर्थशास्त्र शिक्षण के द्वारा अपने छात्रों को प्रदान कर सकते हैं। देश की भौगोलिक स्थिति पहाड़, वन, नदी, खनिज, इत्यादि का ज्ञान उनका हमारी अर्थव्यवस्था में स्थान व महत्व अर्थशास्त्र ही दे सकता है। अतः अर्थशास्त्र शिक्षण का प्रथम उद्देश्य छात्रों को देश के आर्थिक विकास से अवगत कराना है।

(2) **छात्रों को जीविका-निर्माण योग्य बनाना**—प्रत्येक शिक्षा तथा शिक्षण में कुछ-न-कुछ उपयोगिता जरूरी होती है। अर्थशास्त्र की उपयोगिता यह है कि वह छात्रों को जीविका निर्माण करने योग्य बनाता है। यदि अर्थशास्त्र का अध्ययन करके भी छात्र अपनी जीविका का निर्माण नही कर सकता है तो अर्थशास्त्र व्यर्थ है। इसलिए अर्थशास्त्र शिक्षण के द्वारा छात्रों को इस योग्य अवश्य बना दिया जाए कि वे अपनी जीविका का उपार्जन कर सकें। इसके लिए अर्थशास्त्र शिक्षक के द्वारा छात्रों को देश के विभिन्न उद्योग धन्धों, यातायात के साधनों, बाजार, बाजार भाव आदि से अवगत कराना चाहिए।

(3) **छात्रों को कुशल उपभोक्ता बनाना**—अर्थशास्त्र का उद्देश्य जहाँ छात्रों को कुशल उत्पादक बनाना है, उसी के साथ ही साथ उन्हें कुशल उपभोक्ता भी बनाना है, क्योंकि जब तक वे कुशल उपभोक्ता नहीं बनेंगे तब तक वे अपनी कमाई का सर्वोत्त विधि से प्रयोग हीं कर सकेंगे। अर्थशास्त्र शिक्षण के द्वारा उन्हें इस योग्य बनाना जरूरी है कि वे अपने सीमित साधनों से अधिक उपयोगिता प्राप्त कर सकें। उन्हें इस योग्य बनाना है कि वे अपने उपभोग को सन्तुलित रख सकें।

(4) **आर्थिक-समस्याओं का समाधान प्रदान करना**—व्यक्ति विशेष, समाज तथा देश के सम्मुख समय-समय पर कई आर्थिक समस्यायें आ खड़ी होती हैं। इन समस्याओं को सही रूप में जानना आवश्यक होता है। जब तक हम इन समस्याओं को उनके सही रूप में नहीं जानेंगे तब तक उनका समाधान भी कठिन हो जाता है। अतः छात्रों को विभिन्न आर्थिक समस्याओं का ज्ञान देना जरूरी है। अर्थशास्त्र इस कार्य को भली प्रकार सम्पन्न कर सकता है। इसलिए अर्थशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों को देश तथा समाज की आर्थिक समस्याओं का ज्ञान देना भी होना चाहिए।

(5) **सहयोग एवं सहकारिता की भावना जागृत करना**—अर्थशास्त्र शिक्षण के द्वारा छात्रों में सहयोग तथा सहकारिता को भावना की अधिक सरलापूर्वक जागृत कर सकते हैं। अर्थशास्त्र में कई ऐसे स्थल आते हैं जो छात्रों में सहयोग तथा सहकारिता की भावना बड़ी सुगमता से जागृत कर सकते हैं। वर्तमान युग में मिलजुल कर कार्य करने तथा जीवन व्यतीत करने की अति आवश्यकता

है, फलत: सभी उपर्युक्त स्थलों तथा विषय-वस्तु का सहयोग तथा सहकारिता की भावना जागृत करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

NOTES

**(6) आर्थिक नागरिकता का विकास करना**—अर्थशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य आर्थिक नागरिकता के सिद्धान्तों से अवगत करवा कसते हैं और उनमें एक अच्छे आर्थिक नागरिक के गुणों का विकास कर सकते हैं।

**(7) तर्क एवं निर्णय-शक्ति का विकास करना**—मनुष्य के आर्थिक जीवन में कई आर्थिक समस्यायें पैदा होती हैं। इनके समाधान हेतु उचित रूप से समस्या के विभिन्न पहलुओं पर चिन्तन, मनन एवं तर्क करना पड़ता हैं प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या करनी पड़ती है और अन्त में निष्कर्ष निकालने पड़ते हैं। इस प्रकार इन विभिन्न आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए हमें तर्क तथा निर्णय शक्ति का विकास करना पड़ता है। अर्थशास्त्र छात्रों के इसी प्रकार की अनेक समस्यायें प्रस्तुत करके छात्रों में तर्क तथा तथा निर्णय-शक्ति का विकास कर सकता है।

**(8) आर्थिक व्यवस्थाओं का बोध करना**—अर्थशास्त्र के अध्ययन से छात्रों को विभिन्न आर्थिक व्यवस्थाओं तथा उनके सिद्धान्तों का ज्ञान कराया जा सकता हैं अर्थशास्त्र आर्थिक व्यवस्थाओं के स्वरूप को स्पष्ट कर सकता है। इस ज्ञान को वह अपने दैनिक व्यावहारिक जीवन में प्रयोग कर सकता है। इस तरह अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक महत्व ही न होकर व्यावहारिक महत्व भी हो जाता है।

**(9) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास**—अर्थशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना भी हैं छात्र इसके अध्ययन से आर्थिक व्यवस्थाओं, क्रियाओं, नीतियों, आर्थिक निर्णयों का समुचित विश्लेषण कर उपयुक्त निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

**(10) उत्तरदायित्व की भावना का विकास**—अर्थशास्त्र-शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना है जिससे वे अपने भावी जीवन में उत्तरदायित्वपूर्ण तरीके से आर्थिक क्रियायें कर अपनी आर्थिक प्रगति कर सकें। अर्थशास्त्र-शिक्षण को व्यावहारिक बनाने तथा छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना जागृत करने के लिए विद्यालय को चाहिए कि वह छात्रों को न केवल अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक ज्ञान ही कराये अपितु साथ ही साथ व्यावहारिक कार्यों के द्वारा इसे छात्रों के जीवन से भी सम्बन्धित करें। इसके लिए विद्यालय को अपने प्रांगण में विद्यालय, बैंक, छात्र-उपभोक्ता मंच, सहकारी दुकान, सहकारी कैन्टीन, सहकारी उपभोक्ता भण्डार जैसी सहगामी क्रियाओं का संचालन करें जिससे छात्रों की अधिकाधिक सहभागिता है।

NOTES

## अर्थशास्त्र शिक्षण के अनुदेशात्मक उद्देश्य (Instructional Objectives of Teaching Economics)

अर्थशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता, महत्व तथा उसके अध्ययन के उद्देश्यों का उल्लेख किया। विद्यालयों में अर्थशास्त्र पढ़ाई जाती है। अनुदेशनात्मक उद्देश्य इस प्रकार औपचारिक रूप से विद्यालयों में पढ़ाने के उद्देश्य को अनुदेशात्मक उद्देश्य कहते हैं। **कार्टर वी. गुड** के शब्दों में ''अनुदेशात्मक उद्देश्य वह स्तर अथवा लक्ष्य मानदण्ड है जिसे छात्रों द्वारा विद्यालय कार्य की समाप्ति पर प्राप्त किया जाना है।'' शिक्षण का कार्य छात्रों के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन करना होता है। समाज जिस प्रकार के व्यक्तियों को चाहता है शिक्षण द्वारा उसी प्रकार के व्यवहारों का विकास किया जाता है। इस प्रकार शिक्षण का कार्य छात्रों में समाज द्वारा वांछित व्यवहारों का विकास किया जाता है। इस दृष्टिकोण से शिक्षण का अनुदेशात्मक उदेश्यों से तात्पर्य छात्र व्यवहारों का विकास किया जाता है। इस दृष्टिकोण से शिक्षण का अनुदेशात्मक उद्देश्यों से तात्पर्य छात्र व्यवहारों में पूर्व-निर्धारित बदलाव लाने से है।

**ब्लूम** ने शैक्षिक उद्देश्यों की परिभाषा देते हुए लिखा है कि ''शैक्षिक उद्देश्यों से हमारा तात्पर्य उन व्यवहार निर्माण से है जिनमें शैक्षिक प्रक्रिया द्वारा छात्रों को लाना होता है।'' परिवर्तित व्यवहारों से हमारा तात्पर्य छात्रों की चिन्तन, मनन अनुभव करने तथा कार्य करने की विधियों में जरूश्री तथा वांछनीय परिवर्तन करने से है। छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन उनके ज्ञान, कौशल, रुचि तथा अभिरुचियों के बदलाव के रूप में हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, जो छात्र कौशल, रुचि तथा अभिरुचियों में परिवर्तन वांछित दिशा में होता है तो हम कह सकते हैं कि शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति हो चुकी है। यदि शिक्षा प्रभावशाली विधि से दी जाती है तो छात्र पहले से विभिन्न व्यवहार करेगा।

अब छात्र ऐसे कई ज्ञान, कौशल, रुचि तथा अभिरुचियों से मुक्त हो गय ाहै जिनका शिक्षा से पूव छात्र के पास अभा वहै। इस प्रकार अर्थशास्त्र-शिक्षण छात्रों के आर्थिक व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना है।

### भारत में अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching Economics in India)

अर्थशास्त्र की भारत में आवश्यकता तथा पूर्व-अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए आज के भारत के लिए अर्थशास्त्र-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य निर्धारित किये जो सकते हैं–

(1) **छात्रों में आर्थिक नागरिकता का विकास करना**—आर्थिक नागरिकाता के विकास के कारण वे अपने आर्थिक अधिकारों तथा कर्तव्यों को समझ सकेंगे और उनमें आर्थिक अधिकारों तथा कर्तव्यों को समझ सकेंगे और उनमें आर्थिक क्षेत्र में उत्तरदायित्व की भावना का विकास होगा।

(2) **देश की आर्थिक समस्याओं से अवगत करना**—छात्रों को जब देश की आर्थिक समस्याओं तथा उनकी गम्भीरता एवं कारणों का ज्ञान हो जाएगा तभी वे उनके समाधान तथा निवारण के लिए प्रयत्न कर सकेंगे।

(3) **देश की प्राकृतिक सम्पदाओं का ज्ञान देना**—छात्र देश की आर्थिक उन्नति में अपना योगदान तभी दे सकते हैं जब उन्हें देश की व्यापक तथा विविध प्राकृतिक सम्पदाओं का ज्ञान हो। इनका ज्ञान होने पर ही वे उनका सही प्रकार से दोहन कर सकते हैं।

(4) **आर्थिक चेतना का विकास करना**—आज भारत में चेतना का अभाव है। आज भी भाग्य के भरोसे बैठकर निष्काम बैठे रहते हैं। हम कई कार्य राम के भरोसे छोड़ देते हैं। आलस, भ्रष्टाचार तथा सहज ही सौभाग्य से बिना कुछ किये लखपति बनने की कल्पना करते हैं। यही कारण है कि आज प्रत्येक शाम लोटरियों की दुकानों पर अपार भीड़ दिखाई देती हैं यह आर्थिक चेतना के अभाव के कारण हैं। आर्थिक चेतना

(5) **अच्छा उपभोक्ता बनाना**—अर्थशास्त्र-शिक्षण आज के भारत में एक उद्देश्य छात्रों को अच्छा उपभोक्ता बनाना है। अइच्छा उपभोक्ता के रूप में वे माँग व पूर्ति के नियमों, समसीमान्त उपयोगिता नियम आदि के आधार पर अपने सीमित आर्थिक साधनों से अपनी अधिकतम जरूरतां की तुष्टिठ कर सकेंगे तथा अधिकतम उपयोगिता सृजित कर सकें। यही मितव्ययता का नियम है।

(6) **आर्थिक सिद्धान्तों, नियमों तथा व्यवस्थाओं का ज्ञान कराना**—आर्थिक प्रगति के लिए अर्थशास्त्र के अनेक सिद्धान्त, नियम तथा व्यवस्थाएँ हैं। नका व्यावहारिक ज्ञान देना भी जरूरी है क्यों इनका प्रयोग करके ही वह आर्थिक उन्नति कर सकता है।

(7) **देश की आर्थिक व्यवस्था का बोध कराना**—छात्रों को देश की आर्थिक व्यवस्था, उत्पादन-प्रणाली, अनेक सिद्धान्त, नियम तथा व्यवस्थाएँ हैं। इनका व्यावहारिक ज्ञान देना भी जरूरी है क्यों कि इनका प्रयोग करके ही वह आर्थिक उन्नति कर सकता है।

(8) **देश की आर्थिक नीतियों का ज्ञान**—भारत के छात्रों को इस योग्य बनाना है कि वे देश की आर्थिक, औद्योगिक, व्यापारिक एवं मुद्रा नीतियों का ज्ञान कर उनके अनुरूप अपने आर्थिक निर्णय तथा क्रियाकलाप कर सकें।

(9) **विश्व के अन्य प्रमुख राष्ट्रों की अर्थ**—व्यवस्था का ज्ञान कराना—आज का व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए विश्व के प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था का बोध कराना अनिवार्य है, जिससे वे अपने उत्पादन के अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों का पता लगासकें तथा अपने लिए उपयोगी आयात कर सकें। इससे वे दूसरे राष्ट्रों की आर्थिक व्यवस्थाओं के अच्छे बुरे

NOTES

पक्षों से दूर रहने के उपाय कर सकेंगे। इससे उनमें सहयोग, सहानुभूति एवं विश्व बन्धुत्व की भावना का भी विकास होगा।

**(10) आर्थिक उन्नति के उपायों से अवगत कराना**—भारत में अर्थशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि छात्रों को उन उपायों से अवगत कराया जाए जिनसे वे भावी जीवन में अपनी आर्थिक प्रगति कर सकें। इस हेतु पूंजी व्यवस्था, श्रम व्यवस्था, वैधानिक व्यवस्थायें आदि का ज्ञान देना जरूरी है।

**(11) अर्थशास्त्रीय प्रत्ययों का ज्ञान कराना**—अर्थशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य यह भी होना चाहिए। कि छात्रों को अर्थशास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न प्रत्ययों का बोध कराया जाए। इस प्रकार के प्रत्ययों में आवश्यकता, कर, शुल्क, भूमि, उपयोगिता, बाजार, व्यापार सन्तुलन, राजस्व, उपयोगिता, ह्रास नियम, समसीमान्त उपयोगिता नियम, बजट आदि का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है।

**(12) राष्ट्रीय व प्रति व्यक्ति आय का ज्ञान**—भारतीय छात्रों को अर्थशास्त्र-शिक्षण के द्वारा राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय का तुलनात्मक ज्ञान कराना जरूरी है जिससे प्रेरित होकर वे देश की राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति को उन्नत करने के प्रयास कर सकें। देश के आर्थिक स्तर का बोध राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय से ही होता है।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों को समझाइए तथा इसके घटकों के सम्बन्धी भी बताइए।
2. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्यों की आवश्यकता समझाते हुए इसके व्यावहारिक रूप का उल्लेख कीजिए।
3. नागरिकशास्त्र के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों का वर्णन कीजिए तथा उनका सामाजिक पक्ष भी बताइये।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के प्रमुख सामान्य उद्देश्य बताइए।
2. भूगोल के प्रमुख शिक्षण उद्देश्य बताइए।
3. इतिहास शिक्षण के प्राथमिक स्तर के उद्देश्यों को समझाइए।
4. अर्थशास्त्र शिक्षण के माध्यमिक स्तर के उद्देशें को समझाइए।

# 3 मुख्य विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान का महत्व

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- उद्देश्य।
- प्राक्कथन।
- सामाजिक विज्ञान एक दर्शन
- दर्शन तथा सामाजिक विज्ञान
- प्रगति तथा पूर्वानुमान
- समझना तथा बोधगम्यता
- मानव व्यवहार के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता
- परीक्षपयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- सामाजिक विज्ञान एक दर्शन
- दर्शन तथा सामाजिक विज्ञान
- प्रगति तथा पूर्वानुमान
- समझना तथा बोधगम्यता
- मानव व्यवहार के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता

NOTES

## प्राक्कथन

गणित शिक्षा की तुलना में सामाजिक विज्ञान शिक्षा बराबर का महत्व है। इसलिए, यह प्राथमिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में भी उतना ही महत्वपूर्ण स्थन लेने के लिए है। D.Ed कार्यक्रम के दोनों पहले वर्ष और दूसरे वर्ष के दौरान पाठ्यक्रम पेश किया है, ताकि विद्यापीठ ज्ञान, कौशल और सभी हितधारकों के पूरा करने के लिए, दोनों सामग्री और अध्यापन से अधिक महारत हासिल करने के लिए आवश्यक नजरिए से लैंस हैं ईवीएस शिक्षा और सामाजिक विज्ञान शिक्षा के रूप में दूसरे वर्ष के रूप में पहली साल। व्यावहारिक कार्य से संबंधित गतिविधियों अन्य सभी स्कूल विषयो के बराबर होना चाहिए।

## सामाजिक विज्ञान एक दर्शन

यह सुरक्षित है ग्रहण करने के लिए आप जानते हैं कि क्या सामाजिक और व्यवहार विज्ञान हैं–मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मानव विज्ञान और आप भी इस तरह के भूगोल, जनसांख्यिकी, सामाजिक मनोविज्ञान के रूप में विषयों है एक दूसरे को काटना और इन क्षेत्रों ओवरलैप, शामिल हो सकता है, इतिहास और पुरातत्व। यह मान लेना आप जानते हैं कि दर्शन है सुरक्षित नहीं हैं, भले ही आप इसके बारे में एक अच्छा सौदा पहले से ही अध्ययन किया है। कारण के बारे में वास्तव में क्या उनके अधीन है। दार्शनिकों के बीच आम सहमति की तरह कुछ भी नहीं है कि लेकिन यह समझने के लिए कि क्या सामाजिक विज्ञान के दर्शन है, और देखने के लिए क्यों महत्वपूर्ण है, यह दर्शन की प्रकृति पर कुछ समझोता करना महत्वपूर्ण है।

## दर्शन : एक कार्य परिभाषा

दर्शन के अनुशासन सवालों के दो प्रकार का समाधान करने के प्रयास करता है।

अब जाहिर है, वहाँ किसी भी सवाल है कि विज्ञान अंततः जवाब कर सकते हैं नहीं, लंबे समय, में जब सभी तथ्यों में हैं, लेकिन निश्चित रूप से सवाल है कि विज्ञान का जवाब नहीं कर सकते हैं नहीं हो सकता है। अभी तक। इनमें शामिल हैं नए सवाल विज्ञान है क्योंकि यह केवल है सिर्फ उन्हें देखा जवाब देने के लिए एक मौका नहीं पड़ा है और अभी तक या तो प्रयोगात्मक उपकरण या सही सिद्धांतों उनसे निपटने के लिए नहीं हैं उदाहरण के लिए, हर साल उच्च ऊर्जा भौतिकी है कि यह हल नहीं किया जा सकता था। या यहां तक कि मनोरंजन से पहले नवीनतम कण त्वरण्कों ऑनलाइन आया मामले के बारे में नए सवाल का सवाल करना पड़ता। वहाँ भी सवाल है कि वैज्ञानिकों को सदियों से सामना करना पड़ात है, लेकिन केवल वर्तमान में खुद को जवाब देने में सक्षम लगता है। उदाहरण के

NOTES

लिए, सबसे जीव अब मानना है कि वे मानव प्रकृति के बारे में सवालों का जवाब कर सकते हैं, आदमी के मूल और जीवन की प्रकृति है कि उनके शुरुआत के बाद से विज्ञान और दर्शन को भी हैरान कर दिया है। और वहाँ अन्य प्रश्न है कि समान रूप से पुराने है और अभी भी अनुत्तरित रह रहे हैं। उदाहरण के लिए, चेतना, विचार, संवेदना और भावना सवाल अनसुलझा रह जाते हैं।

बेशक, आाुकि मनोविज्ञान इन सवालों के जवाब में काफी प्रगति करने का दावा करता है। लेकिन इस दावे पर विवादास्पद है। तो जीव विज्ञान के विवाद है कि मानव प्रकृति के बारे में सवाल, उदाहरण के लिए, अब वैज्ञानिक रूप से जवाब दिया जा सकता है, उदाहरण के लिए, कुछ धर्मशास्त्रियों, सामाजिक वैज्ञानिकों, मानवतावादी और यहां तक कि कुछ जीव नइस दववे को अस्वीकार। इन सवालों के बारे में बहस है कि क्या किसी भी एक विज्ञान दृवारा उत्तर दिया जा सकता है, या यहाँ तक कि उनमें से सभी, एक विशेषता से दार्शनिक एक है। जो लोग यह प्रभाव में इनकार हमें बताओ वहाँ वैज्ञानिक जांच की खोज कर सकते क्या सीमाएं होती हैं। के बारे में है कि क्या वहाँ सवाल विज्ञान दो बातों पर टिका जवाब कर सकते हैं के प्रकार पर सीमा नहीं है बहस सबसे पहले, हम विज्ञान के तरीकों की पहचान करने क जरूरत है, और दूसरा, हम क्या सवाल इन तरीकों पता कर सकते हैं पर सीमा की पहचान करने की जरूरत है, और दूसरा, हम क्या सवाल इन तरीकों पता कर सकते हैं पर सीमा की पहचान करने की जरूरत है। इन तरीको का उल्लेख किया है और इन सवालों पर निर्णय लेने के मामलों है कि कोई भी विज्ञान अपने आप पता कर सकते हैं कर रहे हैं। यह हिस्सा जो उन्हें दार्शनिक प्रश्न बनाता है।

सवाल का एक और प्रकार है कि वैज्ञानिकों को अक्सर शपथपूर्वक त्यागना मूल्यांकन और मानक मामलों-क्या मामला है, जैसा भी मामला है क्या करने के लिए विरोध चाहिए शामिल है। विज्ञान, यह अक्सर कहा जाता है, का वर्णन करता है और जिस तरह से दुनिया है बताते हैं लेकिन यह क्या सही है या अच्छा है के बारे में सवालों के जवाब देने अथवा मामले होना चाहिए नहीं कर सकते। इन बुनियादी सवालों लोगों के लिए जो लोग notneed वैज्ञानिक योग्यता कर सूचित और अच्छी तरह से जमीन जवाब देने के लिए कर रहे हैं। या तो यह अक्सर दावा किया है। लेकिन जीव विज्ञान की शक्तियों जीवन और मानव प्रकृति के बारे में सभी तथ्यों की व्याख्या करने के बारे में सवाल की तरह, इस मुदे को बेहद विवादास्पद है, और विवाद शुद्ध दर्शन है।

वहाँ सवाल विज्ञान जवाब कर सकते हैं कुछ सीमाएं होती हैं, तो हम जानना चाहते हैं क्योंकि इन सीमाओं मौजूद रहना चाहते हैं; यह विज्ञान है कि यह इन सवालों को संबोधित करने से रोकता है के बारे में क्या है? हम यह भी पता है कि कैसे, अगर

सब पर, वे जवाब दिया जा सकता चाहते हैं। अगर, हालांकि ऐसी कोई सीमा नहीं है, जैसा कि कुछ का दावा होता है, हम जानना चाहते हैं क्योंकि कुछ सवाल यूनानियों के साथ विज्ञान के जन्म के बाद से अनुततरित रह गए हैं।

**NOTES**

दर्शन के मूल क्षेत्रों हर एक या प्रश्नों के इन दो प्रकार के दोनों के विभिन्न पहलुओं को संबोधित। सवाल इन दो प्रकार पर अपना ध्यान केन्द्रित क्या प्रमुख क्षेत्रां को जोड़ता है और दर्शन जो एक ही विषय बना देता हैं इस प्रकार तर्क, ध्वनि और वैध तर्क की प्रकृति की जांच करता है के रूप में यह गणित में आंकड़े विज्ञान में और साथ ही उस कथन की और अनुमान के आधार पर आगे बढ़ना बौद्धिक जीवन के अन्य क्षेत्रों में। वहाँ अनुमान की मान्य सिद्धांतों का सिर्फ एक शरीर है अथवा अलग विज्ञान और विषयों विभिन्न लॉजिक्स की जरूरत है? ज्ञानमीमांसा समझता है प्रकृति, सीमा और ज्ञान का औचित्य: ज्ञान के लिए सभी का दावा हे उसी तरह से जायज, अपील से कर रहे हैं मोटे तौर पर सबूत के एक ही तरह, या कर रहे हैं कुछ सिद्धान्तों कहते हैं, गणित के उन, सामाजिक विज्ञान या विचार उन प्राकृतिक वैज्ञानिकों मांग से अलग से मानविकी तत्वमीमांसा सिर्फ भौतिक चीजों वहां रहे हैं, जिसके साथ प्राकृतिक विज्ञान सौदों: चीजों की प्रकृति के बारे में सवाल कर्मों? मन nonphysical पदार्थ की एक अलग तरह है? मानव कार्रवाई भौतिक अवरोधों कि विशुद्ध रूप से यांत्रिक प्रणालियों के व्यवहार का निर्धारण से मुक्त हैं? वहाँ संख्या के रूप में अंकों के हम उन्हें व्यक्त करने के लिए रोजगार के लिए विरोध कर रहे हैं? आचार और राजनीतिक दर्शन का पता उन प्रश्नों कि वैज्ञानिक प्रबत को जन्म देती हैं, लेकिन जवाब नहीं कर सकते हैं: वहाँ जिसके साथ प्राकृतिक विज्ञान सौदों सिर्फ भौतिक चीजों हैं? मन पदार्थ्स की एक अलग तरह हैं? मानव कार्रवाई भौतक अवरोधों कि विशुद्ध रूप से यांत्रिक प्रणालियों के व्यवहार का निर्धारण से मुक्त हैं? वहाँ संख्या के रूप में अंकों के हम उन्हें व्यक्त करने के लिए रोजगार के लिए विरोध कर रहे हैं? आचार और राजनीतिक दर्शन का पता उन प्रश्नों कि वैज्ञानिक प्रगति को जन्म देती है, लेकिन जवाब नहीं कर सकते हैं: वहाँ जिसके साथ प्राकृतिक विज्ञान सौदों सिर्फ भौतिक चीजों हैं? मन पदार्थ की एक अलग तरह है? मानव कार्रवाई भौतिक अवरोध कि विशुद्ध रूप से यांत्रिक प्रणालियों के व्यवहार का निर्धारण से मुक्त हैं? वहाँ संख्या के रूप में अंकों के हम उन्हें व्यक्त करने के लिए रोजगार के लिए विरोध कर रहे हैं? आचार और राजनीतिक दर्शन का पता उन प्रश्नों कि वैज्ञानिक प्रगति को जन्म देती है, मन nonphysical पदार्थ की एक अलग तरह हैं? मानव कारवाई भौतिक अवरोधों कि विशुद्ध रूप से यांत्रिक प्रणालिों के व्यवहार का निर्धारण से मुक्त हैं? वहाँ संख्या के रूप में अंकों के हम उनहें व्यक्त करने के लिए रोजगार के लिए विरोध कर रहे हैं? आचार और राजनीतिक दर्शन का पता उन प्रश्नों कि वैज्ञानिक प्रगति को जन्म

देती है, लेकिन जवाब नहीं कर सकते हैं:

एक बार जब हम जानते हैं कि कैसे एक परमाणु हथियार का निर्माण करने, भ्रूण प्रत्यारोपण के लिए कैसे, कैसे धन पुनः वितरित करने, या कैसे व्यवहार में हेरफेर करने, चाहिए हम इन बातों से कोई भी कार्य? क्या एक साथ जांच के इन अलग-अलग क्षेत्रों बांधता है कि वे दो सवाल है। जैसा कि पहले उल्लेख, विज्ञान के इतिहास में विभिन्न समय पर, पहली बार में सवालों के विज्ञान द्वारा बिना जवाब समझा और दर्शन ने संबोधित, विज्ञान द्वारा जब्त किया गया है। चार्ल्स डार्विन की के प्रकाशन के साथ एक सौ साल बाद प्राचीन यूनानी, सत्रहवीं दी में भौतिकी, रसायन शास्त्र के समय में गणित, 1859 में जीव विज्ञानः वास्तव में विज्ञान के इतिहास की कैसे विज्ञान के प्रत्येक ही दर्शन से मुक्ति कहानी हैं प्रजाति की उत्पत्ति, हमारे अपने जीवन काल में बीसवीं सदी के प्रारंभिक भाग और भाषा विज्ञान और कम्प्यूटर विज्ञान में मनोविज्ञान। इन विषयूँ में से प्रत्येक दर्शन करने के लिए विदाई उपहार सवाल छोड़ दिया है, कि यह जवाब नहीं दे सकता। उदाहरण के लिए, संख्या क्या हैं? समय क्या हैं? तंत्रिका लोगों को मानसिक प्रक्रियाओं के संबंध क्या हैं?

NOTES

कभी-कभी यह इतिहास के पाठ्यक्रम में, एक सवाल दर्शन को संरक्षित रखा है विज्ञान द्वारा जब्त किया गया है। क्योंकि यह उस सवाल का जवाब देने के लिए तैयार हैं कभी कभी, एक सवाल दर्शन से विज्ञान द्वारा जब्त किया गया है, केवल लौटा दी है। विज्ञान की क्षमता है, विशेष रूप से सामाजिक विज्ञान, नैतिकता सवालों के जवाब देने के बारे में राय स्थानांतरिक हो गया है, कभी-कभी अक्सर दूर और हील ही खत्म हो गया।

## दर्शन तथा सामाजिक विज्ञान

यहां तक कि अगर वहाँ सवाल विज्ञान उत्तर नहीं दे सकता है, और के बारे में क्यों विज्ञान उन्हें उत्तर नहीं दे सकता। आगे के प्रश्न हैं, यही कारण है कि एक वैज्ञानिक और विशेष रूप से एक व्यवहार या सामाजिक वैज्ञानिक उन में कोई दिलचस्पी नहीं लेना चाहिए? वजह है। हालांकि अलग-अलग विज्ञान इन सवालों का जवाब नहीं कर सकते हैं, अलग-अलग वैज्ञानिक उन पर पक्ष लेना है, और कभी कभी भी सवाल है कि वे अपने विषयों में जवाबदेह समाधान करने का निर्धारण, और तरीकों के रोजगार ऐसा करने के लिए। कभी-कभी वैज्ञानिकों बूझकर काम करते हैं, कभी कभी डिफॉल्ट रूप से, प्रश्नों का उत्तर देने और तरीकों को रारोजगार के लिए अपनी पसंद के में। क्योंकि इन सवालों के समाधान वैज्ञानिक के लिए महत्वपूर्ण है, यह निश्चित रूप से बेहतर है, तो वैज्ञानिक एक सूचित और सचेत विकल्प बनाता है।

**NOTES**

दार्शनिक प्रश्न के महत्व को भी प्राकृतिक वैज्ञानिक के लिए तुलना में सामाजिक वैज्ञानिक के लिए महत्वपूर्ण हैं। प्राकृतिक विज्ञान के लिए सामाजिक विज्ञान से सवालों का सफल उत्तरों की एक और अधिक स्थापना शरीर की है। और वे कई और अधिक अच्छी तरह से उन्हें जवाब देने के लिए तरीकों की स्थापना की है। इस प्रकार, सीमा और प्राकृतिक विज्ञ्ज्ञन के तरीकों के बारे में बुनियादी दार्शनिक प्रश्न के अनेक स्पष्ट रूप से प्राकृतिक ंविज्ञान की सीमाओं के भीतर और तत्काल सवालों से अलग की है।

सामाजिक और व्यवहार विज्ञान इतने भाग्यशाली नहीं है। इन विषयों में वहाँ क्या सवाल है कि उनमें से प्रत्येक को संबोधित करने की शक्ति हैं, और न ही तरीकों के बारे में समझौते पर नियाजित किया जा करने के लिए और न ही के बारेमें क्यों कुछ सवाल उनके purviews से पेरे हैं कर रहे हैं पर कोई आम सहमति हैं यह दोनों विषयों के बीच और यहां तक कि उनमें से कुछ के भीतर सव है। स्कूलों और समूहों, आन्दोलनों और शिविरों के उचित तरीकों, महत्वपूर्ण सवाल पहचान विकसित करने का दावा करते हैं और इन सवालों के ठोस जवाब प्रदान की है, निश्चित रूप से इसत तरह के दावों कि हम प्राकृतिक विज्ञान के किसी भी में मिल पर समझौते की तरह कुछ भी नहीं है। सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच समझौते और बेंचमार्क उपलब्धियों के अभाव में, सवाल और उन्हें निपटने के तरीकों पर शोध के संबंध में हर चुनाव परोक्ष है या स्पष्ट रूप से एक जुआ है कि प्रश्न चुना प्रति जवाबदेह होता है, कि सवाल नहीं चुना अथवा कम महत्वपूर्ण या बिना जवाब कर हे हैं, उस सवाल पर हमला करने के लि प्रयोग करने के लिए उपयुक्त हैं, और कि अन्य तरीकों नहीं है। सामाजिक वैज्ञानिकों के रूप में संभव के रूप में प्राकृतिक विज्ञान के उन लोगों के पास तरीकों को रोजगार के लिए चुनते हैं, तो वे खुद को स्थिति के लिए प्रतिबद्ध है कि वहाँ मानव व्यवहार के नियमों से हमें पता चलता है और भविष्यवाणी और यह नियंत्रित करने में उपयोग कर सकते हैं। कर रहे हैं। कि जब वे इस तरह के तरीकों तिरस्कार ऐसा इसलिए है क्योंकि वे मानते हैं कि इस तरह के तरीकों मानव गतिविधि के बारे में वास्तव में महीत्वपूर्ण सवालों का जवाब नहीं दे सकते। सवाल है कि विज्ञान का जवाब नहीं कर सकते हैं: या तो मानना है कि दर्शन को परिभाषित सवालों के दो प्रकार के पहले के जवाब में उत्पन्न होती है।

क्या इन जुआ खेलती वास्तव में भुगतान आम तौर पर सामाजिक वैज्ञानिकों, जो उनहें बनाने की जिंदगी में नहीं जाना जा सकता है और फिर भी वकल्प को सही ठहराया जाना चाहिए, या तो क्यों प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों क्यों वे नहीं कर सकते प्रश्न सामाजिक वैज्ञानिक पतों का जवाब, या कर सकते हैं की एक विवरण के द्वारा। इस तह के स्पष्टीकरण की पर्याप्तता जांच के तरीकों को चुनने के लिए हमारे ही उचित आधार है। के बारे में क्यों विज्ञान सवालों के पहले प्रकार उत्तर नहीं

NOTES

दे सकता सवालः लेकिन इस तरह के स्पष्टीकरण कि दर्शन को परिभाषित सवालों के प्रकार के दूसरे संबोधित करते हैं। वे इसलिए दार्शनिक तर्कों कि क्या वह व्यक्ति जिसने उन्हं प्रदान करता है एक दार्शनिक नहीं है या की परवाह किए बिना कर रहे हैं। दरअसल, समाजिक वैज्ञानिकों कम से कम के रूप में अच्छा करने की स्थिति सवाल है। कि दर्शन को परिभाषित जैसे दार्शनिकों खुद को कर रहे हैं क दो प्रकार के जवाब देने के लिए कर रहे हैं और यही विषय सामाजिक वैज्ञानिक के लिए इतना महत्वपूर्ण बना देता है। सामाजिक विज्ञान के दर्शन के लिए पारंपरिक सवालों के अनुसंधान सवालों की और उन्हें निपटने के तरीकों के विकल्प के महत्व को दर्शाते हैं। और इस पुस्तक में हम विस्सार तसे इन सवालों के लगभग सभी की जांच करेंगे। सबसे पहले, वहा. की है कि मानव कार्रवई तरीका है कि प्राकृतिक विज्ञान अपने डोमेन में घटना बतो हैं में समझाया जा सकता सवाल है। इस सवाल का जवाब वैकल्पिक आगे सवाल उठाः वहाँ की है कि मानव कार्रवाई का तरीका है कि प्राकृतिक विज्ञान अपने डोमेन में घटना बताते हैं में समणया जा सकता है। इस सवाल का जवाब वैकल्पिक आगे सवाल उठा है ि मानव कार्रवई तरीका है कि प्राकृतिक विज्ञिन अपने डोमेन में घटना बतो हैं मं समणया जा सकता है।

जवाब है यदि हाँ, क्यों मानव कार्रवाई के बारे में हमारी स्पष्टीकरण इतना कम सटीक और वैज्ञानिक स्पष्टीकरण की तुलना में कम कर रहे हैं? जवाब नहीं हैं, कि प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों अनुपयुक्त हैं, तो क्या कार्रवाई वैज्ञानिक रूप से समझाने के लिए सही तरीका है, और अगर वहाँ मानव कार्रवाई वैज्ञानिक रूप से समझाने के लिए कोई रास्ता नहीं है, के रूप में कुछ दार्शनिकों और सामाजिक वैज्ञानिकों का दावा है, क्यों मानव कार्रवाई ए दृष्टिकोण अलग से प्राकृतिक विज्ञान की है कि आवश्यकता होती है, और क्या दृष्टिकोण की जरूरत है? ये अगले तीन अध्यायों का विषय हो जाएगा।

इन मुद्दों में से हमारी चर्चा विवरण और करणीय, सामान्यीकरण और कानूनों के परीक्षण की प्रकृति का एक अध्ययन शामिल होगी; और यह सोच की प्रकृति और व्यवहार करने के लिए और भाषा के साथ उसके संबंध पर प्रतिबिंबित करेगा। यह प्रयोजनों कि हमारे कार्यों और (पूर्व) का कारण बनता है कि हमारे व्यवहार का निर्धारण समझाने के बीच तनाव का पता चलता है। भविष्य प्रयोजनों हमारे कार्यों अर्थ और उनहें सुगम बनाने दे। पूर्व कारणों हमारे व्यवहार के महत्व का खुलासा किए बिना काम करते हैं। हम इस पर विचार करेंगें कि कैसे सामाजिक वैज्ञानिकों, उदाहरण के लिए व्यवहार, पुराने लोगों के लिए मानव कार्रवाई के बारे में नए सवाल स्थानापन्न करने, सामाजिक वैज्ञानिकों 'पुराने लोगों का जवाब देने में असमर्थता की वजह से प्रयास किया हैं और हम तय करने के लिए कि इस

NOTES

परिवर्तन को एक बौद्धिक सुाई से एक है होगा। यह दावा है कि कुछ सवाल है कि विज्ञान उत्तर नहीं दे सकता। इसके बाद सुसंगत, वैध सवाल है कि एक जवाब की आवश्यकता नहीं कर रहे हैं।

सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में प्राथमिक व्याख्यात्मक कारकों के लोगों के बड़े समूहों और उनके संस्थागत बातचीत के बजाय व्यक्तिगत मानव एजेंटों के विकल्प होना चाहिए। भिन्न सामाजिक विज्ञान, विशेष रूप से अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र, इस मुद्दे पर गहरे मतभेद, कई आयामों के साथ मतभेद है, तो सार और सामान्य वे लंबे चिंतित दार्शनिक है कि मतभेद है। सामाजिक वैज्ञानिक, जो रखती रिवर्स के बजाय कि बड़े पैमाने पर सामाजिक तथ्यों व्यक्तिगत आचरण की व्याख्या, व्यक्तियों, जो उनहें रचना के स्वतंत्र समूहों की वास्तविकता के बारे में मजबूत आध्यात्मिक मान्यताओं बनाता है। इस तरह के सिद्धान्त तथाकथित भी स्पष्टीकरण, व्यावहारिकता का एक रूप की आवश्यकता है, कि सामाजिक का व्याख्यात्मक रणनीति के बीच और प्राकृतिक विज्ञान के ंतर के बारे में अन्य गहरा प्रश्न उठाते हैं। इस सिद्धांत है जो सामाजिक पूर्णांकों के लिए व्याख्यात्मक जगह का गौरव देता है, काफी अनाकर्षक लग सकता है कि अगर यह करने के लिए एकमात्र विकल्प, ''व्यक्तिवाद,'' के रूप में अर्थशास्त्रियों द्वारा उन्नत, उदाहरण के लिए, समान रूप से गहरा दार्शनिक प्रश्न का सामना करना पड़ सकता है।

म सामाजिक विज्ञान और नैतिक दर्शन के बीच संबंध को बारी है, कि क्या हम क्या ठीक है, या उचित है, या बस, या अच्छे सामाजिक विज्ञान के लिए ख़ुद से है के बारे में सवालों के जवाब की उम्मीद कर सकते हैं। यहां तक कि कुछ पकड़ के रूप में, के बारे में कोई निष्कर्ष क्या मामला माला है क्या बारे में सच सिद्धांतों से भी अनुमान लगाया जा सकता होना चाहिए, अगर यह भी बाहर हो जाएगा कि सामाजिक विज्ञान और प्रतिस्पर्धा नैतिक सिद्धांतों के लिए वैकल्पिक तरीकों से एक दूसरे से प्राकृतिक समानताएं हैं और एक दूसरे के रूप में अच्छी तरह पर मजबूत मांग को बनाते हैं। हम यह भी हौ कि क्या वहाँ नैतिक रूप से सामाजिक विज्ञान में वैध जांच करने के लिए सीमा लगाया जाता है।

अंतिम अध्याय में मैं दिखाने के लिए क्यों तत्काल विकल्पों सामाजिक वैज्ञानिकों उनकी जांच के संचालन कर उन्हें दर्शन का सबसे गहरा और बारहमासी सवाल पर पक्ष लेने के लिए प्रतिबद्ध प्रयास करें। अगर मैं सही हूँ, तो कोई सामाजिक वैनिक सामाजिक विज्ञान अथवा दर्शन के किसी भी अन्य डिब्बबे के दर्शन की अनदेखी करने के खर्च कर सकते हैं।

इस निष्कर्ष स्थापित करेन में एक शुरुआत के रूप में, हमें सामाजिक विज्ञान के दर्शन का सामना करना पड़ा। सबसे गंभीर प्रश्नों में से एक पर विचार करें। एक

NOTES

तरह से, इस सवाल का ऊपर उल्लेख किया बाद में अध्यायों में संबोधित करने की कई समस्याओं का आयोजन करता है, और यह एक रूपरेखा पता चलता है कि कितना गंभीर समस्याएं हैं उनके जाहिरा तौर पर सार और सामान्य चरित्र के बावजूद, प्रदान करता है।

प्रश्न उठता है कि प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों के बीच क्या सम्बन्ध है। प्राकृतिक विज्ञान अक्सर कर रहे हैं, ने आरोप लगाया है कि विशेष रूप से प्रकृति वैज्ञानिकां द्वारा, कहीं बड़ा बना दिया है करने के लिए प्रगति सामाजिक विज्ञान की तुलना में। जो लोग इस दृश्य पकड़ अक्सर इसे से सामाजिक विज्ञान के बारे में और मानव व्यवहार के बारे में पर्याप्त निष्कर्ष तैयार की है।

जो लोग इस दृश्य को अस्वीकार भी इन विषयों के दोनों के बारे में हड़ताली निष्कर्ष तैयार की है। इसलिए, सामाजिक विज्ञान के दर्शन में विशिष्ट विवादों इस सवाल के साथ शुरू करने के लिए कहा जा सकता है। दरअसल, इन बहसों शब्द ''कथित'' विषयों के बीच उन्नति में अंतर के बारे में दावे में के साथ युारू और वे ''प्रगति'' का गठन के बारे में विवादों में शामिल है कि क्या प्राकृतिक विज्ञान यह जताना और सामाजिक विज्ञान चाहे, कर सकते हैं, या इसी तरह से लक्ष्य रखना चाहिए।

दार्शनिक मुद्दों इस विवाद को जन्म देती है, केवल सबसे सामाजिक वैज्ञानिकों के द्वीपीय द्वारा अनदेखा किया जा सता है किनारों पर हम इन मुद्दों के बारे में बहस उद्देश्य, संचालन और आवेदन और जनता का समर्थन अनुसंधान के लिए के बारे में कई बहुत ही व्यावहारिक सवालों का सामाजिक विज्ञान। हैं, एक हाथ पर, आप सहमत हैं कि सामाजिक विज्ञान में प्रगति वांछित होने के लिए बहुत प्राकृतिक विज्ञान के साथ तुलना करके छोड़ देता है, तो आप पूरी तरह से या सही ढंग से लागू करने के लिए सामाजिक विज्ञान की विफलता में इस तथ्य के लिए एक स्पष्टीकरण की तलाश करने के लिए इच्छुक हो जाएगा मानव व्यवहार के अध्ययन में प्राकृतिक विज्ञान की तरीकों। अगर, दूसरे हाथ पर, आप समझते हैं कि सामाजिक विज्ञान नहीं है या मानव व्यवहार के अध्ययन में प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों को लागू नहीं करना चाहिए कर सकते हैं प्राकृतिक सामाजिक विज्ञानों के बीच द्वेषजनक तुलना आप को अस्वीकार कर देंगे। आप समाप्त होगा कि मानव कार्रवाई के अध्ययन के एक अलग तरीके से आगे बढ़ता है और प्राकृतिक विज्ञान से अलग मानकों के साथ मूल्यांकन किया गया है।

दावा है कि सामाजिक विज्ञान प्रगति के लिए विफल रहे हैं के खिलाफ तर्क नीचे की रूपरेखा तैयार करेगा और इस विफलता स्पष्टीकरण की जरूरत है। दोनों पक्षों पर बहस यह स्पष्ट कर दूं कि कैसे सामाजिक विज्ञान के इतिहास के बारे में एक

सवाल वास्तव में इसके दर्शन के बारे में एक सवाल है। इन तर्कों कएक आम दृश्य का हिस्सा: एक साफ समझौता असंभव है। इस तरह के समझौते के लिए सुझाव है कि सामाजिक विज्ञान के रूप में प्राकृतिक विज्ञान है लेकिन वे कुछ कर दिया है कि इतना प्रगति नहीं किया है। यह पता चलता है कि बहुत मोटे तौर पर सामाजिक विज्ञान के तरीकों, हालांकि उनके विशिष्ट अवधारणाओं विशिष्ट हैं, प्राकृतिक विज्ञान के उन लोगों के रूप में एक ही है, और मानव हितों की सेवा अलग हैं। हालांकि इस संभावित दार्शनिकों और सामाजिक वैज्ञानिकों के प्रयास जो सामाजिक विज्ञान के दर्शन के साथ निपटा है कि ज्यादा पता चलता है कि यह अच्छा समझौता बनाए रखने हेतु एक मुश्किल से एक है।

चाहे प्राकृतिक विज्ञान सामाजिक विज्ञान की तुलना में अधिक प्रगति की है और क्या यह भी बनता है समस्याओं भावना यह मनुष्य की जरूरतों के प्रकाश को समझते हैं और करने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं कहने के लिए बेहतर बनाने में हमारी सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत रूप से और कुल में। इस तरह समझ और सुधारा के लिए मानव व्यवहार का ज्ञान में वृद्धि करने की आवश्यकता है और कैसे इस तरह के ज्ञान की मांग की जा रही है कि हम कैसे इन दार्शनिक सवालों के जवाब पर निर्भर करता है।

कुछ दार्शनिकां और सामाजिक वैज्ञानिकों को कम सामाजिक विज्ञान के दर्शन के लिए केन्द्रीय रूप इस सवाल को अस्वीकार कर देंगे। उनके विचार पर सामाजिक विज्ञान विशिष्ट दार्शनिक समस्याओं से स्वतंत्र संबोधित करने की जरूरत है कि बढ़ा और सामाजिक विज्ञान के दर्शन के मुख्य लक्ष्य हैं, इन विषयों को समझने के लिए सवाल है कि सबसे अच्छे रूप में समय से पहले और सबसे खराब कर रहे हैं एक नजर के बिना एक ध्यान भंग। एक तरह से जो सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति के सवाल के महतव के बारे में सही है तय करने के लिए कितनी अच्छी तरह सवाल हमें संगठित करने और एक साथ विशेष रूप से ससमाजिक विज्ञान के इन सभी अन्य विशिष्ट समस्याओं में मदद करता है देखने के लिए है।

### प्रगति तथा पूर्वानुमान

सबसे पहले मैं प्रतिकूल तुलना के लिए तर्क निर्धारित करेगा: प्राकृतिक विज्ञान में कम से कम सत्रहवीं सदी से भौतिक दुनिया के बारे में तेजी से विश्वसनीय ज्ञान प्रदान किया है। ग्रहों की स्थिति का सटीक भविष्यवाणियों से, प्राकृतिक विज्ञान रासायनिक पदार्थ और जीवन की आणविक जीव विज्ञान के विस्तृम लक्षण वर्णन के गुणों का एकीकृत स्पष्टीकरण पर चले गए हैं। व्यवस्थित स्पष्टीकरण और सटीक भविष्यवाणी के अतिरिक्त प्राकृतिक विज्ञान प्रौद्योगिकी के एक तेजी आवेदन प्राकृतिक दुनिया के सुविधाओं को नियंत्रित करने की व्यवस्था की है।

यह निरंतर और जाहिरा तौर पर ज्ञान और आवेदन के विकास को जमा मानव व्यवहार का विज्ञान से अनुपस्थित है।

NOTES

एडम स्मिथ के सामाजिक विषयों बदलती में वहाँ क्षणों जिस पर (cumulating) ज्ञान के लिए एक बड़ी कामयाबी हासिल की गई है होने लगते राष्ट्र के धन, या में इमाइल दुर्खीम के आत्महत्या या शायद जॉन मेनार्ड कीन्स के रोजगार, ब्याज और पैसा, जनरल थ्योरी या बीएफ स्किनर के जीवों के व्यवहार उदाहरण के लिए। लेकिन बाद के घटनाक्रम के इस तरह के आकलन की पुष्टि कभी नहीं की है। सामाजिक विज्ञान की भविष्यवाणी और मानव व्यवहार और पांचवी सदी ईसा पूर्व में थूसाईडाईड्स के बाद से कम से कम उसके परिणामों समझा करने के उद्देश्य से है। हालांकि कुछ लोगों का कहना है कि हम यूनानियों की तुलना में यह कम से कम में कोई बेहतर कर रहे हैं।

तो निष्कर्ष निकाला है, कुछ सामाजिक विज्ञान के साथ बात है; शायद, वे "वैज्ञानिक" पर्याप्त उनके तरीकों में नहीं है। वे विधियों के लिए अधिक सफलतापूर्वक कानूनों को उजागर, या किसी भी दर सामान्यीकरण, कि कानून की दिशा में सुधार किया जा सकता, सिद्धांतों को उन्हें और उनके अपवादों को समझाने में एक साथ लाया जा सकता है, जिस पर अपनाने की जरूरत है।

यह बहुत स्पष्ट है कि तकनीकी नियंत्रण और भविष्य कहने वाला सफलता केवल सामान्य regularities, जो कि हमें वर्तमान स्थिति जोड़ तोड़ और शायद अधिक महत्वपूण से हमारी इच्छाओं को भविष्य मोड़, वर्तमान परिस्थितियों उलटफेर करके भविष्य के दुर्भाग्य को रोकने के लिए सक्षम की खो सके माध्यम से आते हैं। यह संभव है भविष्य की विश्वसनीय ज्ञान के माध्यम से है, एक तरह से ज्ञान है कि केवल कानून प्रदान कर सकते हैं।

हालांकि अंत में इस तर्क को प्रकृति को नियंत्रित करने में हमारे हितों के व्यावहारिक चिंताओं के शेयरों, वहाँ महत्व विज्ञान कानूनों से जुड़ने के लिए एक व्यवहारिक और अ धिक दार्शनिक तर्क है। स्पष्टीकरण के प्रकार विज्ञान का प्रयास कर रहे हैं कारण और ज्ञान के रूप में वैज्ञानिक दावों के प्रमाण पत्र या कम से कम उचित विश्वास अवलोकन, प्रयोग और डेटा के संग्रह से आता है। विज्ञान के इन सुविधाओं के दोनों सामान्यीकरण और कानूनों की खोज एवं सुधार की मांग करते हैं।

विचार करें कि हम एक दुर्घटना में से एक कारण अनुक्रम अलग करते हैं। मान लीजिए मैं एक सीढ़ी एक बढ़ई खड़ा है जिस पर के तहत चलना और मैं एक गिरने हथौड़ा द्वारा तुरंत हिट कर रहा हूँ। हम क्यों कह रहे हैं कि यह बढ़ई का हथौड़ा छोड़ने के रूप में अपने सीढ़ी से गिर जाते हैं और मुझे घायल करने के कारण होता है के तहत मेरे चलने के लिए विरोध किया था? एक कहना है कि हम, बता सकते

हैं सिर्फ देखकर, क्या दुर्घटना परीक्षा हो सकती है। लेकिन एक छोटे से प्रतिबिंब से पता चलता है कि यह गलत हैं सब हम जानते है के लिए, वहाँ सीढ़ी के आधार, मेरे पैर ककि बढ़ई के हाथ से हथौड़ा गिरने से फिसल गया। वह एक जटिल उपकरण हो सकता है।

**NOTES**

तथ्य यह है सीढ़ी और दुर्घटनाओं के तहत चलने को जोड़ने से हमारे अनुभव में कोई नियमितता (यही कारण है कि हम इस तरह के एक कनेक्शन एक अंधविश्वास फोन है) है कि वहाँ है, और एक भारी वस्तु और उनके गिरने की रिहाई को जोड़ने है। यह अतीत हमें ले जाता है कि कारण के रूप में उन्हें तरह दृश्यों का वर्णन करने के में घटनाओं के जोड़े का नियमित रूप से उत्तराधिकार के हमारे अनुभव और आकस्मिक रूप में विपरीत है।

डेविड ह्यूम अठारहवीं सदी में तर्क दिया है, वहाँ निश्चित रूप से कुछ भी नही है। हम सीधे कर सकते हैं। निरीक्षण, हमारे अतीत के अनुभवों से स्वतंत्र किसी एक अनुक्रम में, कोई गोंद उनके प्रभाव के कारणों संलग्न, कि हमें कारण दृश्यों और आकस्मिक लोगों के मध्य भेद करने के लिए सक्षम बनाता है और जब हम वापस मौलिक भौतिक कारण दृश्यों, कानून है कि शरीर एक दूसरे पर गुरुत्वाकर्षण के आकर्षण डालती है। इसी तरह का पता लगाने वहाँ कनेक्शन की सार्वभौमिकता से उन्हें ज्यादा कुछ नहीं है। जब हम प्रकृति के सबसे मौलिक कानून तक पहुँचते हैं, वे खुद को अलग घटनाओं की लगातार संयोजन के बयानों से ज्यादा कुछ नहीं हैं: वे उन्हें दिखा आवश्यक हो अथवा होने के लिए कम मौलिक दृश्यों को उजागर नहीं होगा ''सुगम'' या छुपा कारण शक्तियों का आपरेशन का एक अपरिहार्य परिणाम। कारण स्पष्टीकरण अनिवार्य रूप से कारण और उसके प्रभाव को जोड़ने के कानूनों के लिए अपील करनी चाहिए और वहाँ अधिक से अधिक मौलिक कानून के लिए खोज में कोई रोक जगह है। भूमिका दी कानूनों के और सामान्यीकरण है कि कानून में सधार किया जा सकता है, कभी ह्यूम के काम के बाद से अनुभववादी दर्शन और विज्ञान के क्षेत्र में अनुभवजन्य पद्धति की एक सतत विशेषता रही है। क्योंकि अलग-अलग मामलों में करणीय के हमारे ज्ञान कानूनों जो खुद को दोहराया दृश्यों के अवलोकन के माध्यम से खोज कर रहे हैं कि पहचान पर आधारित है, यह कोई आश्चर्य की इस तरह के अवलोकन क्या हमारे व्याख्यात्मक और भविष्य कहने वाला परिकल्पना का परीक्षण करती है। उन्हें उचित ज्ञान के रूप में प्रमाणित करता है। कारण स्पष्टीकरण अनविार्य रूप से कारण एवं उसके प्रभाव को जोड़ने के कानूनों के लिए अपील करनी चाहिए और वहाँ अधिक से अधिक मालिक कानून के लिए खोज में कोई रोक जगह है। कभी ह्यूम के काम के बाद से अनुभववादी दर्शन और विज्ञान के क्षेत्र में अनुभवजन्य पद्धति की एक सतत् विशेषता रही है।

NOTES

ये खोज कर रहे हैं कि पहचान पर आधारित है, यह कोई आश्चर्य की इस तरह के अवलोकन क्या हमारे व्याख्यात्मक और भविष्य कहने वाला परिकल्पना का परीक्षण करत है और उन्हें उचित स्थान के रूप में प्रमाणित करता है। उसके प्रभाव से जोड़ने के कानूनों के लिए अपील करनी चाहिए और वहाँ अधिक से अधिक मौलिक कानून के लिए खोज में कोई रोक जगह है। भूमिका दी कानूनों के और सामान्यीकरण है कि कानून में सुधार किया जा सकता है, कभी ह्यूम के काम के बाद से अनुभववादी दर्शन तथा विज्ञान के क्षेत्र में अनुभवजन्य पद्धति की एक सतत विशेषता रही है। क्योंकि अलग-अलग मामलों में करणीय के हमारे ज्ञान कानूनों, जो खुद को दोहराया दृश्यों के अवलोकन के माध्यम से खोज कर रहे हैं। यह कोई आश्चर्य की इस तरह के अवलोकन क्या हमारे व्याख्यात्मक और भविष्य कहने वाला परिकल्पना का परीक्षण रकती है और उन्हें उचित मान के रूप में प्रमाणित रकता है और सामान्यीकरण है कि कानून में सुधार किया जा सकता है। कभी ह्यूम के बाद से अनुभववादी दर्शन तथा विज्ञान के क्षेत्र में अनुभवजन्य पद्धति को एक सतत् विशेषता रही है। क्यों कि अलग-अलग मामलों में करणी यके हमारे ज्ञान कानूनों जो खुद को दोहराया दृश्यों के अवलोकन के माध्यम से खोज कर रहे हैं। यह कोई आश्चर्य की इस तरह के अवलोकन क्या हमारे व्याख्यात्मक और भविष्य कहने वाला परिकल्पना का परीक्षण करती है और उनहें उचित ज्ञान के रूप में प्रमाणित करता है। कानून में सुधार किया जा सकता है, कभी ह्यूम के काम के बाद से अनुभववादी दर्यान और विज्ञान के क्षेत्र में अनुभवजन्य पद्धति की एक सतत् विशषता रही है। क्योकि अलग-अलग मामलों में करणीय के हमारे ज्ञान कानूनों, जो खुद को दोहराया दृश्यों के अवलोकन के माध्यम से खोज कर रहे हैं। यह कोई आश्चर्य की इस तरह के अवलोकन क्या हमारे व्याख्यात्मक और भविष्य कहने वाला परिकल्पना का परीक्षण करती है और उन्हें उचित ज्ञान के रूप में प्रमाणित करता है। यह इस तरह अवलोकन क्या हमारे व्याख्यात्मक और भविष्य कहने वाला परिकल्पना का परीक्षण करती है और उन्हें उचित ज्ञान के रूप में प्रमाणित करता है। यह इस तरह अवलोकन क्या हमारे व्याख्यात्मक और भविष्य कहनेवाला परिकल्पना का परीक्षण करती है और उन्हें उचित ज्ञान के रूप में प्रमाणित करता है क्योंकि सामाजिक विज्ञान तकनीकी अदायकी के साथ वैज्ञानिक ज्ञान के प्रावधान में प्रगति नहीं है? सामाजिक विज्ञान में लंबे समय के प्रयासों के बावजूद विफल रहे हैं, कानून या यहाँ तक कि अनुभवजन्य मानव व्यवहार और उसके परिणामों के बारे में वासतविक कानूनों की दिशा में सुधार किया जा सकता उजागर करने के लिए। इस निदान को हम उन्हें खोज के बारे में जा सकते हैं। कि बारे में क्यों कोई कानून नहीं पाया गया है कि और यदि संभव हो तो एक प्रस्ताव दोनों के स्पष्टीकरण के लिए कहता है।

NOTES

एक सम्मोहक व्याख्या यह है कि सामाजिक विज्ञान सिर्फ ज्यादा है कठिन प्राकृतिक विज्ञान से अनुसंधान वस्तु मनुष्य है, और हम जमकर जटिल प्रणालियों रहे हैं। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कि कम प्रगति जो कि क्वार्क, रासायनिक बंधन और गुणसूत्रों के रूप में इस तरह के सरल वस्तुओं से निपटने की तुलना में इन विषयों में बनाया जा सकता है। सब के अर्थशास्त्र वगैरह के उन लोगों के लिए के अधीन है। सभी बलों हमारे व्यवहा रका निर्धारण करने का अलग प्रभाव हजो किसी भी अन्य ''अनुशासन का सामना कर रहा है कि अधिक से अधिक दुर्जेय एक काम है। सामाजिक विज्ञान के अपेक्षाकृत अविकसित चरित्र कोई आश्चर्य कीबता होनी चाहिए। इस व्याख्या पर सामाजिक विज्ञान सिर्फ ''युवा विज्ञान'' है। काफी हद तक वे कर रहे हैं या उनके तरीकों में पर्याप्त वैज्ञानिक हो सकता है; वे सिर्फ आदेश सामाजिक ज्ञान हम तलाश का उत्पादन करने में अधिक समय और संसाधनों की आवश्यकता है।

इस व्याख्या के साथ पेरशानी धैर्य के अपने वकील और उसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य है। प्राकृतिक विज्ञान की तुलना द्वारा सामाजिक विज्ञ्ज्ञन वासतव में युवा हैं? से जब हम इन विषयों की तारीख चाहिए? अनुसंधान पैसे के पद द्वितीय विश्व युद्ध के बहाव, सांख्यिकीय तरीकों और सामाजिक वैज्ञानिकों के बेहतर वैज्ञानिक शिक्षा से? संकोची प्रयास, उन्नीसवीं सदी के अंत में दुर्खीम की तरह से, समाज का एक मात्रात्तमक विज्ञान की स्थपना के लिए? थॉमस होब्स के प्रयास अठारहवीं या सत्रहवीं शताब्दी में मानव व्यवहार का एक तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत या थूसाईडाईड्स से बाहर रखना पेलोपोनेशियल युद्ध पांचवीं सदी ई. में पूर्व में? निश्चित रूप से, समझने के लिए और मानव व्यवहार की भविष्यवाणी करने की इच्छा कम से कम वर्ष के रूप में प्राकृतिक घटना को समझने के लिए और इच्छा है। मानव व्यवहार के नियमों के लिए खोज के रूप में कम से कम पिछले मैकियोवेली चला जाता है।

कुछ दार्शनिकों के लिए और भी अधिक सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए दावा है कि सामाजिक विज्ञान युवा छल्ले हैं खोखले। सभी सामाजिक विज्ञान में वयवहार इस रवैये का अच्छा चित्र प्रदान करते हैं। वे विफलता के लिए एक अलग व्याख्या प्रदान करते हैं। व्याख्या शुरू करने के लिए के साथ वे तर्क है कि मनुष्य की जटिलता उनके बारे में कानून की खोज की कठिनाई उत्पन्न कर स्वीकार नहीं करते।

प्राकृतिक विज्ञान का विास, अपने विषय के अधिक जटिल और अधिक के साथ काम करने के लिए मुश्किल हो गया है; उदाहरण के लिएहम विशाल कण त्वकरों खड़ा करेन के क्रम में, वस्तुओं यह भी सबसे अप्रत्यक्ष टिप्पणियों बनाने हेतु बहुत

मुश्किल है, जिस पर के बारे में जानने के लिए आजकल भौतिकी में हमारे ज्ञान अग्रिम करने के लिए की जरूरत है। लेकिन प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की बढ़ती जटिलता वैज्ञानिक पहले से ेई मंदी नहीं हुई है। काफी विपरीत, ''प्रगति'' की दर अगर कुछ समय के साथ वृद्धि हुई है। इस प्रकार, अपने आप में जटिलता शायद ही सामाजिक विज्ञान की उन्नति की कमी के लिए एक बहाना हो सकता है।

NOTES

इसके अलावा, तर्क जारी है, सामाजिक विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान पर एक महान लाभ, एक करता है कि उनकी प्रगति मुश्किल का तुलनात्मक कमी के रूप में केवल जटिलता के परिणाम और प्रयोग के कठिनाइयों की व्याख्या करना पड़ा है। प्राकृतिक विज्ञान में, सबसे बड़ी बाधा अग्रिम करने के लिए वैचारिक, तथ्यात्मक नहीं किया गया है; जो है, अग्रिम अक्सर अहसास है कि हमारे वर्णनात्मक जरूरत श्रेणियों परिवर्तित करने की है। क्योकि वे खोज सामान्यीकरण के लिए एक बाधा ाथे का परिणाम हो। इस प्रकार, न्यूटन क्रांति एहसास है कि बीच अरस्तू के भेद का परिणाम था। अगर हम गति के नियमों की खोज के लिए कर रहे हैं। इसी तरह, अपरिवर्तनीय, अपरिवर्तनीय प्रजातियों के पूर्व डार्विन गर्भाधान अगर हम एक जैविक सिद्धांत है कि अंधे विविधता और प्राकृतिक चयन है कि नए लोगों को में प्रजातियों को बदलने के लिए अपील दवारा विविधता बतो मनोरंजन कर रहे हैं आत्मसमर्पण कर दिया जाना चाहिए। अपरिवर्तनीय प्रजातियों अगर हम एक जैविक सिद्धांत है कि अंधे विविधता और प्राकृतिक चयन है कि नए लोगों को में प्रजातियों को बदलने के लिए अपील द्वारा विविधता बताते मनोरंजन कर रहे है। आतमसमर्पण कर दिया जाना चाहिए। अपरिवर्तनीय प्रजातियों अगर हम एक जैविक सिद्धांत है कि अंधे विविधता और प्राकृतिक चयन है कि नए लोगों को में प्रजातयों को बदलने के लिए अपील द्वारा विविधता बताते मनोरंजन कर रहे हैं आतमसमर्पण कर दिया जाना चाहिए।

लेकिन सामाजिक विज्ञान में, वहाँ लगभग सावभौमिक सहमति है कि वर्णनात्मक श्रेणियों कि सामान्य ज्ञान के इतिहास की सुबह के पश्चात् से इस्तेमाल किया गया है सही हैं किया गया है। परंपरागत रूप से, क्या हम सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में जानना चाहता था। हम यह मानते हैं कि इन कार्यों को हमारे द्वरा निर्धारित किया जाता इच्छाओं और हमारे विश्वासों/तदनुसार, सामाजिक वैज्ञानिकों लंबे जोड़ने कार्यों, विश्वासों और इच्छाओं को कानून के लिए, सम्मानत दृढ़ विश्वास है कि इन प्राकृतिक श्रेणियों में मानव व्यवहार और उसके कारणों के गिर रहे हैं की खोज नहीं की। इन सही श्रेणियों जिसके साथ मानव व्यवहार का वर्णन करने के लिए, और अगर हम उन्हें अति प्राचीन काल से उपलब्ध पड़ा है कर रहे हैं, तो सामाजिक विज्ञान किया गया है। मुक्त सबसे बड़ी बाधा प्राकृतिक विज्ञान में अग्रिम करने से

**NOTES**

दुनिया को देखने की पूरी तरह से नवीन तरीकों का पता उत्कीर्ण करने की जरूरत है। सामाजिक विज्ञान में इस प्रकार, हम उम्मीद हो सकता है प्रगति संभव हो गया करने के लिए है या शायद, और भी अधिक तेजी से प्राकृतिक विज्ञान से सामाजिक में। यह बहाना है कि इन युवा विषयों, महान जटिलताओं के विषयों, कई सामाजिक वैज्ञानिकों और कुछ दार्शनिकों को अपुष्ट सामना कर रहे हैं। बनाता है। महान जटिलता के विषयों कई सामाजिक वैज्ञानिकों और कुछ दार्शनिकों को अपुष्ट का सामना करना पड़। महान जटिलता के विषयों, कई सामाजिक वैज्ञानिकों और कुछ दार्शनिकों को अपुष्ट का सामना करना पड़ा।

वास्तव में, इन लोगों का तर्क है कि सामाजिक विज्ञान की बुनियादी श्रेणियों गलत हैं। कारण कोई कानून का पर्दाफाश किया गया है कि कार्रवाई, इच्छा/विश्वास की श्रेणियों है, और उनके सजातीय ऐसे कानूनों की खोज से हमें रोका है और वे नए लोगों को इन श्रेणियों को प्रतिस्थापित करने के लिए प्रभाव डालने की व्यावहारिकता, सामाजिक व्यावहारिकता, और दूसरों के उन लोगों की तरह चाहते हैं। यह देखना चाहते हैं कि एक वर्ग योजना कानून को उजागर, तब भी जब वे नहीं जतो आसानी से मिल होगा से हमे रोक जा सकता है आसान है।

मान लीजिए कि हमें ''जलीय जानवर'' के रूप में ''मछली'' को परिभाषित और फिर कैसे मछली को सांस लेने के बारे में सामान्यीकरण फ्रेम करने के लिए प्रयतन करते हैं। हम मछली पकड़ने और उनके शरीर रचना विज्ञान का परीक्षण करके ऐसा करते हैं। हमारे अवलोकन गिल्स के माध्यम से है कि मछली सांस परिकल्पना की ओर जाता है। हमारे जाल कास्टिंग अधिक व्यापक रूप से, हम जाल व्हेल और डॉल्फिन करने के लिए शुरू है, जो हमे सुराग के लिए हमारी सामान्यीकरण संशोधित करने के लिए ''गिल्स'' के माध्यम से साँस सभी मछली, को बचाने के लिए व्हेल और डॉलिफन'' लेकिन तबब हम समुद्र तल के साथ खींचे करने के लिए शुरू करते हैं और जेलिफिश की सतह पर तैरते, अलग अलग तरीकों से सभी सांसा लेने में वर्णन  करने के लिए नहीं झींगा मछलियों, सितारा मछली, केकड़ा, पता चलता है। हमारे सामान्यीकरण करने के लिए अधिक से अधिक अपवाद जोड़ने कोई मतलब नहीं है। बस–सब कैसे मछली को साँस लेने, नहीं के रूप में हम मछली को परिभाषित किया है के बारे में एक सामान्यीकरण नहीं है। मुसीबत स्पष्ट हैं: यह के रूप में मछली की हमारी परिभाषा है। ''जलीय जीव''। एक सकरी परिभाषा, जैसे ''दरिद्र जलीय हड्डीवाला'' न केवल, के रूप में अरस्तू ने कहा, क्योंकि ''उत्कीर्ण जोड़ो के करीब प्रकृति'', अपनी असली डिवीजनों और  अधिक सही प्रतिबिंबित करेगा, यह भी सरल सामान्यीकरण कि रिने के लिए खड़े हो जाओ फ्रेम करने के लिए हमें सक्षम हो जाएगा नए आंकड़ों के खिलाफ परीक्षण। दरअसल, ''सोने'' जो प्रकृति में वास्तविक डिवीजनों को

NOTES

दर्शाता है, इस तरह एक ''नकली सोना'', जो नहीं है, की तरह एक ''प्रकार अवधि'' के मध्य का अंतर इस तथ्य के बारे में पूर्व कानून देखते हैं, और बाद में नहीं कि है। यही कारण कि कि तरह श्शर्तों है कि कानून में शामिल करता है। ''प्राकृतिक प्रकार,'' के रूप में कृत्रिम लोगों के लिए विरोध किया है। प्रकृति जोड़ों के करीब उत्कीर्ण ''क्योंि जाता है, इसकी असली डिवीजनों और अधिक सही प्रतिबिंबित करती हैं, यह भी सरल सामान्यीकरण है कि नए डेटा के खिलाफ परीक्षण करने के लिए खड़े हो जाओ फ्रेम करने के लिए सक्षम हो जाएंगे। वासतव में, एक के मध्य अंतर'' सोना की तरह'' प्रकार अवधि नकली सोना, ''जो प्रकृति में वास्तविक डिवीजनों और इस तरह एक को दर्शाता है'' ''जो नहीं हैं, तथ्य के बारे में पूर्व, और न बाद कानून देखते हैं की है। यही कारण है कि बनाता तरह-शर्तों है कि कानून में शामिल है'' प्राकृतिक प्रकार, ''के रूप में कृत्रिम लोगों के लिए विरोध किया। और नकली सोना, ''जो नहीं करता है, जैसे एक तथ्य पूर्व और बाद नहीं के बारे में कानून देखते हैं यही कारण है कि किस तरह-शर्तों है कि कनून मे शामिल करता है। ''प्राकृतिक प्रकार, '' के रूप में कृत्रिम लोगों के लिए विरोध किया है।

अब निस्संदेह कारण है कि हम तरह-शर्तों से जुड़ी हो गए हैं की एक अच्छी व्याख्या है। कार्रवाई, इच्छा और विश्वासमानव व्यवहार के लिए व्याख्यात्मक चर के रूप में। वे कैसे दूसरों को कार्य करेगा इसक बारे में हमारी उम्मीदों मार्गदर्शन के लिउ उपकरण के रूप में उभरा है, लेकिन हम व्यवहार वे समझाने के बारे में कोई कानून का पर्दाफाश किया हैं। शायद विफलता इस व्यवहार के बारे में कानूनों को खोजने के लिए तथ्य यह है कि शबदों के इस तरह नहीं ''प्राकृतिक'', वे सिर्फ उत्कीर्ण नहीं हैं, चीजों को जोड़ों में हैं का परिणाम हैं। हमारे उदाहरण की तरह ''मछली'', हर सामान्यीकरण है। इन अप्राकृतिक लोगों के लिए नए व्याख्यात्मक चर विकल्प स्पष्ट रूप से है, ''सुदृढ़कर्ता'' जैसे शब्दों व्यवहारबाद या ''दमतन'' से मनोविश्लेषण, मार्क्सवादी सिद्धांत से ''अलगाव की भावना'' या दुर्खीम के सामाजिक परंपरा से। इन सिद्धांतों में से प्रेत्क पैरोकार वादा करता हूँ कि अपने पसंदीदा वर्णनात्मक शब्दावली सामाजिक विज्ञान सक्षम हो जाएगा के आवेदन प्रगति और तरीके प्राकृतिक विज्ञान है। तो उनके विषयों वास्तव में बाहर बारी युवा विज्ञान सही होने के लिए होगा। प्रकार और श्रेणियों में से अपनी पसंद की प्रणाली के अभाव में के लिए, सामाजिक विज्ञान बल्कि रसायन शास्त्र की तरह हैं पहले लबोइसिरर: ''ऑक्सीजन'' ''ज्वलनशीलता'' के स्थान पर क मामलेमें दहन का र्णन करने की कोशिश कर और नाकाम रहे क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं हैं वहाँ। मार्क्सवादी सिद्धांत या दुर्खीम के सामाजिक परंपरा से। इन सिद्धांतों में से प्रतयेक के पैरोपकार वादा करता हूँ कि अपने पसंदीदा वर्णनात्मक शब्दावली सामाजिक

**NOTES**

विज्ञ्ज्ञन सक्षम हो जाएगा के आवेदन प्रगति और तरीके प्राकृतिक विज्ञान है। सामाजिक वैज्ञानिकों को शुरू करने के लिए सही हैं, तो उनके विषयों वास्तव में बाहर बारी युवा विज्ञान होने के एि होगा। प्रकार और श्रेणियों में से अपनी पसंद की प्रणाली के अभाव में के लिए, सामाजिक विज्ञान बल्कि रसायन शास्त्र की तरह हैं पहले लबोइसिरर: ''ऑक्सीजन ''ज्वलनशीलता'' के स्थान पर के मामले में दहन का वर्णन करने की कोशिश कर और नामाक रहने क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं है वहाँ। मार्क्सवादी सिद्धांत या दुर्खीम के सामाजिक परंपरा से "anomie" से। इन सिद्धांतों में से प्रत्येक के पैरोकार वादा करता हूँ अपने पंसदीदा वर्णनात्मक शब्दावली सामाजिक विज्ञान सक्षम हो जाएगा के आवेदन प्रगति और तरीके प्राकृतिक विज्ञान है। कि में करने के लिए शुरू करने के लिए। वैज्ञानिकों सही हैं, तो उनके विषयों वास्तव में बाहर बारी युवा विज्ञान होने के लिए होगा। प्रकार और श्रेणियों में से अपनी पसंद की प्रणाली के अभाव में के लिए, सामाजिक विज्ञान बल्कि रसायन शास्त्र की तरह हैं पहले लबोइसिरर: ''ऑक्सीजन'' ''ज्वलनशीलता'' के स्थान पर के मामले में दहन का वर्णन करने की कोशिश कर और नाकाम रहने क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं है वहाँ। इन सिद्धांतों में से प्रत्येक के पैरोकार वादा करता हूँ कि अपने पसंदीदा वर्णनात्मक शब्दावली सामाजिक विज्ञान सक्षम हो जाएगा के आवेदन प्रगति और तरीके प्राकृतिक विज्ञान है कि में करने के लिए। वैज्ञानिकों सही हैं, तो उनके विषयों वास्तव में बाहर बारी युवा विज्ञान होने के लिए होगा। प्रकार और श्रेणियों में से अपनी पसंद की प्रणाली के अभाव में के लिए, सामाजिक विज्ञान बल्कि रसायन शास्त्र की तरह हैं पहले लबोइसिएर: 'आक्सीजन'' ''ज्वलनशीलता'' के स्थान पर के मामले में दहन का वर्णन करने की कोशिश कर और नाकाम रहने क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं है वहाँ। इन सिद्धांतों में से प्रत्येक के पैरोकार वादा करताहूँ कि अपने पसंदीदा वर्णनात्मक शब्दावली सामाजिक विज्ञान सक्षम हो जाएगा के आवेदन प्रगति और तरीके प्राकृतिक विज्ञान है कि में करने के लिए शुरू करने के लिए। वैज्ञानिकों सही हैं , तो उनके विषयों वास्तव में बाहर बारी युवा विज्ञान हाने के लिए हागगा।प्र कार और श्रेणियों में से अपनी पंसद की प्रणाली के अभाव में के लिए, सामाजिक विज्ञान बल्कि रसाश्न शास्त्र की तरह हैं पहले लबोइसिएर: ''ऑक्सीजन'' ''ज्वलनशीलता'' के स्थान पर के मामले में दहन का वर्णन करने की कोशिश कर और नाकाम रहने क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं है वहाँ। प्रकार और श्रेणियों में से अपनी पसंद की प्रणाली के अभाव में के लिए, सामाजिक विज्ञान बल्कि रसायन शास्त्र की हो पहले लबोइसिएर: ''ऑक्सीजन'' ''ज्वलनशीलता'' के स्थान पर के मामले में दहन का वर्णन करने की कोशिश कर और नाकाम रहने क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं है वहाँ।

तर्क की इस श्रृंखला में हर कदम दार्शनिक विवादास्पद है: का दावा है कि प्राकृतिक विज्ञान प्रगति दिखाने के लिए, जबकि सामाजिक विज्ञान नहीं हैं; के बारे

में ज्ञान के विकास में क्या प्रगति के होते हैं मान्यताओं; ज्ञान के विकास प्रदान करने में कानून की भूमिका; क्यों सामाजिक विज्ञान अभी तक किसी भी कानून का पर्दाफाश नहीं किया है की कथित स्पष्टीकरण; और कैसे सामाजिक वैज्ञानिकों आगे बढ़ना चाहिए इनके बारे में नुस्खे अगर वे की उम्मीद हैं यह देखना चाहते है कि दार्शनिक विवादास्पद इन चरणों का अगर हम जो लोग इसे अस्वीकार द्वाा किए गए तर्क की इस श्रृंखला के लिए चुनौतियों की रूपरेखा तैयार में से हर एक है सबसे आसान हो जाएगा।

## समझना तथा बोधगम्यता

जो लोग तर्क यह है कि प्राकृतिक विज्ञान प्रगति की है, जबकि सामाजिक विज्ञान निस्तेज हो गया। अस्वीकार करते हैं, प्राकृतिक विज्ञान के दर्शन की बहुत नींच मे अपने प्रतिरोध्य दलीलें शुरू करते हैं। के साथ शुरू करने के लिए, वे मानते हैं कि प्राकृतिक विज्ञान वास्तव में प्रति आमतौर पर उनहें जिम्मेदार ठहराया हैं ऐसा करने में वे विज्ञान थॉमस कुहन के में उन्नत के कारण शोषण वैज्ञानिक क्रांतियों, की संरचना है, जो 1962 में इसके प्रकाश के पश्चात् से काम सबसे अधिक बार पद्धति पर सामाजिक वैज्ञानिकों का लेखक पूरी में उद्धृत किया गया है। इन सामाजिक वैज्ञानिकों में से कई का दावा है कि बजाय प्रगति से की, आइंस्टीन को अरस्तू से वैज्ञानिक इतिहास परिवर्तन की विशेषता है, सिद्धांतों के उत्तराधिकार के रूप में कुहन की व्याख्या अथवा क्या कुहन बुलाया ''मानदंड, जो उनके पूर्ववर्तियों पर सुयाार बिना एक-दूसर की जगह।

विज्ञान के क्षेत्र में संचयी ''प्रगति'' के इन विरोधियों के अनुसार, कारण यह है कि वैज्ञानिक सिद्धांतों उनके पूर्ववर्तियों पर निर्माण नहीं है। बहुत मोटे ता ।र पर यह है कि वे परस्पर विरोध रखते हुए विभिन्न वैचारिक योजनाओं का गठन और उन दोनों के बीच सटीक अनुवाद असंभव है। अनुवाद के लिए कोई तटस्थ आधार नहीं है, कोई सिद्धांत से मुक्त भाषा टिप्पणियों है कि हम भविष्य कहने वाला सफलता के लिए सिद्धांतों की तुलन ।करने के लिए सक्षम होगा। वर्णन के ने के लिए। एक सिद्धांत यह है की पुष्टि के डेटा एक और सिद्धांत के प्रयोगात्मक त्रुटि हो जाएगा। इस प्रकार, का दावा है कि विज्ञान भविष्य कहने वाला सफलता में लगातार सुधार से पता चलता है कि किसी भी तरह के कथित तौर पर प्रदर्शन सिद्धांतों कि कर लिया गया है के खिलाफ सवाल भीख मांगता, विवादास्पद है। विपरीत करे के लिए उपस्थिति, कुहन का आयोजन किया, आदेश ताकि नवीनतम दृश्यय वैज्ञानिक उपलब्धियों यह बदलता है। सफलता की विरासत ले जा सकता है, संचय की उपस्थिति देने के लिए अपनी प्रजा के इतिहास को फिर से लिखने हर पीढ़ी में वैज्ञानिकों का परिणाम है।

NOTES

प्रतयक्षवाद अथवा न्यूटन का विज्ञान के साथ जुड़े अनुभववाद: वास्तव में, कुहन दावा करने क लिए है कि पूरे विचार है कि भविष्य कहने वाला सफलता वैज्ञानिक ज्ञान के लिए एक ट्रांस-अनुशासनात्मक कसौटी का गठन करना चाहिए एक वैचारिक योजना का हिस्सा है लग रहा था। लेकिन प्रत्यक्षवादी या अनुभवाादी प्रतिमान अब सापेक्षकीय और क्वांटम सैद्धांतिक वैचारिक योजनाओं है कि उनके अधिकार की न्यूटन की मांग वंचित द्वारा भौतिक विज्ञान के क्षेत्रमें बदल दिया गया है। क्योंकि यह कारण तंत्र के एक नियतातमक सिद्धांत था, न्यूटन का विज्ञान भविष्यवाणी वैज्ञानिक उपलब्धि की एक आवश्यकता बना दिया। क्वांटम यांत्रिकी के अनुसार, दुनिया है; इस प्रकार निश्चित भविष्यवाणी अब वैज्ञानिक सफलता की एक आश्यक शर्त हो सकता है। न ही यह सखत और कानूनों में वर्णित कारण तंत्र के लिए खोज करने के लिए मतलब हैं एक ही कारण है कि वैज्ञानिक मानकों प्राकृतिक विज्ञान में से प्रत्येक के भीतर बदल के लिए, वे उन दोनों के बीच बड़े पैमाने पर अलग और उद्देश्य और सामाजिक विज्ञान के तरीकों से अधिक व्यापक रूप से भी भिन्न होते हैं। इस प्रकार, प्रभारी कि सामाजिक विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की तुलना में कम प्रगति की है अक्सर एक कमबीन निरंकुश कि अनुचित तरीके से एक अप्रचलित प्रतिमान के व्यंजनों से सामान्यीकृत पर आराम करने के लिए कहा जाता है।

बेशक, किसी विष्य की भविष्यवाणी और व्यावहारिक अनुप्रयोग के भीतर का महत्वपूर्ण तरीके हैं "प्रतिमान को अभिव्यक्त करते।" लेकिन एक बार हम प्रतिमान है कि एक सामाजिक विज्ञान को नियंत्रित करता है की पहचान है, हम पहचान करने हेतु क्या भविष्यवाणियों और अनुप्रयोगों के प्रकार के लिउ उपयुक्त हैं सक्षम हो जाएगा। इसके अलावा, हम को देखने के लिए जो इन मानकों के आलोक में सक्षम हो जाएगा, जसामाजिक विज्ञान में प्राकृीतिक विज्ञान में जितना प्रगति हुई है। यह सिर्फ प्रगति की एक अलग तरह की है।

जबकि प्राकृतिक विज्ञान अंतर्निहित तंत्र के बारे में कारण सिद्धांतों प्रदान करने पर मुख्य रूप से उद्देश्य, सामाजिक विज्ञान यह प्रतिपादन द्वारा व्यवहार की सझ की तलाश के लिए आयोजित की जाती है। वे इसका अर्थ या महतव को उजागर। अर्थ या महत्व, मानव व्यवहार की व्याख्या यह समझने के लिए सक्षम बनाता है। कि मौलिक कारण नहीं है, न ही यह कानून या किसी दिलचस्प प्रकार के सामान्यीकरण की खोज के द्चारा उपलब्ध कराई गई है। बोधगम्यता: प्राकृतिक विज्ञान के विपरीत, सामाजिक विषयों एक पहचान रोक जगह हैं। सामाजिक विज्ञान के लिए खुद को मानव व्यवहार का वह हिस्सा आमतौर पर के रूप में वर्णित साथ चिंता का विषय कार्रवाई और नहीं की या शरीर की सतह पर मात्र आंदोलनों के साथ। भाषण, खर्राटे ले नहीं, कूद नहीं, गिरने, आतमहत्या, बस मृत्यु

इन नहीं कुछ सामाजिक विज्ञान के विषय के हैं, और सामाजिक विज्ञान है कि उसके परिणामों और बड़े पैमाने की घटनाओं और संस्थानों में अपने एकत्रीकरण के साथ अलग-अलग कार्रवाई सौदा के साथ सौदा नहीं है।

NOTES

कार्रवाई कामतलब समझकर हालांकि अंत एक में नहीं है। कारण जांच की प्रजातियों, सामाजिक विज्ञान के मुख्य लक्ष्य के रूप में भविष्यवाणी के विरोधियों का कहना है कि इस समझ निश्चित रूप से संतुष्ट उचित भविष्य कहने वाला सफलता के मानकों मानक दूसरे मनुष्य के इसमे सरलता नेविगेट करेन में हमारी भविष्यवाणियों हैं, हम अंतर्निहित सिद्धांत यह है कि समाज में हमें बढ़त प्रदान की गई है। इस सिद्धांत, दार्शनिकों के बीच के रूप में जाना ''लोक मनोविज्ञान'' हमें बताता है कि लोग बातें वे मोटे तौर पर करते हैं, क्योंकि वे कुछ समाप्त हो जाती है चाहते हैं और मानते हैं कि इन कृत्यों उन्हें प्राप्त करने में सहायता करेगा। इसके बारे में कैसे लोगों को एक अंतर्निहित सिद्धांत भी शामिल और इच्छाओं को आकार (यदि वहाँ दो पृथक माल अलग दामों पर उपलब्ध हैं, मैं सस्ता एक चाहते है)। यह एक सिद्धांत हैं जिसमें हम महान विश्वास जगह है। बेशक (पर विचार करें, हर बार जब आप कारों की उपस्थिति में सड़क पार करने पर रोक संकेत पर अपने जीवन में इस सिद्धांत की भविष्यवाणियों पर कार चालकों की कार्रवाई के बारे में बंद कर दिया, आप की हिस्सेदारी है।) जब हम इस सिद्धांत के केन्द्रीय सिद्धांतों व्यक्त करने के लिए प्रयास करते हैं, हम केवल साधारण और स्पष्ट सिद्धांतों का उत्पादन करने लगते हैं की तरह एक के ऊपर व्यक्त: लोग तरीके कि उनका मानना है कि उनकी इच्छाओं प्राप्त करेंगे में काम करते हैं। हालांकि, इस सिद्धांत में कोई दोष हैं यह सिर्फ मतलब है कि हालांकि सिद्धांत बहुत कठिन है, हम इसे कुछ हिस्सा बहुत अच्छी तरह से पता है। इसके अलावा, जैसा कि हम देखेंगे, लोक मनोविज्ञान महत्वपूर्ण और अत्यधिक एक्सटेंशन (अध्याय 4 देखें) होने का दावा किया है।

regularities हम बुरकना जब हम इन सिद्धांतों को पहचान करने के लिए की तलाश भी हमारे अन्य लोगों के कार्यों के बारे में बहुत महत्वपूर्ण भविष्य कहने वाला शक्तियों के साथ न्याय करने के लिए कमजोर लग रहे हैं। लेकिन इस से पता चलता है कि बहुत जटिल सिद्धांत उपयोग हम किसी भी तरह अनजाने सिद्धांत यह है कि हमारे भाषण नियंत्रित करता है और हमें मूर्ख वाक्य त्रुटियों बनाने से रोकता है, हम होशपूर्वक इसके बारे में बहुत ज्यादा व्यक्त नहीं कर सकता था, हालांकि की तरह प्रस्तुत किया जाता है। हमारे लोक मनोविज्ञान पहले से ही दर्ज की गई इतिहास की शुरुआत से पहले भविष्यवाणी करने की शक्ति अच्छी तरह के क उच्च स्तर पर पहुंच गया, लंबे समय से इससे पहले कि हम प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में एक तुलनात्मक शक्तिशाली सिद्धांत का अधिग्रहण किया था।

NOTES

इसलिए, भविष्य कहने वाला सफलता का संदिग्ध मानक पर, लोक मनोविज्ञान बहुत अच्छी तरह से करता है और यह दिखा रहा है कि यह विश्वासों और इच्छाओं के आलोक में किए गए कर्म होता है के आधार पर व्यवहार के अर्थ की पहचान करके ऐसा नहीं करता है।

सामाजिक विज्ञान, यह तर्क दिया है और विस्तार और इस सिद्धांत के विकास होना चाहिए। यह लोक मनोविज्ञान के महान भविष्य कहने वाला शक्ति विरासत है, लेकिन सामाजिक विज्ञान का मुख्य उद्देश्य यह भविष्यवाणी करने की शक्ति पर सुधार करने हेतु नहीं है। इसका उद्देश्य, बल्कि सामाजिक संस्थाओं में व्यक्तियों की बड़ी संख्या के बीच बातचीत करने के लिए लोगों की रोजमर्रा की बातचीत की समझ से इस सिद्धांत का विस्तार करने और व्यक्यियों जिनकी संस्कृतियों और जीवन के रूपों हमारे अपने से बहुत अलग हैं के बीच बातचीत है।

सामाजिक विज्ञान के लिए एक "वैज्ञानिक" दृष्टिकोण के विरोधियों का दावा है कि कार्रवाई के निर्धारकों के एक कारण के सिद्धांत के सांचे में लोक मनोविज्ञान मजबूर करने हेतु स्लाव पूर्ववासियों प्रयास का परिणाम है स्पष्ट बाँझपन और इन विषयों में प्रगति की कमी की ज्यादा। अगर सामाजिक विज्ञान प्रगति र्हीं हुई है, यह है क्योंकि कई सामाजिक वैज्ञानिकों-इस सिद्धांत को गलत समझा और एक कारण एक के रूप में यह गलत है, किसी भी तरह अपनी भविष्यवाणी करेन की शक्ति द्वारा सुधार किया जा करने के लिए। परिणाम, बीमार सिद्धांत के रूप में, सामान्य बयान हे कि कानूनों क्योंकि वे या तो असार परिभाषाओं वरना् साफ झूठे हैं नहीं कर रहे हैं उत्पादन किया गया है। अन्य विषयों में, मनोविज्ञान अथवा समाजशास्त्र के कुछ हिस्सों की तरह, लोक मनोविज्ञान की गलतफहमी शब्दजाल से भरा छद्म उत्पादन किया गया है।

दिक्कत यह है कि लोक मनोविज्ञान भविष्यवाणी करने की शक्ति के अपने अधिक से अधिक स्तर पर पहुंच गया है। इसका कारण यह है कि लोक मनोविज्ञान एक कारण सिद्धांत, नहीं है इसका मतलब है वैज्ञानिकों प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में सुधार करने हेतु सिद्धांत को रोजगार है कि द्वारा सुधार किया जा रहा है। एक "वैज्ञानिक" दृष्टिकोण के विरोधियों पकड़ लोक मनोविज्ञान की भविष्यवाणी करने की शक्ति पने वास्तविक उद्देश्य के उप-उत्पाद का एक प्रकार हैं: व्याख्या के माध्यम से समझ प्रदान करते हैं, जब हम सामाजिक विज्ञान के समुचित अध्ययन के रूप में इस उद्देश्य को स्वीकार करते हैं, हम महत्वपूर्ण प्रगति सामाजिक विज्ञान प्राप्त कर ली है पहचान लेंगे। उन्नति के बारे में संदेह न केवल निराधार लेकिन यह भी मौलिक रूप से गलत होने के लिए दिखाया जाएगा।

NOTES

इस दृश्य के समर्थकों हमें आमंत्रित करने पर विचार करने के लिए कितना अधिक हम अब अन्य संस्कृतियों, उनक रीति-रिवाजों, नैतिकता, संस्थानों, सामाजिक नियमों और परंपराओं मूल्यों धर्म, मिथकों, कला, संगीत, चिकित्सा के बारे में विचार करें कि कितनी अधिक हम क्या हम अन्य समाजों के बारे में सीखा है। इसकी वजह से हमारे अपने समाज के बारे में पता है। शुरुआत में ये अजीब लोगों के बारे में हमारी समझ के ''वैज्ञानिक जांच'' लेकिन के उत्पाद नहीं है। सांस्कृतिक मानव विज्ञानों के अंदर से एक विदेशी संस्कृति के बारे में जानने का प्रयास कर ''देशी जा रहा है,'' मामले में अपने विषयों के कामों का अर्थ समने के लिए आ रहा अपने विषयों को रोजगार। यह भी व्यवहार है कि सामाजिक वैज्ञानिकों ने खुलासा किया है के पीछे छिपा, गहरे अर्थ के बारे में महत्वपूर्ण खोजों को दर्शाता है।

यह कड़ी मेहनत से जीता ज्ञान दो अलग अलग तरीकों में प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। हम अलग-अलग संस्कृतियों के लोगों को समझते हैं, वास्तव में उनके बारे में के रूप में ज्यादा भविष्य कहने वाला आत्मविश्वास के रूप में अपने स्वयं के लोक मनोविज्ञान के लिए हम क्या सीख रहे हैं प्रभाव में अपने लोक मनोविज्ञान है खुद के बारे में प्रदान करता है, प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, अन्य संस्कृतियों के बारे में सीखने हमारे अपने बारे में ज्यादा सिखाता है: विशेष रूप से, यह हमें ले जाता है यह देखने हेतु कि क्या हम अपने विश्वासों, मूल्यों और सार्वभौमिक या सच है या इष्टतम के रूप में संस्थानों में पहचान हो सकती हैं वास्तव में संकीर्ण स्थानीय और केवल हमारे क्षणभंगुर के सापेक्ष है शर्त। एक और बहुत पृथक् समाज को समझने क लिए आ रहा है। अपनी सुविधाओं के अथ में जानकर, नैतिक निरंकुश, विद्वेष, नस्लवाद और अन्य बीमारियों के लिए एक इलाज नहीं है। यह, कैसे सामाजिक विज्ञान की प्रगति, साधन के साथ हमें प्रदान दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित करने से नहीं है लेकिन हमं ज्ञख्याओं प्रदाना करके उस परिप्रेक्ष्य में हमारे अपने समाज जगह सकेंगे।

मानव व्यवहार के लिए एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की भी याद आती है, जब यह सामाजिक ज्ञान, सामाजिक विज्ञान के नैतिक आयाम के अथ और महतव की केन्द्रीयता के साथ पकड़ में आने के लिए विफल रहता है। प्राकृतिक विज्ञान के उद्देश्य से, भाग में, तकनीकी प्रगति पर यही कारण है कि भविष्यवाणी करने की शक्ति उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण बनाता है। सामाजिक विज्ञान मानव की स्थिति सुधारने करना है। यह विकल्प है कि प्राकृतिक विज्ञान का आहवान किया लगते नहीं करता है बनाने के लिए, क्या सुधार के रूप में गिना जाएगा और क्या नहीं होगा के बारे में नैतिक विकल्प शामिल है। सामाजिक विज्ञान के रूप में स्पष्ट सामाजिक संस्थाओं के अर्थ करने का विरोध किया है और इन अर्थ के बारे में उनकी गलत विश्वासों से मनुष्य असली की पहचान करना शामिल है।

NOTES

अगर वैचारिक तंत्र हम हुमैन एवेंट्स, व्यक्ति या कुल के अर्थ को उजागर करने के क्रम में की जरूरत है, जैसा कि कुछ सामाजिक वैज्ञानिको के ऐसे कानूनों को खोजनके लिए यह व्यर्थ प्रयास के लिए, पकड़ तो इनता बुरा, कारण कानूनों के लिए खोज के साथ असंगत है। विचार यह है कि हम एक ''जोड़ों में प्रकृति'' उस के साथ हमारे व्याख्यात्मक प्रणाली को प्रतिस्थापित करना चाहिए प्रकृति का एक बुनियादी गलतफहमी पर अधारित है और सामाजिक विज्ञान के उद्देश्य है। दार्शनिक समस्या यह उठता है कि नहीं के अर्थ के लिए खोज एक कारण व्याख्या दिया जा सकता है कि क्या है, लेकिन वैचारिक भ्रम की तरह इतने सारे दार्शनिकों और प्रयत्न की अंधी गली नीचे सामाजिक वैज्ञानिकों का निर्माण और एक अनुशासन अग्रिम करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया है चाहिए जो की है कि वानर अनुपयुक्त प्राकृतिक विज्ञान के तरीके। तो दावा है कि सामाजिक विज्ञान ने प्रगति नहीं की है और एक प्राकृतिक विज्ञान के मॉडल पर पुनर्गठित करने की आवश्यकता करेन के लिए खंडन चला जाता है।

वहाँ सामाजिक विज्ञान के दर्शन में सही जवाब हैं?

दो तर्क है कि हम कवर दोनों बहुत ही व्यावहारिक और दर्शन का सबसे बुनियादी समस्याओं सामाजिक वैज्ञानिक विधि के सवाल पर जमीन और स्पर्श का एक बहुत प्रचार किया है। इन दोनों तर्कों को प्रतिबिंबित क्या एक निरंतरता है जिसके साथ सबसे सामाजिक वैज्ञानिकों खुद को रखेहेतु सक्ष ू होना चाए पर चिनार पदों हो सकता है। लेकिन हालांकि वे अतिवादी विचारों रहे हैं, वे असली समर्थकों की है। अधिक महत्वपूर्ण हैं, चाहे वे करने के लिए या नहीं चाहता, सभी सामाजिक वैज्ञानिकों पक्षों समस्याओं इन तर्कों को प्रतिबिंबित पर ले लो। यही कारण है कि सामाजि विज्ञान से प्रासंगिक सामाजिक विज्ञान के दर्शन करता है।

अतिवादी विचारों का शायद गंभीर अधिनिर्णय से परे है। कोई भी अथवा तो चरम है कि निरंतरता के दूसरे पक्ष पर भर में सभी तरह से दृश्य सही है के प्रस्तावक को समणने के लिए जा रहा है। कारण यह है कि उन दोनों के मध्य मतभेद दर्शन के बहुत बुनियादी मुद्दों पर आराम है। ज्ञान–मीमांसा, तत्वमीमांसा, नैतिकता, मुद्दों है कि दर्शन में बसे नहीं किया गया है के बाद से वे पहली बार सौ साल पहले प्लेटो चौबीस ने किया के बारे में दावा करते हैं।

लेकिन फिर क्यों हम में से बाकी इन मुद्दों के बारे में परेशान करना चाहिए? वे बसे नहीं किया जा सकता है, और हम सामाजिक विज्ञान के दर्शन में इन चरम पदों पर नहीं है। दरअसल, कई सामाजिक वैज्ञानिकों बिल्कुल विषय में कोई दिलचस्पी नहीं कर रहे हैं। वे अच्छे कारण के होने के लिए नहीं हाने का दावा करतेः इसका समस्याओं अघुलनशील और इसलिए उनकी चिंताओं के लिए अप्रासंगिक हैं। अघुलनशीन नहीं।

NOTES

दो ध्रुवीय स्थितियों के मध्य में वहाँ का वर्णन किया है। मध्यवर्ती सिद्धान्त है कि सुसंगत, स्थिर संतुलन में नहीं हो सकता है। दार्शनिक विषयों में एक खुश मध्यम कि प्रतिद्वंद्वी सिद्धांतों के बीच अंतर विभाजन पाने की नीति अक्सर असंभव है, पदों के लिए तार्किक असंगत हैं, और कई प्रयासों समझौता में नहीं बल्कि बेतरतीबी में प्रत्येक परिणाम के कुद हिस्सों को गले लगाने। चुनने और इन दो दर्शन के घटकों को चुनने एक विकसित करने के लिए एक दृश्य के साथ, ''तीसरा रास्ता,'' एक सुसंगत स्थिति में हो सकता है, लेकिन सभी तरह एक चरम अथवा अन्य करने के लिए बिना जवाब तर्क से स्थानांतरिक किया जा रहा करने के लिए एक कमजोर।

उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्री या राजनीतिक वैज्ञानिकों व्यक्तिगत उम्मीदों और वरीयताओं का हवाला देते हुए के रूप में मानव व्यवहार के कारणों की व्याख्या करने के कारण है कि हम कोई इन दृष्टि के लिए बने अलग-अलग कार्रवाइ के बारे में विश्वसनीय कानूनों सुरक्षित है की आवश्यक रकरने के लिए प्रतिबद्ध। या वे बताते हैं क्योंकि इस तरह के कोई कानून जरूरी हैं चाहिए। इस तरह के एक विवरण के बिनाख अर्थशास्त्रियों के लिए खुद को छोड़ दावा है कि ज्ञान वे प्रदान कारण नहीं है के लिए खुला है, लेकिन सबसे अच्छा जानकारी में मदद करता है कि कम से व्याख्या देर पूंजीवादी समाज में उपभोक्ताओं या मतदाताओं की कार्रवाई अथवा वे कानूनों के समर्थन के बिना कैसे कारण दावों बनाया जा सकता है के एक खाते और उचित नहीं देते हैं, इन सामाजिक वैज्ञानिकों प्रभारी की चपेट में है कि उनके व्याख्यात्मक चर प्राकृतिक प्रकार नहीं कर रहे हैं और मानव व्यवहार का किसी भी गंभीर कारण सिद्धांत में आतमसमर्पण करने की आवश्यकता है। वास्तव में, एक मध्यवर्ती स्थिति करणीय के बारे में कई शास्त्रीय दार्शनिक समस्याओं का सामना करना शामिल है। खोजने के लिए इस तरह के एक सामाजिक वैज्ञानिक के लिए।

समाजशास्त्री या सांस्कृतक मानवविज्ञानी जो अन्य संस्कृतिों के अर्थ का लेखा-जोखा वापस लाता है, और जो हमारे अपने संस्कृति में लोक मनोविज्ञान की है कि के साथ अपने भविष्य कहने वाला सफलता की तुलना द्वारा इसकी शुद्धता के बचाव में, कि चुनौती का जवाब देना होगा अपने सभी कथित सफलताओं के लिए, लोक मनोविज्ञान बेहद अस्पष्ट है, अक्सर महत्वपूर्ण समय पर हमें विफल रहता है, और दर्ज इतिहास में कोई सुधार प्रकट किया है। इर सामाजिक वैज्ञानिकों ज्ञान के चिह्न के रूप भविष्य कहने वाला सफलता में सुधार द्वारा जवाब देते हैं, वे बिना सोचे समझे ज्ञान-मीमांसा का सबसे गहरा विवाद में पक्ष ले लिया है। धारणा है कि अवलोकन द्वारा एक निश्चित बिंदु पर नियंत्रित नहीं होता है। कि हम ज्ञान या के रूप में पहचान उस में सुधार निश्चित रूप से अनुभववाद साथ असंगत है। यह

केवल एक बुद्धिवादी के ज्ञान–मीमांसा द्वारा कराया जा सकता है। ज्ञान का एक सिद्धांत बताता है कि कैसे सत्य एक प्रायोरी उचित हो सकता है, वह है, अनुभवजन्य साक्ष्य के लिए अपील के बिना।

सामाजिक वैज्ञानिकों ने मानव व्यवहार करने के लिए दोनों प्राकृतिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और इस दृष्टिकोण से सीखने की क्या नैतिक एजेंडा गले लगाने के लिए इच्छा चाहिए। मानव की स्थिति नैतिक दर्शन के समस्याओं के अनेक का सामना करना होगा सुधार करने के लिए किया जाना चाहिए। वे प्राप्त रकना होगा कि चाहिए मामला है, व्यापक रूप से असंभव हो करने के लिए आयाजित एक व्युत्पत्ति है। वे कैसे हम नैतिक ज्ञान ''वैज्ञानिक'' और क्यों इस तरह के नैतिक ज्ञान एक संभावित तैयार नहीं समाज पर अपनी विशेष दाबों के पैतृत लगाने औचित्य नहीं है का एक अच्छा खाते प्राप्त रक सकते हैं कि एक विवरण की जरूरत है।

कई सामाजिक वैज्ञानिकों को अपनाने क्या वे वैज्ञानिक सिद्धांत की एक संस्था है कि नीति अनुप्रयोगों के लिए प्रासंगिक है के रूप में अपने अनशुशासन को आगे बढ़ाने की एक  विधि के लिए विश्वास करते हैं। हमें इस तरह के सामाजिक वैज्ञानिक कहते है। प्राकृतिक वादियों प्राकृतिक मैं विज्ञान से अनुकूलित तरीकों के प्रति अपनी वचनबद्धता से संकेत मिलता है। प्रकृतिवाद के लिए अन्य कम उपयुक्त लेबल अनुभववाद, व्यावहारिकता और प्रत्यक्षवाद–उत्तरार्द्ध अक्सर प्रकृति से विरोधियों के बीच उपहास का एक शब्द है। अधिकांश प्रकृतिवादियों का मानना है, जबकि सार्थकता और मानवीय क्रिया के महत्व के साथ न्याय कर वे इन तरीकों का समर्थन कर सकते हैं। और वे नहीं लगता कि कुछ भी उन्हें इन दोनों प्रतिबद्धताओं के बीच चयन करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। लेकिन इस संयोजन पिछले सौ वर्षों के दौरान बार–बार आपत्ति के अधीन किया गया है और सामाजिक विज्ञान के बारे में मौजूदा विवादों शामिल हैं।

जो लोग, यह मानते हैं कि हम जब तक हम उनमें से एक प्राकृतिक या वैज्ञानिक विश्लेषण की तलाश और सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य बोधगम्यता होना चाहिए कि जबकि इसकी साधन व्याख्या होना चाहिए सार्थक रूप में कार्रवाई के साथ न्याय नहीं कर सकते देर से उन्नीसवीं के बाद से लेबल की एक उत्तराधिकार को अपनाया है। सदी: आदर्शवादियों संरचनावादियों, जातीय सांकेतिकता या हेर्मेनेयुटिक्स, पोस्ट आधुनिकतावादियों, के छात्रों। सुविधा के लिए, मैं कभी–कभी उनके विचार के रूप में उल्लेख करेगा विरोधी प्रकृतिवाद के रूप में और कभी कभी सामाजिक विज्ञान। विज्ञान के इतिहास दोनों प्रकृतिवादियों और एक आम समस्या के साथ विरोधी प्रकृतिवादियों प्रस्तुत करता है। एक ओर, मनुष्य का अध्ययन है कि के

रूप में अपने व्यवहार का इलाज नहीं है। कार्रवई, इरादों और अर्थ के द्वारा निर्देशित बस एक नहीं है। सामाजिक विज्ञान। दूसरी ओर प्राकृतिक विज्ञान के इतिहास लगातार अपनी भविष्यवाणी करने की शक्ति बढ़ाने के द्वारा अपने व्याख्यातमक दायरे को बढ़ाने के लिए माना जाता है और यह क्रमिक प्रकृति से अर्थ और महत्व को निकाल कर किया है।

NOTES

गैलीलियों के बाद तारों ओर ग्रहों लक्ष्यों कि अरस्तू विज्ञान उन्हें के लिए जिम्मेदार ठहराया था से वंचित कर रहे थे; तो डार्विन से पता चला कि उनके वातावरण के लिए वनस्पति तथा जीव के अनुकूलन उनके निर्माता की यह या इरादों को अर्थ श्रेय दिए बिना समझाया जा रहा था। अग इरादा और अर्थ बाई का ही अखाड़ा अपने "घर आधार है," मानव कार्रवाई है। पिछले से प्रत्येक मामले में, वैज्ञानिक अग्रिम करेन के लिए सबसे बड़ी बाधा दृढ़ विश्वास है कि घटना के किसी भी पर्याप्त स्पष्टीकरण अर्थ करने के लिए जरूरी अपील थी। विज्ञान के इतिहास का रिकॉर्ड क्यों मानाव व्यहवार इस कथित पैर्ट के लिए किसी भी अपवाद होना चाहिए के सवाल का सामना करने हेतु हर सामाजिक वैज्ञानिक की आवश्यकता है। इस सवाल का हर संभावित जवाब काफी सामान्यत, मेटा-सैद्धांतिक पर्याप्त है और पर्याप्त सार सामाजिक विज्ञान के दर्शन में एक अभ्यास के रूप में गिनती करने के लिए और एक पूरे के रूप में दर्शन, मोटे तौर पर माना जाता है।

## सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता

हम जानते हैं कि ब्रिटेन की सामाजिक वैज्ञानिकों को अपने खेतों में विश्व नेता हैं, लेकिन हम उन्हें क्यों जरूरत है? और अगर वे के आसपास का विश्लेषण करने के कया हो रहा है तो आप उन्हें अनदेखा कर देते हैं।

ऑड्रे ऑस्लर 10 कारणों से आप सामाजिक विज्ञान की जरूरत है पता चलता है।

1. **सामाजिक वैज्ञानिकों हमें वैकल्पिक वायदा कल्पना मदद करते हैं।** सामाजिक विज्ञान बहस खुल जाएगा और हमें हमारे सामूहिक भविष्य को आकार देने में एक कहना दे सकते हैं। सामाजिक विज्ञान उन्नीसवीं सदी के दौरान अध्ययन के एक क्षेत्र के रूप में विकसित किया है। साजिक विज्ञान लोगों परिणामों और जैसे आप शक्ति के रूप में उम्र के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों के आवेदन को समझने में दद की। रेलवे और कारखानों के विकास को न केवल अर्थव्यवस्था और काम की दुनिया बदल, लेकिन यह भी हमेशा के लिए बदल तरह से लोगों को अपने पारिवारिक जीवन और अवकाश का आयोजन किया। आज नैनो और चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में प्रगति जिस तरह से हम रहते हैं पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। वे हमें, नैतिक कानूनी और सामाजिक मुद्दों की एक विस्मयकारी श्रृंखला के साथ प्रस्तुत करते हैं।

लेकिन यह वैज्ञानिकों पर भरोसा करने हेतु पर्याप्त नहीं हैं हम यह भी विश्लेषण और आलोचना क्या हो रहा है के लिए सामाजिक वैज्ञानिकों की जरूरत हैं इस तरह हम सूचित कवल्पि है कि भविष्य को आकार कर देगा।

2. **सामाजिक विज्ञान के लिए हमें अपने वित्त का मतलब कर सकते हैं।** सामाजिक विज्ञान के भविष्य के लिए, लेकिन अब क्या हो रहा है के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है। हम सब नकदी मशीनों से अपने पैसे वापस लेने के लिए भुगतान करेन के क्रोध। प्रभार प्रति वर्ष 120 के लिए राशि सकता है। सामाजिक ट्रस्ट की ओर से काम वैज्ञानिकों ने पाया कि यह सिर्फ इस हम कहाँ रहते है पर निर्भर नहीं करता है, लेकिन है कि काले और अपसंख्यक जातीय लोगों को और अधिक क्षेत्रों में जहां वे भुगतान करेन के लिए मजबूर कर रहे हैं में रहते हैं की संभावना है। तट पर इस डाल दबाव सुनिश्चित करने के लिए हम सभी मशीनें है कि कोई शुल्क नहीं लेते की पहुंच है। सामाजिक वैज्ञानिकों उदाहरण हेतु मदद कर सकते हैं हमें आर्थिक संकट को समझते हैं और निर्णय हम अपने आप के लिए बनाने के लिए और उन लोगों के जो सरकारों हमारी ओर से बनाने के लिए ऊपर वजन। विश्लेषण के इस प्रकार के बिना हम शतरंज के एक वैश्विक खेल में प्याले की तरह महसूस कर सकते हैं। ज्ञान और समझ हे कि सामाजिक विज्ञान हमें प्रदान करता है के साथ, हम खुद के लिए कार्य करने के लिए और प्रभावित करने के लिए निर्णय हमारी ओर से किए जा सशक्त महसूस करेंगे।

3. **सामाजिक वैज्ञानिकों हमारे स्वास्थ्य और अच्छी तरह से करने के लिए योगदान-जा रहा है—**सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों क खेल समाजशास्त्रियों, बुढ़ापे में हमारी देखभाल के लिए उन का मूल्यांकन नीतियों के चिकित्सा आंकड़ों को समझने उन लोगों से, समाजिक वैज्ञानिकों कड़ी मेहनत कर रहे यह सुनिश्चित करना है कि हमारे स्वास्थ्य, अवकाश तथा सामाजिक देखभाल सेवाओं के लिए सबसे अच्छा प्रभाव के लिए काम करते है। शेफील्ड विश्वविद्यालय में सामाजिक भूगोल उदाहरण के लिए, पता चला है कि हम में से जो लोग सलाह खाने का पालन नहीं करते बस कमजोर नहीं हैं-इच्छाशक्ति या अज्ञानी। हमारे खाने की आदतों परिस्थितियों की एक पूरी श्रृंखला से प्रभावित है। कुछ जाहिरा तौर पर अस्वस्थ विकल्प तर्कसंगत लग सकता हैं खरीददारी कर व्यक्ति जानता है कि दूसरों के बस नहीं स्वस्थ विकल्प रखा जाएगा और यह सिर्फ बर्बाद करने के लिए जाना होगा अगर, वे बस इसे खरीद नहीं कर सकते। प्रभावी पोषण सलाह लोगों के रोजमर्रा के जीवन और संदर्भों के आधार पर किया जाना चाहिए।

NOTES

4. **सामाजिक विज्ञान अपनी जान बचाने के सकता है।** लिवरपूल विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक बाहर काम करने के क्या एक सुरक्षित वातवारण बनाने के कर की जरूरत है। एक स्टील फैक्टरी में समय बिताया। काम पर दुर्घटनों भी सबसे अच्छा विनियमित है कि कंपनियों के कम्र्चारियों के प्रशिक्षण प्रदान में हो और सभी जरूरी सावधानी बरतने। एक शीर्ष–नीचे लगाए गए सुरक्षा व्यवस्था बस काम नहीं करता। यह जब लोग देखते हैं असुरक्षित काम प्रथाओं के रूप में अस्वीकार्य और टीमों कि सुरक्षित हो जाते हैं । कार्यस्थलों के रूप में निर्णय लेने के लिए है। नियोक्ता व्यक्तियों जो उन जिनके साथ वे पहचान से उनके नेतृत्व लेने के रूप में लोगों को देखने की जरूरत है। इन सिद्धांतों की भीड़ पर नियंत्रण में काम करने हेतु दिखाया गया हैं जब फुटबॉल मैच में भीड़ प्रबंधन के लिए जिम्मेदार उन तकनीकों जो समय इसे ध्यान में प्रशिक्षित किया जाता है, वहाँ वास्तव में कोई परेशानी है।

5. **सामाजिक विज्ञान अपने पड़ोस सुरक्षित बना सकते है।** एक आम मिथक है कि अगर आप कदम उठाने एक पड़ोस में अपराध कम करेन के लिए अपराधियों को बस पर ले जाते हैं, एक अन्य क्षेत्र में वृद्धि हुई अपराध हेतु अग्रणी है। नॉटिंघम ट्रेंट विश्वविद्यालय में समाजशास्त्री पुलिस के साथ मिलकर काम एक विधि अपराध पैटर्न के लिए स्कैनिंग से जुड़े के माध्यम से अपराध कम करने के लिए। वे पैटन कि नियमित रूप से पुलि का काम नहीं उठाया था पहचान करने हेतु है, तो अनुमान काम करते हैं और खोये समय से बचने में सक्षम थे। एक तकनीक कहा जाता स्थितिजन्य अपराध एक ही टीम द्वारा विकसित की रोकथाम अब नियमित रूप से पुलिस द्वारा प्रयोग किया जाता है। सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के साथ काम कर अपराध को रोकने के लिए। साथ में वे चाहते हैं के लिए चीजों को और अधिक मुश्किल बना–अपराधी। उदाहरण के लिए, एक क्षेत्र में वहाँ नेतृत्व की एक गंभीर समस्या सामुदायिक भवन की छतों से चोरी किया जा रहा था। द्वारा धातु स्क्रैप बाजार में डीलरों के साथ काम कर रहा है, और उन्हें राजी रिकॉर्ड रखने के लिए, यह भी खरीदने के लिए क्या नेतृत्व चुराया जा सकता है, जोखिम भरा हो गयां

6. **हम सार्वजनिक बुद्धिजीवियों के रूप में सामाजिक वैज्ञानिकों की जरूरत है।** ब्रिटिश समाज कभी–कभी विरोधी होना कहा जाता है–बौद्धिक। फिर भी हमारे तेजी से बदलती दुनिया में, सार्वजनिक बौद्धिक के रूप में सामाजिक वैज्ञानिक के लिए एक जगह है। यह ग्रे बात कर सिर बोरिंग, जैसे आप किसी भी रात फ्रांसीसी टीवी पर पा सकते हैं। इसका एक उत्तराधिकार

NOTES

होने की जरूरत नहीं है। यही कारण है कि किसी को भी चैनल सर्फिंग शुरू करने के लिए पैदा करने के लिए काफी है। सामाजिक वैज्ञानिकों को अपने काम रोचक और हममें से बाकी  के लिए आकर्षक बनाने के लिए कर्तव्य है। वे समझाने के लिए न केवल क्यों सामाजिक विज्ञान के लिए प्रसंगिक है की जरूरत है, लेकिन एक सम्मोहक तरीके से करते हैं। फिर हम, सुनने और पढ़ने के लिए तथा अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। शायद अधिक सामाजिक वैज्ञानिकों सक्रिय श्रोताओं बनने के लिए, जनता, एक दूसरे के लिए और वैज्ञानिकों के लिए अधिक बार बात कर करना होगा। फिर हम मेज के चारां ओर सभी विषयों को एक साथ मि सकता है। एक ज्ञान में आधारित दुनिया में, हम लोग हैं, जो ज्ञान के विभिन्न तरह की एक किस्म को एकीकृत कर सकते हैं, और है कि विभिन्न बौद्धिक जड़ों से और एक साथ काम करने के लिए संस्थानों की एक सीमा से आते हैं की जरूरत है।

7. **सामाजिक विज्ञान हमारे बच्चों के जीवन और शिक्षा में सुधार कर सकते हैं।** सभी समाजों और सभी सरकारों को दिखाने के लिए वे डोंग बच्चों के लिए सर्वोत्तम हैं चाहता हूँ। अभी तक भी अक्सर शिक्षा सुधार शिक्षार्थियों के सर्वोत्तम हित के लिए संबंध के बिना जगह लेने हेतु लगता है। शिक्षा शोध से पता चलता है कि अनेक माता पिता, विशेष रूप से छोटे बच्चों के माता-पिता और अधिक चिंतित हैं कि उनके बच्चे, स्कूल का आनंद है कि वे शैक्षिक सितारे हैं की तुलना में कर रहे हैं। सभी उम्र के छात्रों के साथ काम करने स्कूली शिक्षा पर अपने दृष्टिकोण को समझने के लिए करके, कैंब्रिज और लीड्स के विश्वविद्यालयों में शोधकर्ताओं क्या प्रभावी स्कूलों बनाता है, और क्या प्रभावी स्कूल नेतृत्व के लिए बनाता हेतु नवीन जानकारी की खो जकी है। हम सिर्फ बच्चों को सुनने के संरचित अवसर प्रदान करते हैं उन्हें अपने विचार प्रकट करने के लिए, और वयस्कों को तैयार वास्तव में सुनने के लिए की जरूरत है। आज भी OFSTED स्कूल निरीक्षण सेवा बच्चों के दृष्टिकोण को सुनने के लिए है।

8. **सामाजिक विज्ञान बेहतर करने के लिए दुनिया को बदल सकते।** हम आम तौर पर सहमत हो सकते हैं कि दुनिया एक सुरक्षित जगह है जहां सभी लोगों को बुनियादी गरिमा और मानव अधिकारों का आनंद ले सकते की जरूरत है। यह स्थिति तब भी जब हम हमेशा इसे पूरा करने के लिए क्या करना चाहिए पर सहमत नहीं हो सकता है। सामाजिक अंत:विषय टीमों में काम कर रहे वैज्ञानिकों मानव कल्याण और विकास के क्षेत्र में अपनी छप बना दिया है। वे बड़े पैमाने पर मानवता के सामाजिक और आर्थिक प्रगति

के साथ संबंध रहे हैं। वे सरकारी संस्थानों, संयुक्त राष्ट्र संगठन, सामाकि सवओं, धन एजेंसियों के साथ काम और मीडिया के साथ।

NOTES

वे विकास और बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में भारत जैसे में रणनीतिकारों, योजनाकारों, शिक्षकों और कार्यक्रम अधिकारियों के काम को प्रभावित कर हरे हैं, विकास को प्रभावित करने के लिए इतना है कि यह समाज के सबसे गरीब सदस्यों के जीवन पर प्रभाव डालता है। उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्र के दिल्ली स्कूल से सामाजिक वैज्ञानिकों एसओएएस में सहकर्मियों के साथ सहयोग कर रहे हैं। लंदन के विश्वविद्यालय में महिलाओं के प्यार पर ग्रामीण अकुशल मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी की गारंटी करने के भारत में कानून के प्रभाव का पता लगाने के लिए उन्होंने पाया कि नया कानून कुछ महिलाओं के लिए अवसर प्रदान वेतन अर्जक बनने के लिए जहां कोई भी पहले अस्तित्व में था, भूख का खतरा और खतरनाक काम से बचने के अवसर कम हो। लेकिन वे भी कार्यस्थल पर उत्पीड़न सहित बदलाव का लाभ मिल रहा महिलाओं के लिए बाधाओं की पहचान की। विकास अध्ययन में काम कर उन तो महिलाओं का समर्थन करने में सक्षम हैं इस तरह की समस्याओं के लिए रचनात्मक समाधान की तलाश द्वारा लाभ के लिए क्षमता।

9. **सामाजिक विज्ञान अपने क्षितिज को विस्तृत कर सकते हैं।** नारीवाद, शांति, पारिस्थितिकी, सामाजिक आंदोलनों और भी बहुत कुछ के बारे में बहस हेतु सामाजिक विज्ञान हम में से प्रत्येक नए दृष्टिकोण और समझ के नए तरीके प्रदान करता है। विश्राम के अपने विचार एक संग्रहालय का दौरा, साबुन देखने अथवा ऑनलाइन चैट कर रहा है या नहीं, सामाजिक विज्ञान हमारी रोजमर्रा की गतिविधियों और संस्कृति पर नए सिरे से नजर प्रोत्साहित करती हैं। लीसेस्टर विश्वविद्यालय में सामाजिक वैज्ञानिकों, पूर्वाग्रहों को चुनौती सीखने के लिए प्रेरित और समकालीन समाज में और अधिक प्रासंगिक हो सकता है, उनहें और अधिक समावेशी बनाने के लक्ष्य के साथ, दुनिया भर में संग्रहालयों पर असर कर रहे है। एक उदाहरण ग्लासगो में आधुनिक कला के गैलरी के साथ अपने काम के लिए एक जैसे समलैंगिक अधिकारों हेतु सांप्रदायिकता से सामाजिक न्याय के मुद्दों की एक श्रृंखला पर प्रदर्शनियों के साथ उलझाने में स्थानीय समुदायों और अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों को सम्मिलित करना है। कला कार्यशालाओं और न्यूट्रीशियन सहित कार्यक्रमों के माध्यम से।

**NOTES**

10. **हम अपने लोकतंत्र की गारंटी करने के सामाजिक विज्ञान की जरूरत है।** सामाजिक विज्ञान समाज पर कई दृष्टिकोण प्रदान करता है, सामाजिक नीति को सूचित और हमारे नेताओं और हमारे मीडिया खाते में पकड़े में समर्थन करता है। सुनार कॉलेज में ग्लोबल मीडिया एवं लोकतंत्र के अध्ययन के लिए कल्द्र, लंदन में निगरानी कैसे डिजिटल मीडिया पारंपरिक से परिवर्तन जहां हम के रूप में नागरिकों समुदाय पत्रकारों के लिए, पर हमारे अपने खातों पेश करने की कोशिश करना परपरागत पत्रकारिता और राजनीत से दूर कदम परीक्षण कर रहा है–लाइन। नागरिक इस से सशक्त महसूस कर सकते हैं। लेकिन परंपरागत पत्रकारिता से दूर मोड़ में जोखिम कम सहित देखते हैं।

इसके लिए अवसर–गहराई से विश्लेषण और शक्तिशाली हितों की आलोचना। सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा यह काम एक आधुनिक और पारदर्शी लोकतंत्र की रक्षा करने में महत्वपूर्ण है। बस लगता है कि क्या इसके बिना हो सकता है।

### परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक विज्ञान एक दर्शन है, स्पष्ट कीजिए।
2. मानव व्यवहार के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण समझाइए।
3. सामाजिक विज्ञान को आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दर्शन तथा सामाजिक विज्ञान में सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।
2. प्रगति तथा पूर्वानुमान में सम्बन्ध बताइए।
3. समझना तथा बोध गम्यता से आप क्या समझते हैं?

# 4 एक समतावादी समाज के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षक की भूमिका

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- सामाजिक विज्ञान अवधारणा
- शिक्षक का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- सामाजिक विज्ञान शिक्षक का महत्व
- सामाजिक विज्ञान शिक्षक की योग्यताएँ
- सामाजिक विज्ञान शिक्षक के गुण
- सामाजिक विज्ञान के कर्त्तव्य
- सामाजिक विज्ञान शिक्षक हेतु सुझाव
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**— इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- सामाजिक विज्ञान शिक्षक
- शिक्षक का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- सामाजिक विज्ञान शिक्षक का महत्व
- सामाजिक विज्ञान शिक्षक की योग्यताएँ
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण के गुण
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण के कर्त्तव्य
- सामाजिक विज्ञान शिक्षक हेतु सुझाव

## प्राक्कथन

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पुस्तकों में शिक्षक सम्बन्धी समस्त पक्षों का विवरण विस्तार में किया गया है। परन्तु शिक्षक की सभी क्रियाओं की व्यवस्था तथा सम्पादन शिक्षक द्वारा किया जाता है। शिक्षण में सैद्धान्तिक पक्ष की अपेक्षा व्यावहारिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण होता है, जिसके कई उदाहरण है कि जिन्होंने शिक्षण का कोई भी प्रशिक्षण नहीं लिया परन्तु वे शिक्षण में दक्ष है। इस प्रकार शिक्षक जन्मजात होते है और प्रशिक्षण से भी तैयार किए जाते हैं। सामाजिक अध्ययन शिक्षण की प्रभावशीलता का मानदण्ड कक्षा शिक्षण तथा छात्रों की उपलब्धियाँ हैं।

**कोठरी आयोग** (1966) ने आरम्भ में कक्षा शिक्षण के महत्व का ही उल्लेख किया है— "भारत के भाग्य का निर्माण उसके कक्षा-कक्ष में हो रहा है।" कक्षा की क्रियाओं का क्रियाओं का उत्तरदायित्व शिक्षक का ही होता है। शिक्षण की क्रियाओं का उपयोग तथा पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण शिक्षक द्वारा ही किया जाता है। छात्रों का अधिगम शिक्षक पर निर्भर करता है।

शिक्षा की दो प्रक्रियायें शिक्षण एवं अधिगम हैं। शिक्षण की प्रक्रिया को 'कला' की संज्ञा दी जाती है जो सीखने के अनुभवों को निर्देशन प्रदान करती है। अधिगम की प्रक्रिया को 'विज्ञान' मानते हैं जो अनुभवों को मानसिक क्रम में प्रस्तुत करता है। (Teaching is amn art learning is a science) इसलिए शिक्षक को अधिगम के विज्ञान और शिक्षण की कला की योग्यता होनी चाहिए। यह शिक्षक की प्रवणता पर निर्भर होता है। यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि शिक्षक जन्मजात होता है, उन्हें प्रशिक्षण द्वारा बनाया नहीं जा सकता है। इस प्रकार के शिक्षक कम हैं और उनका निदान करना भी कठिन है। परन्तु जन-समुह की शिक्षा हेतु अधिक शिक्षकों की जरूरत है इसके लिए अध्यापक-शिक्षा की व्यवस्था की गई। आज प्रशिक्षण को अध्यापक-शिक्षा कहा जाता है। क्योंकि प्रशिक्षण का अर्थ संकुचित है— **"किसी विशिष्ट कार्य के लिए कौशल के विकास को प्रशिक्षण कहते हैं।"** अध्यापक शिक्षा का अर्थ अधिक व्यापक है। इसमें विशिष्ट कार्य के लिए कौशल, दार्शनिक व सैद्धान्तिक पक्ष भी शमिल हैं। आज की प्रशिक्षण संस्थाओं में शिक्षा-दर्शन, शिक्षण शिक्षण सिद्धान्त और सीखने के विज्ञान की शिक्षा दी जाती हैं, जिससे शिक्षण के कौशल के विकास का साथ सीखने के सिद्धान्तों का भी बोध होता है।

## सामाजिक विज्ञान अध्यापक (Social Science Teacher)

आज भारतीय परिस्थितियों में गुरू की अपेक्षा 'शिक्षक' का अधिक उपयोग किया जाता है। आज का शिक्षक गुरू का स्थान नहीं ले पा रहा है। क्योंकि शिक्षा आज

एक व्यवसाय एवं उद्योग हो चुकी है। शिक्षक जैसा नहीं रह गया है। एक उद्योगपति की दृष्टि से शिक्षक एक कर्मचारी के समान है, इन स्वपोषित संस्थाओं में शिक्षकों को शिक्षक जैसा व्यवहार नहीं किया जाता है। वस्तु स्थितियाँ लगभग इस प्रकार की आज देखने में आ रही हैं। फिर भी एक शिक्षक की विशेषताओं, योग्यतओं एवं भूमिकाओं का वर्णन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। भारत में सामाजिक अध्ययन शिक्षण का विशेष महत्व है तथा उसका उत्तरदायित्व भी अधिक है।

NOTES

**शिक्षक का अर्थ एवं परिभाषाएँ—**

गुरू का रूप समयानुसार स्थान, वाद के अनुसार परिवर्तित होता चला गया। पूर्वकाल में गुरू के पास जाता हुआ शिष्य भययुक्त होता था। उसके क्रोध, अवमानना आदि का भय रहता था। गुरू ने अनुरूप ही शिष्य को परिवर्तित होना पड़ता था। गुरू के समीप रहकर ही वेदाध्ययन करना पड़ता था। साम, दाम, दण्ड, भेद की निति गुरू की सहायक थी। लेकिन वर्तमान समय में गुरू का रूप पूर्णतः बदल चुका है। आज वह न तो वेदों का ऋषि या वाचस्पति है न ही उपनिषदों, पुराणों का आचार्य या अपाध्याय। आज गुरू का नवीन रूप शिक्षक के रूप में आता है, जिसे अंग्रेजी में 'टीचर' के नाम से पुकारा जाता है। आज का गुरू अथवा शिक्षण शिष्य की रूचि के अनुसार ही अपना कर्तव्य करता है। उसके व्यवहार को समझकर ही उसके अनुरूप आचरण करता है तथा शिष्य के साथ एक मित्र की तरह व्यवहार करता है। यही वर्तमान युग की नवीन पद्धतियों, सिद्धान्तों की माँग है।

"शिक्षक वह है जो शिक्षा देता है अर्थात् मात्रा, स्वर, शब्द का ज्ञान करता है, उसे शिक्षक कहते हैं। आधुनिक युग में शिक्षक का रूप पूर्णरूप से परिवर्तित हो चुका है। वह केवल शब्द, व्याकरण, ज्ञान का ही द्योतक नहीं है अपितु वह शिष्य के व्यवहार, उसकी रूचियों वृत्तियों आदि का भी ज्ञाता है।

शिक्षक का आदर्शवाद में महत्वपूर्ण स्थान है। विद्वान **एडम्स** के शब्दों में "शिक्षक जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कराता है तथा शाश्वत सत्यों का बोध करता है। आदर्शवाद में शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना है। रॉय आदर्शवादी शिक्षक का महत्व प्रतिपादिक करते हुए कहता है कि— "प्रकृतिवादी तो जंगली गुलाब से सन्तुष्ट हो सकता है, किन्तु आदर्शवाद सुन्दर सुविसित गुलाब की इच्छा रखता है।"

यथार्थवादी विद्वान कोरे आदर्शवाद में विश्वास नहीं रखता वह प्रत्यक्ष में होने वाले ज्ञान को ही महत्वपूर्ण मानता है। शिक्षक वस्तुओं द्वारा बालकों का ज्ञान देता है। निरीक्षण के अवसर देता है। प्रचीन गुरू से पूर्णतः भिन्न है।

मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति सिद्धान्त को मानने वाले शिक्षक प्राचीन परम्परा के अनुसार अध्ययन-अध्यापन क्षेत्र में दण्ड नीति में विश्वास नहीं रखते। उनके अनुसार

शिक्षण स्कूल के वातावरण को घर के समान बना देता है। शिक्षक एवं शिष्य में पिता-पुत्र जैसा व्यवहार रहता है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के सिद्धान्तों के अनुसार शिक्षक शिष्य को पूर्णत: स्वतन्त्रापूर्णक विकास करने हेतु स्वतन्त्र वातावरण में विकास करने के लिए छोड़ देते हैं।

विद्वान शिक्षा स्पेन्सर के अनुसार शिक्षक सदचारी रहे तथा अपने आचरण से शिष्यों को प्रभावित करें। बालक के नैतिक विकास में सहायक हो क्योंकि नैतिक मूल्य ही राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

**सामाजिक विज्ञान शिक्षक का महत्व**

शिक्षाशास्त्र का यह एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है कि शिक्षण में पाठ्यक्रम की अपेक्षा का अधिक महत्व है। यहाँ तक आज शैक्षिक तकनीकी भी उनकी अपेक्षा नहीं कर सकती है। विषय-वस्तु का बोधगम्य करने की अपेक्षा के व्यक्तित्व का प्रभाव बालकों के लिए विशेष महत्व रहता है क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया 'धुरी' के सदृश्य कार्य करता है। शिक्षक का व्यक्तित्व, प्रस्तुतीकरण शिक्षक के आदर्श सीखने वाले नवयुवकों में अभिरूचि शिक्षक का व्यक्तित्व, प्रस्तुतीकरण, शिक्षक के आर्दश सीखने वाले नवयुवकों में अभिरूचि तथा अभिवृत्ति का विकास करते हैं। सीखने के लिए प्रेरणा भी देते हैं।

शिक्षक बालकों में सही दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए उत्तरदायी है। यदि सामाजिक अध्ययन शिक्षक निष्पक्ष एवं ईमानदारी से कार्य करे तो अन्य विद्यालय के विषयों अपेक्षा स्वदेश प्रेम, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास सुगमता से कर सकता है। देश की प्रगति के लिए सुयोग्य नागरिकों का विकास कर सकता है। शिक्षक का अन्तिम लक्ष्य 'मानवता' को विकास करना है, जिसमें सामाजिक अध्ययन शिक्षक की महत्वपूर्ण योग दे सकता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षक की उपमा जलते दीपक से की है।

**सामाजिक विज्ञान शिक्षक की योग्यताएँ**

एक कुशल सामाजिक विज्ञान शिक्षक में कलाकार और वैज्ञानिक दोनों के गुणों का समावेश होना चाहिए, जिनका विवेचन इस प्रकार है—

(1) **प्रेरणा का स्रोत**— कक्षा में बालकों के लिए शिक्षक को एक प्रेरणा और प्रोत्साहन का स्रोत होना चाहिए। बालकों को कक्षा में अमोद-प्रमोद करने की क्षमता भी होनी चाहिए, जिससे पढ़ने के साथ मनोरंजन भी करा सके, जिससे छात्र पाठ में रूचि लेते रहे। पाठ को रोचक तथा आकर्षक बनाना शिक्षक की योग्यता पर ही निर्भर करता है। टैगोर का नारा— 'दीप से दीन जले।'

(2) **विषय का ज्ञान**— सामाजिक अध्ययन के शिक्षक का ज्ञान अधिक गहन तथा विस्तृत होना चाहिए, तभी शिक्षार्थी को ज्ञान-स्तर पर पढ़ा सकता है। साधारणतः शिक्षक सूचना-स्तर पर ही किया जाता है। ज्ञान-स्तर पर शिक्षण में उच्च विशलेषण तथा शिक्षार्थियों तक पहुँचाता है। सूचना स्तर से ज्ञान-स्तर अधिक ऊँचा है। प्रचीन काल में **प्लेटो, अरस्तू तथा सुकरात** महान-शिक्षक अपने ज्ञान के लिए विश्व में विख्यात थे। सामाजिक अध्यायन शिक्षक को विभिन्न स्रोतों से ज्ञान करने के लिए सदैव प्रयासरत् रहना चाहिए।

एक कुशल शिक्षक के लिए विषय ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं होता है अपितु वह छात्रों को भी बोधगम्य करा सकें। साधारणतः दोनों गुणों का समावेश एक व्यक्ति में कम मिलता है। जिस व्यक्ति में विषय का ज्ञान है उसमें शिक्षण 'प्रवणता' नहीं होती है। इसलिए पशिक्षण-संस्थाओं का यह उत्तरदायित्व होता है कि छात्राध्यापकों में सही दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयत्न करें।

सामाजिक अध्ययन शिक्षक को 'भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र एवं अर्थशास्त्र' का ज्ञान होना चाहिए। भारतीय शिक्षा प्रणाली में 'सामाजिक अध्ययन शिक्षण' को अधिक महत्व दिया जाता है। राष्ट्रीय हिन्दी को समझने हेतु 'साहित्य' का ज्ञान भली प्रकार होना चाहिए। विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास बिना 'साहित्य' के अध्ययन नहीं हो सकता है। सांस्कृतिक विकास को भी साहित्य के ज्ञान से ही समझ सकते हैं। अतः सामाजिक अध्ययन शिक्षक को विषय-ज्ञान गहनता तथा व्यापक रूप में होना चाहिए।

**सामाजिक विज्ञान शिक्षक के गुण ,**

एक प्रभावशाली सामाजिक अध्ययन शिक्षक के लिए निम्नलिखित गुण होने आवश्यक हैं—

(1) समाज के प्रति अनुराग

(2) विस्तृत अध्ययन

(3) सशक्त अभिव्यक्ति

(4) प्रभावशाली प्रवचन

(5) अन्य विषयों की जानकारी

(6) सद्व्यवहार

(7) मनोविज्ञान का पारखी

(8) कुशल प्रबन्धकर्त्ता

(9) शिक्षण प्रवणता,

(10) कक्षा शिक्षण की समस्यओं के समाधान की क्षमता, तथा

(11) सामान्य ज्ञान में रूचि।



इन गुणों का संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया गया है।

**(1) सामज के प्रति अनुराग**— सामाजिक अध्ययन शिक्षक का साहित्य के प्रति अनुराग नहीं होना व स्वयं की रूचि साहित्य अध्ययन में नहीं होगी तो ऐसा अध्यापक साहित्य के प्रति विद्यार्थियों की रूचि जाग्रत नहीं कर सकेगा। साहित्य के प्रति अनुराग रखने वाला शिक्षक ही 'साहित्य में प्रवेश' सफलतापूर्वक करवा सकेगा।

**(2) विस्तृत अध्ययन**— सामाजिक अध्ययन शिक्षक के लिए जरूरी है कि अध्ययन विस्तृत हो ताकि प्रसंगानुकूल समानान्तर उद्धरण देकर विषय को रोचक व बोधगम्य बना सके। साहित्य का अध्यापन सफलतापूर्ण तभी हो पाता है जबकि शब्द चयन अच्छा हो व प्रसंगानुकूल तथ्यों को प्रस्तुत किया जा सके।

**(3) सशक्त अभिव्यक्ति**— साहित्य अध्यानप का सम्बन्ध सशक्त, मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति से है चाहे विचारभिव्यक्ति हो या भावाभिव्यक्ति। जिस शिक्षण की अभिव्यक्ति। जिस शिक्षक की अभिव्यक्ति प्रभावशाली नहीं, वह सफल शिक्षक नहीं हो सकता।

**(4) प्रभावशाली प्रवचन**— सामाजिक अध्ययन शिक्षक का प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली होना चाहिए ताकि अपने सशक्त प्रवचन द्वारा वह सजीव उल्लेख प्रस्तुत कर सके, व्याख्या कर सके व सरल भाषा में विद्यार्थी को उसके स्तर के अनुसार समझा सके वही शिक्षक सफल शिक्षण में सहायक होता है।

**(5) अन्य विषयों की जानकारी**— सामाजिक विज्ञान शिक्षक को सामान्य ज्ञान इतना होना चाहिए कि पाठ्य-पुस्तक में यदि कोई तथ्य अन्य विषय से सम्बन्धित आ जाए तो उसकों वह सफलतापूर्वक समक्षा सके।

**(6) सद्व्यवहार**—सामाजिक अध्ययन शिक्षक का दृष्टिकोण उदारता, सहिष्णुता व सहयोग से अनुप्राणित होना चाहिए ताकि विद्यार्थी भी उच्चकोटि के जीवन मूल्यों को अपने जीवन में स्थान दे सकें। शिक्षक के संकुचित, अनुदार व साम्प्रदायिक दृष्टिकोण का कुप्रभाव विद्यार्थियों पर भी पड़ जाता है। अतः साहित्य शिक्षक का यही कर्त्तव्य है कि वह अपने सद्व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों को अपने जीवन में सद्व्यवहार के मूल्य को उचित स्थान देने की प्रेरणा दे।

(7) **मनोविज्ञान का पारखी**—सामाजिक अध्ययन शिक्षक को मनोविज्ञान का पारखी होना चाहिए ताकि जीवन से उदाहरण स्तरानुकूल व अवस्थानुसार प्रस्तुत कर सके व मनोभावों का उदात्तीकरण कुछ विशेष स्थलों को पढ़ाते समय कर सके।



(8) **कुशल प्रबन्धकर्त्ता**—प्रत्येक सामाजिक अध्ययन शिक्षक को चाहिए कि वह अपने विद्यालय में बाल सभा के अन्तर्गत अथवा समिति के अन्तर्गत साहिहित्य कार्यक्रमों (पाठ्यक्रमोत्तर क्रियाओं) का आयोजन करे ताकि शिक्षण चारों उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। अतः इन क्रियाओं को सुचारू रूप से चालने के लिए सामाजिक अध्ययन शिक्षक को एक अच्छा प्रबन्धकर्ता होना चाहिए ताकि कम समय में व सीमित धन में उच्चकोटि के कार्यक्रमों का आयोजन हो सके।

(9) **मौलिक चिन्तन**—सामाजिक अध्ययन शिक्षक में यह गुण होना चाहिए कि वह अन्य विद्वानों द्वारा कही गई बातों को पढ़कर ही सन्तुष्ट होने वाला व्यक्ति न हो बल्कि स्वतन्त्र विचारों का पोषक हो। स्वयं भी मौलिक चिन्तन कर सके व विद्यार्थियों को भी प्रोत्साहित करे मौलिक विचारों व भावों की उद्भावना हेतु। स्वतन्त्र राष्ट्र निर्माण के लिए सामाजिक अध्ययन शिक्षक में इस गुण का होना अत्यन्तावश्यक है ताकि रूढ़िवादिता से मुक्ति मिल सके एवं नव समाज को नये ढंग से निर्मित किया जा सके, नये विचारों से प्रेरित होकर नव रूपांकित किया जा सके।

(10) **शिक्षक प्रवणता**— सामाजिक अध्ययन शिक्षक को इस कार्य को व्यवसाय के रूप में स्वीकार करना चाहिए। उसे अपने कार्य में रूचि तथा प्रवणता का प्रर्दशन करना चाहिए। शिक्षक को धन्धे के रूप में नहीं ग्रहण करना चाहिए। इसके लिए शिक्षक में निम्नलिखित क्षमताएँ होनी चाहिए—

(अ) विषय के प्रति रूचि, शिक्षक में रूचि आर्कषण होना।

(ब) शिक्षक विधियों, प्रविधियों, यहायक सामग्री के प्रयुक्त करने की क्षमता।

(स) बाल-मनोविज्ञान, शिक्षण-सिद्धान्त तथा शैक्षिक निर्देशन की विधियों का सही बोध होना चाहिए।

(द) सामाजिक अध्ययन शिक्षण, शिक्षक सहायक सामग्री, चित्र, पुस्तकालय के संगठन एवं प्रयोग करने की योग्यता होनी चाहिए।

(य) मूल्यांकन विधि तथा नवीन परीक्षाओं का व्यावहारिक बोध होना चाहिए।

शिक्षण की 'प्रवणता' के लिए उपरोक्त योग्यता एवं शिक्षण के प्रति लगाव भी होगा चाहिए।



(11) **कक्षा शिक्षक की समस्याओं के सामाधान की क्षमता**— एक योग्य शिक्षक को छात्रों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील भी होना पड़ता है। उनके लिए वैज्ञानिक तरीके से समाधान भी निकालना होता है। कुशल-शिक्षक कक्षा में अध्यापन के साथ ही समस्याओं के सामाधान के लिए योजनाएँ भी क्रियान्वयन करता है, जिसे क्रियात्मक अनुसन्धान की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार के अनुसन्धानों से कक्षा की समस्याओं के प्रति समाधान तथा अपनी गतिविधियों में सुधार तथा विकास भी करता है। वह अपनी शिक्षण क्षमताओं का उपयोग भली प्रकार करने में सफल हो सकता है। शैक्षिक निर्देशन का भी सामाजिक अध्ययन शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए।

(12) **सामान्य ज्ञान में रूचि**— चूँकि सामाजिक विषयों का सम्बन्ध अपने आस-पास, देश-विदेश के सामान्य एवं नवीन (current) ज्ञान से जुड़ा होता है। इस तरह सामाजिक विज्ञान शिक्षक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह सामान्य ज्ञान पढ़ने के लिए तथा नवीन ज्ञान जानने का उत्सुक हो, जिससे वह दिन-प्रतिदिन की सामान्य ज्ञान की जानकारी ग्रहण करने के लिए तथा सामान्य ज्ञान की पुस्तक पढ़ने हेतु अपने छात्रों को भी प्रेरित कर सके।

## सामाजिक विज्ञान शिक्षक के कर्त्तव्य

शिक्षक का कर्त्तव्य केवल इतना ही नहीं है कि कक्षा छात्रों को नियन्त्रण या अनुशासन में रखें और सिखने तथा पढ़ने के लिए प्रेरिणा देता रहे। अपितु शिक्षक का कर्त्तव्य बालक का समाजीकरण करना भी है। उसे एक **दार्शनिक, निर्देशक** तथा **मित्र** जैसा व्यहार छात्रों के प्रति करना है। शिक्षक के कर्त्तव्य को अध्ययन के लिए चार वर्गों में बाँट लिया है—

(1) **पाठ्यवस्तु का चयन**— शिक्षक को विषय-वस्तु को बालक मानसिक विकास क्रम में व्यवस्थित करना होता है, जिससे छात्रों को सीखने से सरलता होती है। नवीन ज्ञान को उसके अनुभवों से सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रस्तुत करता है। अपेक्षित-व्यवहार बदलाव के लिए शिक्षक को उपयुक्त सीखने तथा अनुभवों की व्यवस्थार करनी होती है।

(2) **छात्रों को निर्देशन तथा दिशा प्रदान करना**— शिक्षण की कला, सीखने के अनुभवों को निर्देशन तथा दिशा प्रदान करती है। इसके लिए शिक्षक को सीखने हेतु अभिप्रेरा खोज करनी पड़ती है। शिक्षण सहायक सामग्री के

चयन एवं प्रयोग की भी व्यवस्था करनी पड़ती है। सीखने के अनुभवों के लिए उपयुक्त वातावरण पैदा करना शिक्षक का ही कर्त्तव्य होता है, जिससे बालकों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है।

NOTES

(3) **मूल्यांकन विधि का प्रयोग** शिक्षक को शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मूल्यांकन विधि का प्रयोग करना पड़ता है। इसमें शिक्षण तथा परीक्षण दोनों क्रियाओं को सम्पन्न करना पड़ता है। शिक्षण तथा अधिगम के अनुभवों का मूल्यांकन कर लेता है। छात्रों की निष्पत्तियों के लिए प्रश्न–पत्र शिक्षण–बिन्दुओं के आधार पर तैयार किया जाता है। छात्रों से हल कराने के पश्चात् उत्तर–पुस्तिकाओं का अंकन करके उसकी सूचना उसके अभिभावकों को भेजें। छात्रों को प्रवणता का भी मापन करना चाहिए।

**(4) समाजीकरण**— वैज्ञानिक युग में औद्योगीकरण को अधिक बढ़ावा मिला है, जिसके फलस्वरूप शिक्षा–संस्थाओं का ही उत्तरदायित्व हो गया है कि वे बालकों का समाजीकरण भी करें। इसके लिए शिक्षक का ही उत्तरदायित्व है कि वह विद्यालय में ऐसा वातावरण पैदा करें जिससे वह सामाजिक मूल्यों एवं उच्च आदर्शों का अनुसरण करें। महापुरूषों के जन्म–दिवस, त्यौहार, राष्ट्रीय पर्वों आदि का आयोजन विद्यालय में ही किया जाए।

**सामाजिक विज्ञान शिक्षक हेतु सुझाव ,**

एक प्रभावशाली सामाजिक अध्ययन शिक्षक हेतु सुझाव है—

(1) प्रत्येक शिक्षक का अपना दर्शन होना चाहिए।

(2) शिक्षक को एक व्यवसाय के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

(3) शिक्षक को मानसिक तथा शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ रहना चाहिए।

(4) एक योग्य शिक्षक को रूसो तथा प्लेटो के विचारों में समन्वय स्थापित करते हुए शिक्षण करना चाहिए।

(5) कक्षा में प्रस्तुतीकरण की अपेक्षा बालकों की क्रियाशीलता पर अधिक जोर देना चाहिए।

(6) कक्षा में किसी भी परिस्थिति में मानसिक सन्तुलन नहीं खोना चाहिए।

(7) शिक्षक को छात्रों से सम्पर्क स्थापित करके उनकी कठिनाइयों को समझना चाहिए। सभी छात्रों के प्रति सद्भावना रहनी चाहिए। किन्ही विशेष छात्रों को अधिक बढ़ावा नहीं देना चाहिए। व्यवहार निष्पक्ष होना चाहिए। सभी छात्रों के नाम से परिचित होना आवश्यक है।

NOTES

(8) गृह कार्यों के देने में अधिक सावधानी रखनी चाहिए। क्योंकि इसका आशय व्यक्तिगत निर्देशन से होता है। शिक्षार्थी को शिक्षण से सम्पर्क में आने का अवसर मिलता है और शिक्षक को भी उसके सम्बन्ध में जानकारी होती है। गृह-कार्यों का समुचित रूप से स्तरीकरण किया जाना चाहिए। इनका अंकन भी किया जाए छात्रों को लौटाने में शीघ्रता करनी चाहिए, जिससे बालकों को सीखने के लिए पुनर्बलन मिलता है।

(10) शिक्षक का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जो बालकों में मानवीय गुणों का संचार कर सके।

(11) परीक्षण में वस्तुनिष्ठ तथा निबन्धात्मक दोनों परीक्षाओं का प्रयोग करना चाहिए। उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच में शीघ्रता करनी चाहिए और उन्हें परीक्षाफल शीघ्रता से बतला दिया जाए।

(12) सामाजिक अध्ययन शिक्षक को शिक्षण सहायक सामग्री, चित्र, पुस्तकालय के संगठन के प्रयोगों में अधिक रूचि लेनी चाहिए। इतिहास के योग्य शिक्षक को कथा-वाचक होना चाहिए छात्रों की कहानियाँ स्वाभाविक तरीके से सुनानी चाहिए। ऐतिहासिक अभिनय के आयोजन के प्रति रूचि रखनी चाहिए। शिक्षक में आत्मविश्वास होना बहुत जरूरी है। शिक्षक को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि उसका व्यक्तिगत-जीवन नहीं होता है उसका सभी क्रियाएँ बालक के जीवन को प्रभावित करती हैं। वह क्या कहता है और क्या करता है इसमें जो वह करता है वह छात्रों को अधिक प्रभावित करती हैं। वह क्या कहता है और क्या करता है इसमें जो वह करता है वह छात्रों को अधिक प्रभावित करती है।

सामाजिक अध्ययन शिक्षक को अपने आदर्शों एवं उनकी दिशाओं में समन्वय स्थापित करना चाहिए। शिक्षण का आदर्श, दार्शनिक पक्ष होता है और उसकी दिशाए मनोवैज्ञानिक पक्ष होता है। आधुनिक प्रजातांत्रिक समाज की जरूरतों के लिए **जॉन डीवी** के दर्शन और **ए० एच० मासलो** के आत्मसात् की दिशा का अनुसरण किया जाए जिससे बालकों में समन्वित व्यक्तित्व का विकास हो सकता है। शिक्षक में स्वतन्त्र चिन्तन की वृत्ति होनी चाहिए तभी शिक्षण में सर्जनात्मक चिन्तन की एवं क्षमताओं का विकास करने में समर्थ हो सकता है।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

1. शिक्षक का अर्थ एवं परिभाषा दीजिए। सामाजिक शिक्षण के गुण तथा कर्त्तव्यों की विवेचना किजिए।

2. सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सामाजिक विषयों से सम्बन्ध स्थापित करने का विवेचन किजिए।
3. सामाजिक विज्ञान शिक्षक का महत्व एवं योग्यताओं पर प्रकाश डालिए।

NOTES

**लघु उत्तरीय प्रश्न—**

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षक के कर्त्तव्य समझाइए।
2. सामाजिक विज्ञान शिक्षक की क्या योग्यताएँ है? स्पष्ट कीजिए।
3. सामाजिक विज्ञान शिक्षक के गुणों को स्पष्ट कीजिए।

●●

NOTES

# 5 विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम का संगठन

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के अभिकल्पन का सिद्धान्त
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यवस्तु के संगठन की विधियाँ
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम की वर्तमान रूपरेखा
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य—** इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के अभिकल्पन का सिद्धान्त
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्सवस्तु के संगठन की विधियाँ
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम की वर्तमान रूपरेखा

विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं की सहायता से शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित होता है। जिसकी प्राप्ति पाठ्यक्रम द्वारा होती है। इसीलिए पाठ्यक्रम एक साधन है।

NOTES

**शाब्दिक अर्थ**

लैटिन शब्द Curriculum का अर्थ है (Race Cource) दौड़ का मैदान।

शिक्षा के अर्थ में विद्यार्थी के विकास हेतु दौड़ का मैदान पाठ्यक्रम है जिससे अपने अन्तिम बिन्दु (लक्ष्य) पर पहुँच जाता है।

**विस्तृत अर्थ**

"पाठ्यक्रम का तात्पर्य उन सम्पूर्ण परिस्थितियों से है जो कि शिक्षक के पास उपलब्ध रहती है और जिनके द्वारा वह उन बालकों की आदतों तथा व्यवहारों में परिवर्तन करता है जो विद्यालय से होकर गुजरते हैं।"

**समाजवादियों के अनुसार परिभाषाएँ**

पाठ्यक्रम को मानव जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवो का सार समझाना चाहिए।

पाठ्यक्रम का अर्थ रूढ़िवादी ढंग से पढ़ाये जाने वाले बौद्धिक विषयों से नहीं है परन्तु उसके अन्दर वे सभी क्रिया-कलाप आ जाते हैं जो बालकों का कक्षा के बाहर तथा भीतर प्राप्त होते हैं। **माध्यमिक शिक्षा आयोग**

"पाठ्यक्रम एक साधन है जिसके द्वारा हम बच्चों को शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के योग्य बनाने की आशा करते हैं।" **—हेनरी जे० ऑटो**

**सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के अभिकल्पन का सिद्धान्त (Principles of Designing a Social Science Cirriculum)**— सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के निर्धारण हेतु निम्नलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाता है—

1. **जीवन से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त (Principles of Relationship with life)**— सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में जो विषय पढ़ायी जायें उनमें जीवन के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही पाठ लिया जाता है। जिनके अध्ययन के बाद विद्यार्थी बेकार न रहें।

2. **रूचि का सिद्धान्त (Principles of Interest)**— पाठ्यक्रम बनाते हुए छात्रों व छात्राओं की रूचि को ध्यान में रखना चाहिए। जिससे पाठ्यक्रम विकसित रूप से शैक्षिक उपलब्धि कराने वाले हैं, क्योंकि रूचिकर पाठ्यक्रम होने से विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति गहरा लगाव हो जाता है।

3. **उपयोगिता का सिद्धान्त (Principles of Utility)**— विद्यार्थी सामाजिक परिवेश से आता है तथा अच्छी शिक्षा उसे सामाजिक परिवेश में समायोजन करना सिखाती है इसके लिए पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो समाजोपयोगी हो।

4. **आवश्यकता का सिद्धान्त (Principles of Need)**— आज समाज की जरूरत इस प्रकार है कि तकनीकि का परिवेश वैज्ञानिक युग सभी लोगों की अनिवार्य आवश्यकता बनता जा रहा है। ऐसे में प्रत्येक कक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए कि विज्ञान व तकनीकी पूरी तरह से सहायक हो।

5. **अनुभव का सिद्धान्त (Principles of Experiences)**— पाठ्यक्रम में दार्शिनिक पक्ष अपना आधार तैयार करता है जबकि विद्यालय, कक्षा, प्रयोग, अधिगम इत्यादि अनुभव की देन हैं, क्योंकि इसके विस्तार का आधार ही अनुभव है इसलिए सामाजिक विज्ञान का सिद्धान्त अनुभव होना चाहिए।

6. **लचीलेनप का सिद्धान्त (Principles of Flexibility)**— विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम उनके रूचि व दृष्टिकोण के अनुसार होना चाहिए। अध्यापक, अभिभावकों एवं शिक्षा आयोगों द्वारा पाठ्यक्रम थोपा न जाय। पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थी को बनाना उद्देश्य न होकर व्यक्ति, बालक के विकास हेतु पाठ्यक्रम होना चाहिए।

7. **अधिगम क्षमता का सिद्धान्त (Principle of Learning Capacity)**— बच्चों के उग्र तथा ध्यान विस्तार को ध्यान में रखना और पाठ्यक्रम का निर्माण अधिगम की क्षमता को आधार मानते हुए तैयार करना चाहिए। अधिगम की शैली, अधिगम का अन्तरण, अधिगम हेतु व्यूह को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए।

8. **खेल व कार्य की क्रियओं के अन्तर्सम्बन्ध का सिद्धान्त (Principle of Inter-relation of Play Work Activities)**— क्रो एवं क्रो के अनुसार, "जो लोग सीखने की प्रक्रिया को निर्देशिक करते हैं, उनका उद्देश्य यह होना चाहिए कि ज्ञानत्मक क्रियाओं की ऐसी योजना बनायें, जिनमें खेल के दृष्टिकोण को स्थान प्रदान हो।" अतः पाठ्यक्रम में पाठ्यगामी सह-क्रियाओं को भी स्थान मूल पाठ की सहायता हेतु मिलना चाहिए।

**सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के संगठन की विधियाँ (Methods of Organization of the Subject matter of social Science)**— सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम का संगठन करने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाता है।

1. **सह सम्बन्ध विधि (Correlation Method)**— पाठ्यक्रम का संगठन विद्यार्थियों के ज्ञान, समझ भाव तथा कौशल इत्यादि को ध्यन में रखकर किया जाता है। किसी कक्षा में सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम को संगठित करते हुए उसके पाठों में परम्परा सम्बन्धों को ध्यान में रखा जाता है। जिसे लम्बवत् सह-सम्बन्ध के नाम से जाना जाता है। सामाजिक विज्ञान के साथ पढ़ाये जाने वाले अन्य विषय भी उससे सह-सम्बन्धित होने चाहिए। अतः सामाजिक विज्ञान का अन्य विषय के साथ सह-सम्बन्ध को अनुप्रस्थ अथवा क्षैतिज सह-सम्बन्ध कहा जाता है।

**साामाजिक विज्ञान**

| | **इतिहास** | **भूगोल** | **अर्थशास्त्र** | **नागरिकशास्त्र** | |
|---|---|---|---|---|---|
| शीर्षस्थ सा<br>लम्बवत्<br>सह-सम्बन्ध | ● प्राचीन<br>● मध्य<br>● आधुनिक | ● पृथ्वी<br>● ग्रह<br>● जलवायु | ● बालक<br>● विनिमय<br>● उपयोग क्लब | ● न्यायालय<br>● अस्पताल<br>● सामाजिक | क्षैतिक<br>सह-सम्बन्ध<br>(Horizantal<br>(Vertical<br>correlation)<br>Corelation) |

2. **एकत्व विधि (Integration Method)**— अमेरिका में गेस्टाल्टवाद के आधार पर एकीकृत के पाठ्यक्रम का विकास हुआ। सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम से जुड़ी सभी इकाईयाँ मिलकर समग्रता का रूप धारण करती हैं। इस सिद्धान्त को जेकोटाट का कथन जोर प्रदान करता है कि "ज्ञान एक है।" अतः पाठ्यक्रम को अध्ययन की सुविधा के लिए अलग-अलग विषयों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है। हैण्डरसन ने कहा है कि— "एकीकृत पाठ्यक्रम वह है जिसमें सभी विषयों के बीच कोई अवरोध, रूकावट या दीवार नहीं होती है।" अतः एकत्व का पाठ्यक्रम समग्रता पर आधारित होता है इसका केन्द्र अनुभव होता है। बालक रूचि पर आधारित जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करने वाला पाठ्यक्रम होता है।

3. **एक समान केन्द्र विधि (Concentric Method)**— सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों को समान स्थान दिया जाता है और प्रत्येक विषय के सभी पाठों को भी समान भार दिया जाता है। अतः क्षैतिज सह:सम्बन्ध तथा शीर्षस्थ सह-सम्बन्ध दोनों का मान लगभग समान होता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम का निर्माण छात्रों की रूचि जरूरत तथा जीवन की उपयोगिता को ध्यान में रखकर बनाया जाता है।

NOTES

4. **चक्राकार (Spiral-Method)**— सामाजिक विज्ञान के इस पाठ्यक्रम का निर्धारण क्रम विषयवार एवं प्रत्येक विषय क्रम से सरल से जटिल की ओर तथा सामान्य से विशिष्ट की ओर के अनुरूप पाठ्यक्रम संगठित क्रियान्वयन है। इसमें सभी पाठों का सैद्धान्तिक व्यावहारिक क्रम अनुसार बना रहता है।

5. **इकाई विधि (Unit Method)**— इस प्रकार के पाठ्यक्रम का सामाजिक-शिक्षण के लिए संगठन करने के लिए पाठ्यक्रम में विषयों के दो वर्ग बनाते हैं प्रथम अनिवार्य, द्वितीय वैकल्पिक होता है। अनिवार्य वर्ग को एक इकाई तथा वैकल्पिक को दूसरी इकाई का नाम दिया जाता है। इस प्रकार इकाई पाठों का संगठन भी इसी सिद्धान्त पर किया जाता है। इस पाठ्यक्रम का आधार (कोर पाठ्यक्रम) होता है। इसमें विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होती है।

6. **बौद्धिक विधि (Chronological Method)**— सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम का निर्धारित वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखकर संगठित किया जाता है। कक्षा स्तर व वायु स्तर एवं बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखते हुए यह पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। अतः यह पाठ्यक्रम बालक की रूचि, आवश्यकता, ज्ञान, समझ, ध्यान विस्तार को ध्यान में रखते हुए बनाया गया पाठ्यक्रम होता है जो विशेषतः बालकेन्द्रित प्रकार का पाठ्यक्रम है।

**सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम की वर्तमान रूपरेखा (Outline Syllabus of Social Science)**— सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम की वर्तमान रूपरेखा निम्नलिखित है।

**(a) प्राथमिक स्तर**— प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम के रूप हैं—

**कक्षा—3** Social Study— (हमारा भोजन, पानी, स्वच्छता, जब बगिया बनी कक्षा, सड़क पर चलने के नियम, यातायात के साधन, पहिये की कहानी, संचार के साधन, पृथ्वी, सूर्य, चाँद, तारे, हमारे त्यौहार, मौसम इत्यादि पाठों के तहत सामाजिक अध्ययन पढ़ाया जाता है।)

**कक्षा 4**— हमारा संविधान, सामाजिक वानिकी, चिकित्सा, खेती तथा साथ में कक्षा के समस्त पाठों का विस्तारित सामाजिक अध्ययन में पढ़ाया जाता है।

**कक्षा 5**— पृथ्वी का नमूना, मानचित्र की भाषा, जलवायु भिन्नता, वनों, बर्फीले व रेतों का प्रदेश, सन्देशों का आदान-प्रदान, लिपि, इकाई, भाषा, स्वास्थ्य एवं चिकित्या, मानवता, संयुक्त राष्ट्र संघ, आजाद की लड़ाई आदि।

(b) **पूर्ण माध्यमिक विस्तार**— पूर्ण माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन को चार भागों में बाँटकर (इतिहास, भूगोल, नागारिकशास्त्र व कृषि) में रूप में पढ़ाया जाता है।

**कक्षा 6**— इतिहास—प्राचीन भारत के बारे में

**भूगोल**— और मण्डल, ग्लोब, मानचित्र, पृथ्वी परिमण्डल, भूमि, जलवायु साधन, महाद्वीप।

**नागरिकशास्त्र**— संविधान, मूल कर्तव्य, न्यायालय के सभी स्तर।

**कक्षा 8**— यूरेशिया तथा कक्षा 7 के सभी (भूगोल में) और आधुनिक कालीन इतिहास तथा नागारिकशास्त्र के सभी अंशों का अध्ययन।

**कक्षा 9**— **प्रथम प्रश्न पत्र**— इतिहास एवं नागरिकशास्त्र को संयुक्त किया गया है।

NOTES

**प्रथम अनुभाग**— प्रागऐतिहासिक काल में जीवन, कांस्य युग की सभ्यताएँ, भारत में लौहा युग आधार, यहूदी व ईसाई धर्म, मध्यकालीन यूरोप, इस्लाम का उदय व प्रसार, औद्योगिक क्रान्ति व पुनर्जागरण, ऐतिहासिक स्थलों के अंकन तथा प्रोजेक्ट कार्य।

**द्वितीय अनुभाग**— मनुष्य एक नागरिक के रूप में (मनुष्य, राज्य, नागरिक, सरकार) स्थानीय स्तर पर शासन (पंचायती राज, नगर निकाय, जिला प्रशासन) भारतीय संविधान, (विशेषताएँ, मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य, राज्य के नीति निर्देशक तत्व) नागरिक जीवन व सामाजिक जीवन की चुनौतियाँ।

**द्वितीय प्रश्न पत्र**— सामाजिक विज्ञान भाग दो में भूगोल और अर्थशास्त्र को संयुक्त किया गया है।

**भूगोल (पर्यावरणीय स्वरूप एवं मानव विकास भूगोल)**— भौगोलिक उपकरण, पर्यावरण, वायुमण्डल, स्थल मण्डल, जलमण्डल, जैव मण्डल, प्राकृतिक संसाधन, मानव-जनसंख्या, मानव व्यवसायों का विश्व प्रतिमान, पर्यावरण का  ास, प्राकृतिक प्रदेश, मानचित्र कार्य, प्रोजेक्ट कार्य।

**आर्थिक विकास तथा जनजीवन (अर्थशास्त्र)**— अर्थव्यवस्था, भारतीय अर्थव्यवस्था का अवलोकन तथा भारतीय अर्थशास्त्र को अवसंरचना।

**माध्यमिक स्तर**— उत्तर प्रदेश सरकार ने माध्यमिक स्तर पर इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा नागरिकशास्त्र को मिलाकर सामाजिक विज्ञान बनाया गया है। जिसके दो स्तर बनाये गये हैं। प्रथम भाग कक्षा 9 में द्वितीय भाग कक्षा 10 में चलवाये जाते हैं।

**कक्षा 10— प्रथम प्रश्न पत्र— ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत—** साम्राज्यवाद, उपनिवेशवादी, महत्वपूर्ण क्रान्तियों, प्रथम विश्व युद्ध एवं राष्ट्र संघ, द्वितीय विश्व युद्ध, नवजागरण तथा सांस्कृतिक विरासत।

**कक्षा 10— द्वितीय प्रश्न पत्र—** का प्रथम भाग (पर्यावरणीय स्वरूप एवं मानव विकास) जिसमें जलवायु, पर्यावरण, वनस्पति, पशु पक्षी, भूमि, जल, खनिज, मानव, राष्ट्र विकास तथा मानचित्र।

**द्वितीय भाग—** अर्थिक विकास का जनजीवन— अर्थव्यवस्था की समस्याएँ (I,II,III) भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान, उद्योगों का योगदान, विदेश व्यापार तथा अर्थिक विकास की दिशा।

**सामाजिक तथा नागरिक जीवन—** (नागरिक शास्त्र)— विधानमण्डल राज्य की कार्य पालिका, संसद, केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद्, राष्ट्रपति, न्याय प्रणाली, लोकतन्त्र, राजनैतिक दल अनेकता में एकता, सर्वधर्म समभाव, देश की सीमाएँ व सुरक्षा, भारत और विश्व शान्ति, पड़ोसी देशों के साथ भारत के सम्बन्ध तथा दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क)।

**परीक्षापयोगी प्रश्न**

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—**

1. पाठ्यक्रम से आप क्या समझते है? वर्तमान पाठ्यक्रम के गुण तथा दोष स्पष्ट कीजिए।
2. पाठ्यक्रम के विभिन्न सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।
3. पाठ्यक्रम संगठन की विभिन्न विधियों की व्याख्या कीजिए।

**लघु उत्तरीय प्रश्न—**

1. पाठ्यक्रम किसे कहते है?
2. पाठ्यक्रम के किन्ही तीन सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।
3. पाठ्यक्रम की एकल विधि को स्पष्ट कीजिए।
4. पाठ्यक्रम की वर्तमान रूपरेखा प्राथमिक स्तर पर समझाइए।

●●

# 6 निर्देशन योजना की अवधारणा, आवश्यकता एवं महत्त्व

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- पाठ्यक्रम विवरण
- अनुदेशन पर ध्यान केन्द्रित
- समय पालन
- पाठ योजना
- निर्देशात्मक योजना की आवश्यकता तथा महत्त्व
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य—** इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- पाठ्यक्रम विवरण
- अनुदेशन पर ध्यान केन्द्रित
- समय पालन
- पाठ योजना
- निर्देशात्मक योजना की आवश्यकता तथा महत्त्व।

NOTES

**प्राक्कथन**

कैसे शिक्षकों को यकीन है कि वे उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण अनुभवों योजना बना रहेहै इसका उत्तर देने के लिए हमें, पहले क्या गुणवत्ता अनुदेश का निर्माण करता है को देखने के लिए की जरूरत है। हालांकि शिक्षकों कभी कभी शिक्षण विधियों, या तरीकों पर अलग अलग हो सिखाने के लिए सबसे सहमत होंगे सभी गुणवत्ता शिक्षा में सम्मिलित हैं।

- छात्रों में विशिष्ट लक्ष्यों या मानकों के आधार पर पाठ्यक्रम, परिणाम महारत हासिल करने की उम्मीद बड़ी है।
- अनुदेश कि भेदभाव शामिल उलझाने, या मन में प्रत्येक छात्र की जरूरतों के साथ शिक्षण
- सबक और उद्देश्यों को ड्राइव करने के लिए डेटा का उपयोग
- छात्रों के लिए अवसर इस तरह के छोटे समूहों और स्वतंत्र रूष्प से के रूप में अलग-अलग संदर्भों में काम करने के लिए
- अभ्यास के समय के दौरान समर्थन और शिक्षक से मार्गदर्शन
- एक सिस्टम या जिस तरह से एक लक्ष्य की ओर प्रत्येक छात्र की उन्नति की निगरानी करने के लिए

संसाधनों से एक शिक्षक गुणवत्ता शिक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता है? शिक्षक शिक्षण सामग्री औश्र रणनीतियों पर भरोसा करते हैं आइए देखें कि वे इन सामग्रियों और रणनीतियों का चयन पर एक नजर डालते हैं।

शिक्षक आदेश प्रभावी शिक्षा योजना के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण सामग्री की जरूरत है। शिक्षण सामग्री संसाधन शिक्षकों को एक पाठ्यपुस्तक श्रृंखला अथवा पाठ्यक्रम गाइड की तरह, छीत्रों को पढ़ाने के लिए का उपयोग कर रहे हैं। जब शिक्षण सामग्री के चयन, शिक्षकों को ध्यान में गुणों हम गुणवत्ता अनुदेश परिभाषित किया जाता रखने की जरूरत है। सामग्री है कि ऐसा करना चाहिए।

- अच्छी तरह व्यवस्थित और जा आसान भेदभाव के लिए और अधिक समय की अनुमति के लिए उपयोग करने के लिए
- स्कूल अथवा डिस्ट्रिक्ट से पहचान मानकों के गठबंधन किया
- और छात्रों को जो संघर्ष के लिए संसाधनों के अवसरों सहित विविध बनें छात्रों चुनौती दी जा के लिए

- मूल्यांकन टुकड़े कि दोनों शिक्षक की अनुमति देने हेतु छात्रों की प्रगति को ट्रैक और उन्हें शिक्षण के अंत में आकलन करने के लिए शामिल करें
- शिक्षा और विद्यार्थियों के उपयोग के प्रौद्योगिकी शामिल है
- सामग्री और आपूर्ति शिक्षण शैलियों की एक किस्म का समर्थन करते सभी शिक्षकों को, चाहे वे इसके बारे में पता कर रहे हैं या नहीं, निर्देशात्मक रणनीतियों का उपयोग करें। इन विधियों शिक्षकों सबक डिजाइन और छात्रों को निर्देश देने का उपयोग कर रहे हैं। कुछ शिक्षकों दूसरों की तुलना में अधिक रणनीतिक कर रहे हैं। वे अलग तरह से क्या कर रहे हो? वे पहले उसके दौरान उनके शिक्षण विधियों के बारे में सोच रहे हैं, और शिक्षण जैसे महत्वपूर्ण सवाल है कि उन्हें गुणवत्ता शिक्षण के लिए नेतृत्व पूछने के बाद:

NOTES

इससे पहले कि शिक्षा के शिक्षकों पूछकर अनुदेश योजना बना सकते हैं:

- मेरी शैक्षिक उद्देश्य क्या है?
- अपने छात्रों की शक्तिया और संघर्ष क्या है?
- मैं कैसे प्रेरित कर सकते हैं, सहभागिता करते हैं और सीखने के लिए छात्रों को तैयार करते हैं?

शिक्षा के दौरान शिक्षकों को ध्यान केंद्रित करने अथवा पूछकर अनुदेश अनुकूलन कर सकते हैं:

- कैसे नई अवधारणाओं का जवाब अपने छात्रों कर रहे हैं?
- मैं अपने ध्यान या प्रस्तुति शैली बदलाव की जरूरत है?
- मुझे यकीन है कि मैं सभी शिक्षार्थियों तक पहुँच रहा है बनाने के लिए क्या कर सकते हैं?

निर्देश के बाद शिक्षकों को प्रतिबिंबित और पूछकर भविष्य की योजनाओं को समायोजित कर सकते हैं:

- छात्रों समझ का प्रदर्शन किया था?
- मैं भविष्य अनुदेश के लिए आज की शिक्षा कैसे कनेक्ट कर सकते हैं?
- क्या सबूत मैं कौशल के छात्र महारत निर्धारित करने हेतु प्रयोग करेंगे?

अच्छा शिक्षण विधियों और रणनीतियों को जानने का मतलव यह नहीं है शिक्षण गुणवत्ता होगा। रणनीतिया0द् कि एक पाठ में या छात्रों में से एक समूह के लिए

NOTES

काम करते हैं एक और के लिए काम नहीं कर सकते हैं। प्रभावी और सफल रणनीतियों का उपयोग करने के लिए कुंजी लगातार वांछित परिणाम हेतु अनुदेश सरेखित करने के लिए है। शिक्षा के लक्ष्यों, उद्देश्यों और उद्देश्य हैं। शिक्षण में एक महत्वपूर्ण कार्य जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं और उन्हें छात्रों के लिए उद्देश्यों में बदलने की है। इन के बिना, छात्रों को भ्रमित अथवा निराश हो सकता है यह निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम आप लक्ष्य निर्धारित करने और अपने वर्ग के लिए विशेष रूप से प्रत्येक लक्ष्य की योजना में मदद मिलेगी। पाठयक्रम चौखटे और गाइड का उपयोग सामान्य लक्ष्य निर्धारित करना सीखें। जब अधिक विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों तैयार संज्ञानात्मक और व्यवहार दृष्टिकोण के बीच एक समझौता का प्रयोग करें। कैसे संज्ञानात्मक, भावात्मक या मनोप्रेरणा डोमेन में व्यापकता अथवा विशिष्टता के विभिन्न डिग्री वर्गीकृत करने के लिए जानें। इस ऑनलाइन पाठ्यक्रम आप का तरीका जानेंगे साथ ही शैक्षणिक लक्ष्यों का एक स्रोत के रूप में अपने छात्रों को उपयोग करने के लिए और कैस महत्वपूर्ण यह बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभ्यास करने के लिए है। अपने लक्ष्यों के लिए संसाधनों की एक विस्तृत विविधता पर फोन करके विद्यार्थियों के अध्ययन को बेहतर बनाएँ। पाठ्यक्रम लक्ष्यों और छात्रों के लिए पूर्व के अनुभवों के संबंधों सफल होने के लिए अपनी योजनाओं में मदद करने के बनाएँ। यह निःशुल्क पाठ्यक्रम शिक्षकों जो अपने शिक्षण नियोजन में सुधार लाने और शिक्षण सबसे अपने छात्रों के लिए लाभकारी बनाने के लिए चाहते हैं।

अपने आधिकारिक ALISON डिप्लोमा, सर्टिफिकेट या पीडीएफ के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए आप पूरा सभी मॉडयूल studyand और पाठ्यक्रम के मूल्यांकन में से प्रत्येक में 80% या अधिक स्कोर करना होगा। एक लिंक खरीद करने हेतु अपने डिप्लोमा प्रमाण पत्र तो अपने मेरा खाता पृष्ठ की मेरी प्रमाण पत्र शीर्षक के अंतर्गत दिखाई देगा।

इस कोर्स पूरा करने के पश्चात् शिक्षार्थी में सक्षम हो जाएगा:

— अपने छात्रों के लिए सामान्य सीखने के लक्ष्यों का चयन करें,

— संज्ञानात्मक या व्यवहार दृष्टिकोण का उपयोग कर विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों तैयार करना:

— शैक्षणिक लक्ष्यों का एक स्रोत के रूप में अपने छात्रों को दावत:

— लक्ष्यों के लिए संसाधनों की एक किस्म का उपयोग के माध्यम से सीखने छात्र बेहतर बनाएँ;

— शैक्षणिक लक्ष्यों की सफलता के लिए पाठ्यक्रम के लक्ष्यों के मध्य पुल और छात्रों के पूर्व अनुभावों बनाएँ।

NOTES

मॉर्गन स्कूल के भौतिक देखों, उसे कक्षा से हॉल के लिए बाहर की दीवारों से लेकर छत तक तब्दील, और यहाँ तक कि बस पार्किंग स्थल में। वह अपने ही अधिकार में एक अद्भुत कलाकार था, लेकिन वह भी एक असाधानण प्रभावी शिक्षक थे। इतना ही नहीं उसकी कला सबक योजना बना तकनीकों तथा मीडिया के छात्रों पर क्या ध्यान केंद्रित करेंगे शामिल है, लेकिन वह भी मूल सामग्री शिक्षकों के साथ मुलाकात की (गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, और अंग्रेजी) उनके साथ उसकी शिक्षा से जोड़ने के लिए किया था। मॉर्गन की योजना बनाई अपनी कक्षाओं स्कूल सामग्री क्षेत्रों के लिए थीम के आसपास भित्ति चित्र पेंटिंग से कक्षा के बाहर काम करने के लिए। उसके छात्रों को इन शिक्षण कृतियों बनाने के लिए वह ध्यान से उसके अल्प कला आपूर्ति पर नजर रखी और इस तरह के ''उफ'' रंग यानी खरीदने (के रूप में उन्हें खिंचाव बनाने के तरीके, पाया पेंट कि बड़े परियोजनाओं के लिए हार्डवेयर की दुकान पर दुकान करने के लिए दिया जाता है) उसे छीत्रों, कौशल विकसिते अपनी प्रतिभा साझा एवं स्कूल के पास एक विरासत छोड़ दिया है।,

शिक्षण एक जटिल गतिविधि है कि प्रति घंटा, दैनिक एक पर सावधान तैयारी और योजना के उद्देश्यों और गतिविधियों शमिल है, और साप्ताहित आधार है। इसके अलावा, लंबी अवधि की योजना बना एक अंकन अवधि सेमेस्टर, एवं वर्ष भर में पाठ्यक्रम के कवरेज सुनिश्चित करता है। इसके अलावा, प्रभावी शिक्षकों छात्रों का चयन करें और रणनीतियाँ छात्रों के शिक्षण को प्रेरित करने के लिए अधिक उम्मीदें का प्रदर्शन। योजना और सामग्री की तैयारी के अलावा, शिक्षा के लिए प्रभावी आयोजन भी शिक्षण और कक्षा गतिविधि का मुख्य मुछा के रूप में सीखने की ओर एक सचेत उन्मुखीकरण का विकास सम्मिलित है। शिक्षण और के रूप में ध्यान देने के लिए लगातार कक्षा में  और पर्यवेक्षकों के छात्रों के लिए सूचित किया जाना चाहिए सीखने। यह अध्याय के आयोजन और अनुदेश कि प्रभावी शिक्षण अभ्यास के हिस्से के रूप में पहचान की गई है इस अध्याय के अंत में, इन तत्वों से संबंधित कुंजी संदर्भ की रूपरेखा।

## अनुदेशन पर ध्यान केंद्रित

प्रभावी शिक्षक अपने या उसकी भूमिका के लिए केंद्रीय रूप में शैक्षणिक अनुदेश को पहचानता है। शिक्षा पर यह ध्यान केंद्रित गाइड न केवल शिक्षक की अपनी योजना तथा कक्षा व्यवहार, भी छात्रों के लिए स्पष्ट रूप से भर आाता है और एक मजबूत सीखने के माहौल में प्रमुख तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। एक शिक्षक

NOTES

छात्रों के लिए कह सकते है, ''यहे मेरा काम है यह देखने के लिए कि आप सफल,'' या, हालांकि प्रभावी शिक्षकों का मानना है कि छात्रों को चुनौती दी जानी चाहिए, ''मैं तुम्हें स्कूल दरवाजा परे जीवन के लिए तैयार रहें। चाहते है'', वे भी है कि एहसास छात्रों सफलता का अनुभव की जरूरत है।

अनेके अध्ययनों से छात्र उपलब्धि का समर्थन करते हुऐ निम्नलिखित निष्कर्षों सहित में उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षा पर ध्यान देने के महत्व पर बल दिया है:

प्रभावी शिक्षकों महत्वपूर्ण के रूप में उनकी कक्षाओं में स्थिरता और संगठन को देखने, क्योंकि वे कक्षा के समय का मुख्य मुद्दा शिक्षण अधिकगम (बैन एंड याकूब, 1990) पर होने की अनूमति देते हैं।

प्रभावी शिक्षकों मानक या मानकों (Cawelti] 2004) से संबंधित मूलभूत शैक्षणिक लक्ष्यों को उच्च प्राथमिकता देने के लिए और उच्च क्रम व्यक्तिगत एवं सामाजिक लक्ष्यों के लिए माध्यमिक ध्यान देने (Zahorik एट अल।, 2003)।

प्रभावी शिक्षकों जो लगातारे शिक्षा और छात्र स्कूली शिक्षा के केंद्रीय उद्देश्यों के रूप में सीखने को प्राथमिकता है छात्रों को अपने व्यवहार और अभ्यास (बैन एंड याकूब, 1990) में प्रतिबिंबित सीखने हेतु एक उत्साह और समर्पण संवाद।

प्रभावी1 शिक्षकों शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के लिए समय के अपने आवंटन के माध्यम से शिक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित को सुदृढ़, और छात्र के लिए उनकी उम्मीदों सीखने (Brophy और अच्छा, 1986 के माध्यम से; Cawelti, 2004; कपास, 2000; Covino और Iwanicki, 1996;। मोलनार एट अल, 1999)।

सभी छात्रों की राशि शिक्षा की गुणवत्ता के साथ, सीखने के अनुभव में लगे हुए खर्च एक साथ, सकारात्मक छात्र सीखने (वाले बर्ग, 1984) के साथ जुड़ा हुआ है।

संबंधित संसाधन: बैन एंड याकूब, 1990; बर्लिनर और Rosenshine, 1977; Brophy और अच्छा, 1986; Cawelti, 1999, 2004 कपास, 1999, 2000, Covino और Iwanicki, 1996; मोलनार एट अल, 19991 वाल बर्ग, 1984 वांग एट अल, 1993a 1993b। Zahorik एट अल।, 2003।

जबकि प्रशासनिक कार्यों कि काम का एक आवश्यक जिम्मेदारी है प्रबंध समय, सबसे चुनौतीपूर्ण बाधाओं एक शिक्षक पाठ्यक्रम लक्ष्यों को प्राप्त करने और समस्त छात्रों की जरूरतों को पूरा करने की कोशिश कर में चेहरे से एक है। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार, शिक्षकों कोर पाठ्यक्रम पर उनकी कक्षा अनूदेश समय के लगभग 70 प्रतिशत खर्च करते हैं। शेष 30 प्रतिशत, स्कूल धन जुटाने के लिए पैसे इकटठा कक्षा के नियमों और प्रक्रियाओं को लागू करने, आग अभ्यास

NOTES

और विधानसभाओं में भाग लेने, और घोषणाओं को सुनने के रूप में इस तरह के कार्यों को पूरा करने पर खर्च किया जाता है (मीक, 2003; NCES, 1997)। अमेरिका गणित सबक के अध्ययन से पता चला है कि सब समय की एक सार्वजनिक घोषणा 29 प्रतिशत (Hiebert एट अल।, 2005) से बाधित कर रहे थे। फिर भी, प्रभावी शिक्षकों समय के अपने विचारशील और सावधान उपयोग के द्वारा शिक्षा को अधिकतम करने का प्रबंधन कैसे करूँ।

अनुसाधन का प्रदर्शन किया है छात्र उपलब्धि कक्षाओं में अधिक है जहाँ शिक्षण समय बड़ा किया गया है (देखें उदाहरण के लिए, टेलर एट अल, 1999;। वाल बर्ग, 1984)। प्रभावी शिक्षक शिक्षा, एक प्रक्रिया है कि आंशिक रूप से समय के आवंटन के माध्यम से पूरा किया है समय की दुर्लभ वस्तु कैसे प्रभावी शिक्षकों सबसे अच्छा उपयोग में से एक सुचारू रूप से ऑर्केस्ट्रेटड कक्षा संक्रमण है, वे शुरू से आखिर तक पूरी क्लास की अवधि के दौरान छात्रों के साथ शामिल रहते हैं, कोई बेकार या नीचे समय के लिए अनुमति देता है।

**समय पालन**

समय का उपयोग सावधान योजना द्वारा कक्षा में या पेसिंग सामग्री का उपयोग कर अनुकूलित किया जा सकता है। छात्रों को अक्सर क्या अगले सप्ताह अथवा अगले महीने आ रहा है जानना चाहते हैं। इसलिए, एक गुंजाइश और अनुक्रम होने शिक्षक की योजना में मदद करता है और पते छात्र जानकारी के लिए की जरूरत है। उदाहरण के लिए लंबे समय तक, साप्ताहिक, और दैनिक योजना बनाने हेतु कैलेंडर का उपयोग, शिक्षक के लिए कए दृश्य अनुस्मारक प्रदान करने के अलावा, छात्रों को काम करने के लिए योजना बनाने में मदद कर सकते है। प्रभावी शिक्षकों केवल संगठित नहीं होते हैं, लेकिन यह भी है कि वे अपने छात्रों के लिए इस महत्वपूर्ण कौशल को व्यक्त। छात्रों कैसे शिक्षक का आयोजन समय अपने स्वयं के योजना बनाने में मदद करने के लिए छात्रों के लिए एक मॉडल के रूप में सेवा कर सकते हैं

मंचन क्षेत्रों शिक्षकों आगामी गतिविधियों या आम है लेकिन अप्रत्याशित घटनाओं के लिए सामग्री का आयोजन करके समय को अधिकतम मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक यदि एक नवीन छात्र आता है क्या करने की जरूरत के दरवाजे की पीठ पर एक सूची एक दोहरे उद्देश्य को पूरा: नए छात्र का मानना है कि शिक्षक आयोजित किया जाता है, और शिक्षक छात्र के लिए तैयार महसूस करता है। एक और समय की बचत डिवाइस एक निर्दिष्ट स्थान का उपयोग करने के इस तरह के उपस्थिति कार्ड, हॉल से गुजरता है, और अतिरिक्त कागज के रूप में सामग्री रखने के लिए है। इससे समय की बचत क्योंकि शिक्षक मदों हेतु खोज करने के लिए

**NOTES**

नहीं है। संक्षेप, में प्रभावी कक्षा में वहाँ सब कुछ के लिए एक जगह है और सब कुछ अपनी जगह पर है।

एक पैटर्न की स्थापना, ताकि विदयार्थी शैक्षणिक बदलाव की आशा कर सकते हैं शिक्षण समय के नुकसान को कम कर देता। उदहारण के लिए, एक शिक्षक जो एक वर्ग वार्म अप गतिविधि है कि जब छात्रों कक्ष निम्नलिखित अनेक उद्देश्यों सिद्ध दर्ज बोर्ड पर या काम स्टेशनों पर प्रदर्शित किया जाता है का उपयोग करता हैं:

छात्रों के लिए एक रास्ता रचनात्मक एक वर्ग परिवर्तन अथवा सुबह आगमन के दौरान अपने समय को उपयोग करने के लिए देता हैं।

दिन की गतिविधियों के लिए छात्रों को तैयार करता है।

शिक्षक रोल लेने के लिए अथवा जबकि छात्रों लगे हुए हैं वर्ग के शुरू में एक माता पिता से एक नोट पर प्रतिक्रिया के लिए एक अवसर प्रदान करता है।

समय है कि अन्यथा खो दिया गया है का उपयोग करता है।

कि पाठ के लिए एक परिचय में बढ़ाया जा सकता है कक्षा के पहले कुछ मिनट के लिए ध्यान देने के प्रदान करता हैं।

कुछ शिक्षकों को एक ही दिनचर्या लगभग हर वर्ग की अवधि का पीन करें वे कार्य की समीक्षा के रूप में एक नवीन अवधारणा परिचय एक गतिविधि में नए कौशल का उपयोग करें, और अगर वहाँ समय है, स्वतंत्र अभ्यास किया है। अन्य शिक्षकों के रूप में गतिविधियों की एक दिनचर्या सेट करने के लिए विरोध एक संक्रमण का संकेत देने के दृश्य संकेत का उपयोग करें उदाहरण के लिए संगीत एक घंटी बज अथवा रोशनी झिलमिलाते छात्रों कि वे कक्षा अगले गतिविधि के लिए स्थानांतरित कर सकते हैं इससे पहले कि किसी कार्य को पूरा करने की आवश्यकता है के लिए संकेत हो सकता है। तकनीक और दिनचर्या जैसे कि ये मिनट एक दिन है कि स्कूल वर्ष के पाठ्यक्रम पर शिक्षण घंटे तक जोड़ने पर कब्जा कर सकते हैं।

अध्ययन बताते हैं कि प्रभावी शिक्षकों में बदलती तकनीकों और रणनीतियों अधिकतम सीखने समय सुनिश्चित करने के लिए प्रयोग करते हैं। प्रथाओं से ऊपर का सुझाव दिया और उन का पालन करें कि शिक्षा पर प्रभावी शिक्षक के समग्र समर्थन करते हैं। इसके अतिरिक्त वे न केवल शिक्षण समय को अधिकतम करने के लिए रूपरेखा, लेकिन यह भी काम पर छात्रों के समय प्रदान करते हैं। प्रभावी शिक्षक निम्न कार्य करें:

एक सुसंगत अनुसूची का पालन करें और प्रक्रियाओं और दिनचर्या वर्ष की शुरूआत में स्थापित बनाए रखने के (Berendt और कोस्की, 1999; Brophy और अच्छा, 1986)।

जल्दी से और कुशलता प्रशसनिक कार्यों संभाल (Zahorik एट अल।, 2003)।

अग्रिम में सामग्री तैयार (बैन एंड याकूब, 1990; दीवारों, Nardi, वॉन Minden, और हॉफमैन, 2002)।

स्पष्ट और एक निर्बाध संक्रमण बनाने (Brophy और अच्छा, 1986; । वांग एट अल, 1993b; । Zahorik एट अल, 2003)।

NOTES

भीतर और सबक भर में गति रखने (Brophy और अच्छा, 1986; कपास, 2000)।

सीमा अवरोधों तथा बाधाओं को उचित व्यवहार प्रबंधन तकनीकों के माध्यम से (कपास, 2000; शिक्षा संयुक्त राज्य अमेरिका विशेष रिपोर्ट nd; । वांग एट अल, 1993b)।

संबंधित संसाधन: बैन एंड याकूब, 1990; Berendt और कोस्की, 1999; Brophy और अच्छा, 1986; Cawelti, 1999; कपास, 1999, 2000, Covino और Iwanicki, 1996; शिक्षा संयुक्त राज्य अमेरिका विशेष रिपोर्ट, nd; अच्छा और Brophy, 19997, Hiebert एट अल,`2005। नम्र, 2003; NCES, 1997 वाकर, 1998; दीवारों एट अल, 2002। वांग एक अल।, 2003।

पिछले अध्याय छात्र व्यवहार हेतु स्पष्ट, विशिष्ट उम्मीदों के प्रभावी शिक्षक के व्यवहार के महत्व पर चर्चा की। हालांकि, व्यवहार उम्मीदों स्पष्ट पर्याप्त नहीं है, उपलब्धि की उम्मीदों पर एक साथ स्पष्ट और लगातार फोकस भी शैक्षणिक सफलता के लिए जरूरी है। प्रभावी शिक्षक अपने छात्रों में विश्वास करते हैं और उन सभी को जानने के लिए उनके कौशल के स्तर और शुरू कर अंक की परवाह किए बिना की उम्मीद है। इसके अलावा, प्रभावी शिक्षकों का मानना है कि छात्रों को सीख सकते हैं कि इसलिए अपने छात्रों को जानने है। दुर्भाग्य से, यह स्वयं को पूरा भविष्यवाणी दोनों तरीकों से काम करता है उदाहरण के लिए यदि एक शिक्षक का मानना है कि छोत्रों को खराब प्रदर्शन करने वाले नुकशान नहीं पहुँचा जा सकता है, और जानने के लिए असमर्थ हैं कि, छात्रों को खराब प्रदर्शन, पहुच योग्य नहीं लगता है, और नहीं सीखते हैं।

उम्मीदों एक शिक्षक छात्रों के लिए आयोजित करता है, चाहे जानबूझकर अथवा अनुदेश के दौरान छात्रों के साथ शिक्षक की बातचीत के माध्यम से प्रदर्शन कर रहे हैं। शिक्षक उम्मीदों पर अनुसंधान दिखाया है कि वर्ग के तीसरे निचले भाग में छात्रों के लिए अनेक शिक्षकों को काफी कम उपलब्धि उम्मीदें हैं और बहुत कम प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, वर्ग के शीर्ष तीसरे में छात्रों सबसे शिक्षक ध्यान और प्रोत्साहन (अच्छा और Brophy] 1997) मिलता है छात्र अकादमिक प्रदर्शन एक शिक्षक की उम्मीदों तथा छात्र उपलब्धि (Wentzel, 2002) के लिए

लक्ष्य से प्रभावित है। शिक्षक व्यवहार का यह पैटर्न आत्म अवलोकन (वीडियो टेप या audiotaped सबक) और आत्म जागरूकता के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है, इसलिए शिक्षकों तो समस्त छात्रों पर ध्यान और प्रोत्साहन का लाभ प्रदान कर सकते हैं।

**NOTES**

कई अध्ययनों में, शिक्षक उम्मीदों निम्नलिखित निष्कर्षों और निष्कर्ष सहित छात्र1 उपलब्धि, से संबंधित दिखाया गया है:

उच्च उम्मीदों छात्र की सफलता का एक प्रमुख घटक के रूप में पहचाने जाते हैं (कपास, 2000; शिक्षा संयुक्त राज्य अमेरिका विशेष रिपोर्ट, nd; जॉनसन, 1997, जिंदादिल और कैम्पेबेल, 1999 पोर्टर एंड Brophy, 1988)।

उच्च उम्मीदों सुधार एवं कक्षा में विकास की ओर एक समग्र उन्मुखीकरण प्रतिनिधित्व करते हैं। (अच्छा और Brophy] 1997,। मेसन एट अल, 1992), जो बेंचमार्क स्कूलों (कपास, 2000) की एक मुख्य विशेषता होने के लिए प्रदर्शन किया गया है।

कुछ अध्ययनों से सुझाव दिया है कि शिक्षकों से कुछ छात्रों हेतु कम उम्मीदों के सूक्ष्म संचार, उपलब्धि सीमित कर सकते हैं, जबकि स्पष्ट रूप से व्यक्त अधिक उम्मीदें एक स्वयं को पूरा करने भविष्यवाणी (अच्छा और Brophy, 1997) बन सकता है।

प्रभावी शिक्षकों न केवल व्यक्त करने और छात्र उपलब्धि के लिए उम्मीदों स्पष्ट, लेकिन यह भी उन अपेक्षाओं (जिंदादिल और कैम्पबेल, 1999) को पूरा करने के लिए प्रयत्न करने के लिए छात्र तथा जवाबदेही पर जोर देकर।

संबंधित संसाधन: ब्लूम, 1984; Cawelti, 1999, 2004, कपास, 1999, 20001, Covino और Iwanicki, 1996; शिक्षा संयुक्त राज्य अमेरिका विशेष रिपोर्ट, nd; अच्छा और Brophy, 1997 अच्छा और McCaslin, 1992; जॉनसन, 1997 मेसन एट अल, 1992। जिंदादिल और कैम्पबेल, 1999; पोर्टर एंड Brophy, 1988 मूल्य, 2000; Tschannen मोरन, होय, और होय, 1998; वांग एट अल, 1993a, 1993b। वोंग और वोंग, 1998।

शिक्षक का निर्धारण कैसे सामग्री कौशल कक्षा में दिया जाता है। स्कूल जिले पाठ्यक्रम राज्य मानक और राष्ट्रीय मानकों छात्रों को क्या (जैक्सन और डेविस, 2000) सीखना चाहिए में एक भूमिका निभा, लेकिन यह सरंचित करने के तरीके छीत्रों को यह सीखना चाहिए शिक्षक पर गिर जाता है। योजना एक विचार प्रक्रिया है कि शिक्षकों में जो परिणाम से पहले अच्छी तरह से तैयार दिन के लिए कक्षा दरवाजे के माध्यम से चलने के लिए किया जा रहा है (व्हार्टन-मैकडॉनल्ड्स एट

अल।, 1998)। समय को व्यवस्थित करना और शिक्षा के अग्रिम में सामग्री की तैयारी प्रभावी शिक्षण के महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में वर्णन किया गया है। व्यक्तिगत और टीम की योजना बना छात्रों के लिए मूल्यवान सीखने के अनुभव बनाने के लिए फायदेमंद होते हैं। टीम की योजना बना शिक्षकों सहयोगी रूप से महत्वपूर्ण मुद्दों की जांच करने के और शिक्षा (जैक्सन और डेविस 2000) के लिए एक सामूहिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु अनुमति देता है। दोनों समय के संगठन और सामग्री की तैयारी शिक्षा के लिए सावधानी से योजना बना के व्यापक अभ्यास के घटक हैं। एक बार की योजना विकसित कर रहे हैं, सबूत बताते हैं कि प्रभावी शिक्षकों शिक्षण अथवा पाठ योजना का पालन करते हुए लगातार विभिन्न छात्रों की जरूरतों फिट करने के लिए यह समायोजित करते रहें।

NOTES

उनके शिक्षण की योजना बना समय के दौरान, प्रभावी शिक्षकों का आकलन या विषय के बारे में छात्रों की पूर्वाग्रहों और गलत धारणाओं को याद करते। पूर्व आकलन सामग्री का गेज छात्रों के पूर्व ज्ञान कर सकते हैं। प्रभावी शिक्षकों के खाते में अपने छात्रों की क्षमताओं तथा छात्रों की शक्तियों और कमजोरियों के साथ ही उनके हित के स्तर को ले लो। शिक्षक उम्मीदों के एक अध्ययन से पता चला (फुच्स एट अल।, 1994) है कि शिक्षकों को जो उच्च कक्षा मानकों था भी व्यक्ति छात्र प्रदर्शन, तथा ब्याज के स्तर के आधार पर शिक्षा की योजना छात्रों के दोनों भावात्मक जरूरतों और उनके संज्ञानात्मक जरूरतों को पूरा।

नौसिखिए शिक्षकों अधिक कठिनाई अपनी योजना में व्यक्तिगत छात्र जरूरतों का जवाब है। वे एक "एक आकार फिट सभी" योजना के लिए दृष्टिकोण विकसित करने के लिए जाते हैं, जबकि अधिक अनुभवी शिक्षकों सबक (अच्छा और Brophy, 1997 के दौरान भेदभाव तथा विभिन्न बिंदुओं पर आकस्मिक व्यय में निर्माण, जे, 2002, लिविंगस्टन और Borko, 1989, साब्रेस कुशिंग, और बर्लिनर, 1991) करके अलग-अलग आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ आपकी सहायता करने के लिए प्रभावी शिक्षकों को आम तौर पर पूरे समूह, छोटे समूह, और व्यक्तिगत अनुदेश का एक मिश्रण की योजना है। शिक्षा के लिए योजना बना रहे हैं। विशिष्ट पाठ के लिए सावधान तैयारी, साथ ही लंबी अवधि की योजना बना शामिल पाठ्यक्रम के कवरेज सुनिश्चित करने हेतु। कुछ अध्ययनों से दिखा दिया है कि छात्र उपलब्धि सामग्री कवरेज एक शिक्षक सिद्ध (उदारहण के लिए देखते हैं, डंकिन 1978 डंकिन और Doenau, 1980) की राशि से संबंधित है। सावधान, जानबूझकर की योजना बना सामग्री की मात्रा एक शिक्षक को कवर करने में सक्षम है अधिकतम करता है।

प्रभावी शिक्षकों ने भी जब एक इकाई या सबक सिखा रहा उपयोग करने के लिए संसाधनों का मूल्यांकन। वे इस तरह के ग्रेड स्तर के लिए औचित्य के रूप ममें

NOTES

मापदंड का उपयोग करें; राष्ट्रीय, राज्य अथवा स्थानीय मानकों के संरेखण; संसाधन के भीतर निहित जानकारी की सटीकता; समय सबक या इकाई के लिए अनुमति दी; और सीखने के लाभ है कि संसाधन (Butteram और वाटर्स, 1997) का उपयोग कर से आते हैं। उदाहरण के लिए जब नागरिक युद्ध के कारणों पर एक वीडियों दिखा रहा है, शिक्षक केवल एक मार्मिक उद्धरण अथवा अनुभाग वीडियों से नहीं बल्कि पूरे खंड दिखा से चुन सकते हैं,। शिक्षकों को भी पहचान अन्य वयस्कों सीखने की प्रक्रिया के लिए एक संसाधन हो सकता है। वे आदेश छात्र सगाई को बढ़ावा देने के वयस्को को भागीदारी के समन्वय (Pressley एट अल, 1998; । व्हार्टन-मैकडॉनल्ड्स एट अल, 1998 ।) । संक्षेप में, जबकि कम से कम समय कम प्रासंगिक अथवो अनावश्यक सामग्री के लिए आवंटित प्रभावी शिक्षकों संसाधनों की अनुदेशात्मक लाभ को अधिकतम।

चूंकि छात्रों अलग दरों पर जानने के लिए, प्रभावी शिक्षकों को छात्रों के लिए शैक्षिक संवर्धन और सुधार के अवसरों की योजना है। छात्रों के शिक्षक के ज्ञान माध्यम से, यह एक छात्र या छात्रों का एक छोटा सा समूह है जो सामग्री तेजती से कक्षा के बाकी की तुलना में महारत हासिल है के लिए विकल्प की पेशकश करने के लिए संभव है। इनल छात्रों को एक गहरे स्तर पर अवधारणा का अध्ययन अथवा एक अलग तरीके से अवधरणा लागू कर सकते हैं। जो शर्त ज्ञान या कौशल की कमी हो सकती छात्र शिक्षक की जरूरत है उन्हें मूलभूत सामग्री जिस पर नवीन टुकड़ा निर्माण करने के सीखने के लिए समय देने के लिए। जानने के लिए सभी छात्रों के लिए सार्थक अनुभव प्रदान करने की योजना बना सके एक लक्ष्य है।

## पाठ योजना

एक इाकई है कि खाते छात्रों के पूर्व ज्ञान और पर्व प्रदर्शन के साथ ही उनके शिक्षण शैलियों में ले जाता है की योजना बना रहा करके, एक शिक्षक शिक्षा के लिए प्रभावी वाहनों को लागू कर सकते हैं। शिक्षक तरीके है कि वे खुद के लिए सबसे अच्छा जानने में पढ़ाने हेतु करते हैं; हालांकि, प्रभावी शिक्षकों विभिन्न शिक्षण शैलियों को शामिल करने कि सुविधा क्षेत्र से बाहर खिंचाव। उदाहरण के लिए, जल चक्र पर एक सबक के दौरान, शिक्षक छात्रों को क्या पहले से ही पता के विचारों अनुरोध कर सकती हैं एक कार्रवाई अनुकरण जिसमें छात्र निर्धारित करने के लिए जहाँ जल चक्र में छात्रों अगले जाना होगा पासा रोल चलाने हेतु एक लेखन अनुभव जहाँ शामिल छात्रों छोटी बूंद पानी मानवीकरण उनकी यात्रा, ग्राफ जहाँ बूंदों चला गया के बारे में बताने के लिए, और उसके पश्चात् के बारे में चर्चा है कि वे क्या मनाया जाता है और क्या वे पहले सोचा था की तुलना। जो भी इकाई, छात्रों को लाभ सामग्री कुछ से जोड़ा जा सकता है, तो वे पहले से ही पूर्व स्कूल अनुभवों

अथवा वास्तविक जीवन स्थितियों से परिचित हैं। जल चक्र गतिविधि में, शिक्षक छात्रों को क्या पता था कि पहले से ही ले जा सकते हैं, इस पर बनाने और उनके गलत धारणाओं को संबोधित। छात्र शिक्षा और सगाई के लिए ईमानदार की योजना बना छात्रों के लिए भविष्य की सफलता हेतु कक्षा को जोड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण है।

NOTES

अनुसंधान इंगित करता है कि प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण की योजना बना निम्नलिखित तत्व शामिल करने चाहिए।

स्पष्ट सबक की पहचान करना और सीखने के उद्देश्यों, जबकि ध्यान से उन्हें गतिविधियों को जोड़ने, जो आवश्यक प्रभावशीलता के लिए है (कपास, 2000;। वांग एट अल, 1993b;। व्हार्टन-मैकडॉनल्ड्स एट अल, 1998)।

गुणवत्ता के कार्य है, जो सकारात्मक गुणवत्ता शिक्षा और गुणवत्ता छात्र का कार्य (क्लेयर, 2000) से संबद्ध है बनाना।

योजना सबक स्पष्ट लक्ष्य है, तार्किक रूप से संरचित कर रहे है, तथा सामग्री कदम-दर-कदम के माध्यम से उन्नति (Rosenshine, 1986;। Zahorik एट अल, 2003)।

योजना बना निर्देशात्मक रणनीतियों कक्षा और इन रणनीतियों के समय में तैनात किया जाना चाहिए (कपास, 2000; जॉनसन, 1997)।

अग्रिम आयोजकों, ग्राफिक आयोजकों का उपयोग करना और प्रभावी शिक्षण प्रसव के लिए योजना बनाने के लिए रूपरेखा (Marzano, Narford, Paynter, पिकरिंग, और Gaddy, 2001;। वांग एंट अल, 1993b)।

छात्र ध्यान फैला ध्यान में रखते हुए और सीखने की शैलियों जब सबक (बैन एंड याकूब, 1990) को डिजाइन।

व्यवस्थित विकासशीले उद्देश्यों, प्रश्न, और गतिविधियों है कि उच्च्व स्तर तथा सामग्री और छात्रों के लिए उपयुक्त के रूप में निम्न स्तर की संज्ञानात्मक कौशल को प्रतिबिंबित (Brophy और अच्छा, 1986; पोर्टर एंड Brophy, 1988)।

संबंधित संसाधन: बैन एंड याकूब, 1990; बर्लिनर और Rosenshine, 1977; Brookhart और Loadman, 1992; Brophy और अच्छा, 1986; क्लेयर 2000; कपास, 1999, 2000, Covino और Iwanicki, 19996; डार्लिंगे-हैमंड, 2000, 2001 शिक्षा संयुक्त राज्य अमेरिका विशेष रिपोर्ट, nd; Emmer एट अल, 1980। अच्छा और Brophy, 1997, अच्छा और McCaslin, 1992; जैक्सन और डेविस, 2000; जॉनसन, 1997, लिविंगस्टन और Borko, 1986, Marzano, Norford,

**NOTES**

एट अल, 2001। Marzano, पिकरिंग और McTighe, 1993; पोर्टर एंड Brophy, 1988; Pressley एट अल, 1998। Rosenshine, 1986; साब्रेस एट अल, 1991। व्हार्टन-मैकडॉनल्ड्स एट अल, 1998। Zahorik एट अल।, 2003।

योजना और जोखिम के छात्रों के लिए शिक्षा के आयोजन उन विशेषताओं है कि पहले से ही चर्चा की गई है दर्पण; हालांकि साहित्य की योजना बना के पहलुओं है कि जोखिम के छात्रों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण होने लगते हैं इसको उजागर करती है। इन पहलुओं में शामिल हैं:

योजना बनाना और अनुदेशात्मक समय की रक्षा

अधिक उम्मीदें बनाए रखने के लिए

पूर्वाग्रह के लिए संसाधनों और सबक की जांच

शिक्षण गतिविधियों की एक किस्म का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों के अध्ययन को बढ़ाने के लिए

शिक्षा योजना बना सार्थक सबक है कि छात्रों के लिए अधिक उम्मीदें (बर्नार्ड, 2003) संवाद की योजना बना शमिल है सफल होने अथवा स्कूल से बाहर छोड़ने के न होने का जोखिम के छात्रों के लिए एक मजबूत सूचक वयस्कों है कि उन्हें (Wahlage और Rutter, 1986) के चारों ओर की उम्मीदों है। साथ ही प्रभावी शिक्षकों बुनियादी कौशल पर केवल ध्यान केंद्रित नहीं है, छात्रों को इन कौषल की कमी है, भले ही। इसके बजाय वे मूल बातें की महारत के लिए योजना है, यह विश्वास है कि "गरीबी में सबसे अधिक बच्चों के लिए, गणित और साक्षरता में अकादमिक चुनौतीपूर्ण काम कर रहे हैं, जब तक वे स्थगित कर दिया जाना चाहिए जब तक वे बुनियादी कौशल से भरा महारत हासिल कर ली है" (नैप एट अल के लिए काउंटर है।, 1992, p। i)। केवल निचले स्तर बुनियादी कौशल पर ध्यान केंद्रित करके, शिक्षकों कम उम्मीदों संवाद। नतीजतन, जोखिम छात्रों के प्रभावी शिक्षकों की योजना बनाने और छात्रों सामग्री और कौशल प्राप्त करने के लिए आवश्यकता के संपर्क में हैं कि इस तरह से शिक्षा का आयोजन।

छात्रों को अपने काम करने के लिए तथा बहाने को स्वीकार नहीं करते अपेक्षा (बर्नार्ड, 2003, कार्बेट और विल्सन, 2002; freel, 1998)।

काम पर हर मिनट वे कक्षा में कर रहे हैं और यह सुनिश्चित करें छात्रों को जानने के लिए समय है बनाने (बेनेट एट अल, 2004,। Pressley एट अल, 2004, Wenglinsky, 2004)।

सबक और सांस्कृतिक मान्यताओं को नकारात्मक जोखिम छात्रों (Pransky और बेली, 2002) को प्रभावित कर की प्रकृति की जांच करना।

क्रम में पेसिंग गाइड एवं समय का उपयोग करें पाठ्यक्रम (लुईस, 2001) सरेखित करने के लिए।

NOTES

व्यक्तिगत अनुदेश, छात्र के नेतृत्व वाली गतिविधियों, छात्र केंद्रित सीखने समय तथा प्रौद्योगिकी के अर्ग सहित गतिविधियों की एक किस्म के लिए योजना, यदि उपलब्ध (दिन, 2002; टेलर, पियर्सन, पीटरसन, और Rodriquez, 2003)।

संबंधित संसाधन: बेनेट एट अल, 2004;। बर्नार्ड, 2003; कॉर्बेट और विल्सन, 2002; दिवस, 2002; नैप एट अल, 1992। लुईस, 2001; Pransky और बेली, 2002; Pressley एट अल, 2004। टेलर एट अल, 2003। Wahalage और Rutter, 1986; Wenglinshy, 2004।

उच्च क्षमता शिक्षार्थियों के लिए योजना बना खाते में अद्वितीय जरूरतों और छात्रों सामग्री है कि महारत हासिल किया जाना चाहिए और प्रभावी रणनीतिय की क्षमताओं लेने हेतु उनके साथ उपयोग करने के लिए सम्मिलित है। उच्च क्षमता के छात्रों के प्रभावी शिक्षकों के क्रम में इस तरह के त्वरण, सामग्री संशोधन, या पाठ्यक्रम compacting के रूप में तरीकों का उपयोग समृद्ध, विभेदित गतिविधियों है कि पालक छात्रों के शैक्षिक विकास प्रदान करने के लिए। उदाहरण के लिए कए शिक्षक जिसमें पूर्व-मूल्यांकन सामग्री और कौशल है कि छात्रों को पहले से ही महारत हासिल है ताकि मूल्यवान शैक्षणिक शिक्षण समय गंवा नहीं है और छात्रों को जानकारी वे पहले से ही पता सीखने अथवा कौशल वे पहले से ही पूरा किया है अभ्यासे के साथ ऊब नहीं हैं निर्धारित करने के लिए दे सकते हैं।

प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों के लिए सामग्री अक्सर का आयोजन किया ताकि छात्रों, खोज कर सकते हैं प्रयोग, और अपने दम पर बातें पता लगाने की है। साथ ही, अमूर्त और जटिलता की विशेषता सीखने के अनुभव के शिक्षार्थियों (हचिंसन, 2004) के लिए मानसिक चुनौती प्रदान करने के लिए जरूरी है।

दुर्भाग्य से प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों बहुत जल्दी-जल्दी Busywork समय को भरने के लिए दिया जाता है (जॉनसन, 2000; निर्माता और Neilson, 1996)। प्रतिभाशाली के प्रभावी शिक्षकों समझते हैं कि वे इस प्रकार एक सकारात्मक सीखने के माहौल स्थापित करने के लिए नुकसानदायक है। विभेदित गतिविधियों की योजना बना और इस तरह से कि अन्वेषण को प्रोत्साहित करती है सामग्री व्यवस्थित करके, प्रभावी शिक्षक छात्रों को क्या से कोई लेना देना नहीं। जब वे अपने काम जल्दी खत्म करने के बारे में चिंतित होने की जरूरत नहीं है। प्रतिभाशाली

अनुदेश के इस दृष्टिकोण प्रतिभाशाली छात्रों में विकास को बढ़ावा, बल्कि यह बाधा से।

**NOTES**

प्रतिभाशाली छात्रों के प्रभावी शिक्षण को शिक्षक निम्न कार्य करें:

मैच कार्य जटिलताओं और योजना प्रक्रिया में व्यक्तिगत कौशल, अधिक से अधिक छात्र प्रेरणा और सगाई के लिए अग्रणी (Csikszentmihalyi एट अल।, 1993)।

विशेष रूप से उपयुक्त उच्च स्तरीय सामग्री (शोर और Delcout, 1996), का चयन करें और उपयुक्त संसाधनों छात्रों के साथ उपयोग करने के लिए चुनते करने की क्षमता चयन और सामग्री (; नेल्सन और Prindle, 1992 स्टोरी, 1985 हैनसेन और Feldhusen, 1994) के उपयोग में प्रदर्शनी योग्यता (फोर्ड और Trotman, 2001) दोनों प्रतिभाशाली और विविध रहे हैं जो।

(; Westberg और आर्कएमबॉल्ट, 1997 शोर और Delcourt, 1996), उन्नत वर्गों और सामग्री के लिए पहुँच प्रदान अन्य शिक्षकों और सामग्री क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ सहयोग कर रहा है, और जोड़ने सामग्री क्षेत्र के विशेषज्ञों तथा आकाओं के साथ छात्रों सहित आवश्यक संसाधन, के लिए उपयोग की सुविधा प्रदान करना।

कक्षा (;सिल्वरमैन, 1995 हीथ, 1997) में अच्छी तरह से समय का उपयोग करें। प्रदर्शन के उच्च उम्मीदें हैं और अपने छात्रों तक पहुँचने अथवा उन अधिक उम्मीदें (ब्लूम, 1985) को पार करने की उम्मीद है।

आप सब कुछ वहाँ स्कूल और जिला नीतियों एवं जहाँ प्रश्नों के सही उत्तर पाने के बारे में पता करने के लिए है सीखने के द्वारा अपने आप को स्थापित किया है सफलता के लिए:हर पुस्तक कागज, और लिखित वक्तव्य जाने के लिए तैयारी के साथ एक संगठित कक्षा की स्थापना; बुनियादी नियमों से काम एक कक्षा है कि बौद्धिक विकास के लिए एक स्वागत और सुरक्षित बनाने के लिए: नियमों का समर्थन करने के परिणाम का निर्धारण: और प्रक्रियाओं कार्यक्रम के लिए योजना बनाना और चार्ट जो निरर्थक बैठने। अब यह नौकरी शिक्षण छात्रों के वास्तविक उद्देश्य को पाने के लिए समय है।

मानकों और हाथ में पेसिंग गाइड के साथ सबक योजनाओं है कि छात्रों को प्रेरित करते हैं। और सफलता उत्पन्न होगा लिखने के लिऐ तैयार कर रहे हैं। आठ चरण सबक योजना इस अध्याय में वर्णित टेम्पलेट महान सबक के प्रमुख घटक रूपरेखा, हर शिक्षण पल का सबसे अच्छा इस्तेमाल कर रही है। जब सबक क्रमिक रूप से प्रवाह, हमेशा पूर्व जानकारी की समीक्षा करने और उसके पश्चात नवीन अवधारणाओं और कौशल के आधार पर गहरी समझ का निर्माण, सीखने

प्रासंगिक, संगठित, और सुबोध है। कल की सीखने आज के सबक है, जो कल और परे उपलब्धि की ओर जाता है से पूरित है।

NOTES

कॉलेज में मैं फ्रेंच में वालिग और शारीरिक शिक्षा में नाबालिग क्यूं कर ? क्योंकि मैं दोनों प्यार करता था और जानता था कि प्रत्येक को पढ़ाने के लिए मजेदार होगा। मैं कभी नहीं माना जाता है कि दो कोई है जो मुझे किराया करने के लिए चाहते हो सकता है के लिए एक कठिन संयोजन हो सकता है। मैं सिर्फ विषयों में प्यार करता था में अधिक जानने हेतु करना चाहता था।

दो फ्रांसीसी प्रशिक्षकों गहरा भाषा के अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए मेरे मन में अलग नजर आएँ। ममे Gambieta नटखट और भयावह था, और वह एक तूफान की शक्ति के साथ व्याकरण सिखाया है, स्पष्ट उसे अत्यंत उच्च उम्मीदों बना रही है हर रात हम होमवर्ग के ढेर को पूरा करने के लिए किया था। अगले ही दिन उन्होंने बोर्ड पर जाने के लिए एक जटिल वाक्य वह वहाँ लिखा था अनुवाद करने के लिए एक अथवा एक से हम दोनों पर कॉल करेगा। कोई गलती एक नीचा दिखा निंदा कि हम में से प्रत्येक खतरनाक था।

जब भी वह मुझे चुना है, मैं त्रुटियों प्रतिबद्ध और फिर उसे उपहास, जिसके कारण मुझे असहाय और भाषा के एक छात्र के रूप में निराशाजनक महसूस करने के लिए कहा। कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कितना अध्ययन या बोर्ड में प्रदर्शन किया, मेरे काम की गुणवत्ता कि ममे की कभी नहीं था। Gambieta की मांग की। मैं जानने–हालांकि था अत्याचार और के माध्यम से भय–और मैं याद कर ली और अंततः उसे जरूरी कौशल में महारत हासिल। सौभाग्य से मैं फ्रेंच इतना है कि वह मुझे हरा नहीं सकता है प्यार करता था।

दूसरे प्रोफेसर जो मेरे मन में बाहर खड़ा है डॉ Bertollo है। एक छोटा सा आदमी शारीरिक रूप से भाषा के अपने विशाल आराधना जादू सब कुछ हम वर्ग में किया था करने हेतु, लाया चाहे वह पढ़ रहा था, लेखन, बोल, चर्चा, या बस अपने सम्मोहित करने व्याख्यान में ले रही है। उनकी उपस्थिति में हर पल मेरे आत्मविश्वास और फ्रेंच की मेरे प्यार में वृद्धि हुई।

डॉ Bertollo वर्णित है और महान साहित्यिक लेखकों तथा उनके कार्यों के बारे में बताया, तो उसने अपनी आँखें बंद और सीखने का एक जादुई दुनिया में अपने शिक्षार्थियों जाया। प्रत्येक वर्ग प्रेरणादायक तथा प्रेरक था और अपने ज्ञान और समझ का गुणा। उन्होंने कहा कि हम में से प्रत्येक का इलाज किया है जैसे कि हम विशिष्ट उज्ज्वल और प्रतिभाशाली थे। उन्होंने कहा कि फ्रेंच भाषा और साहित्य के रूप में वह किया था प्यार करने हेतु हमें चाहता था। और हम किया था।

**NOTES**

इन दो प्रशिक्षकों प्रत्येक कॉलेज के छात्रों के लिए एक ही विषय क्षेत्र शिक्षण थे, लेकिन वे विद्यार्थियों के अध्ययन के बारे में बहुत अलग नजरिए के पास थी। वे दोनों भावुक और जानकार है, लेकिन उनके सबक और वितरण में बहुत भिन्न थे। मुझे पता चला है लेकिन जो शिक्षक और सबक के प्रकार सबसे अच्छा मेरे सीखने प्रबुद्ध ?

यह अजीब है लेकिन कुछ शिक्षकों को विस्तृत पाठ के हर दिन के लिए योजना बना रही है और फिर क्यों छात्रों को सीखना नहीं है पूरा नहीं करते हैं। हालांकि अनुभव के वर्षों से कम पूरा नियोजन को किनारे कर सकते हैं, कुछ भी सुनियोजित सबक है। व्यापक संभावना ताकि विद्यार्थी गुणवत्ता शिक्षा प्रात करते हैं कि पाठ को सुचारू रूप से चलाने के हेतु वृद्धि हुई है।

आगे की योजन बना कर, आप हमेशा दिन के लिए सेट कर रहे हैं। आप बीमार हो जाते हैं, तो आप की योजना लिखने के लिए एक आरामदायक, गर्म बिस्तर से अपने बीमार शरीर खीचें करने के लिए नहीं है और फिर कक्षा के लिए एक आधा सचेत अवस्था में ड्राइव एक के लिए अतिरिक्त गतिविधियों और बैकअप सामग्री सहित आगामी दिन के प्रत्येक पहलू व्यवस्थित करने हेतु विकल्प। कैसे अच्छा जानते हुए भी कि पूरी तरह से सबक योजनाओं को पूरा करने और मेज पर तैयार सभी अनुपूरक सामग्री के साथ कर रहे हैं निष्क्रिय और कवर के तहत रहने के लिए!

कुछ कारकों अच्छी तरह से डिजाइन सबक होने के रूप में सफलता के शिक्षण के रूप में महत्वपूर्ण हैं। एक डॉक्टर जो सर्जरी, एक ठेकेदार जो एक घर बनाता है के रूप में वह वह जहाँ भी उन्हें पाता है, अथवा एक शिक्षक कोई बुनियाद नहीं या स्पष्ट दिशा के साथ एक सबक सिखा रहा स्क्रैप लकड़ी और डक्ट टेप का उपयोग कर के साथ पाउंड के लिए पर्याप्त रूप से योजना नहीं है कल्पना कीजिए। छात्र उत्कृष्ट सबक के माध्यम से वांछित सीखने के परिणामों को प्राप्त कर योजनाओं का निर्माण वास्तविक पेश से अधिक समय नहीं लेना चाहिए सबक-लेकिन यह पहली बार में इस तरह महसूस कर सकते हैं।

पाठ्यपुस्तकों और विषय अथवा ग्रेड स्तर के लिए अनुपूरक सामग्री कई सबक योजना की रूपरेखा, रणनीतियाँ, और गतिविधियों प्रदान करते हैं। सामग्री के साथ तथा ग्रेड-स्तर और इस विषय आवश्यकताओं का पूरी तरह परिचित होने के नाते ठोस शिक्षा की ओर जाता है। बहुत बढ़िया माल अलमारियों पर बैठते हैं या ऑनलाइन उपलब्ध है, जबकि शिक्षकों घंटे खर्च करने के बजाय क्या पहले से मौजूद है का लाभ लेने के सबक डिजाइन करने की कोशिश कर रहे हैं। का संदर्भ लें और इन सामग्रियों से विचारों और सबक को लागू करें, और फिर संशोधित

करने अथवा में भरने जब कोई उपलब्ध उपकरण पर्याप्त रूप से शिक्षण जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

NOTES

अध्ययन का अवलोकन करने औरे सबक और कई वर्षों के लिए सबक योजनाओं पर परिलक्षित करने के बाद, मैं चालाकी से और एक अनुक्रमिक डिजाइन है कि प्रत्येक विविध शिक्षार्थी तक पहुँच जाता है बनाने के लिए अनुकूलित विचारों है। हालांकि ऑन–स्पॉट संशोधनों लगभग हमेशा से रहे हैं जरूरी है, जबकि शिक्षण, मैं एक आठ कदम मॉडल है कि अपने ज्ञान पर निर्माण करके छात्रों संलग्न है का उपयोग करें। डिजाइन शिक्षकों समझते हैं और सही छात्रों की गलत धारणाओं के लिए भविष्य के लिए सबक समझ का विस्तार करते हुए कई अवसर प्रदान करता है।

**निर्देशात्मक योजना की आवश्यकता औरे महत्व :**

अच्छा सबक योजना शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के लिए आवश्यक है। एक शिक्षक जो तैयार किया जाता है उसका/उसकी एक सफल शिक्षण अनुभव करने के लिए राह पर है। दिलचस्प सबक के विकास समय और प्रयास की एक महान सौदा लेता है। एक नवीन शिक्षक के रूप में आप इस प्रयास में जरूरी समय खर्च करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

यह भी एहसास है कि सबसे अच्छा योजना बनाई सबक बेकार है अगर दिलचस्प वितरण प्रक्रियाओं अच्छा कक्षा प्रबंधन तकनीकों के साथ साक्ष्य के रूप में नहीं कर रहे हैं महत्वपूर्ण है। वहाँ अनुसंधान उपलब्ध सबक विकास और वितरणे एवं कक्षा प्रबंधन के महत्व से संबंधित की एक बड़ी संस्था है। वे कौशल है कि, शोध किया जाना चाहिए अपने व्यक्तिगत शैली करने के लिए संरचित/एक शिक्षक में लागू स्थिति सीखने हैं, और लगातार मूल्यांकन और नवनिर्मित जब आवश्यक। संगति एक कक्षा प्रबंधन योजना के कार्यान्वयन में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सभी शिक्षकों का समझना चाहिए कि वे स्वयं के इधार एक द्वीप नहीं हैं। जिले के शैक्षिक दर्शन तथा उनके स्कूलों की विशिष्टता क्या कक्षा में जगह लेता है के पीछे मार्गदर्शक बल होना चाहिए। अनुशासन के स्कूल के कोड है, जो निष्पक्ष, जिम्मेदार और सार्थक होना चाहिए, हर शिक्षक की कक्षा प्रबंधन के प्रयासों में परिलक्षित होना चाहिए।

## सुझाई प्रथाएँ

- **एक सकारात्मक कक्षा वातावरण की स्थापना**
  - कक्षा एक सुखद, अनुकूल जगह बनाने

- व्यक्तिगत मतभेदों को स्वीकार करें
- शिक्षण गतिविधियों सहकारी तथा सहायक होना चाहिए
- एक गैर–खतरनाक सीखने के माहौल बनाएं
- शारीरिक अंतरिक्ष व्यवस्थित; स्थितियों कि खतरनाक अथवा विघटनकारी हो
- कक्षा के नियमों और प्रक्रियाओं की स्थापना और लगातार उन्हें सुदृढ़

- **स्पष्ट निर्देश देकर सबक शुरू**
  - काम के राज्य वांछित गुणवत्ता
  - छात्रों दिशाओं व्याख्या है
  - सुनिश्चित करें कि हर कोई ध्यान नहीं दे रहा है
  - उम्मीदों, गतिविधियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं का उल्लेख करें
  - एक बेहद प्रेरित गतिविधि के साथ शुरू करो
  - पूर्व छात्र ज्ञान पर सबक बिल्ड
- **छात्र ध्यान बनाए रखें**
  - छात्रों पर बुला में यादृच्छिक चयन का उपयोग करें
  - वैरी जो आप पर कॉल और आप उन्हें कैसे पर कॉल
  - एक छात्र पर कॉल करने से पहले प्रश्न पूछे; एक प्रतिक्रिया हेतु कम से कम पाँच सेकंड प्रतीक्षा
  - एनिमेटेड रहें, उत्साह और रुचि दिखाते हैं
  - प्रशंसा के साथ छात्र के प्रयासों को सुदृढ
  - उचित कठिनाई का काम प्रदान करें
  - प्रदर्शन और प्रतिक्रियो या कार्यों आप छात्रों निष्पादित करना चाहते हैं
  - छात्रों के लिए निर्देशित अभ्यास प्रदान करना; प्रतिक्रियाओं पर नजर रखने तथा तत्काल सुधारात्मक प्रतिक्रिया देने
- **उचित पेसिंग का प्रयाग करें**

- अपने शिक्षण गति से सावधान रहें
- संकेत है कि बच्चों बनने भ्रमित कर रहे हैं, ऊब अथवा बेचैन के लिए देखों: कभी कभी सबक छोटा किया जा करने के लिए है

NOTES

- **उपयुक्त seatwork प्रदान करें**
  - Seatwork नैदानिक और आदेशात्मक होना चाहिए
  - सहायता की मांग के लिए प्रक्रियाओं का विकास करना; एक "सहायता" संकेत है।
  - जब समाप्त हो गया कि क्या करना है के लिए प्रक्रियाओं का विकास करना
  - seatwork नजर रखने के लिए चारों ओर घूमें।
  - वैरी अभ्यास के तरीके
- **मूल्यांकन क्या अपने सबक में हुई**
  - सबक संक्षिप्त और सकारात्मक छात्रों द्वारा किए गए लाभ पर ध्यान केंद्रित, उनके अच्छे व्यवहार का एक सीधा परिणाम के रूप में आश्चर्य का उपयोग
  - यदि सबक सफल रहा था निर्धारित; लक्ष्यों को पूरा कर रहे थे?
- **अगले विषय में सुचारू बनाने**
  - अगले पाठ के लिए तैयार सामग्री है
  - छात्रों का ध्यान बनाए रखें जब तक आप अगले गतिविधि के लिए स्पष्ट निर्देश दे दिया है
  - कार्य है कि छात्रों द्वारा किया जा सकता (यानी कागज बाहर निकल जाते या कार्य का संग्रह) मत करो ; उपयोग पर नजर रखता है
  - चारों ओर ले जाएँ और व्यक्तिगत जरूरतों में भाग लेने
  - सरल, कदम दर कदम निर्देश प्रदान करें

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अनुदेशन पर ध्यान केन्द्रित से आप क्या समझते है? स्पष्ट कीजिए।
2. निर्देशात्मक योजना की आवश्यकता तथा महत्व का वर्णन कीजिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पाठ्यक्रम विवरण से आपका क्या अभिप्राय है।
2. समय पालन से आप क्या समझते है?
3. पाठ योजना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

# 7 ईकाई योजना तथा पाठ योजना की आवश्यकता एवं महत्व

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- इकाई योजना का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- इकाई योजना के उद्देश्य
- पाठ योजना की आवश्यकता
- पाठ योजना का महत्व
- पाठ योजना के स्वरूप
- शिक्षण पद
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य—** इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- इकाई योजना का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- इकाई योजना के उद्देश्य
- पाठ योजना की आवश्यकता
- पाठ योजना का महत्व
- पाठ योजना के स्वरूप
- शिक्षण पद

NOTES

## प्राक्कथन

प्रत्येक कार्य को सुचारू रूप से सम्पादित करने के लिए योजना की आवश्यकता पड़ती है। कक्षा में पढ़ाने के लिए भी योजना की आवश्यकता पड़ती है। सफल शिक्षण के लिए पाठ–योजना नितान्त आवश्यक है। विश्व के सभी सफल शिक्षक योजनाबद्ध रूप से शिक्षण–कार्य तथा विषय–वस्तु का प्रस्ततिकरण करते हैं। प्रत्येक सफल शिक्षक के पास योजना होती है, यह बात दूवसरी है कि वे अपनी शिक्षण योजनाएँ कागज पर न लिखकर अपने मन:पटल पर ही बना लेते हैं। वे अपनी शिक्षण–योजनाएँ जरूर रखते हैं। वे जानते हैं या यह उनकी आदत बन गयी है जिससे कि विषय–वस्तु का प्रस्ततीकरण बड़े योजनाबद्ध तरीके से करते हैं। उनका प्रस्तुतीकरण, प्रश्न पूछने का ढंग, व्याख्या–स्पष्टीकरण, शिक्षण–क्रियाओं की एक सुनियोजित योजना रखते हैं। जहाँ तक प्रारम्भिक शिक्षकों का प्रश्न है उनहें अनिवार्य रूप से लिखित पाठ–योजना बनानी चाहिए। उसके लिए यह आवश्यक है कि वह सचेतन मन से पाठ–योजना का निर्माण करे उसका गहन अध्ययन करे तथा उसका अनुसरण रके। उसे अपनी सभी कक्षा–क्रियाएँ पाठ–योजना के अनुसार संचालित करनी चाहिए। यहाँ यह विरोध प्रकट किया जाता है कि विद्यालय में जहाँ, अध्यापक को एक–एक दिन में सात–सात कालांश शिक्षण कार्य करना होता है, वहाँ उसके लिए यह असम्भव हो जाता है कि इतने सारे कालाशों के लिए लिखित में दैनिक पाठ–योजना निर्मित करे। इसका यह उत्तर दिया जा सकता है कि में तो वह आठ–दस दिन संक्षिप्त पाठ–योजना बनाये, तदोपरान्त वह एक कागज के टुकड़े पर शिक्षण–बिन्दु तथा अन्य प्रमुख क्रियायें लिख ले यदि उसे यह विश्वास हो जाए कि वह बिना बिन्दुओं के लिखे भी योजनाबद्ध रूप में पढ़ा सकता है तो वह मन में भी पाठ–योजना बना सकता है।

जहाँ तक छात्राध्यापकों का प्रश्न है, उन्हें तो पाठ योजनाओं का निर्माण अवश्य ही करना चाहिए। उन्हें पाठ–योजना बनाने की अनेक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। उन्हें निर्देशित करने वाले सुयोग्य प्राध्यापक होते हैं, सहायक सामग्री उपलब्ध होती है, सन्दर्भ हेतु पुरानी पाठ–योजनाएँ होती हुैं।

छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में एक बात और आवश्यक है कि छात्राध्यापकों को शिक्षण कार्य करते समय पाठ–योजनाएँ अपने पास रखनी चाहिये। परम्परा यह है कि छात्राध्यापक कक्षा में पढ़ाते समय पाठ–योजना निरीक्षक को दे देते हैं। क्यों ? यह प्रथा अत्यन्त दोषपूर्ण है। यह ठीक ऐसा ही है जैसे एक इंजीनियर भवन–निर्माण का मानचित्र अपने उच्च अधिकारियों को दे दे और अपनी स्मृति के आधार पर ही भवन, उसके दरवाजे खिड़कियाँ आदि बनवाए। यदि निरीक्षक पाठ–योजनाओं की जाँच पहले ही कर लेता है तो उस कक्षो में पुन: पाठ–योजना देखने की जरूरत

क्या है निश्चय रूप से पाठ-योजनाएँ कक्षा में छात्राध्यापक के पास ही रहनी चाहिए किन्तु छात्राध्यापक को कक्षा में शिक्षण-कार्य करते समय हर समय ही पाठ-योजना का सहारा नहीं लेना चाहिए। ऐसा न हो कि वह बिना पाठ-योजना के एक कदम भी पाठ का विकास न कर पाए। वास्तव में कक्षा में तो उसे पाठ-योजना का प्रयोग तथ्य, आँकड़े, सन्दर्भ, रेखाकृतियाँ आदि छात्रों को बताने के लिए करना चाहिए। कभी-कभी विभिन्न कारणों से शिक्षण-कार्य में विघ्न पड़ जाता है, जैसे प्रधानाध्यापक से कोई सूचना आ जाए तो शिक्षण-कार्य की श्रृंखला टूट जाती है। इस स्थिति में छात्राध्यापक पाठ-योजना देख सकता है।

## इकाई योजना

इकाई योजना का श्रेय हरबार्ट को जाता है। एक विषय के अन्तर्गत भी कई प्रकरण होते हैं किन्तु वे उस विषय ज्ञान के किसी महत्त्वपूर्ण क्षेत्र या विभाग के अन्दर होते हैं जो उस विषय की इकाई कहलाती है। इकाई का तात्पर्य ज्ञानानुभूति के एकीकृत रूप से है। यह पाठ्यक्रम का वह संगठित अंश है जो ज्ञान के किसी महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पर केन्द्रित होता है। प्रत्येक इकाई की अपनी संरचना होती है जिसका ज्ञान होने पर उसमें निहित विभिन्न प्रकरणों का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। प्रायः इकाई को पाठ अथवा विषय-वस्तु का अंश मान लिया जाता है लेकिन इकाई का अर्थ इससे भिन्न होता है। इससे तात्पर्य ज्ञानानुभावों के एकीकृत रूप से है। ऐसे अनुभव जो कि आपस में सम्बन्धित हों और जिन्हें एक साथ पढ़ाया जा सके, शिक्षण इकाई के अन्तर्गत आते हैं।

## अर्थ एवं परिभाषा

इकाई का शाब्दिक अर्थ ज्ञान को एक सूत्र में पिरोना हे। यह पाठ्यक्रम का वह संगठित अंश है जो ज्ञ्ज्ञन के किसी महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पर केन्द्रित रहता है तथा जिसका ज्ञान होने पर उसमें निहित विभिन्न प्रकरणों का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। प्रत्येक इकाई की अपनी संरचना होती है हैनरी ने इकाई का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है, "इकाई किसी विषय का एक बड़ा उपभाग होता है, जिसको किसी मूलभूत सिद्धान्त या प्रकरण के अनुसार ऐसे तरीके से नियोजित किया जाता है जिससे उन्हें विषय के जरूरी तत्त्वों का पूर्ण ज्ञान हा जाय।" अथवा "इकाई रुचि के विशेष केन्द्रों पर आधारित कथा के सम्पूर्ण कार्य का खण्डों में विभाजन है।"

विभिन्न विद्वानों ने इकाई की परिभाषा निम्न प्रकार दी है—

**मॉरसिन**—"इकाई-वातावरण, संगठित-विज्ञान, कला या आचरण का व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण अंग है जिसे लिखने से व्यक्तित्व में सामंजस्य आ जाता है।"

NOTES

**प्रेस्टान**—''एक जैसी वस्तुओं का समूह जो कि अधिगमकर्त्ता द्वारा बोधगम्य हो, इकाई कहलाती है।''

**बौसिंग**—''इकाई के अन्तर्गत अर्थपूर्ण एवं एक-दूसरे से सम्बन्धित क्रियाओं की व्यापक श्रृंखला होती है जो विकसित होकर बालकों के उद्देश्य की पूर्ति करती है और महत्त्वपूर्ण शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है जिसके परिमाणस्वरूप बालकों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन होता है।''

इकाई योजना में सम्पूर्ण इकाई के अध्यापन-बिन्दुओं को एक निश्चित क्रम में व्यक्तित किया जाता है। इन बिन्दुओं से सम्बन्धित प्राप्य उद्देश्यों को परिभाषित किया जाकर इनके अनुरूप अध्यापन परिस्थितियों के निर्माण के लिए विचार किया जाता है। इकाई-योजना के सम्बन्ध में वाल्टर पियर्स तथा माइकल लीर्बर ने कहा है, ''इकाई योजना अध्यापक द्वारा पूर्व चिन्तन कि शिक्षार्थी शिक्षण के एक अन्तराल में (सामान्यतः 3 से 6 सप्ताह) क्या प्राप्त करेंगे एवं कैसे सफलतापूर्वक प्राप्त करेंगे को प्रदर्शित करती है।''

शिक्षण के क्षेत्र में इकाई योजना को लाने का श्रेय हरबर्ट को जाता है। इकाई योजना शिक्षक को बताती है कि विषय-वस्तु का कौन सा खण्ड किस दिन व किस कालांश में पढ़ाना है। इसके लिए वह इकाई योजना द्वारा अपन दैनिक पाठ योजनाएँ बनाता है।

**टैरप**—के अनुसार, ''इकाई किसी विषय का एक बड़ा उपभाग होता है जिसका कोई मूलभूत प्रकरण अथवा सिद्धान्त होता है। इस सिद्धान्त या प्रकरण के अनुसार छात्र क्रियाओं का इस प्रकार नियोजन किया जाता है कि उन्हें महत्त्वपूर्ण अनुभव प्राप्त हो सके।''

**बासिंग** के अनुसार, ''इकाई अर्थपूर्ण परस्पर सम्बन्धित क्रियाओं की वह व्यापक श्रृंखला है जो विकसित होकर बालकों के उद्देश्यों की पूर्ति करती है, जिससे बालक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक अनुभव प्राप्त कर सके और व्यवहारों में वांछित परिवर्तन ला सके।''

**सैम्फॉर्ड** का कथन है कि, ''इकाई सावधानीपूर्वक चयनित विषय वस्तु की रूपरेखा है, जो कि विद्यार्थियों की रूचियों और आवश्यकताओं के अनुसार अलग कर दी गई है।''

**प्रिस्टॉन**—के अनुसार, ''सीखने वाले (Learner) विहंगम दृष्टि से अन्तर्सम्बन्धित विषय-वस्तु के बड़े खण्ड को इकाई कहते हैं।''

**एम. रिस्क** के अनुसार, ''इकाई में पूर्व नियोजित अनुभव और क्रियाएँ निहित हैं और वह किसी समस्या, परिस्थिति, रुचि या वांछित परिणाम पर आधारित होती है।''

**मॉरिसन** के अनुसार, ''इकाई-वातावरण, संगठित विज्ञान, कला या आचरण का व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसे सीखने से व्यक्तित्व में सामंजस्य आ जाता है।''

NOTES

**इकाई योजना की विशेषताएँ**

1. यह योजना मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें छात्रों की रूचि, सम्मान, आवश्यकता आदि को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है।
2. यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम तथा दैनिक पाठ को जोड़ने वाली अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कड़ी है।
3. यह दैनिक शिक्षण को आधार प्रदान करती है।
4. इसके1 द्वारा परम्परागत विधियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली तरीके से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
5. इकाई योजना विषय-वस्तु को संगठित करने में विशेष सहायक होती है।
6. यह अपने आप में एक सम्पूर्ण अनुभव आधारित होती है, इसमें विषय वस्तु की दृष्टि से समग्रता होती है।
7. इसमें शिक्षण के सभी उद्देश्य प्राप्त किया जाना सम्भव है।
8. इसमें छात्रों को कार्य करने, निरीक्षण करने व परिणाम निकालने के अवसर प्राप्त होते हैं।
9. इसमें विभिन्न विधियों का उपयोग सम्भव है।
10. इसके माध्यम से छात्र स्वयं सिद्धान्त निकालते हैं अत: इनमें तर्क, चिन्तन एवं विचार शक्ति का विकास होता है।

इकाई योजना की इन विशेषताओं के आधार पर **रिस्क** ने लिखा है कि—''बालक परम्परागत प्रणालियों की अपेक्षा इकाई-योजना प्रणाली द्वारा अधिक प्रभावशाली ढंग से ज्ञान अर्जित करता है। इकाई योजना वातावरण सम्बन्धी इकाइयों का प्रयोग करके बालकों को वातावरण में समायोजन करने की क्षमता पैदा करती है। यह योजना छात्रों की रूचियों, प्रवृत्तियों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायता प्रदान करती है। अन्त में इकाई-योजना कक्षा कार्य को अपेक्षाकृत अधिक रोचक तथा क्रियात्मक बनाती है।''

NOTES

**इकाई योजना के उद्देश्य**

1. दैनिक पाठ-योजनाओं के लिए सुनियोजित आधार प्रस्तुत करना।
2. उप इकाइयों की समाप्ति पर विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करना।
3. पाठ्य-सामग्री को विद्यार्थियों की आवश्यकता एवं रूचि के अनुसार संगठित करना।
4. पाठ्य सामग्री को सरल एवं व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करना।
5. किसी एक समस्या या विचार पर आधारित विषय वस्तु को विभिन्न घटकों में विभाजित करना।
6. छात्रों को ज्ञानार्जन के लिए अभिप्रेरित करना।
7. पाठ्यवस्तु का इकाइयों के आधार पर उद्देश्य, शिक्षण-विधि, सहायक सामग्री, मूल्यांकन तथा गृहकार्य निर्धारित करना।

**इकाई योजना के सोपान**

इकाई योजना के निमार्ण में निम्न सोपान तय किये जाते हैं—

1. **सामान्य उद्देश्य चयन**— सबसे पहले अध्यापक सामान्य उद्देश्यों का चयन करता है जिससे इकाई की प्रकृति तथा क्षेत्र स्पष्ट हो जाता है।
2. **खण्डों का चयन**— विषय वस्तु की महत्त्वपूर्ण इकाई के आधार पर खण्डों का चयन किया जाता हैं। खण्ड क्रमबद्ध होते हैं।
3. **खण्डों का विकास**— प्रत्येक खण्ड के उद्देश्य, प्रकृति व क्षेत्र का निर्धारण कर उन छात्र क्रियाओं का चयन किया जाता है जिसमें निर्धारित उद्देश्य प्राप्त होते हैं। ये क्रियाएँ छात्रों के अनुभव पर आधारित होती हैं।
4. **प्रस्तावना**— अध्यापक छात्रों के पूर्ण ज्ञान, इकाई के प्रमुख पक्ष एवं ऐसे प्रश्नों के चयन जिसने प्रस्तावना शुरू हो सके का निर्धारण कर प्रस्तावना निर्माण किया जाता है।
5. **वैयक्तिक विभिन्नजाओं की व्यवस्था**— इस पद में छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर विभिन्न क्रियाओं तथा योजनाओं की व्यवस्था की जाती है।
6. **मापन**— इस पद में छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन किया जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान का मापन करना होता है। इससे छात्रों ने

कौन-सी कुशलताओं को प्राप्त किया और किन कठिनाइयों का सामना किया इन सभी की जानकरी प्राप्त हो जाती है।

7. **सन्दर्भ पुस्तकों का चयन**— शिक्षक कार्य में सहयोग सन्दर्भ पुस्तकों तथा शिक्षक-सामग्री का चयन कर उल्लेख किया जाता है।

NOTES

**इकाई योजना बनाते समय निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए—**

1. योजना लचीली होनी चाहिए ताकि प्रतिभाशाली व पिछड़े बालकों के लिये उसमें थोड़ा परिवर्तन कर सके सबसे योग्य बनाया जा सके।
2. योजना में विविधता होनी चाहिए। उसमें प्रयोगिक कार्य क्षेत्र, परिभ्रमण प्रदर्शन तथा शिक्षण सामग्री के उपयोग की व्यवस्था होनी चाहिए।
3. योजना में ऐसे प्रकरणों तथा तथ्यों या सिद्धान्तों का समावेश किया जाना चाहिये जिनका ज्ञान पहले प्राप्त नहीं किया गया है।
4. योजना छात्रों की योग्यता, आवश्यकता व रूचियों के अनुसार होनी चाहिए।
5. छात्रों के स्तर के अनुसार होनी चाहिए।
6. योजना छात्रों के सामाजिक व भौतिक वातावरण व सम्बन्धित होनी चाहिए।
7. योजना में पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित उदाहरणों से प्रकरण का समावेश होना चाहिए जिससे नई सामग्री उससे सम्बन्धित हो ताकि अन्त तक छात्रों की रूचि व उत्सुकता बनी रहे।
8. योजना द्वारा प्राप्त ज्ञान व अनुभव मनोवैज्ञनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले होने चाहिए जिससे छात्रों की सम्भावित समस्याओं व जरूरतों की पूर्ति हो सके।
9. योजना का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिये कि अध्यापक तथा छात्र परस्पर अधिक-से-अधिक सहयोगपूर्ण परिस्थियों में कार्य करें।
10. योजना में शिक्षण उद्देश्यों को केन्द्र में रखना चाहिये।
11. प्राप्त ज्ञान व अनुभव के मूल्यांकन की उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिये।
12. गृहकार्य प्रदान करने के उपसुक्त अवसर होने चाहिये।

1. **पाठ-योजना के अंग**— पाठ-योजनाएँ दो स्तरों पर बनायी जाती हैं— इकाई स्तर पर तथा दैनिक स्तर पर। सबसे पहले छात्राध्यापक को सम्पूर्ण पाठ से

सम्बन्धित इकाई–योजना का निर्माण करना पड़ता है। तदोपरान्त दैनिक शिक्षण हेतु दैनिक पाठ–योजनाओं का निर्माण करना पड़ता है। इकाई योजना में निम्न तथ्य दिए जाते हैं—

NOTES

**इकाई–योजना प्रारूप नं. 1**

(i) इकाई का नाम,

(ii) उप–इकाइयाँ,

(iii) प्रत्येक उप–इकाई के उद्देश्य,

(iv) प्रत्येक उप–इकाई के मुख्य विषय–बिन्दु,

(v) अध्यापक–क्रियाएँ

(vi) छात्र क्रियाएँ

(vii) सहायक सामग्री

(viii) मूल्यांकन–प्रविधियाँ

इकाई योजना की रूपरेखा नीचे प्रस्तुत है—

**इकाई–योजना**

1. इकाई का नाम.................... कक्षा................ विभाग....................

2. उप इकाइयाँ दिनांक.............से.......................तक

विद्यालय.....................................

1. ...................................

2. ...................................

3. ...................................

4. ...................................

| उप–इकाई का नाम | शैक्षिक उद्देश्य | मुख्य बिन्दु | अध्यापक क्रियाएँ | छात्र क्रियाएँ | यहायक सामग्री | मुल्यांकन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | |

**इकाई योजना का प्रारूप नं. 2**

इकाई योजना के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए निम्न प्रारूप निर्धारित किया जा सकता है। इसमें जरूरी परिवर्तन तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप किया जा सकता है।

NOTES

**परिचयात्मक पक्ष**

कक्षा.................................. विषय.................... प्रकरण.......................

इकाई संख्या..............................................................................

इकाई–शिक्षण हेतु आवश्यक कालांश......................................................

आवृत्ति हेतु आवश्यक कालांश...............................................................

मूल्यांकन हेतु आवश्यक कालांश.............................................................

सुधारात्मक अध्ययन हेतु आवश्यक कालांश................................................

योग.........................................................................................

| कक्षा तथा व्यवहारगत परिवर्तन | उप इकाइयाँ अथवा पाठप्रकरण | अध्यापन बिन्दु | शिक्षण-ज्ञानार्जन स्थितियाँ अध्यापक क्रियाएँ | छात्र क्रियाएँ | मूल्यांकन विधि | गृहकार्य |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| | | | | | | |

इकाई योजना के इस प्रारूप के विभिन्न पक्ष का निर्धारण निम्न प्रकार कर सकते हैं—

**परिचयात्मक कक्ष**— इसमें इकाई–योजना की प्रारम्भिक जानकरी दी जाती है। इन सूचनाओं के आधार पर अन्य शिक्षक भी योजना का उपयोग कर सकते हैं।

**उद्देश्य तथा व्यवहारगत परिवर्तन**— इसके अन्तर्गत उन शिक्षण उद्देश्यों का वर्णन किया जााता है जिनको इकाई के अध्ययन के दौरान छात्र प्राप्त करता है। उद्देश्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से ज्ञान, अवबोध, ज्ञानोपयोग, अभिवृत्ति, कौशल आदि उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। लेकिन केवल उन्हीं उद्देश्यों

को लिखा जाना चाहिये जो उक्त इकाई-योजना के आधार पर निर्धारित किये गये हैं। कुछ शिक्षाशास्त्रियों ने इन्हें शिक्षण बिन्दुओं के पश्चात् स्थान दिया है।



**उप इकाई एवं प्रकरण**— इकाई के मोटे उप विभाग को उप इकाई तथा प्रतिदिन के पाठ के शीर्षक को पाठ प्रकरण कहते हैं। उप-इकाइयाँ तथा पाठ प्रकरण निश्चित कर लेने से यह अनुमान लगाने में सुविधा हो जाती है कि इकाई-शिक्षण में कितने कालांशों की जरूरत होती है। इससे इकाई की संरचना भी स्पष्ट हो जाती है।

**अध्यापन बिन्दु**— इकाई-योजना का महत्वपूर्ण पक्ष है अध्यापन बिन्दुओं का चयन करता तथा उन्हें व्यवस्थित रूप से लिखना। अध्यापन-बिन्दु के अन्तर्गत विषय वस्तु का विश्लेषण करके पदों, तथ्यों, प्रत्ययों, सिद्धान्तों आदि का चयन कर लिया जाता है तथा उन्हें व्यवस्थित रूप से लिखा जाता है। अध्यापक को अध्ययन-बिन्दु लिखने से पूर्व पाठ्यवस्तु का गहराई से अध्ययन करना चाहिए।

**शिक्षण सहायता सामग्री**— इकाई-योजना के इस खण्ड के अन्तर्गत श्रव्य-दृश्य साधन, मानचित्र, चित्र रेखाचित्र आदि का वर्णन किया जाता है जिनका अध्यापन के दौरान प्रयोग किया जाना है।

**शिक्षण ज्ञानर्जन स्थितियाँ**— इसमें अध्यापन बिन्दु तथा उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षण-छात्र क्रियाओं का उल्लेख किया जाता है।

**मूल्यांकन**— इकाई-योजना का महत्वपूर्ण पक्ष मूल्यांकन है। मूल्यांकन की प्रविधियों एवं उपकरणों द्वारा उन साक्षियों का संकलन किया जाता है जो यह प्रमाणित करती हैं कि इकाई-योजना शिक्षण के उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हो सके हैं। इसमें इकाई जाँच पत्र कौशल उद्देश्यों की ही जाँच की जाती है। अभिरूचियों एवं अभिवृत्तियों की जाँच हेतु शिक्षण के समय ली गई लिखित परीक्षा संभव नहीं है।

**गृह कार्य**— गृह कार्य का इकाई योजना में विशेष महत्त्व है। इसी कारण इसके लिये पृथक् खण्ड का निर्धारण किया गया है।

### इकाई योजना के दोष

1. यह योजना जटिल है, प्रत्येक अध्यापक द्वारा इसका सरलता से प्रयोग सम्भव नहीं है।
2. छात्रों के वातावरण एवं अनुभवों की जानकारी को प्राप्त करना कठिन कार्य है।
3. इकाइयों के समान पाठ्वस्तु तार्किक क्रम में व्यवस्थित नहीं की जा सकती है। इसके कारण पाठ्यविषयों का क्रमिक विकास नहीं किया जा सकता।

4. इकाई–योजना के शिक्षण–सोपानों को समस्त विषयों के शिक्षण में प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

5. इकाई–योजना में अनेक क्रियाओं को स्थान दिया जाता है, जिनकी साधारण स्तर के विद्यालयों में व्यवस्था नहीं की जा सकती है।

6. प्रकरण सम्बन्धी इकाइयाँ ज्ञान को एक रूप में करने में असमर्थ हैं।

7. इकाइयों के आधार समान नहीं होने से इनको पूरा करने में लगने वाला समय अलग–अलग रहता है।

8. इसके लिये प्रशिक्षित अध्यापकों की जरूरत होती है जिनका अभाव है।



**इकाई के प्रकार**

इकाई के प्रकार सन्दर्भ में प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री कैसबेल तथा कैम्पवैल ने इसे दो वर्गों में विभाजित किया— पाठ्य-विषय से सम्बन्धित एवं अनुभव से सम्बन्धित इकाइयाँ ।

**पाठ्य विषय से सम्बन्धित इकाइयाँ**— ये इकाइयाँ तीन प्रकार की होती हैं—

1. **प्रकरण पर आधारित**— इनका निर्माण किसी प्रकरण के आधार पर किया जाता है

2. **सूत्र या नियम या सिद्धान्त पर आधारित**— इन इकाइयों का आधार किसी सूत्र, नियम अथवा सिद्धान्त को बनाया जाता है। इसका प्रयोग विज्ञान, गणित, व्याकरण में अधिक होता है।

3. **वातावरण पर आधारित**— इन इकाइयों का निमार्ण वातारण, संस्कृति, कला, विज्ञान या व्यवहार किसी पर आधारित किया जा सकता है। इसका विचार मॉरीसन ने दिया था, इसी कारण इसे मॉरीसन इकाई कहते हैं।

**अनुभव से सम्बन्धित इकाइयाँ**— इन इकाइयों का भी तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं—

1. **रूचि पर आधारित**— छात्रों की रूचियों के आधार पर क्रियाओं का चयन किया जाता है। यह मनोविज्ञान पर आधारित है क्योंकि छात्र ऐसे कार्यों में अधिक रूचि लेते हैं जो उनकी रूचि के अनुकूल होते हैं।

2. **उद्देश्य पर आधारित**— इस तरह की इकाई में अध्यापक उद्देश्य को आधार बनाकर इकाई में उन अर्थपूर्ण एवं क्रियात्मक अनुभवों को स्थान प्रदान करता है, जो निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता होते हैं।

NOTES

3. **आवश्यकता पर आधारित**— इस प्रकार की इकाई का निर्माण छात्रों की अनुभव आवश्यकताओं को आधार बनाकर उससे सम्बन्धित क्रियाओं के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

**2. दैनिक पाठ-योजना**

दैनिक पाठ-योजना में निम्नांकित बातें दी जाती हैं—

(i) पाठ के उद्देश्य,

(ii) छात्रों का पूर्ण-ज्ञान,

(iii) पद्धति,

(iv) सहायक सामग्री,

(v) प्रस्तावना,

(vi) उद्देश्य-कथन,

(vii) पाठ का विकास अथवा प्रस्तुतीकरण।

दैनिक पाठ-योजना की रूपरेखा आगे दी गई है—

## पाठ योजना की आवश्यकता (Need of Lesson Plan)

शिक्षक तथा छात्राध्यापकों को कक्षा शिक्षण की क्रियाओं एवं उद्देश्यों का पूर्ण निर्धारण तथा नियोजन करना होता है, क्योंकि—

1. कक्षा में शिक्षण की क्रियाओं तथा सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी हो जाती है।
2. प्रस्तुतीकरण के क्रम तथा पाठ्यवस्तु के रूप को निश्चित कर लिया जाता है।
3. पाठ्यवस्तु के तत्वों के क्रम, चिन्तन एवं विकास में क्रमबद्धता स्थापित की जाती है।
4. कक्षा-शिक्षण के समय शिक्षक की विस्मृति की सम्भावना कम हो जाती है। निर्धारित पाठ्यवस्तु के समस्त तत्वों का विवेचन किया जाता है।
5. सहायक सामग्री के प्रयोग के स्थल, शिक्षण विधि तथा प्रविधियों का निर्धारण हो जाता है।
6. शिक्षण क्रियाओं का अधिगम स्वरूपों से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

7. शिक्षण उद्देश्यों एवं परीक्षण परिस्थियों का निर्धारण होता है।
8. छात्रों की क्रियाओं के नियन्त्रण तथा पुनर्बलन की प्रविधियों के प्रयोग की परिस्थिति भी निर्धारित की जाती है।
9. छात्राध्यापकों को प्रशिक्षण के लिए पाठ योजना कक्षा की क्रियाओं हेतु रूपरेखा प्रदान करती है।
10. छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर कक्षा की क्रियाओं की व्यवस्था करने में पाठ योजना सहायक होती है।

NOTES

## पाठ-योजना का महत्त्व (IMPORTANCE OF LESSON PLANNING)

प्रभावशाली शिक्षण के लिए शिक्षण से पूर्व उसकी योजना बनाना जरूरी है अन्यथा बिना योजना के कार्य प्रारम्भ करने से अच्छे परिणामों को प्राप्त करना कठिन होता है। पाठ-योजना का महत्व निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट है—

**(1) उद्देश्यों की स्पष्टता (Clarity of the Objectives)**— शिक्षण कार्य करने से पूर्व अध्यापक को स्पष्ट होना चाहिए कि वह क्या पढ़ाने जा रहा है, क्यों पढ़ाने जा रहा है एवं उससे छात्रों को क्या लाभ मिलने वाला है। पाठ-योजना इन उद्देश्यों को स्पष्ट कर अध्यापक को दिशा-निर्देश देने का कार्य करती है जिससे अध्यापक का विषय शिक्षण में मार्गन्तरीकरण न हो।

**(2) शिक्षण विधि-प्रविधियों का चयन (Selection of Teaching Methods & Techniques)**— पाठ-योजना, उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विषयवस्तु के अनुकुल शिक्षण विधियों अथवा— प्रविधियों के चयन में सहायक होती है।

**(3) शिक्षण सामग्री का उपयुक्त चयन एवं संगठन (Proper Selection and Organization of Teaching Material)**— पाठ-योजना की सहायता से पाठ की कितनी विषयवस्तु किस क्रम में एवं किस तरीके से शिक्षण सूत्रों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत करनी है इनका ज्ञान अध्ययन को हो जाता है।

**(4) सहायक सामग्री का उपयुक्त चयन एवं प्रस्तुतीकरण (Proper Selection & Presentation of Teaching Aids)**— पाठ-योजना के माध्यम से अध्यापक को विषयवस्तु स्पष्टीकरण हेतु आवश्यक सामग्री का चयन एवं व्यवस्था पूर्व में करनी पड़ती है। ऐसा करने ने उसका प्रस्तुतीकरण ढंग से किया जा सकता है।

**(5) बाल केन्द्रित शिक्षण (Child Centered Teaching)**— पाठ-योजना का निर्माण करते समय अध्यापक विद्यार्थियों के विषय और पाठ सम्बन्धी

NOTES

पूर्वज्ञान रूचियाँ एवं उनकी योग्यताओं आदि का ध्यान रखता हैं जो बाल केन्द्रत शिक्षण पर आधारित है।

(6) **मूल्यांकन प्राक्रिया में सहायक (Helpful in the Process of Evaluation)**— पाठ-योजना का निर्माण करते समय उद्देश्यों विषयवस्तु, शिक्षण विधि-प्रविधि आदि का पूर्व में निर्धारण कर लिया जाता है। अत: शिक्षण के बाद अध्यापक के लिए छात्रों का मूल्यांकन करना सरल हो जाता है। छात्रों में हुए व्यवहारगत परिवर्तन द्वारा अध्यापक न केवल उद्देश्यों की प्रप्ति के सन्दर्भ में अपितु स्वयं का एवं शिक्षण प्रक्रिया का मूल्यांकन करने में समर्थ हो जाता है।

(7) **समय एवं शक्ति की बचत में सहायक (Helpful in the Saving of Time and Energy)**— पाठ-योजना के माध्यम से अध्यापक को शिक्षण के सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश मिलता रहता है जिससे समय एवं शक्ति का उचित उपयोग करते हुए विषय से भटकने से बच जाता है।

उपयुक्त आधार पर इसकी उपयोगिता को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

**(1) शिक्षक के लिए उपयोगिता**

(1) योजना के माध्यम से अध्यापक शिक्षण हेतु स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर आत्मविश्वास पूर्ण शिक्षण कर पाता हैं।

(2) पाठ-योजना के कारण शिक्षक एवं शिष्य दोनों ही सक्रिय रूप से पाठ के विकास में सहायक होते हैं।

(3) पाठ-योजना शिक्षकों को विचारहीन, तथ्यहीन एवं प्रभावहीन शिक्षण के दोषों से मुक्त रखती है।

(4) शिक्षक पाठ-योजना के माध्यम से स्वयं का मूल्यांकन कर पाता है।

(5) पाठ के सम्बन्ध में उपस्थित होने वाली विभिन्न शैक्षिक तथा अनुशासन आदि समस्याओं का सामाधान पाठ-योजना के माध्यम से अध्यापक पहले ही ज्ञात कर लेता है।

(6) पाठ-योजना के माध्यम से सुधारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।

**(2) छात्र के लिए उपयोगिता**

(1) पाठ-योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर अधिगम का मिलता है।

(2) पाठ-योजना द्वारा छात्रों को स्वक्रिया का मौका मिलता है।

(3) छात्रों की मानसिक शक्तियों जैसे तर्क, विचार, कल्पना तथा निर्णय शक्ति आदि के विकास का अवसर पाठ-योजना द्वारा प्राप्त हो जाता है।

(4) पाठ-योजना द्वारा नियोजित रूप से अध्ययन करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

NOTES

(5) पाठ-योजना द्वारा अर्जित किया गया ज्ञान स्थायी हो जाता है।

(6) पाठ-योजना द्वारा पाठ का सारांश सरलता से किया जा सकता है।

## पाठ योजना के विभिन्न उपागम (DIFFERENT APPROACHES OF LESSON PLANNING)S

वर्तमान समय में पाठ नियोजन के चार उपागम प्रचलन में है, जिनका उपयोग शिक्षक प्रतिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षण अभ्यास के लिए हो रहा है। ये उपागम निम्नलिखित हैं—

(1) हरबार्ट उपागम

(2) ब्लूम/मूल्यांकन उपागम

(3) क्षेत्रिय शिक्षण महाविद्यालय मैसूर द्वारा प्रतिपादित उपागम

(4) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् उपागम

### (1) हरबार्ट पाठ-योजना का प्रारूप (Layout of Herbartain Lesson Plan)

सर्वप्रथम **जे . एफ. हरबार्ट** (1776-1841) ने कक्षा-शिक्षण हेतु पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करने की एक सामान्य शिक्षण विधि निर्धारित की थी जो परम्परागत मानव व्यवस्था सिद्धान्त (Classical Human Organization Theory) पर आधारित थी। इसमें स्मृति स्तर के शिक्षण को विशेष महत्त्व दिया जाता है। हरबार्ट सीखने में संचित ज्ञान सिद्धान्त (Apperceptive Mass Theory) को मानते थे जिसके अनुसार ज्ञान बाहर से दिया जाता है और वह संचित होता रहता है। इनकी विधि में चार पद स्पष्टता, सम्बन्ध, व्यवस्था तथा विधि थे। बाद में उनके शिष्य **टी. जिल्लर** (Tusikon Ziller) ने प्रथम पद स्पष्टता को प्रस्तावना व प्रस्तुतीकरण में विभाजित किया और शिष्य **विल्हेमरीन** (Wilhelm Rein) ने नवीनपद उद्देश्य कथन जोड़कर निम्न पाँच पद प्रस्तुत किए—

**(1) योजना (Preparation)**— शिक्षक पाठ्यवस्तु के तत्त्वों को अपने चेतन मस्तिष्क में लाकर क्रमबद्ध व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करते हैं।

इसके अन्तर्गत **प्रस्तावना** के माध्यम से अध्यापक छात्रों के पूर्वज्ञान को नये ज्ञान से सम्बन्धित करने का प्रयास करता है। इसके पश्चात् अध्यापक **उद्देश्य कथन** के माध्यम से पढ़ाया जाने वाला प्रकरण स्पष्ट करता है।

(2) **प्रस्तुतीकरण (Presentation)**— विभिन्न शिक्षण विधियों के माध्यम ये विभिन्न सहायक सामग्रियों को प्रयुक्त कर अध्यापक विषयवस्तु को रोचक तथा प्रभावपूर्ण तरीके से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

(3) **तुलना एवं समरूपता (Comparion and Abstraction)**— छात्रों के पूर्वज्ञान एवं नये ज्ञान में समानता एवं असमानता की तुलना करके ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

(4) **सामान्यीकरण (Generalization)**— इस पद में छात्रों के सहयोग से विषयवस्तु से सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्त निर्धारित करने का प्रयत्न किया जा सकता है।

(5) **प्रयोग (Application)**— इस पद में अध्यापक ऐसी परिस्थितियाँ प्रस्तुत करता है, जिसमें छात्र अपने सीखे हुए ज्ञान का प्रयोग कर सकता है।

**हरबार्ट की पाठ-योजना की सीमाएँ**

इसकी अधेलिखित सीमाएँ हैं—

(1) यह मनौविज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं है क्योंकि इसके प्रयोग में छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नताओं पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

(2) इसमें विद्यार्थियों को करके सीखने का अवसर प्राप्त नहीं होता है।

(3) शिक्षण स्मृति स्तर तक ही सीमित रहता है।

(4) प्रस्तुतीकरण पर अधिक जोर दिया जाता है।

(5) पाठ-योजना व्यवहारिक तथा लचीली कम होती है।

(6) अधिगम परिस्थितियों को ध्यान में नहीं रखा जाता है।

(7) शिक्षण क्रियाओं तथा अधिगम स्वरूपों में समन्वय स्थापित नहीं किया जाता है।

**पाठ योजना का स्वरूप**

(1) **सामान्य उद्देश्य (General Objectives)**— इस पद के अन्तर्गत प्रकरण से सम्बन्धित सामान्य उद्देश्यों का वर्णन किया जाता है।

**NOTES**

**(2) विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)**— एक पाठ-योजना की सहायता से कुछ विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है जिनका सम्बन्ध सामान्य उद्देश्यों से होता हैं।

**(3) प्रस्तावना (Introduction)**— इस पद में छात्रों को उनके पूर्व ज्ञान आधार पर नये ज्ञान ग्रहण करने के लिए तत्पर करने का प्रयास किया जाता है।

**(4) उद्देश्य कथन (Statement of Aim)**— इस पद में अध्यापक प्रकरण का कथन देता है कि आज इस प्रकरण का अध्ययन करेगें।

**(5) विकासात्मक प्रश्न (Developmental Questions)**— विषय के प्रस्तुतीकरण के लिए, जिसमें पाठ का तार्किक विकास होता है, किए गए प्रश्न विकासात्मक प्रश्न कहलाते हैं।

**(6) स्पष्टीकरण (Clearification)**— विकासात्मक प्रश्नों का उत्तर जब छात्र स्पष्ट रूप से नहीं दे पाते, उस समय शिक्षक उनका स्पष्टीकरण करने हेतु अपना कथन देता है।

**(7) श्यामपट्ट सार (Black Board Summary)**— इस पद में पाठ की उन मुख्य बातों को संक्षेप में लिखा जाता है, जिन्हें अध्यापक अपने विद्यार्थियों को लिखवाना चाहता है और तो छात्रों के ज्ञान के लिए उपयोगी है।

**(8) पुनरावृत्ति प्रश्न (Repetition or Recapitulatory Questions)**— प्रकरण के दोहराने एवं अभ्यास के लिए छात्रों के अधिगम का बोध करने के लिए इस पद में पुनरावृत्ति प्रश्न किए जाते हैं।

**(9) गृह कार्य (Home Work)**— अभ्यास व दोहरान की दृष्टि से अध्यापक विद्यार्थियों को घर पर करने के लिए कुछ कार्य देता हैं।

### (2) ब्लूम मूल्यांकन उपागम (Bloom's/Evaluation Approach)

इस उपागम का आधार शिक्षा की समस्त क्रियाओं का उद्देश्य केन्द्रित होना है। अर्थात् शिक्षण एवं परिक्षण की क्रियाएँ उद्देश्य केन्द्रित होती है। **बी. एस. ब्लूम** शिक्षा को त्रिपदी (Tripolar) प्रक्रिया मानते हैं जिन्हें उपागम के सोपान कहते हैं। ये सोपान निम्नरूप में व्यक्त किए जा सकते हैं—

(1) शैक्षिक उद्देश्य (Educational Objectives)

(2) अधिगम के अनुभव (Learning experience)

(3) व्यवहार परिवर्तन (Change of Behaviour)

**(1) शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण (Formulation of Education Objective)**— पूर्ण व्यवस्थित क्रिया कार्य को पूर्ण करने पर जो अभीष्ट परिवर्तन होते है उन्हें शिक्षण उद्देश्य कहा जाता है। इनके द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान, भाव एवं क्रियापक्षों में व्यवहारिक परिवर्तन लाया जाता है।



शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाता है—

(1) विषय की प्रकृति

(2) समाज की आवश्यकता (आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक आदि)

(3) छात्रों की आवश्यकता तथा क्षमता ,

(4) शिक्षा के विभिन्न स्तर।

**(2) अधिगम अनुभव (Learning Experiences)**

विद्यालय तथा उसके बाहर प्राप्त अनुभवों को अधिगम अनुभव कहते हैं जो शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं । कक्षा में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से ऐसी क्रियाएँ करता है। जिससे बालकों को अपेक्षित अधिगम अनुभव प्राप्त हो सके। शिक्षण-उद्देश्यों के प्रमुख अधिगम अनुभवों के साधनों के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

**अधिगम के अनुभवों के साधन**

| **शिक्षण उद्देश्य** | **अधिगम अनुभवों के साधन** |
|---|---|
| 1. ज्ञान उद्देश्य | व्याख्यान, चार्ट, प्रदर्शन, पाठ्य पुस्तकें, फिल्म तथा अभिक्रमित अनुदेशन, गृहकार्य। |
| 2. बोध उद्देश्य | वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर विधि, प्रदर्शन, रेखाचित्र, मानचित्र मॉडल, पाठ्य पुस्तकें, गृहकार्य। |
| 3. प्रयोग उद्देश्य | सामान्य-समाधान, प्रयोगात्मक विधि, अन्तः प्रक्रिया-विधि, अनुवर्ग शिक्षण। |
| 4. सर्जनात्मक उद्देश्य | समस्या-समाधान, व्यक्ति, प्रयोग। |

**(3) व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करना**

अधिगम के अनुभवों की सहायता से छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित बदलाव लाया जाता है। ये व्यवहार परिवर्तन ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्षों में होते हैं, जिनके मापन की व्यवस्था की जाती है।

मापन की विविध प्रविधियाँ निम्नलिखित हैं—



**व्यवहार-परिवर्तन के मूल्यांकन की प्रविधियाँ**

| पक्ष | मूल्यांकन की विधियाँ |
|---|---|
| 1. ज्ञानात्मक | मौखिक तथा लिखित परीक्षाएँ, वस्तुनिष्ठ, निबन्धात्मक परीक्षाएँ, निरिक्षण एवं साक्षात्कार। |
| 2. भावात्मक | निरिक्षण, अभिरूचि, सूची, अभिवृत्ति स्केल, निबन्धात्मक परीक्षाएँ। |
| 3. क्रियात्मक | निरीक्षण, प्रयोगात्मक, साक्षात्कार, प्रदर्शन। |



**शिक्षण पद (Teaching Points)**

**(1) शिक्षण पद (Teaching Points)**— शिक्षण की सुविधा की दृष्टि से पाठ को प्रमुख शिक्षण बिन्दुओं में विभक्त कर लिया जाता है।

**(2) शिक्षण लक्ष्य (Teaching Objectives)**— पाठ से सम्बन्धित शिक्षण लक्ष्यों को लिखकर उसके समक्ष छात्र में होने वाले अपेक्षित व्यवहारिक बदलावों को भी अंकित करते हैं।

**(3) शिक्षक क्रियाएँ (Teaching Activities)**— शिक्षक द्वारा कृत विभिन्न क्रियाएँ, जो छात्र में अपेक्षित व्यवहारिक परिवर्तनों द्वारा शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता होती हैं, अंकित की जाती हैं जैंसे— प्रश्न पूछकर, श्यामपट्ट का उपयोग करके, एक पिक्चर अथवा चित्र दिखाकर आदि।

**(4) छात्र क्रियाएँ (Pupils Activities)**— शिक्षक द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों में छात्रों द्वारा दिए गए उत्तर यहाँ अंकित किए जाते हैं। जैसे— निरीक्षण करेंगे, उत्तर देंगे और श्रवण करेंगे आदि।

**(5) शिक्षण विधियाँ, प्रविधियाँ और सामग्री (Teaching Methods, Techniques and Aids)**— शिक्षक द्वारा प्रयुक्त शिक्षण विधियों, प्रविधियों एवं शिक्षण सामग्री आदि का यहाँ वर्णन किया जाता है।

**(6) श्यामपट्ट कार्य (Black Board Work)**— प्रत्येक शिक्षण पद के समक्ष श्यामपट्ट सांराश की विषयवस्तु को संक्षेप में एवं व्यवस्थित क्रम में लिखा जाता है।

**(7) मूल्याकंन (Evaluation)**— मूल्यांकन द्वारा शिक्षण लक्ष्यों एवं परीक्षण के मध्य सीधा सम्बन्ध ज्ञात किया जाता है और शिक्षक द्वारा कृत मूल्यांकन से

यह भी जानने का प्रयत्न किया जाता है कि शिक्षण द्वारा पूर्व निर्धारण शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति हुई है अथवा नहीं। इसमें शिक्षक द्वारा पूछे गए लघु उत्तरात्मक प्रश्न एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का यहाँ उल्लेख किया जाता है।



**(8) गृहकार्य (Assignment)**— छात्रों को घर पर अभ्यास करने हेतु शिक्षक द्वारा प्रदत्त पठित पाठ पर आधारित गृहकार्य को यहाँ अंकित किया जाता है।

**ब्लूम/मूल्यांकन उपागम के गुण (Merits of the Bloom/Evaluation Approach)**— इस उपागम के निम्नलिखित गुण हैं—

(1) इसमें शिक्षण लक्ष्यों, अधिगम के अनुभव एवं व्यवहार परिवर्तन में निकटतक सम्बन्ध स्थापित किया जाता हैं

(2) इसमें शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षण क्रियाएँ (शिक्षक क्रियाएँ एवं छात्र क्रियाएँ) पूर्व में ही सुनिश्चित कर ली जाती है। इससे समय का अपव्यय नहीं होता है।

(3) यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर पूर्णतः आधारित है।

(4) इसमें शिक्षक के प्रभाव का मूल्यांकन शिक्षण के साथ-साथ ही होता है।

(5) इस प्रकार के पाठ-नियोजन से शिक्षण लक्ष्य केन्द्रित एवं उद्देश्य परक होता है।

(6) इसमें शिक्षण के साथ-साथ छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन भी होता जाता है।

**सीमाएँ (Limitations)**— इसकी निम्नलिखित सीमाएँ हैं—

(1) इसमें शिक्षक शिक्षण लक्ष्यों को व्यवहारिक परिवर्तन के रूप में लिखने में ही अपनी सारी शक्ति व्यय करता है परन्तु इससे विशेष लाभ नहीं होता है। अतः समय की दृष्टि से मितव्ययी भी नहीं है।

(2) एक पीरियड के शिक्षण में छात्र में अपेक्षित व्यवहारिक परीवर्तन होना और उसका मूल्यांकन करना भी सम्भव प्रतीत नहीं होता है।

(3) इसमें प्रत्येक प्रकार के व्यवहार को 6-6 पदों और प्रत्येक पद को कई-कई मानसिक योग्यताओं के आधार पर वर्गीकृत करके शिक्षण को अधिक कठिन बना दिया गया है।

(4) इस उपागम द्वारा शिक्षण में जितना समय एवं शक्ति लगती है, उसकी तुलना में लाभ कम होता है।

NOTES

## पाठ नियोजन का प्रारूप

### पाठ-योजन सं.

| | | |
|---|---|---|
| दिनांक— | विषय— | चक्र— |
| कक्षा— | प्रकरण— | समय— |
| शिक्षण लक्ष्य | अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन | |

यहायक सामग्री

पूर्व ज्ञान

प्रस्तावना

उद्देश्य कथन

प्रस्तुतीकरण—

| शिक्षण बिन्दु | शिक्षक क्रियाएँ | छात्र कियाएँ | शिक्षक विधि, प्रविधि एवं शिक्षण सामग्री | श्यामपट्ट कार्य | शिक्षण लक्ष्य |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | |

मूल्यांकन

गृह कार्य

### आर. सी. ई. एम. उपागम (R. C. E. M. Approach)

पाठ नियोजन का इस उपागम को रीजनल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, मैसूर के **डॉ. दुवे** द्वारा विकसित किया गया। पूर्व उपागमों की तुलना में इसे अधिक व्यावहारिक माना गया क्योंकि इसमें शिक्षण अधिगम क्रिया में उद्दीनप एवं अनुक्रिया की अपेक्षा मानसिक क्रियाओं को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसमें लक्ष्यों के निर्धारण में **ब्लूम** की ईक्सानोमी को ही प्रयुक्त किया परन्तु ज्ञानात्मक पक्ष के छः वर्गों के स्थान पर चार-ज्ञान, बोध, प्रयोग और सृजनात्मक को ही लिया गया। अन्तिम तीन वर्गों-विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन को सृजनात्मक लक्ष्य में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार इसमें ज्ञानात्मक पक्ष में चार भागों और 17 मानसिक योग्यताओं का विकास किया जाता है। यही भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष के लिए भी उपयोगी हैं।

NOTES

| ज्ञानात्मक पक्ष | मानसिक योग्यताएँ |
|---|---|
| **लक्ष्य—** | |
| 1. ज्ञान | 1.1 प्रत्यास्मरण |
| | 1.2 प्रत्याभिज्ञान |
| 2. बोध | 2.1 सम्बन्ध देखना |
| | 2.2 उदाहरण देना |
| | 2.3 भेद करना |
| | 2.4 वर्गीकरण करना |
| | 2.5 व्याख्या करना |
| | 2.6 पुष्टि करना |
| | 2.7 सामान्यीकरण करना |
| 3. प्रयोग | 3.1 तर्क करना |
| | 3.2 उपकल्पना बनाना |
| | 3.3 उपकल्पना की स्थापंना करना |
| | 3.4 निष्कर्ष निकालना |
| | 3.5 पूर्व कथन करना |
| 4. सृजनात्मक | 4.1 विश्लेषण करना |
| | 4.2 संश्लेषण करना |
| | 4.3 मूल्यांकन करना |

इस उपागम में शिक्षण लक्ष्यों को निर्धारित कर लिया जाता है। तत्पश्चात् पढ़ाए जाने वाले पाठ की विषयवस्तु के तथ्यों को प्रयुक्त करते हुए अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन के रूप में लिखा जाता है।

**(1) ज्ञान (Knowledge)**

1.1 छात्र.............. का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।

1.2 छात्र.............. पहचानने में समर्थ होगें।

**(2) अवबोध (Understanding)**

2.1 छात्र.............. तथा.............. में सम्बन्ध देख सकेंगे।

2.2 छात्र.............. का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे।

2.3 छात्र.............. एवं.............. में अन्तर कर सकेंगे।

2.4 छात्र.............. की व्याख्या कर सकेंगे।

2.5 छात्र.............. को वर्गीकृत कर सकेंग।

2.6 छात्र.............. की जाँच कर सकेंगे।

2.7 छात्र.............. को सामान्यीकृत कर सकेंग।

NOTES

**(3) प्रयोग (Application)**

3.1 छात्र.............. के कारण बता सकेंगे।

3.2 छात्र.............. की परिकल्पना बना सकेंगे।

3.3 छात्र.............. की निर्मित परिकल्पना कर सकेंगे।

3.4 छात्र.............. के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाल सकेंगे।

3.5 छात्र.............. के विषय में भविष्यवाणी कर सकेंगे।

**(4) सृजनात्मक (Creativity)**

4.1 छात्र.............. को विश्लेषित कर सकेंगे।

4.2 छात्र.............. को संश्लेषित कर सकेंगे।

4.3 छात्र.............. का मूल्यांकन कर सकेंगे।

**आर. सी. ई. एम. उपागम के सोपान (Steps of the Approach)**— इस उपागम के तीन प्रमुख सोपान इस प्रकार हैं—

1. अदा (Input)
2. प्रक्रिया (Process)
3. प्रदा (Output)

**अदा**

इसके अन्तर्गत अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तनों (Expected Behavioural Outcomes) (EBOs) को निर्धारित किया जाता है। तत्पश्चात् ज्ञान, बोध, प्रयोग एवं सृजनात्मक लक्ष्यों को 17 मानसिक योग्यताओं में वर्गीकृत करके उनकी सहायता से शिक्षण लक्ष्यों को व्यावहारिक रूप में लिखा जाता है।

**प्रक्रिया**

निर्धारित लक्ष्यों की प्रप्ति के शिक्षण की प्रक्रिया सुनिश्चित की जाती है। शिक्षक प्रस्तुत प्रकरण की विषयवस्तु के अनुरूप शिक्षण युक्तियों तथा विधियों का चयन करता है ताकि उपयुक्त अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न की जा सकें, छात्र अभिप्रेरित किए जा सकें और उन्हें शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय रखा जा सके। इस पद में शिक्षक एवं छात्र दोनों की क्रियाएँ सम्मिलित रहती हैं।

**प्रदा**

प्रदा के अन्तर्गत छात्रों के वास्तविक व्यावहारिक परिवर्तन अंकित होते हैं। इन्हें वास्तविक अधिगम प्रदा (Real Learning Outcome) (RLOs) कहा जाता है। इसके लिए शिक्षक विविध प्रकार की मापक प्रविधियों का उपयोग करता है। मापन की प्रविधियाँ अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन (Expected Behavioural Outcomes) पर आधारित होती है। इसमें शिक्षक लिखित और मौखिक दोनों प्रकार की परीक्षाओं का प्रयोग करते हैं। इसमें शिक्षक अपने शिक्षण के साथ ही शिक्षण लक्ष्यों की जानकारी भी रखता है।

**पाठ नियोजन का प्रारूप**
**पाठ-योजना सं.**

| | | |
|---|---|---|
| **दिनांक—** | **विषय—** | **चक्र—** |
| **कक्षा—** | **प्रकरण—** | **अवधि—** |

शिक्षक लक्ष्य — अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन
सहायक सामग्री
शिक्षण विधि
पूर्व ज्ञान
प्रस्तावना — शिक्षक क्रियाएँ — छात्र क्रियाएँ — श्यामपट्ट कार्य
उद्देश्य कथन

श्यामपट्ट सांराश—
मूल्यांकन—
गृह कार्य—
सन्दर्भ ग्रन्थ—

**आर. सी. एम. उपागम की विशेषताएँ (Characteristics of the Approach)**— इस उपागम की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) इस उपागम द्वारा पाठ नियोजन अत्यन्त सरल है।

(2) इसमें अन्य उपागमों की तुलना में लक्ष्यों का व्यावहारिक रूप अधिक सुनिश्चित एवं विशिष्ट होता है।

(3) यह उपागम तीनों पक्षों (ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यामक) के लिए उपयोगी है।

(4) इस उपागम में प्रक्रिया पर अधिक जोर दिया जाता है।

(5) इसमें मानसिक योग्यताओं पर विशेष जोर दिया जाता है।

NOTES

पस्तुतीकरण

| | अदा (Input) | प्रक्रिया (Process) | | प्रदा (Output) |
|---|---|---|---|---|
| शिक्षण बिन्दु | अनुदेशन अपेक्षित व्यावहार परिवर्तन (EBOs) | शिक्षण सम्प्रेषण विधि/निति (Communication Strategy) अधिगम के अनुभव (Learning Experiences) | | मूल्यांकन (Evaluation) वास्तविक व्यवहार परिर्तन (RLos) |
| | | शिक्षक की क्रियाएँ (Teacher's Activities) | छात्र की क्रियाएँ (Student's Activities) | |
| | 1. ज्ञान | व्याख्यान, चार्ट प्रदर्शन स्पष्टीकरण | सुनना, निरीक्षण, लिखना, अन्तः प्रक्रिया। | पुनरावृत्ति प्रश्न, परिभषा देना, कथन देना, व्याख्या करना। |
| | 2. बोध | वाद-विवाद, समस्या समाधान, प्रदर्शन सहित वाद-विवाद। | तथ्य, अधिनियमों को पहचानना, सम्बन्ध देखना, समानता तथा भिन्नता देखना। | व्याख्यात्मक प्रश्न, अपने शब्दों में अर्थ व्यक्त करना। समस्या का समाधान करना। |
| | 3. प्रयोग | समस्या समाधान, प्रयोगशाला कार्य। | प्रयोग करने का अवसर देना, सीखे हुए ज्ञान का प्रयोग करना। | प्रयोगशाला-परिक्षा देना, परिस्थितियाँ उत्पन्न करना। |
| | 4. सृजनात्मक | नई समस्या का समाधान व्यक्तिगत कार्य पर बल दिया जाना। | तत्त्वों का विश्लेषण करना, सम्बन्ध स्थापित करना, निर्णय लेना। | आलोचनात्मक प्रश्न पूछना। नई समस्या उत्पन्न करना, उसका समाधान |

NOTES

**आर. सी. ई. एम. उपागम की सीमाएँ**— इस उपागम की निम्नलिखित सीमाएँ हैं—

(1) यह उपागम 17 मानसिक योग्यताओं का मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करने में असफल है क्योंकि **गिलफोर्ड** ने 120 मानसिक योग्यताओं का वर्णन किया है।

(2) विषयवस्तु के प्रत्येक अंश को मानसिक क्रिया के रूप में व्यक्त करना कठिन है।

(3) विषयवस्तु के तथ्यों को उचित मानसिक क्रियाओं में रखना भी दुरूह कार्य है।

(4) इस उपागम में विभिन्न लक्ष्यों हेतु मानसिक क्रियाओं की स्थिति भी व्यावहारिक प्रीतीत नहीं होती है क्योंकि इसमें ज्ञान के लिए 20, बोध के लिए 7, प्रयोग के लिए 6 और सृजनात्मक के लिए 3 मानसिक क्रियाएँ दी गई हैं।

**एन. सी. ई. आर. टी. उपागम (N. C. E. R. T. Approach)**

**प्रो. एच. आर. श्रीवास्तव** और **जे. पी. सूरी** ने भी शिक्षण लक्ष्यों को टेक्सोनोमी पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली में कार्य किया। इन्होंने स्कूल विषयों के शैक्षिक लक्ष्यों में तीन शिक्षण लक्ष्यों में ज्ञानात्मक पक्षों के ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग को ही अपनाया क्योंकि अनुप्रयोग में विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन तीनों को ही समाहित मान लिया गया। इसके अलावा भावात्मक पक्ष को रूचि और अभिवृत्ति में तथा मनोशरीरिक पक्ष को कौशल में ही सीमित रखा गया। इस प्रकार वर्तमान समय में पाठ नियोजन में ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, कौशल, रूचि एवं अभिवृत्ति को लिखने पर जोर दिया जा रहा है क्योंकि इनसे शिक्षण एवं मूल्यांकन की विधियों को सुनिश्चित करना सरल हो जाता है। जिनका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है—

**पाठ नियोजन का प्रारूप**

**पाठ-योजना सं. 1**

| | | |
|---|---|---|
| दिनाकं— | विषय— | चक्र— |
| कक्षा— | उप-विषय— | अवधि— |
| | प्रकरण— | |

| शिक्षण लक्ष्य (Teaching Objectives) | अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन (Expected Bheavioural Outcomes) EBOs |
|---|---|
| (1) ज्ञान (Knowledge) | 1.1 छात्र.............. का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे। |
| | 1.2 छात्र.............. की प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगी। |
| | 1.3 छात्र.............. को अंकित कर सकेंगे। |
| | 1.4 छात्र.............. की सूचनाएँ प्राप्त करेंगे। |

NOTES

**परीक्षापयोगी प्रश्न**

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—**

1. इकाई योजना से आप क्या समझते है? इसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2. इकाई योजना के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए इसके सोपानों का उल्लेख कीजिए।
3. पाठ योजना क्या है? एक अध्यापक का कक्षा में जाने से पूर्ण पढ़ाए जाने वाले पाठ की योजना बना लेना क्यों आवश्यक है? स्पष्ट कीजिए।
4. पाठ योजना के महत्व पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

**लघु उत्तरीय प्रश्न—**

1. पाठ योजना की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।
2. मूल्यांकन पर आधारित पाठ योजना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
3. हरबार्ट पाठ योजना का प्रारूप समझाइए।

NOTES

# 8 इकाई योजना तथा पाठ योजना की प्रक्रिया

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- पूर्ण क्रियात्मक योजना
- पाँच मल्टी लेवल नियोजन के चरण की प्रक्रिया
- मल्टी लेवल रूपरेखा
- योजना बनाने की प्रक्रिया
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- पूर्ण क्रियात्मक योजना
- पाँच मल्टी केवल नियोजन के चरण की प्रक्रिया
- मल्टी लेवल रूपरेखा
- योजना बनाने की प्रक्रिया

## प्राक्कथन

उत्पादन डेटा संरचनाओं क्लासिक R / 3 मास्टर डाटा, सामग्री के बिल, और मार्ग से पैदा होते है। उत्पादन डेटा संरचनाओं के उत्पादन की प्रक्रिया मॉडल (पीपीएम) एसएपी एपीओ में के लिए एक वैकल्पिक डेटा मॉडल का प्रतिनिधित्व करते हैं। उत्पादन डेटा संरचनाओं अथवा तो आर / 3 मास्टर डाटा (बीओएम, मार्ग, उत्पादन संस्करण) से पैदा किया जा सकता या IPPE मास्टर डाटा से।

NOTES

आप उत्पादन डेआ संरचनाओं के साथ काम कर रहे हैं, तो आप ब्लॉक योजना बनाने के लिए किसी भी अतिरिक्त सेटिंग बनाने हेतु विशेषताओं प्रचार के साथ उत्पादन की प्रक्रिया मॉडल के लिए मामला की जरूरत नहीं है। गतिविधियों के लिए विशेषता मूल्य काम गतिविधियों के लिए विन्यास से आंतरिक रूप से कॉपी किया जाता है। तुम भी वस्तु निर्भरता का उपयोग कर मूल्यों प्राप्त कर सकते हैं।

एसएपी एपीओ में, ब्लॉक की योजना बना इससे पहले कि आप एसएपी एपीओ में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को एकीकृत संसाधन पर बनाए रखा जाना चाहिए। नहीं तो आप किसी भी ब्लॉक की योजना बना प्रासंगिक आदेश एसएपी एपीओ में किला वह सार्वजनिक वितरण प्रणाली नही बना सकते।

निम्न क्रम में एसएपी एपीओ में आर / 3 प्रणाली से तारीख एकीकृत:

1. **वर्ग और लक्षण**—एसएपी एपीओ में, संगठनात्मक क्षेत्र है कि आप वर्गों तथा आर / 3 प्रणाली में एकीकरण मॉडल में विशेषताओं के एकीकरण के लिए निर्दिष्ट बनाने (देखें सीडीपी के वर्ग को परिभाषित करना)।

2. **कार्य केन्द्रों**—काम केन्द्रों एपीओ विशेष खुराक आवंटित कर रहे हैं एकीकरण के पश्चात् हुआ है। का उपयाकग कर * नाम कार्य केंद्र * संसाधनों का पता लगाएं।

   आप काम केन्द्रों को एकीकृत किया है, तो आप यह सुनिश्चित करना चाहिए कि एसएपी एपीओ में संसाधनों ब्लॉक की योजना बना-प्रासंगिक है:

   आप संसाधन के लिए कक्षा प्रकार 400 और परिभाषित ब्लॉक (: यह भी देश के साथ एक कक्षा सौंपा है ब्लॉक रखरखाव)।

   संसाधनों सार्वजनिक वितरण प्रणाली में गतिविधि के प्राथमिक एवं कैलेंडर संसाधनों का होना चाहिए।

   सार्वजनिक वितरण प्रणाली में एक प्राथमिक गतिविधि के संसाधनों एक ही कक्षा काम होना जरूरी है।

NOTES

### 3. उत्पादन डेटा संरचनाओं

आप संसाधनों के लिए ब्लॉक की योजना बना प्रासंगिकता को परिभाषित करने से पहले सार्वजनिक वितरण प्रणाली स्थानांतरित कर दिया है, तो आप सार्वजनिक वितरण प्रणाली फिर से स्थानांतरित करना होगा (ब्लॉक की योजना बना प्रासंगिक के रूप में संसाधनों को परिभाषित करने के बाद)। आप आर / 3 प्रणाली (प्लग-इन) में निम्नलिखित कार्यों का उपयोग कर सकते हैं:

रसद केंद्रीय कार्य आपूर्ति श्रृंखला योजना इंटरफेस कोर इंटरफेस उन्नत प्लानर और अनुकूलन एकता मॉडल उत्पादन डेटा संरचना (पीडीएस) स्थानांतरण बदलें स्थानांतरण उत्पादन डेटा संरचना (पीडीएस)।

प्रकार उत्पादन के साथ ही गतिविधियों ब्लॉक योजना बनाने हेतु प्रासंगिक हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के विभिन्न प्रकार के साथ गतिविधियों (जैसे सेटअप संचालन के रूप में) ब्लॉक योजना बनाने के लिए प्रासंगिक हैं, तो आप विधि BLOCK_PLANNING_RELEVANCE तथा पीपी / डी एस उत्पादन डेटा संरचना (/ SAPAPO / CURTO_CREATE) का निर्माण के लिए बड़ी संवर्धन का उपयोग कर सकते हैं; आप उन्नत योजना के तहत बड़ी खोजने के लिए और कर सकते हैं उत्पादन डेटा संरचना (पीडीएस) के लिए मुख्य डेटा उत्पादन डेटा संरचना (पीडीएस) व्यापार ऐड-इन्स (Badis) अनुकूलन।

उत्पादन डेटा संरचनाओं प्रदर्शित किया जा सकता है, लेकिन एसएपी एपीओ में नहीं बदला। आप इस तरह के बीओएम, मार्ग और आर / 3 प्रणाली में उत्पादन संस्करण के रूप में अथवा IPPE Workbench में प्रासंगिक मास्टर डाटा बनाए रख सकते हैं।

आप एएसपी में एक सार्वजनिक वितरण प्रणाली ट्रांसफर करते हैं, सिस्टम जांच संसाधनों अगर ब्लॉक योजना बनाने के लिए प्रासंगिक हैं। सावजनिक वितरण प्रणाली के प्रदर्शन में, ब्लॉक योजना बनाने के लिए वर्ग ब्लॉक योजना कक्षा कॉलम में क्रियाएँ टैब पृष्ठ पर निर्दिष्ट किया जाता है।

विशेषता मूल्य काम गतिविधि की विशेषताओं एक ही नाम है इसके लिए नकल की जाती है। आप किसी भी अतिरिक्त सेटिंग्स बनाने की जरूरत नही है।

विशेषता लंबाई गतिविधि को सौंपा गया है। विशेषता लंबाई भी विन्यास में निहित है। विशेषता 100 के साथ valuated था मूल्य 100 गतिविधि को कॉपी किया है।

आप उत्पादन डाटा संरचनाओं में निर्भरता का उपयोग कर सकते विन्यास से गतिविधि मूल्यांकन प्राप्त करने के लिए अथवा विन्यास से विशेषता मान बदलने के लिए।

आप एसएपी एपीओ में विन्यास के साथ एक उत्पादन आदेश बनाते हैं, तो सिस्टम जांच प्रक्रियाओं अथवा कार्यवाई गतिविधियों के लिए आवंटित कर रहे हैं। इस मामले में, वस्तु निर्भरता ब्लॉक योजना बनाने के लिए valuated है।

विन्यास विशेषताओं Color_1 ओर Color_2 कि मूल्यों के साथ valuated गया प्रकाश लाल और गहरे लाल रंग के होते हैं।

एसएपी एपीओ में गतिविधि पेंट एक प्रक्रिया है जो विशेषता रंग है, जो ब्लॉक योजना बनाने के लिए प्रासंगिक है के लिए मूल्य लाल को परिभाषित करता है करने के लिए असाइन किया गया है; यह केवल मामला अगर Color_1 and Color_2 मूल्यों प्रकाश लाल तथा गहरे लाल रंग की है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में निर्भरता का उपयोग कर के बारे में अधिक जानकारी के लिए, उत्पादन और डेटा संरचनाएं (पीडीएस) के साथ सीडीपी।

तुम भी गैर विन्यास उत्पादों के लिए एक सार्वजनिक वितरण प्रणाली के साथ ब्लॉक की योजना बना निष्पादित कर सकते हैं। आप आर / 3 प्रणाली में आपरेशन करने के लिए वर्ग प्रकार 018 के साथ वग्र सौंपा गया होगा, और ब्लॉक योजना बनाने के लिए प्रासंगिक विशेषताओं valuated आप एक उत्पाद के पृथक-पृथक वेरिएंट के लिए अलग से काम केन्द्रों बनाना चाहिए क्योंकि संचालन सीधे इस मामले में मूलभूत मूल्यों सौंपा है। एसएपी एपीओ में, इस मार्ग के लिए सभी आदेशों को एक ही ब्लॉक में योजना बनाई गई है।

आप आर / 3 प्रणाली में बड़ी CUSLNTRTO_ADDIN में विधि USE_OPERATION_CLASSIFICATION लागू फिर ब्लॉक योजना बनाने के लिए वर्ग प्रकार 018 में एक ऑपरेशन के वगीकरण का उपयोग करने के बाद सक्रिय करना होगा। आप सेट करना होगा **एक्स** पैरामीटर EV_TRUE के लिए।

वर्ग प्रकार 018 की कक्षाएं एसएपी एपीओ में एकीकृत नहीं कर रहें हैं। इसलिए, आप अतिरिक्त विशेषताओं के रूप में एकीकरण मॉडल का उपयोग विशेषताओं एकीकृत करना चाहिए।

## पूर्ण क्रियात्मक योजना

सबसे व्यापक रूप से जाना जाता प्रक्रिया 'पूर्ण योजनाओं' जिससे व्यक्ति काम को पूरा करने के इच्छुक है, या उनके एजेंट, प्रस्तुत काम का पूरा विवरण दिखा योजनाओं के जमा कर रहा है।

इन योजनाओं को तो निर्माण विनियम के अनुपालन के लिए जाँच की और, संतोषजनक है, एक अनुमोदन जारी किया जाता है।

**NOTES**

आप एक औपचारिक निर्णय के पश्चात् जाँच प्रक्रिया हुई है प्राप्त होगा। जब ऋण की मांग या घर ले जाते समय कोई अनुमोदन नोटिस ऐसे वित्तीय संस्थानों, वकील अथवा सर्वेक्षक अन्य दलों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। आप आश्वासन दिया है कि काम उपलब्ध कराने की योजना को मंजूरी दे दी विनियम संतुष्ट हो जाएगा के अनुसार किया जाता है।

बिल्डिंग सूचना प्रक्रिया छोटी परियोजनाओं पर काम से बाहर ले जाने और यह भी के लिए एक उपयोगी सुविधा जहां काम से बाहर ले जाने व्यक्ति नियमों की जरूरतों से परिचित है। यह योजना का जमा बिना जल्दी से आगे बढ़ने के लिए काम कर सकते हैं। यह नहीं है, हालांकि, इस तरह के दुकानों और कार्यालयों, जहां विनियम आग लगने की स्थिति में भागने के साधन के लिए आवश्यकताओं को बनाने के रूप में कुछ परियोजनाओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

विस्तृत योजना हमेशा समय और लागत में बचत के उत्पादन की जरूरत नहीं है।

आप विश्वास है कि काम करता है भवन नियमों का पालन अथवा आप निरीक्षण के बाद इसे सही करने के लिए होने का जोखिम महसूस करना चाहिए। आप बाद में योजना और गणना प्रस्तुत करने के लिए हो सकता है।

- कोई अनुमोदन नोटिस जारी किए जाएंग
- एक इमारत सूचना बंधक प्रयोजनों के लिए स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

पूरा आवेदन पत्र दो प्रतियों में, और कम से कम दो प्रतियां सम्मिलित हैं:

- सभी विस्तृत योजना, वर्गों और उन्नयन, सभी आवश्यक तकनीकी टिप्पणियां शामिल गणना और विशिष्टताओं को समर्थन
- एक 1: 1250 पैमाने आकार और स्थिति के निर्माण के रूप में विस्तारित हुआ और आसपास के सीमाओं (आमतौर पर एक ब्लॉक योजना के रूप में जाना जाता है) से इसके संबंध दिखा।
- एक विस्तृत बिल्डर के अनुमान, जहां उपयुक्त हो
- उचित शुल्क

योजनाओं का एक अतिरिक्त दो प्रतियां सामान्य रूप से जरूरी हैं यदि आवेदन इमारत के निम्नलिखित प्रकार के लिए हैं:

- कार्यालयों, दुकानों, कारखानों, होटल और बोर्डिंग हाउस

पूरा भवन सूचना प्रपत्र और निम्न शामिल हैं:

- एक विस्तृत बिल्डर के अनुमान, जहां उपयुक्त हो
- उचिम शुल्क (वर्तमान शुल्क तराजू देखें)

NOTES

एक 1: 1250 पैमाने आकार और निर्माण की स्थिति, अथवा के रूप में विस्तारित निर्माण, ाऔर (आमतौर पर एक ब्लॉक योजना के रूप में जाना जाता है) सटे सीमाओं से इसके संबंध दिखा योजना।

निर्माण कार्य अपनी उन्नति के दौरान निरीक्षण किया जाना चाहिए और पर्याप्त नोटिस साइट का दौरा व्यवस्था करने के लिए भवन नियंत्रण धारा सक्षम करने के लिए दिय जाना चाहिए।

यह दोनों पूर्ण योजनाओं और बिल्डिंग सूचना प्रक्रियाओं के अंतर्गत मंजूर काम करने हेतु लागू होता है।

तुम्हें पता है, भवन नियंत्रण अधिकारी से संपर्क करना चहिए अधिमानत: दो दिन पहले शुरू करने के लिए इससे पहले कि आप काम शुरू करते हैं। एक अधिकारी पर जाएँ और निर्धारित करने के लिए निरीक्षण क्या जरूरी हैं अपने प्रस्तावों पर चर्चा करने के लिए व्यवस्था करेंगे।

यह निर्माण कार्य के लिए असामान्य उचित प्रक्रिया का पालन किया जा रहा है बिना किए जाने वाले नहीं है। इस कहां होता है, समस्याओं अक्सर वाहन की प्रक्रिया के दौरान बाद में पैदा होती हैं। नियमितीकरण की प्रक्रिया और क्या कठिनाइयों को हल करने के लिए कृपया हमारी पढ़ करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए दिशा-निर्देश।

**पांच मल्टी लेवल नियोजन के चरण की प्रक्रिया**

भारत में बहु स्तरीय नियोजन के पांच चरणों निम्नलिखित मान्यता दी गई है। इसमें सम्मिलित है:

1. राष्ट्रीय स्तर-sectored सह अंतर-राज्यीय / अंतर-क्षेत्रीय योजना।
2. राज्य स्तरीय-sectored सह अंतर-जिला / अंतर-क्षेत्रीय योजना।
3. Districit / Metropolital स्तर क्षेत्रीय योजना।
4. ब्लॉक स्तर-क्षेत्र की योजना बना
5. पंचायत स्तर गांव की योजना बना। ये भी देश में नियोजन के नीति में परिवर्तन के पांच अलग-अलग चरणों को दर्शाते हैं।

यह ध्यान रखें को 1993 से पहले, भारतीय संविधान विशेष रूप से जिला योजना का एक तिहाई परत के रूप में नहीं पहचाना उचित है।

**NOTES**

**(1) राष्ट्रीय स्तर**—रष्ट्रीय स्तर पर योजना आयोग नोडल एजेंसी देशों की योजना के लिए जिम्मेदार है। प्रधानमंत्री इस आयोग के अध्यक्ष हैं।

यह न केवल देश के लिए योजनाएं तैयार करता है, लेकिन यह भी केंद्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के विकास कार्यों का समन्वय करता है। योजना आयोग के कार्यों राष्ट्रीय परिषद के माध्यम से देखरेख कर रहे हैं।

योजना आयोग संविधान के 52 वें संशोधन के माध्यम से संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया है। कोई बड़ी योजना योजना आयोग द्वारा अपनी पूर्व अनुमति के बिना निष्पादित किया जा सकता। (क) परिप्रेक्ष्य, 15-25 साल के लिए योजना बना रही है (ख) पांच साल की योजना, और (ग) पंचवर्षीय योजना के ढांचे के भीतर वार्षिक योजनाओं: आयोग की योजना के तीन प्रकार का निर्माण करता।

इस शब्द का वास्तविक अर्थ में परिप्रेक्ष्य योजना बना सिवाय इसके कि यह लंबी अवधि के सामाजिक-आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता करता है थोड़ा महत्व का है। योजना आयोग भी परिप्रेक्ष्य योजना, निगरानी और मौजूदा योजनाओं के मूल्यांकन, योजना निर्माण, क्षेत्रीय या जिला योजना बनाने के लिए एवं योजना समन्वय के लिए राज्यों को दिशा-निर्देश जारी करता है।

**(2) राज्य स्तर**—राज्य स्तर पर योजना बनाने की व्यवस्था राष्ट्रीय स्तर के लगभग एक ही है। राज्य योजना बोर्ड राष्ट्रीय नियोजन आयोग की तरह काम करता है और विभिन्न मंत्रालयों तथा जिलों के विकास योजनाओं का समन्वय करता है। यह भी निर्माण, कार्यान्वयन एवं राज्य योजना की निगरानी की जिम्मेदारी है।

यह योजना और संसाधनों के आवंटन के निर्माण के बारे में योजना आयोग के साथ लगातार संपर्क में है। देश राज्यों के संघीय सेटअप के अंतर्गत कुछ राज्य विषयों में स्वायत्तता का तथा नियोजन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

यह राज्य स्तर है कि आर्थिक और सामाजिक डेटा के सभी प्रकार के उपलब्ध हैं और विकास योजनाओं को ध्यान में क्षेत्रीय हितों और मांगों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जा सकता है पर है। इसलिए, राज्य स्तर पर नियोजन के और अधिक कठोर व्यायाम हेतु एक की जरूरत है।

उन राज्यों जो उनकी जिम्मेदारी के प्रति सचेत हैं और योजना तैयार करने और कार्यान्वयन में रुचि दिखा रहे हैं विकास कार्यक्रमों में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश मामला एक उदाहरण के रूप में उद्धत किया जा सकता है। केंद्र तथा राज्यों को संक्रमित योजना बनाने में दो प्रमुख अभिनेताओं के होते हैं और वे सामंजस्य में ले जाने के उद्देश्यों और योजनाओं में निर्धारित प्राथमिकताओं को प्राप्त करने चाहिए।

NOTES

(3) **जिला स्तर**—जिला-स्तर की योजना बना की अवधारणा स्थानीय स्तर नियोजन के सिद्धांत पर आधारित है। यह भी मानता है कि नियोजन की सफलता अधिक से अधिक जुटाने एवं स्थानीय संसाधनों के उपयोग की जरूरत है। राज्य नीचे, जिले क्योंकि स्थान और प्रशानिक लाभ की योजना बानने में एक निर्णायक स्थान पर है।

इतना ही नहीं यह पर्याप्त प्रशासनिक और तकनीकी विशेषज्ञता और डेटा और जानकारी का अच्छा स्रोत है योजना कार्यक्रमों को पूरा करने लेकिन अच्छी तरह से संगठित प्रणाली लोगों की भागीदारी को सम्मिलित और घास-रूट स्तर तक पहुँचने के लिए योजना बनाने की बढ़त बनाने के लिए है। के बाद से ब्रिटिश दिनों जिला प्रशासन के एक प्रभावी प्रणाली और जानकारी एवं डेटा के सभी प्रकार के एक दुकान घर है।

जिला बोर्ड निर्वाचित प्रतिनिधियों जो योजना बनाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए, विद्वानों ने सूक्ष्म स्तर की योजना का एक आदर्श और व्यवहार्य इकाई के रूप में जिले पर विचार का एक बड़ा समूह है।

यह भी तर्क दिया है कि ग्राम पंचायत और विकास खंड भी योजना बनाने की सबसे छोटी इकाई के रूप में कार्य करने के लिए छोटे हैं। इसके अतिरिक्त इन दोनों स्तरों पर प्रशासनिक ढांचे और डेटा संग्रह प्रणाली का पूर्ण अभाव है। इसलिए, निर्माण और गांव और ब्लॉक स्तर पर योजनाओं के क्रियान्वयन में कठिनाइयों का एक नंबर होगा।

हालांकि जिला स्तर नियोजन के महत्व सामुदायिक विकास योजनाओं लेकिन असली सफलता के समय दौरान महसूस किया गया तीसरा पंचवर्षीय योजना (1961-1966), जिसमें जोर जिले स्तर के नियोजन पर रखी गई थी अंतर-जिला दूर करने के लिए और के साथ आया था इंट्रा-जिले असमानताओं तथा जिला स्तर पर प्राकृतिक और मानव संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग सुनिश्चित करें।

NOTES

सामुदायिक विकास योजना की विफलता संक्रमिक भी योजना प्रक्रिया में विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए वैकल्पिक पाठ्यक्रम हेतु चुनते हैं और स्थानीय संसाधनों और लोगों को शामिल करना हमारे योजनाकारों मजबूर कर दिया। लेकिन योजना के इस सुझाव के बावजूद, भारतीय संविधान विशेष से जिले 1993 तक योजना का एक तिहाई परत के रूप में पहचाना नहीं।

हालांकि, राज्यों महाराष्ट्र एवं गुजरात की तरह राज्य के पूल से जिला वार धनराशि आवंटित देर 60 के दशक के पश्चात् से विकास गतिविधियों पर ले जाने के लिए शुरू कर दिया। दोनों में इन राज्यों जिला योजना और विकास परिषदों राज्य मंत्री की अध्यक्षता में कार्य किया। वर्तमान में जिला योजना और इसके अध्यक्ष के माध्यम से देखरेख कर रहा है।

इसका निर्माण और कार्यान्वयन जिला योजना अधिकारी (डीपीओ) या जिला मजिस्ट्रेट द्वारा की जाती है। कर्नाटक और तमिलनाडु में जिला मजिस्ट्रेट जिला परिषद के अध्यक्ष हैं लेकिन बिहार और उत्तर प्रदेश में वह किसी भी मतदान के अधिकार के बिना अपनी बैठकों में भाग लेता है। कुछ अन्य राज्यों में वह एक सलाहकार के रूप में कार्य करता है।

इस विस्तृत प्रणाली के बावजूद, एक ध्वनि जिला योजना तैयार करने का काम बहुत ज्यादा नहीं उन्नति राज्य अमेरिका में निम्नलिखित की कमी के कारण किया गया है:

(I) सरकारों और उनके कपड़ा सीने के विषय सिर की ओर से कुछ गुप्त अनिच्छा पर्याप्त (प्रशासनिक और वित्तीय) जिला स्तर पर नियोजन निकायों को अवक्रमित करने के लिए।

(II) की योजना बना अभ्यास में शमिल विभिन्न एजेंसियों के मध्य जिला स्तर पर प्रभावी समन्वय का अभाव।

(III) संस्थागत व्यवस्था, योजना प्रक्रिया में विभिन्न प्रतिभागियों के साथ परामर्श प्राप्त करने के लिए अथवा तो नहीं अच्छी तरह से स्थापित या पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया और विकसित नहीं थे।

(IV) प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी, दोनों, संख्या के मामले के साथ ही गुणवत्ता में। प्रशिक्षण की अपर्याप्तता एक गंभीर बाधा थी।

(V) योजना बनाने के लिए उचित तथा कम से तरीके, क्षमताओं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध के साथ मिलकर की कमी। इस संदर्भ में, प्रशिक्षित नियोजन कर्मियों की अनुपलब्धता एक गंभीर समस्या खड़ी कर दी।

(VI) संसाधन की कमी की वास्तविकताओं का एक स्पष्ट और पूरी समझ के बिना योजना।

(VII) डेटाबेस का अपना समस्याओं को प्रस्तुत किया। हालांकि डेटा के अलावा कई स्रोतों, फिर भी, निर्णय लेने के लिए कुछ सरल विश्लेषण के लिए डेटा के इस बड़े पैमाने पर से स्थानीय योजना बनाने के लिए ''महत्वपूर्ण न्यूनतम जानकारी'' का चयन और एक ही उपयोग करने के लिए उचित तरीके से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है, अत्यधिक में जाने के बिना परिष्कृत तकनीक, उभर नहीं किया था, योजना में लोगों की भागीदारी का अभाव।

NOTES

सामन्य तौर पर, 1993 के लिए 1959 के दौरान विभिन्न राज्यों द्वारा उठाए गए कदमों का पंचायती राज निकायों पर शक्तियों और कार्यों अवक्रमिक करने के लिए अलग-थलग, अधूरे मन से थे और स्पष्ट दिशा का अभाव है। इस संदर्भ में, जब तक कि विभिन्न संस्थागत दबाव के साथ-साथ उपयोगकर्ता समूहों, यानी ''पाली केंद्रित संस्थानों'', विकसित कर रहे हैं, जिला नियोजन व्यायाम की सफलता हमेशा लोगों को, जो इस में कई दिलचस्पी नहीं सकती है।

प्रयास संविधान 73 वें और 1992 के 74 वें संशोधन अधिनियमों और 1996 अब प्रावधान एक जिला योजना समिति के गठन पंचायतों द्वारा तैयार योजना को मजबूत करने हेतु किया गया है की पंचायतों अधिनियम और के माध्यम से इन बाधाओं में से कुछ को हटाने के लिए बनाया गया है नगर पालिकाओं और एक पूरे के रूप जिले के लिए एक एकीकृत विकास योजना तैयार करते हैं।

**(4) ब्लॉक स्तर**—ब्लॉक सूक्ष्म स्तर नियोजन के एक महत्वपूर्ण इकाई है। ये विकास ब्लॉक सामुदायिक विकास कार्यक्रम प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान शुरू के तहत विकास योजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए बनया गया था। प्रत्येक जिले के ब्लॉक की एक संख्या में विभाजित किया गया था तथा प्रत्येक ब्लॉक के बारे में 100 गांवों शामिल 60,000 के बारे में की आबादी के साथ,।

कार्यक्रम स्थानीय संसाधनों को जुटाने, निर्णय लेने और विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में लोगों की भागीदारी से कल्पना की। इसलिए, योजनाबद्ध तरीके से नवीन इकाई एक ब्लॉक विकास अधिकारी के नेतृत्व और विभिन्न विशेषज्ञों और ग्राम स्तर श्रमिकों (अधिकारियों) की एक टीम के तहत ब्लॉक स्तर पर बनाया गया था।

ब्लॉक के सामान्य पर्यवेक्षण ब्लॉक प्रमुख और निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा किया गया था। हालांकि सामुदायिक विकास कार्यक्रम में विफल रहा है, लेकिन ब्लॉक की एक महत्वपूर्ण इकाई जिले नीचे की योजना बनाने बनाने के लिए जारी रखा। पांचवी पंचवर्षीय पीआई) (1978-1983) क्षेत्र ग्रामीण विकास पर रोजगार मैं उद्देश्य और जोर प्राप्त करने के लिए ब्लॉक स्तर योजना के लिए एक उन्नति के साथ योजना बनाने के लिए चुना।

इस योजना का मुख्य उद्देश्य स्थानीय श्रम अधिशेष तथा निर्माण ओर विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में लोगों की अधिक भागीदारी को अवशोषित करने की थी। इसलिए, 1983 के अंत तक राष्ट्रीय प्रणाली में एकीकृत ब्लॉक स्तर की योजना बना की व्यवस्था उपलब्ध था अपनाने। यह जिला स्तर नियोजन के मैं जो समायोजित टोल समग्र राज्य योजना थी

ब्लॉक स्तर की योजना बना की प्रासंगिकता व्यवहार्य क्षेत्रीय और आबादी के आकार के आधार पर मैं, है, क्षेत्रीय और स्थानीय समस्याओं, लक्षित समूहों की आसान पहचान, क्षेत्रीय / स्थानीय संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग, और योजना तैयार करने में लोगों की अधिक से अधिक भागीदारी के अधिक और कार्यान्वयन इस तरह की योजना बना की पूरी रणनीति रोजगार योजना, विकास केंद्र की योजना बना क्रेडिट नियोजन पर आधारित है।

यह एक कार्रवाई उन्मुख कृषि, सिंचाई (मुख्य रूप से लघु सिंचाई), भूमि संरक्षण, पशुपालन, मछली पालन, वानिकी, नाबालिग प्रसंस्करण कृषि उत्पादों, छोटे तथा कुटीर उद्योगों, स्थानीय स्तर बुनियादी संरचना के निर्माण के के विकास से संबंधित नियोजन है, और पानी की आपूर्ति, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, स्वच्छता, स्थानीय परिवहन, और कल्याण योजनाओं जैसी सामाजिक सेवाओं के विकास।

1 ब्लॉक स्तर की योजना बनाने की पूरी प्रक्रिया सात चरणों से होकर गुजरता है। इनमें शामिल है: (i) पहचान चरण, (ii) संसाधन सूची चरण, (iii) योजना तैयार करने के चरण, (iv) रोजगार योजना चरण, (v) areal या लेआउट योजना चरण, (vi) ऋण योजना चरण, और (vii) एकीकरण और कार्यान्वयन चरण। इस तरह की योजना बना के मुख्य उद्देश्यों में आत्म निर्भरता, बेरोजगारी की समस्याओं का हल, सामाजिक-आर्थिक असमानता को दूर करने, कौशल स्वरोजगार और आत्म निर्भरता, उत्पादकता तथा स्थानीय संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग में सुधार को बढ़ावा देने के का निर्माण शामिल है।

इस प्रकार इस तरह के नियोजन के मुख्य फोकस लक्ष्य समूह की पहचान है, विकास का परिचय रोजगार, न्यूनतम जरूरत कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने तथा विशेष कार्यक्रमों के क्रियान्वयन समाज के कमजोर वर्ग के लिए उत्पन्न करने के लिए योजना बना रही है।

1977 में सत्ता में जतना सरकार के आने के साथ नीचे-ऊपर दृष्टिकोण योजना बनाने में जोर दिया गया था। कार्य समूह (1978) पर रिपोर्ट block-स्तर नियोजन के उद्देश्यों को निम्नलिखित जोर दिया है। इनमें शामिल हैं—(i) क्षेत्र के विकास क्षमता के अनुकूलतम उपयोग, कमजोर वर्ग के लिए लाभ का (ii) उच्च अनुपात (छोटे और सीमांत किसनों, भूमि कम खेतिहर मजदूरों और ग्रामीण कारीगरों), न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति, के निर्माण सामाजिक-आर्थिक बुनियादी ठिकानों गरीब लोगों को, इस तरह के ढांचागत सुविधाएँ जो समाज के गरीब तथा कमजोर वर्ग तकनीकी उन्नयन और स्की (एल निर्माण और हित के लिए संपत्ति उत्पन्न कर सकता है के विकास के शोषण की जांच करने के पूर्वोक्त उद्देश्यों, संस्थानों के निर्माण को प्राप्त करने के लोक निर्माण कार्य के माध्यम से कुल बेरोजगारी को हटाने।

NOTES

### (5) पंचायत स्तरीय

राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों पंचायत जो ग्राम स्तर पर एक निर्वाचित निकाय है का वर्णन है। ग्राम, यहाँ, मौटे तौर पर एक राजस्व गांव (या राजस्व गांवों का एक समूह) से मेल खाती है। ग्रामीण स्तर, ब्लॉक स्तर तथा जिला स्तर: पंचायती राज व्यवस्था को तीन स्तरीय संरचना शामिल है।

ग्राम सतर पर प्रथम श्रेणी ग्राम पंचायत (गांव विधानसभा), पंचायत समिति के रूप में ब्लॉक स्तर और जिला परिषद के रूप में जिला-स्तर पर तीसरे स्तर पर दूसरी श्रेणी के रूप में जाना जाता है। पंचायतों के प्रावधानों के अनुसार अधिनियम 1996 गांव पंचायत के चुनाव 5 साल के अंतराल जहाँ अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति और कम से कम एक तिहाई नहीं सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने के लिए आनुपातिक सीट आरक्षण में आयोजित किया जाता है।

संविधान संशोधन अधिनियम 1992 के माध्यम से पंचायत (भी ग्राम सभा कहा जाता है) तैयार करने और 29 विषयों में से एक निदर्शी सूची में आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय के लिए योजनाओं के कार्यान्वयन के बाद देखने के लिए अधिकृत किया गया है। संबंधित राज्य स्वशासन की एक संस्था के रूप में कार्य करने के लिए ग्राम सभा के लिए शक्तियों और कार्यों लिख करने के लिए विवेकाधीन शक्तियाँ दी गई हैं।

यह भी एक जिला योजा समिति का गठन करने के पंचायत तथा नगर पालिकाओं द्वारा तैयार योजना को मजबूत और एक पूरे के रूप जिले के लिए एक एकीकृत विकास योजना तैयार करने के लिए सलाह दी गई है। यह भी एक राज्य वित्त आयोग (एसएफसी) हर पांच साल की समीक्षा करने के लिए, पंचायतों की वित्तीय स्थिति और सिद्धांत राज्य और पंचायत के बीच

**NOTES**

राजस्व के वितरण के नियंत्रित करने के बारे में सिफारिश करने के लिए गठित करने का निर्देश दिया गया है, और अनुदान के निर्धारण सहायता राज्य की संचित निधि से पंचायतों को।

पंचायत स्तर पर योजना के कार्यान्वयन के ग्राम विकास अधिकारी (VDO) और सचित की जिम्मेदारी है और ग्राम सभा जो ग्राम प्रधान के नेतृत्व में है की देखरेख कर रहा है। मौजूदा प्रावधानों के तहत ग्राम सभा (ग्राम पंचायत) के लिए धन सीधे IRDP, JRY आदि जैसे ग्रामीण विकास कार्यक्रमों पर अमल करने के केंद्र से आवंटित किया जात रहा है।

पंचायत की कृषि, ग्रामीण उद्योगों, चिकित्सा राहत, महिलाओं एवं बाल कल्याण के प्रावधान के प्रचार हेतु जिम्मेदारी के साथ सौंपा गया है, आम चराई के मौदान, गांव की सड़कों, तालाबों, कुओं, सफाई और अन्य सामाजिक-आर्थिक के निष्पादन को बनाए रखने कार्यक्रम।

कुछ स्थानों में, वे भी प्राथमिक शिक्षा की निगरानी और भू-राजस्व एकत्र करने के लिए अधिकृत हैं। वर्तमान में, ग्राम पंचायतों गरीबी विरोधी कार्यक्रमों में लाभार्थियों की पहचान करने में लगे हुए हैं। वहाँ के बारे में 2.20 लाख ग्राम पंचायतों, 5,300 पंचायत-समिति और देश में 400 जिला परिषद हैं।

संविधान द्वारा पंचायतों को नई स्थिति निर्वाचित प्रतिनिधियों और बड़े पैमाने पर ग्रामीण लोक के बीच उच्च्व उम्मीदों और अपेक्षाओं को उठाया गया है। लेकिन भारतीय राज्यों सरकारों की राजनीतिक के कारण, राजनीतिक राज्य स्तर की अनिच्छा और प्रशानिक पदाधिकारियों शक्ति और अधिकार है, और कुछ वास्तविक वित्तीय आर्थिक कठिनाइयों के साथ हिस्सा करने, संचालन में हुई उन्नति को कुछ हद तक धीमी गति से हॉल्टिंकग कर दिया गया है।

यह पाया गया है कि पंचायत राज निर्वाचित प्रतिनिधियों विकास के मुद्दों और कमी योजना और प्रबंधकीय कौशल के राजनीतिक एवं आर्थिक आयामों की काफी हद तक अनजान हैं। यह महिलाओं निर्वाचित प्रतिनिधियों, जो विभिन्न प्रकार के कुछ गंभीर सीमा के अन्दर अपने कर्तव्यों प्रदर्शन पर रहे हैं विशेष रूप से सच है।

एक बहु-स्तरीय नियोजन ढांचे में भारत में योजना व्यायाम राष्ट्रीय, राज्य, ब्लॉक और गांव / बस्ती स्तर पर कार्य शुरू किया जा सकता है। हालांकि भारत जैसे विशाल देशों में यह निचले स्तर पर नियोजन व्यायाम वांछनीय है और यही कारण है कि विकेन्द्रीकृत आयोजना देश में पर बल दिया गया है। एक भारत में है कि देख सकते हैं सही 1950-51 में पहली पंचवर्षीय योजना की स्थापना के समय से, हम कम से कम शिक्षा के क्षेत्र में विकेन्द्रीकृत आयोजना की बात कर दिया है, लेकिन अभी भी, योजना प्रक्रिया अधिकांश राज्यों में नीचे नहीं किया गया है राज्य

स्तर। यह आम तौर पर हे कि शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु हमारी असफलता के कारणों में से एक महसूस किया है। प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण जैसे, कि योजनाओं को उच्च स्तर पर तैयार की जाती है अर्थात् राष्ट्रीय और राज्य स्तर जो जमीनी स्तर पर वास्तविकताओं से काफी दूर हैं। इस प्रकार जो लोग (उच्च स्तर पर) की योजना बनाने और जौ लोग इस (स्थानीय स्तर पर) को लागू के मध्या एक विस्तृत खाई है। इस अंतर को निचले स्तर पर योजना बना कम किया जा सकता है। यह माना जाता है कि स्तर या छोटे योजना बना योजना और कार्यानवयन के बीच की खाई हो जाएगा की इकाई को कम। इस विकेन्द्रीकृत आयोजना के सबसे मजबूत औचित्य से एक है। इसके अतिरिक्त विकेन्द्रीकृत आयोजना के अनेक फायदे हैं। ये हैं: (i) स्थानीय आवश्यकताओं और अधिक प्रभावी ढंग का ध्यान रखा जा सकता है और कुशलता से निचले स्तर पर, (ii) की योजना इकाई की एकरूपता की वजह से और अधिक प्रभावी हो जाने की उम्मीद है, (iii) यह स्थानीय विशिष्ट समस्याओं को दूर करने में मदद करता है एक बेहतर तरीके से, (iv) सूचना के प्रवाह / डेटा जो योजना तथा प्रक्रिया में भागीदार (v) योजना के सफल क्रियान्वयन के अधिक संभावना देखते हैं।

किसी भी योजना प्रक्रिया में मुद्दों में से एक स्पष्ट रूप से नियोजन प्रक्रिया और प्रभाव की योजना बना निर्णय शुरू करने हेतु इकाई निर्दिष्ट करने के लिए है। भारत इस मुद्दे पर बहस की गई है कि अब यह स्वीकार किया जाता जिले विकेन्द्रीकृत आयोजना शुरू करने के लिए टाई सबसे व्यवहार्य इकई है। इसलिए, वर्तमान संदर्भ में भारत के शिक्षा योजना का विकेन्द्रीकरण शिक्षा के क्षेत्र में जिला स्तर की योजना बना निकलता है। विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए गंभीर प्रयास एक दशक वापस के बारे में भारत में प्रारम्भ कर दिया है। 1969 में योजना आयोग जिला योजनाओं की तैयारी के लिए दिशा निर्देश जारी किए। यह महसूस करते हुए कि योजना बनाने मशीनरी और योग्यता अभी जिला स्तर प्रयासों बाद के वर्षों राज्य स्तर नियोजन प्रक्रिया को मजबूत करने में पुन: निर्देशित किया गया था पर विकसित नहीं कर रहे हैं। अस्सी के दशक में प्रोफेसर सीएच Hanumantha Rao की अध्यक्षता में एक कार्य समूह जिला योजनाओं हेतु दिशा निर्देश विकसित करने के लिए गठित किया गया। इस समिति की सिफारिशों के सातवें योजना के रूप में जिला स्तर पर विकेन्द्रकृत आयोजना अपनाया एक प्रमुख रणनीति योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए। हाल ही में संवैधानिक संशोधन के साथ (73वां और 74वां संशोधन) पंचायती राज संस्थाओं अथवा शहरी क्षेत्रों में उनके समकक्ष स्थानीय स्तर के शैक्षिक योजनाओं को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते जा रहे हैं। सातवें पंचवर्षिया योजना के रूप में जिला स्तर पर विकेन्द्रकृत आयोजना अपनाया एक प्रमुख रणनीति योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु। हाल ही में संवैधानिक संशोधन के साथ (73वां और 74वां संशोधन) पंचायती राज संस्थाओं अथवा शहरी क्षेत्रों में उनके समकक्ष स्थानीय स्तर के शैक्षिक योजनाओं

**NOTES**

को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते जा रहे हैं। सातवें योजना के रूप में जिला स्तर पर विकेन्द्रकृत आयोजना अपनाया एक प्रमुख रणनीति योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए।

भारत में योजना और शिक्षा के प्रबंधन विकेंद्रित करने के लिए प्रयत्न विकेन्द्रीकरण देश में हो रही के इस व्यापत संदर्भ में रखा जाना चाहिए। नीतियों राष्ट्रीय स्तर पर तैयार की हैं, वहीं भारत में शिक्षा, एक क्षेत्र मुख्यत: वित्त पोषित तथा सरकारी अधिकारियों द्वारा प्रबंधित होना जारी है, शिक्षा की योजना भी जिला स्तर पर राष्ट्रीय, राज्य में विकसित कर रहे हैं और कभी-कभी। तक मध्य सत्तर के दशक, शिक्षा राज्य विषय का एक क्षेत्र बना रहा। हालांकि शिक्षा वर्तमान एक समवर्ती विषय है, समस्त व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, इस शिक्षा में विकास राज्य सरकारों द्वारा की पहल पर निर्भर करता है।

मौजूदा प्रशासनिक संरचना अधिक केंद्रीकृत है और यह बहुत विकेन्द्रीकृत आयोजना की शुरूआत के लिए बहुत अनुकूल है। विकेन्द्रीकृत आयोजना को सुविधाजनक बनाने के लिए यह सुनिश्चित करना है कि विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों की भूमिका धारणाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर रहे हैं महत्वपूर्ण है। यह जिला स्तर के कार्यक्रमों, राज्य स्तर के कार्यक्रमों और राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम इस भारतीय संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है। इसके आपरेशन के डोमेन के मध्य स्पष्ट अंतर आकर्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कई एक समय प्रोग्राम जो जिला स्तर पर लागू किया जाता है का एक बड़ा हिस्सा या तो केन्द्र प्रायोजित या राज्य प्रायोजित योजनाओं रहे हैं। वास्तव में, जो भारत में कमी है कि, जिलों की स्थिति स्वतंत्र रूप से अपने स्वयं के किसी कार्यक्रम शुरू करने की क्योंकि वे अपने स्वयं के संसाधनों की जरूरत नहीं है। वे संसाधनों के लिए राज्य या केंद्र सरकार पर निर्भर करते हैं। कई एक समय राज्य या राष्ट्रीय स्तर से दिए गए संसाधनों विशेष रूप से कुछ गतिविधियों के लिए बनाया दर्जी कर रहे हैं। इस व्यवस्था के तहत, तब भी जब संसाधनों जिला स्तर पर उपलब्ध हैं जो अपने एजेंडे पर उच्च करने पर विचार पर लक्षित करने के लिए हो सकता है। भारत में विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए एक और पूर्व-अपेक्षा वित्तीय निर्णयों कर रहे हैं फिर से आवंटित, इस संदर्भ में की संसाधन जुटाने हेतु होनी चाहिए, यह बहुत अक्सर सुझाव दिया है कि जिले के लिए राज्य या केंद्र सरकार से आवंटन करना चाहिए एक एकमुश्त आधार पर करने के बजाय एक दर्जी बनाया फैशन पर हो। कई एक समय राज्य या राष्ट्रीय स्तर से दिए गए संसाधनों विशेष रूप से गतिविधियों से कुछ गतिविधियों के लिए बनाया दर्जी कर रहे हैं। इस व्यवस्था के तहत, तब भी जब संसाधनों जिला स्तर पर उपलब्ध हैं। भारत में विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए एक और पूर्व-अपेक्षा वित्तीय निर्णयों के क्षेत्र में है। जिले अधिकार अपने स्वयं के या संसाधनों जो राज्य सरकार द्वारा उन्हें आवंटित कर रहे हैं फिर से आवंटित, इस संदर्भ में की संसाधना जुटाने के लिए होनी चाहिए, यह बहुत अक्सर सुझाव अक्सर सुझाव दिया है कि जिले के लिए राज्य अथवा केंद्र सरकार से आवंटन

करना चाहिए एक एकमुश्त आधार पर करने के बजाय एक दर्जी बनाया फैशन पर हो। कई एक समय राज्य या राष्ट्रीय स्तर से दिए गए संसाधनों विशेष रूप से कुछ गतिविधियों के लिए बनया दर्जी कर रहे हैं। इस व्यवस्था के तहत, तब भी जब संसाधनों जिला स्तर पर उपलब्ध हैं वे नहीं करने की स्थिति में मुद्दों, जो वे अपने एजेंडे पर उच्च करने पर विचार पर लक्षित करने हतु हो सकता है। भारत में विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए एक और पूर्व-अपेक्षा वित्तीय निर्णयों के क्षेत्र में है। जिले अधिकार अपने स्वयं के अथवा संसाधनों जो राज्य सरकार द्वारा उन्हें आवंटित कर रहे हैं फिर से आवंटित, इस संदर्भ में की संसाधन जुटाने हेतु होनी चाहिए, यह बहुत अक्सर सुझाव दिया है कि जिले के लिए राज्य या केंद्र सरकार से आवंटन करना चाहिए एक एकमुश्त आधार पर करने के बजाय एक दर्जी बनाया फैशन पर हो। यहाँ तक कि जब संसाधनों जिला स्तर पर उपलब्ध हैं वे मुद्दों,जो वे एजेंडे पर उच्च करने पर विचार पर लक्षित करने हतु हो सकता है। भारत में विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए एक तथा पूर्व-अपेक्षा वित्तीय निर्णयों के क्षेत्र में है। जिले अधिकार अपने स्वयं के या संसाधनों जो राज्य सरकार द्वारा उन्हें आवंटित कर रहे हैं फिर से आवंटित, इस संदर्भ में की संसाधन जुटाने हेतु होनी चाहिए, यह बहुत अक्सर सुझाव दिया है जिले के लिए राज्य अथवा केंद्र सरकार से आवंटन करना चाहिए एक एकमुश्त आधार पर करने के बजाय एक दर्जी बनाया फैशन पर हो। यहाँ तक कि जब संसाधनों जिला स्तर पर उपलब्ध हैं वे मुद्दों,जो वे एजेंडे पर उच्च करने पर विचार पर लक्षित करने हतु हो सकता है। भारत में विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए एक तथा पूर्व-अपेक्षा वित्तीय निर्णयों के क्षेत्र में है। जिले अधिकार अपने स्वयं के अथवा संसाधनों जो राज्य सरकार द्वारा उन्हें आवंटित कर रहे हैं फिर से आवंटित, इस संदर्भ में की संसाधन जुटाने हेतु होनी चाहिए, यह बहुत अक्सर सुझाव दिया है कि जिले के लिए राज्य या केंद्र सरकार से आवंटन करना चाहिए एक एकमुश्त आधार पर करने के अतिरिक्त एक दर्जी बनाया फैशन पर हो। जिले अधिकार अपने स्वयं के या संसाधनों जो राज्य सरकार द्वारा उन्हें आवंटित कर रहे हैं फिर से आवंटित, इस संदर्भ में की संसाधन जुटाने के लिए होनी चाहिए, एक एकमुश्त आधार पर करने के बजाय एक दर्जी बनाया फैशन पर हो। जिले अधिकार अपने स्वयं के अथवा संसाधनों जो राज्य सरकार द्वारा उन्हें आवंटित कर रहे हैं फिर से आवंटित, इस संदर्भ में की संसाधन जुटाने हेतु होनी चाहिए, यह बहुत अक्सर सुझाव दिया है कि जिले के लिए राज्य अथवा केंद्र सरकार से आवंटन करना चाहिए एक एकमुश्त आधार पर करने के अतिरिक्त एक दर्जी बनाया फैशन पर हो।

### योजना बनाने की प्रक्रिया

राष्ट्रीय स्तर की योजना बना पर शिक्षा सहित अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के लिए योजना आयोग द्वारा किया जाता है। हालांकि शैक्षिक योजनाओं शिक्षा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से लागू किया जाता है। इसी तरह राज्य स्तर पर राज्य बार्ड की योजना को तैयार करने में सहायता करने के लिए स्थापित कर

**NOTES**

रहे हैं। राज्य शैक्षिक योजनाओं सचिवालय और शिक्षा निदेशालय के माध्यम से लागू किया जाता है। सचिवालय जहां के रूप में निदेशालयों अधिक सीधे क्रियानवयन की प्रक्रिया में सम्मिलित कर रहे नीतिगत फैसले के साथ मुख्य रूप से संबंधित है। भारत शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा आदि की अलग निदेशालयों हैं जब शिक्षा के लिए योजना बना राज्य स्तर पर किया जाता है इन निदेशालयों तथा विभागों से सलाह ली है और इस प्रकार शैक्षिक योजनाओं सक्रिय भागीदारी और इन निकायों के परामर्श के साथ तैयार की जाती है।

भारत में बहुस्तरीय नियोजन ढांचे में तीसरे स्तर जिला है। लेकिन इस स्तर पर दुर्भाग्य से योजना बनाने हेतु इस तरह के स्पष्ट रूप से परिभाषित संगठनात्मक व्यवस्था अभी तक नहीं बनाया गया है। शिक्षा 1986 को राष्ट्रीय नीति शुरू करने और जिला स्तर पर नियोजन से संबंधित समन्वय करने के लिए शिक्षा (DBE) के जिला बोर्डों बनाता है की परिकल्पना की गई। परंतु देश में कोई राज्य अब तक शिक्षा के जिला बोर्ड की स्थापना करने में सझम हो गया है।

इसके बाद से, वहाँ कोई योजना बनाने मशीनरी जिले योजना तैयार करने के लिए है, योजना दक्षताओं शायद ही कभी जिला स्तर पर विकसित कर रहे हैं। वर्तमान में क्या जिला स्तर नियोजन के नाम में मौजूद है और कुछ नहीं बल्कि एक समायोजन अथवा बजटीय आंकड़ों के साथ हेरफेर है वह भी एक वृद्धिशील आधार पर। अक्सर, यह देखा गया है कि जिला स्तर पर तैयार योजना बारीकी से छानबीन नहीं कर रहे हैं और इसलिए योजना बना प्रक्रिया ही नहीं बल्कि दिनचर्या तथा नौकरशाही हो जाता है। भारत में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में बाहर से वित्त पोषित परियोजनाओं से पता चला है संसाधनों जिला स्तर और शक्ति और अधिकार पर प्रदान की जाती हैं, तो भी जिला स्तर के अधिकारियों के साथ निहित है, तो जो अधिक वास्तविक एवं स्थानीय विशिष्ट हैं जिला स्तर की योजना को विकसित करने की संभावना है।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पाँच मल्टी लेवल नियोजन के चरण की प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।
2. पूर्ण क्रियात्मक योजना की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मल्टी लेवल रूपरेखा से आप क्या समझते हैं?
2. योजना बनाने की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

# 9 बच्चों की अक्षमता के लिए इकाई तथा पाठ योजनाओं का अनुकूलन

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- अनुदेशन के अधिनियम
- बाधित बालकों हेतु सूचनाओं के अनुकूलन का आव्यूह
- मिलनसार बच्चों हेतु पाठ योजना
- निर्देशात्मक व्यवस्था
- तत्परता
- समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया
- पाठ योजना संशोधन
- संवेदी छात्रों हेतु पाठ योजना

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- अनुदेशन के अधिनियम
- बाधित बालकों हेतु सूचनाओं के अनुकूलन की आव्यूह
- मिलनसार बच्चों हेतु पाठ योजना
- निर्देशात्मक व्यवस्था
- तत्परता
- समस्या को समझने की प्रक्रिया
- पाठ योजना संशोधन
- संवेदी छात्रों हेतु पाठ योजना

## प्राक्कथन

किसी कार्य या भाव का समायोजन अथवा अनुकूलन की प्रकृति बाधित के स्तर की प्रकृति पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बालक अस्ति रोग से पीड़ित है या बाधित है तो ऐसे बालक को सामान्य पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षा दी जा सकती है परन्तु कक्षा में उनके बैठने के लिए स्थान में उनको शारीरिक आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन की जरूरत है। दृष्टि बाधित बालकों के लिए केवल मोटे छापे की पुस्तकें अथवा पठन सामग्री की आवश्यकता होती है। दृष्टि बाधित एवं श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा कुछ पूर्व तैयारी करने के बाद समन्वित शिक्षा हो सकती है। कठिन प्रत्ययों के शिक्षण हेतु उन्हें पाठ्यक्रम में समायोजन की आवश्यकता होती है। अर्थात् पाठ्यक्रम ऐसे बालकों की आवश्यकता के अनुरूप होना चाहिए। यदि सामान्य अध्यापक को बाधित बालकों की आवश्यकताएँ ज्ञात है या अध्यापक शारीरिक व मानसिक रूपसे बाधित बालकों की आवश्यकताओं के बारे में जानकारी रखता है तो पाठ्यक्रम का आवश्यकता के अनुरूप समायोजन, अनुकुलन आसान एवं सार्थक हो जाता है। सामान्य कक्षाओं में बिधित बालकों के शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम में शिक्षा के अनुरूप हो इसके लिए निम्न सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए–

पाठ्यक्रम के मूल प्रत्ययों जिनका प्रयोग किया जाता है अनुकूल या समायोजन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि प्रत्ययों में किसी प्रकार की परिवर्तन न हो क्योंकि समायोजन अधिक अनुकूलन का मुख्य उद्देश्य सामान्य एवं बाधित बालकों को कुछ अधिगम अनुभव देना होता है।

इस प्रकार के अनुभव देने हेतु कार्य करने की योजा कुछ इस प्रकार से बनाई जानी चाहिए कि बालक सामान्य कक्षा के शिक्षण में सभी प्रत्ययों का स्वरूप पूर्ण रूप से पाये। अनुदेशनात्मक सामग्री का उद्देश्य दोनों प्रकार अर्थात् सामान्य तथा बाधित बालकों के लिये समान रूप से होने चाहिए।

अनुदेशनात्मक सामग्री का परिवर्तन समन्वित शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त कर रहे सामान्य विचित्र शैक्षिक समस्याओं से परिचित होना चाहिए, शैक्षिक कार्यों एवं आव्यूहों के बारे में आँकड़े एकत्र करने की विधियाँ विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनुदेशनों का अनुकूल किया जाना चाहिए।

## अनुदेशन के अधिनियम (Principles of Instruction)

शिक्षा की मुख्यधारा से सम्बन्धित बालकों को यद्यि विशिष्ट अधिगम सम्बन्धी जरूरतें होती हैं, फिर भी वे सामान्य कक्षा शिक्षण के बहुत से कार्यों को करने की आवश्यक निपुणता रखते हैं। विशिष्ट विद्यार्थियों को भी विषय क्षेत्र में निपुणता

एवं शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न विषयों में कार्य करने की दक्षता के आधार पर शिक्षा की मुख्य धारा से सम्बद्ध किया जा सकता है।



अब ऐसे बालकों को 'क्या' पढ़ाना है इसमें परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, यदि सामान्य शिक्षा का पाठ्यक्रम उन बालकों के लिए उपयुक्त है फिर भी अनुदेशनात्मक विधियों में शीघ्र परिवर्तन करना जरूरी है अर्थात् किस प्रकार सूचनाओं एवं निपुणता और दक्षताओं की बालकों को शिक्षा दी जाये। विशिष्ट बालकों तथा उनके अन्य साथियों को क्रमबद्ध शिक्षा की आवश्यकता होती है। जिसके अन्तर्गत अनुदेशन लक्ष्य, संस्था तथा संस्था की विधियाँ आदि बतानी पड़ती हैं ऐसा करते समय बालकों की उन्नति पर विशेष आँकड़े एकत्र करने के आधार पर किया जाता है। इस प्रकार से बनाये गये अनुदेशनों का संगठन ध्यानपूर्वक किया जाता है। इनका प्रारूप पहल से निश्चित किये गये छात्रों की प्रणाली, कार्यक्षमता, निपुणता, दक्षता तथा वातावरण के अनुसार किया जाता है यह वैयक्तिक अनुदेशन प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु बनाया जाता है परन्तु इसका मुख्य रूप से यह अर्थ नहीं है कि एक अध्यापक एक विद्यार्थी को अनुदेशन दे अथवा अनुदेशित करें। अनुदेशन में निम्नलिखित पाँच बिन्दु सम्मिलित होते हैं—

(1) पाठ्यक्रम चयन करना

(2) किसी के समक्ष अपनी बात कहना/प्रस्तुतीकरण

(3) अभ्यास करना

(4) दक्षता का विकास करना तथा

(5) क्रियान्वयन करना।

छात्रों के मुख्य अंश जिनका प्रभाव उनके अधिगम पर विशेष रूप से पड़ता है। पर्याप्त रूप से सार्थक होते हैं तथा उनका अपना महत्त्वपूर्ण अर्थ होता है। इनमें कुछ इस प्रकार हैं—शिक्षण कला से सम्बन्धित उद्देश्यों को प्राप्त करना, अध्यापक तथा छात्र के मध्य सम्प्रेषण, छात्र के अधिगम की विधि, छात्र द्वारा अपने विचारों को दूसरों के समक्ष रखने की विधि, उपयुक्त अभ्यास, विभिन्न क्षेत्रों कार्यकलापों का अभ्यास, अनुदेशनात्मक परिस्थितियाँ आदि।

इस प्रकार अनुदेशनों को प्रभावशाली बनाने के लिए विभिन्न भागों को देखना जरूरी है तथा विशेष रूप से निम्नलिखित बिन्दुओं को देखना आवश्यक है—

(1) उपयुक्त अधिगम कार्यों को चुनना।

(2) अधिगम कार्यों को छोटे-छोटे पढ़ाने योग्य खण्डों (पदों) में बाँटना।

NOTES

(3) अनुदेशनात्मक विधियों का क्रमबद्ध प्रयोग। अनुदेशनों को प्रभावी बनाने के साधन, अभ्यास द्वारा, स्वयं कार्य करके दूसरों को दिखाना, दूसरों के मार्गदर्शन में अभ्यास करना एवं आत्मनिर्भरता के आधार पर अभ्यास करना।

(4) गति तथा किसी कार्य की यथार्थता समझाना, अधिगम कार्य चुनने तथा उल्लेखन करने में अध्यापक को निश्चित करना चाहिए कि अनुदेशनात्मक लक्ष्य कार्य शीघ्रता से करना है अथवा कार्य की न्यथार्थता (किसी सीमा तक कार्य त्रुटिरहित है), इसका प्रभाव अभ्यास तथा प्रस्तुतीकरण पर पड़ता है।

(5) बालक को कार्य में व्यस्त रहने का अधिकतम समय निश्चित करना। कार्य में व्यस्त रहने के अधिकतम समय से घण्टे तथा मिनट से है जिसमें बालक ध्यानपूर्वक कार्य करने में एवं अनुदेशन में भागीदार रहता है।

(6) बालक को कार्य के प्रति स्पष्ट निर्देशन दिये, जाये अधिगम कार्यों से सम्बन्धित निर्देशन स्पष्ट रूप से दिये जायें तो बालक के स्पष्ट रूप से समझने योग्य हो।

(7) सफलता रूप से कार्य करने पर बालक को उसके परिणाम से अवगत कराया जाये अर्थात् बालक को प्रोत्साहन दिया जाये सफल रूप से कार्य करने के बाद अध्यापक का विशिष्ट रूप से ध्यान बालक की ओर जाना, बालक की प्रशंसा करना, पारितोषिक आदि बालक को दिया जाये।

(8) सामान्यीकरण और रखरखाव तथा व्यवस्था का निरीक्षण करना। बालक के द्वारा किया गया कार्य नियमित रूप से निरीक्षण होना चाहिये। आवश्यकतानुसार बालक को कार्य करने का अभ्यास भी कराते रहना चाहिए। अध्यापक को चाहिए कि वह बालकों को कार्य करके दिखाए जिससे बालकों को स्पष्ट रूप दर्शाया जा सके कि विभिन्न परिस्थितियों में निपुणता एवं सूचनाओं का किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है।

### शैक्षिक समस्याएँ (Academic Problems)

अधिगम की तीन स्थितियाँ होती हैं—(1) अधिगम प्राप्त करना (सम्भालकर) सुरक्षित रखना, (2) आवश्यकता के अनुसार समायोजन तथा (3) नियोजन तथा सामान्यीकरण। किसी भी स्थिति में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है। नई सूचनाओं और निपुणताओं को सीखने में विद्यार्थियों को अधिक समय लग सकता है। ऐसे बालकों को पुराने अधिगम को नवीन वातावरण में प्रयोग करने में कठिनाई का

सामना करना पड़ता है या तो उनको आवश्यकता से अधिक समय लगता है अथवा वे कार्य में असफल हो जाते हैं।

**बाधित बालकों हेतु सूचनाओं के अनुकूलन का आव्यूह (Strategies for Adapting Instruction for Disabled)**

NOTES

यदि बालकों को निपुणता तथा सूचनाएँ समझने में कठिनाई होती है तो अनुदेशन अनुकूलन की निम्नलिखित प्रविधियाँ हैं—

(अ) **कार्य तथा सामग्री का परिवर्तन (Modifying Materials and Activities)**—(1) कार्य निर्देशन स्पष्ट होने चाहिए, (2) अधिगम कार्यों में सहायता हेतु संकेत शब्दों को एवं ऐसे अन्य आकर्षक विधियों को सम्बद्ध किया जाये जो बालक को कार्य समझाने में स्पष्टता प्रदान करें। संकेत मौखिक, लिखित या वस्तु विशेष को देखकर भी हो सकते हैं जैसे प्रतीक बनाना, अथवा आकृति अथवा शब्दों के नीचे रेखा खींचना जिसमें बालक का ध्यान आकर्षित हो। (3) यदि बालक किसी विशेष त्रुटि को बार-बार करे, तो त्रुटि को सुधार कर बालक का ध्यान विशिष्ट रूप से आकर्षित किया जाये जिससे बालक में सुधार हो सके।

(ब) **शिक्षण प्रक्रियाओं में सुधार व परिवर्तन (Changing Teaching Procedure)**—(1) निपुणता तथा सूचनाओं का अतिरिक्त प्रस्तुतीकरण (2) अतिरिक्त मार्ग दर्शन का अभ्यास, (3) बालकों के द्वारा किये गये सफल कार्यों के परिणामों को अकर्षण का केन्द्र बनाये इसमें अध्यापक के द्वारा दिये गये परिणाम अथवा पारितोषिकों का ज्ञान भी सम्मिलित है, (4) अनुदेशन में हुई प्रगति को मन्द करो, अनुदेशन तथा अधिगम कार्यों के लिये निश्चित समय में परिवर्तन मत करो, समय पहले के समान ही रखो लेकिन सामग्री तथा अभ्यास को कम कर दो।

(स) **कार्य की आवश्यकताओं में परिवर्तन करना (Altering Task Requirements)**— विद्यार्थियों की सफलता में वृद्धि करने हेतु अधिगम कार्यों में परिवर्तन किया जा सकता है—(1) सफल रूप से कार्य करने हेतु मानदण्ड में परिवर्तन करो, सफलतापूर्वक कार्य करने के मानदण्ड में मुख्यता तीन बातें सम्मिलित हैं—कार्य की मात्रा, गति तथा शुद्धता (त्रुटिरहित), (2) कार्य के गुणों में परिवर्तन करो।

**मिलनसार बच्चों हेतु पाठ योजना**

विशिष्ट जरूरतों के साथ एक बच्चे को समायोजित कर निरंतर प्रक्रिया है इसमें प्रत्येक बच्चे के सहयोगी दल शामिल हैं। शिक्षण स्टाफ निम्नलिखित रूपांतरों को

लागू करने से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी वातावरण बना सकते हैं।



सबसे बचपन कक्षाओं में इस्तेमाल किया गतिविधियों और सामग्री के साथ या विकलांग के बिना कई बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किए हैं। वे एक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते हैं, वे अनुकूलन या कि बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों को समायोजित करने के लिए विस्तारित किया जा सकता। एक अनुकूलन का उद्देश्य, बौद्धिक, शारीरिक या व्यवहार चुनौतियों के लिए क्षमिपूर्ति में बच्चों की सहायता के लिए है। वे बच्चे नवीन कौशल के अधिग्रहण को बढ़ावा देने के अपने वर्तमान कौशल का उपयोग करने हेतु अनुमति देते हैं। रूपांतरों एक बच्चे केवल कक्षा में मौजूद होने और एक बच्चे को सक्रिय रूप से शामिल होने के बीच फर्क कर सकते हैं।

विशेष आवश्यकता वाले एक बच्चे के लिए रूपांतरों और रहने की जगह का विकास एक सतत प्रक्रिया है कि प्रत्येक बच्चे के सहयोगी दल शामिल है। पहले कदम के बच्चे की योग्यता और पर्यावरण जहां बच्चे समय खर्च किया जाएगा आकलन करना है। एक बार जब लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की पहचान कर रहे हैं और उस माहौल में बच्चे की भागीदारी के लिए उम्मीदों स्थापित कर रहे हैं, टीम का चयन करता है या रूपांतरों और रहने की जगह है कि उन जरूरतों को पूरा करता है। एक बार लागू किया, उसके प्रभाव, सतत आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए और संशोधित रूप में की जरूरत है।

एक बच्चे की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए, परिवर्तन एक या निम्न शिक्षण की स्थिति के और अधिक में किया जाना पड़ सकता है। याद रखें, जब बच्चे एक गतिविधि में भाग ले सकते हैं, क्योंकि यह है, कोई परिवर्तन नहीं किए जाने की जरूरत है।

**निर्देशात्मक समूह या व्यवस्था**—बड़े समूहों, छोटे समूहों, सहाकरी सीखने समूहों, सहकर्मी भागीदारों, एक-से-एक अनुदेश, और / या स्वतंत्र कार्य: किसी भी गतिविधि के लिए वहाँ अनुदेशात्मक व्यवस्था जो से चुनने के लिए भी एक संख्या है।

यह केवल एक ही प्रभाव का उल्लेख है और Neglects दो अन्य प्रभाव एक पूरा जवाब का वर्णन होगा। व्यापारियों उन वस्तुओं की बिक्री नुकसान होता ह और उपनिवेशवादियों से बढ़ रही है या उनके उत्पादन शुरू कर सकता है स्वयं के उत्पादों और ब्रिटेन से आइटम का आयात बंद कर। हालांकि एक और अधिक सक्षम छात्र शिक्षक द्वारा चुनौती दी जा सकती है कम से कम एक प्रभाव के साथ आने के लिए, इस बच्चे की प्रतिक्रिया स्वीकार्य माना जाना चाहिए। व्यापारियों

उन वस्तुओं की बिक्री नुकसान होता है और उपनिवेशवादियों से बढ़ अथवा अपने स्वयं के उत्पादों के उत्पादन शुरू करने और ब्रिटेन से आइटम का आयात बंद कर सकता है। हालांकि एक और अधिक सक्षम छात्र शिक्षक द्वारा चुनौती दी जा सकती है कम से कम एक प्रभाव के साथ आने के लिए, इस बच्चे की प्रतिक्रिया स्वीकार्य माना जाना चाहिए। व्यापारियों का उन वस्तुओं की बिक्री नुकसान होता है। हालांकि एक और अधिक सक्षम छात्र शिक्षक द्वारा चुनौती दी जा सकती है कम से कम एक प्रभाव के साथ आने के लिए, इस बच्चे की प्रतिक्रिया स्वीकार्य माना जाना चाहिए।

NOTES

कार्य विशेषताओं में तीसरा संशोधन एक काम के साधन बदला जाता है। इस अर्थ में, साधन (ड्राइंग, गायन, अभिनय आदि) काम लिखा है कि क्या है, मौखिक रूप से प्रस्तुत किया, पूरा कला के माध्यम से करने के लिए संदर्भित करता है अथवा तौर-तरीकों के कुछ संयोजन। एक आम साधन परिवर्तन एक मौखिक प्रस्तुति के माध्यम से एक ही काम को पूरा करने का अवसर लेखन कठिनाई के साथ छात्रों का अनुमति देने के लिए है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी क्रांति इकाई में एक परियोजना पर कैसे क्रांति के समय में रहने वाले बच्चों के जीवन को बदल दिया एक सारांश रिपोर्ट था। एक अधिगम विकलांगता के साथ एक छात्र वर्ग के लिए एक मौखिक प्रस्तुति बनाने के बजाय एक रिपोर्ट लिखने की अनुमति दी जा सकती है। कुछ मामलों में, छात्रों को दिखाने के लिए वे क्या सीखा है दृश्य कला का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षक यहां सतर्क होना चाहिए लेकिन बच्चे अगर वे ऐसा करने के लिए चुनौती कभी नहीं कर रहे हैं लिखने के लिए सीखना नहीं होगे। इस प्रकार कुद कार्य पर सीखने विकलांग बच्चों के लिए एक लिखित उत्पाद का निर्माण करने के लिए आवश्यक होना चाहिए।

### तत्परता

एरियल (1992) के अनुसार, एलडी के साथ छात्रों को (क) सामान्य विकास तत्परता, और (ख) वैचारिक संख्या तत्परता प्राप्त करना होगा। जनरल विकास तत्परता वर्गीकरण के क्षेत्रों में क्षमता है, एक-से-एक पत्राचार, क्रमबद्धता, संरक्षण, लचीलापन और उलटने में भी शामिल है। सामान्य तत्परता के छात्र के स्तर का ज्ञान शिक्षक निर्धारित करने के लिए कैसे रूपांतरों और संशोधनों के छात्र की प्रगति के लिए अनुमति देने के लिए अधिनियमित किया जाना चाहिए अनुमति देता है। कुछ छात्रों के लिए, गणित तत्परता अनुदेश इस तरह के बड़े और छोटे के रूप में भाषा संख्या अवधारणाओं के विकास और सबसे छोटी सबसे बड़ा करने के लिए शामिल करने हेतु आवश्यकता हो सकती है; और इस तरह के रंग, आकार, या आकार के रूप में जिम्मेदार बताते हैं। निर्देश, समीक्षा और इन अवधारणाओं के अभ्यास अन्य छात्रों के लिए की तुलना में गणित विकलांग छात्रों के लिए लंबे

**NOTES**

समय अवधि के लिए प्रदान किया जाना चाहिए।

वैचारिक संख्या तत्परता जोड़ और घटाव कौशल (एरियल, 1992) के विकास के लिए आवश्यक है। बोर्ड खेल या अनुदेशात्मक सॉफ्टवेयर के साथ अभ्यास और समीक्षा प्रभावी गणित विकलांग छात्रों के लिए वैचारिक संख्या तत्परता विकसित करने के लिए तरीके हैं। इस तरह के छड़ और गणित सामग्री के रूप में (जैसे, 100 ब्लॉक ट्रे) गणित विकलांग छात्रों संख्यात्मक अवधारणाओं की कल्पनाएँ और आयु उपयुक्त तत्परता कौशल के बारे में अतिरिक्त सुझाव के लिए इस श्रृंखला में लैम्बर्ट देखें में शामिल होने की अनुमति देते हैं।

रूपांतरों और कम्प्यूटेशनल कौशल के निर्देश में संशोधन कई हैं और दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है: बुनियादी तथ्यों को याद रखने और एल्गोरिदम या समस्याओं को सुलझाने।

बुनियादी तथ्य अनुदेश अनुकूल गणित विकलांग छात्रों के लिए बुनियादी तथ्यों की याद को सुविधाजनक बनाने के लिए दो तरीकों (क) जारी रखा अभ्यास के लिए खेल का उपयोग कर, और (ख) में बुनियादी तथ्यां याद उन्हें क्रमबद्ध काम आसान बनाने के लिए शामिल हैं। पासा रोल, स्पिनरों के उपयोग की सलाह है, और ताश खेलने छात्रों तथ्य याद के साथ अतिरिक्त अभ्यास देने के लिए और एक अधिक खेल की तरह उन्मुखीकरण पेश करके कार्य में रुचि को बढ़ावा देने के इसके अलावा, मैककॉय और Prehm (1987) का सुझाव है कि शिक्षकों को चार्ट या रेखांकन के नेत्रहीन बुनियादी तथ्यों की याद की ओर छात्रों की प्रगति का प्रतिनिधित्व प्रदर्शित करते हैं। तथ्य याद उन्हें क्रमबद्ध एक विकल्प है कि एलडी साथ छात्रों के लिए शिक्षा की सुविधा हो सकती है। उदाहरण के लिए गुणा तथ्यों शिक्षण में, Bolduc (मैककॉय और Prehm में उद्धृत, 1987) का सुझाव है, XO और x1 तथ्यों के साथ शुरू 100 गुणा तथ्यों के 36 में जानने के लिए। x2 और x5 तथ्यों बगल में हैं, याद तथ्यों के सेट करने के लिए 28 जोड़े। x9s अगले का प्रवेश होता है डबल्स के बाद इस तरह के रूप 6 × 6 शेष 20 तथ्यों शामिल 10 कि पहले से ही जाना जाता है, तो छात्र क्रमविनिमेयता के बारे में पता है (जैसे, 4 × 7 = 7 × 4)। नए तथ्यों एलडी साथ छात्रों के लिए पहले से याद तथ्यों की लगातार पुनरावृत्ति के साथ बार में कुछ प्रस्तुत किया जाना चाहिए। नवीन तथ्यों एलडी साथ छात्रों के लिए पहले से याद तथ्यों की लगातार पुनरावृत्ति के साथ बार में कुछ प्रस्तुत किया जाना चाहिए। नवीन तथ्यों एलडी साथ छात्रों के लिए पहले से याद तथ्यों की लगातार पुनरावृत्ति के साथ बाद में कुछ प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

एल्गोरिदम को सुलझाने संगणनों नहीं बुनियादी तथ्यों का ही याद, लेकिन यह भी इन तथ्यों के उपयोग कम्प्यूटेशनल एल्गोरिदम पूरा करने के लिए शामिल है। एक

NOTES

एल्गोरिथ्म गणना के इस्तेमाल किया एक नियमित, कदम-दर-कदम प्रक्रिया है (Driscoll, 1980 मैककॉय और Prehm, 1987 में उद्धत)। इसके अतिरिक्त इस प्रक्रिया में मैककॉय और Prehm (1987) वर्तमान तीन समस्याओं को सुलझाने का विस्तार अंकन सहित के लिए मानक नाम विधि के लिए विकल्प (चित्र 1 देखें) आंशिक योग (चित्र 2 देखें), और इचइंग्स कम-तनाव एल्गोरिथ्म (चित्र 3 देखें)। गणित विकलांग छात्रों के लिए घटाव हचइंग्स कम-तनाव घटाव विधि (मैककॉय और Prehm, 1987) के उपयोग के माध्यम से आसान बना दिया है, जहाँसभी नाम पहले से किया जाता है। गुणा और भाग (मैककॉय और Prehm, 1987) आंशिक उत्पादों के उपयोग के माध्यम से समझा जा सकता है। इसके अलावा सारणियों कि ग्राफ पेपर का उपयोग छात्रों ग्राफ पर नेत्रहीन संख्या साजिश और फिर वर्गों आयत वे उत्पादन में शामिल गिनती करने के लिए अनुमति देने के लिए। सारणी गुणन प्रक्रिया को संशोधित करने के आंशिक उत्पादों के साथ संयोजन में इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे गुणन प्रक्रिया की गहन जानकारी हासिल करने के लिए गणित विकलांग छात्रों को सक्षम करने।

**समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया**

इसके अलावा रूपांतरों और कम्प्यूटेशनल अनुदेश में संशोधनों शिक्षक द्वारा अथवा छात्र द्वारा स्वतंत्र अभ्यास के दौरान रंग समय गणना समस्या (एरियल, 1992) के लिए वांछित समारोह की कोडिंग, या तो आगे के शामिल हैं। इस प्रक्रिया को छात्र के लिए एक अनुस्मारक वांछित समारोह को पूरा करने के रूप में कार्य करता है और यह भी गणितीय प्रतीकों तथा प्रक्रियाओं वे प्रतिनिधित्व के छात्र के ज्ञान का निर्धारण करने के शिक्षक द्वारा एक मूल्यांकन उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

मैट्रिक्स कागज छात्रों संरेखण में नंबर रखते हुए (एरियल, 1992) इस प्रकार कार्य की जटिलता को कम करने और अनुमति देने हेतु शिक्षक और छात्र गणितीय प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक भौतिक गाइड अनुमति देता है। कार्य को सरल बनाने में, शिक्षक तो प्रक्रिया के छात्र की समझ में के बजाय कार्य के निष्पादन में समस्याओं की पहचान कर सकते हैं।

अंत में, मॉडलिंग छात्रों कम्प्यूटेशनल समस्याओं को हल मदद करने हेतु एक और प्रभावी रणनीति है। उदाहरण के लिए, रिवेरा और Deutsch स्मिथ (Salend, 1994 में उद्धत) प्रदर्शन के साथ-साथ स्थायी मॉडल रणनीति है, जो गणना प्रक्रिया को समझने में कौशल बढ़ाने के लिए डिजाइन निम्नलिखित तीन चरण शामिल हैं के उपयोग की सलाह: (क) शिक्षक दर्शाता है कि कैसे एक समस्या का समाधान करने के लिए अभिकलन समस्या को हल करने में हर कदम के साथ

**NOTES**

जुड़े प्रमुख शब्दों Verbalizing जबकि; (ख) छात्र चरणों जबकि प्रमुख शब्दों Verbalizing और शिक्षक के मॉडल को देख करता है; और (ग) छात्र शिक्षक अभी भी उपलब्ध मॉडल के साथ अतिरिक्त समस्याओं पूरा करती है। अन्य मॉडलिंग Salend (1994) द्वारा दिए गए उदाहरणों चार्ट कि परिभाषा प्रदान करते हं, सही उदाहरण का उपयोग शामिल है, आर कदम-दर-कदम प्रत्येक कम्प्यूटेशनल प्रक्रिया के लिए निर्देश।

समस्या को सुलझाने के लिए अनुकूकलित और कई अलग अलग तरीकों (केली और Carnine देखने के अलावा शब्द समस्या को सुलझाने के निर्देशात्मक रणनीतियों के लिए इस श्रृंखला में) में गणित विकलांग छात्रों के लिए संशोधित किया जा सकता। Polloway और पैटन (1993) ध्यान दें कि गणित विकलांग छात्रों शिक्षक निर्देशित गतिविधियों है कि शामिल (क) होने के छात्रों को पढ़ने के लिए या ध्यान से समस्या को सुनने के माध्यम से अपने समस्या को सुलझाने के कौशल में सुधार; (ख) प्रासंगिक जानकारी और / या सही जवाब है, जबकि उत्तर की आवश्यकता नहीं है (जैसे, सेब की संख्या) बारे में कुछ शब्द लिख कर अप्रासंगिक त्यागकर प्राप्त करने के लिए जरूरी महत्वपूर्ण शब्द पर ध्यान केंद्रित में छात्रों को उलझाने, जोर से पहचान करने या महत्वपूर्ण शब्द चक्कर द्वारा समस्या में, और प्रासंगिक संख्या पर प्रकाश डाल कर; (ग) समस्या के लिए एक समाधान verbalizing एक चित्र अथवा स्केच जब उचित उपयोग करने में छात्रों को शामिल; (घ) एक उचित गणितीय वाक्य लिख कर कहानी समस्या के माध्यम से काम के लिए रणनीति विकसित; और (ई) आवश्यक गणना प्रदर्शन, तर्कसंगतता के लिए जवाब का मूल्यांकन, एवं उचित संदर्भ में जवाब लिख रहे हैं।

महत्वपूर्ण सोच कौशल की कमी समस्या को सुलझाने कठिनाइयों यौगिकों। कई संज्ञानात्मक और मेटा-संज्ञानात्मक रणनीतियों को प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता। उदाहरण के लिए, (1992) है कि छात्रों को एक कार्यान्वयन शीट पर निगरानी कर सकते हैं छह समस्या का सुलझाने के रणनीतियों के की सिफारिश। छात्र समस्या को पूरा करने, जबकि चरणों क्रिया बनाना और निगरानी शीट पर कदम की उनके पूरा होने पर ध्यान दें। छह कदम हैं:

1. पढ़ें और समस्या को समझते हैं।
2. महत्वपूर्ण प्रश्न के लिए देखों और महत्वपूर्ण शब्दों को पहचानते हैं।
3. उचित संचालन का चयन करें।
4. संख्या की (समीकरण) लिखें और इसे हल करें।
5. अपना उत्तर जाँच लें।

6. अपने त्रुटियों को ठीक करें।

छात्रों सफल समस्या को सुलझाने में संलग्न करने हेतु इसके अलावा, मर्सर (1992) आवश्यक घटक को पहचानती है। विलय के अनुसार, समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया 10 कदम है, जो शिक्षण रणनीतियों में विस्तार किया जा सकता है शब्द समस्या को हल करने में अधिक प्रभावी होने के गणित विकलांग छात्रों को भी शामिल है।

NOTES

1. समस्या पहचानो।
2. एक प्रक्रिया रणनीति (यानी, विशेष कदम की पहचान पालन करने के लिए) की योजना बनाएँ।
3. समस्या में गणित संबंधों की जांच करना।
4. समस्या को हल करने के लिए जरूरी गणित ज्ञान निर्धारित करें।
5. समस्या रेखांकन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
6. समीकरण उत्पन्न करें।
7. गणना चरणों अनुक्रम।
8. तर्कसंगतता के लिए जवाब की जाँच करें।
9. पूरी प्रक्रिया पर नजर रखने के स्व।
10. समस्या को हल करने हेतु वैकल्पिक तरीकों का अन्वेषण करें।

Hammill और बरटेल (Polloway और पैटन, 1993 में) एलडी साथ छात्रों के लिए गणित संशाधित करने के लिए कई सुझाव प्रदान करते हैं। असली दुनिया में नंबर जोड़ तोड़ में क्षमताः वे कैसे अनुदेश को बदलने के लिए है, जबकि गणित शिक्षा के प्राथमिक उद्देश्य को बनाए रखने के बारे में सोचने के लिए शिक्षकों प्रोत्साहित करते हैं।

1. प्रकार या जानकारी की मात्रा इस तरह के एक कहानी समस्या का छात्र जवाब दे रही है और छात्र को समझने के लिए कैसे जवाब प्राप्त किया गया की इजाजत दी के रूप में एक छात्र के लिए प्रस्तुत फेरबदल।
2. शिक्षक-इनपुट की किस्म का उपयोग करते हुए एवं इस तरह के मौखिक प्रस्तुतियों के साथ शिक्षण के चरण के दौरान munipulatives का उपयोग कर के रूप में रणनीति मॉडलिंग।

NOTES

सुदृढीकरण पैटर्न है कि सही कदम (परिणाम की परवाह किए बिना एक समस्या में पूरा करने मैककॉय और Prehm, 1987 के लिए सकारात्मक मान्यता प्रदान से लाभ हो सकता)। बल्कि उत्पाद की तुलना में गणित की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करके, छात्रों गतिविधि पर कुछ नियंत्रण महसूस करने हेतु शुरू हो सकता है। इसके अलावा, शिक्षकों कठिनाई का कारण दूर और उस क्षेत्र में विशिष्ट सुविधाओं प्रदान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर छात्र एक लंबे विभाजन समस्या में दिए गए चरणों को दोहराने के लिए क्षमता विकसित कर ली है, लेकिन कठिनाई सही गुणा तथ्यों को याद किया है, शिक्षक के लिए उचित कदम इनाम और छात्र के का हल प्राप्त करने की क्षमता को बढ़ाने के लिए एक कैलकुलेटर या गुणा चार्ट प्रदान करना चाहिए मुसीबत।

एलडी के साथ अनेक छात्रों के गणितीय क्षमता उचित आवास और विशेष्ज्ञ शिक्षा अनुदेशात्मक समर्थन के साथ सामान्य शिखा कक्ष में सफलतापूर्वक विकसित किया जा सकता है। इस उद्देश्य के लिए शिक्षकों को ग्रहण करने और पर्यावरण को संशोधित करने की सुविधा के लिए उचित है, इन छात्रों के लिए शिक्षा उलझाने के लिए आवश्यकता के बारे में पता होना चाहिए। समस्या को सुलझाने के रणनीतियों छात्रों की यादों में सुधान लाने और जानकारी की अवधारणा के लिए एक अधिक संरचित वातावरण प्रदान करने पर रिलांयस भी उचित है। अंत में, शिक्षकों अनुदेश मे बिताए समय की राशि का मूल्यांकन करना चहिए, प्रभावी शिक्षण प्रथाओं का उपयोग, छात्रों की प्रगति (इस श्रृंखला में ब्रायट देखों), और वास्तविक जीवन की गतिविधियों है कि गणित कक्षा में सक्रिय, उद्देश्यपूर्ण सीखने को प्रोत्साहित का उपयोग।

**पाठ योजना संशाधन**

विशेष शिक्षा के शिक्षकों व्यक्तिगत शिक्षा योजना और 504 प्रलेखन के साथ छात्रों के प्रबंधन में अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाता है, लेकिन सामान्य कक्षा शिक्षकों कैसे अपने शिक्षार्थियों के सभी की जरूरतों के अनुकूल करने हेतु पाठ्यक्रम को संशोधित करने के आश्चर्य हो सकता है।

होना या न होना छात्रों पर निर्भर कर रहे हैं, वे व्यक्तिगम ध्यान उन्हें सबसे अच्छा संभव सीखने को प्राप्त करने में मदद करता है कि पात्र हैं। शिक्षक जानते हैं कि कैसे व्यक्तित्व, चुनौतियों, और उनके छात्रों की ताकत मूलरूप से एक कक्षा के प्रवाह को बदल सकते हैं। शिक्षार्थियों की विविधतापूर्ण निकाया के लिए अनुकूल दोनों चुनौतीपूर्ण और पुरस्कृम है।

**कक्षा में सभी शिक्षार्थियों की मदद: आम सबक योजना संशोधनों**

सबक को मामूली संशोधनों कक्षा में सभी शिक्षार्थियों की मदद करने हेतु काम कर सकते हैं, लेकिन यह परिवर्तन और रूपांतरों इतनी बड़ी है कि उन्नत शिक्षार्थियों को अपने दम पर छोड़ दिया जाता है बनाने के लिए नहीं महत्वपूर्ण है। यहाँ कुछ सामान्य छात्र जरूतरों के आधार पर रूपांतरों के लिए कई विचार कर रहे हैं।

NOTES

पाठकों को विकसित करने, कक्षा के बाकी के रूप में एक ही काम करने के लिए मुश्किल हो सकता है। मानार्थ सामग्री है कि कदम-दर-चरण निर्देशों के साथ जुड़े चित्र शामिल विकासशील पाठकों सुरक्षा पढ़ने स्थापित करने में सहायता।

साक्षरता सफलता के लिए छात्रों को अवसर प्रदान करने के लिए अन्य तरीक शामिल हैं—

- इस तरह के चित्र के आधार पर अनुमान बनाने के रूप में पाठ के लिए विभिन्न शिक्षण उद्देश्यों,
- पढ़ना सामग्री अनेक बार सुविधा बढ़ाने के लिए
- अभ्यास एक किताब सही तरीके से रखने और पढ़ने के समय के दौरान पृष्ठों को मोड़ दे।

ध्यान में रखते हुए साक्षरता के साथ संघर्ष कर उन लोगों की कठिनाइयों जबकि सबक योजनाओं बनाने में मद्द कर सकते हैं। शिक्षकों समर्थन संरचनाओं की अनुमति स्थापित करने और उनमें सफल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

**संवेदी छोत्रों हेतु पाठ योजना**

ध्यान घाटे विकार या संवेदी एकीकरण विकार के साथ छात्रों को सबक के दौरान आंदोलन और शारीरिक कार्यवाई से काफी फायदा हो सकता है। शिक्षक उन्हें दालान में एक छोटे से समूह में काम कर रही है या Kinesthetic लर्निंग तकनीक जोड़कर इस आंदोलन के लिए अनुमति देने के लिए सबक संशोधित कर सकते हैं।

युवा छात्रों ए.बी.सी. संगीत कुर्सियों खेल कर वर्णमाला अभ्यास कर सकते हैं। थोड़ा पुराने छात्रों डिकोडिंग पिंग पांग दृष्टि शब्द अथवा वर्तनी के शब्द अपने साथियों उन्हें टॉस के साथ मुद्रित गेंदों के माध्यम से पठन पकड़ खेल सकते हैं। बाद में ग्रेड शिक्षार्थियों कार्य हाम में सबक के साथ काम गठबंधन, छोटे ईंटों को स्थापित करने या स्कूल के एक पर पत्थर फर्श द्वारा बागवानी अथवा गणित के साथ विज्ञान के संयोजन सहित की एक किस्म दिया जा सकता है।

यहाँ तक कि एक कुर्सी संवेदी छात्रों या Kinesthetic शिक्षार्थियों की मद्द कर सकते हैं इसके बजाय एक योग गेंद पर बैठे के रूप में सरल कुछ सबक के दौरान

NOTES

ध्यान केंद्रित करें। इस भौतिक जरूरत के लिए लेखांकन सभी पाठ अधिक सुचारू रूप से चलाने के लिए कर सकते हैं।

कुछ छात्रों कक्षा व्यवहार में भाग लेने के भौतिक सहायता की आवश्यकता। मन में आंशिक भागीदारी के सिद्धांत रखते हुए, यह एक छात्र और उनके साथियों सहमर्की रिश्तों कि कुछ विशेष रूप से चुनौती दी शिक्षार्थियों सामान्य शिक्षा कक्षा में अनुकूलन में मद्द करने के साथी छात्रों से कक्षा सहायता हेतु अनुमति देने के लिए विकसित करने के लिए बेहद सकारात्मक हो सकता है।

जो छात्र अपने साथियों की मद्द से कैसे अपने सहपाठी को सहायता प्रदान करने के लिए पर विशेष शिक्षा से प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, लेकिन यह दोनों शिक्षार्थी और उनके साथियों क्या आपे विशिष्ट उद्देश्य प्रत्येक पाठ के समय के दौरान है कि छात्र के लिए कर रहे हैं स्पष्ट करने में सहायक होता है।

इन उपायों, उपकारणों को चालू करने से एक तिपाई समझ और बुनियादी लेखन, अथवा किसी कार्य में चरणों के बहुमत का पूरा करने के साथ एक छात्र की मदद लेकिन छात्र पिछले कुछ को पूरा करने के लिए अनुमति देना शामिल हो सकता है। जो भी लक्ष्य है, कि शिक्षा समय के लिए अपने साथियों के समर्थन करता है अपने विशिष्ट, व्यक्तिगत हों लक्ष्यों की पहचान करने और उन्हें और छात्र के लिए पहचान।

इनपुट, आउटपुट, समय, कठिनाई, समर्थन, आकारा, भागीदारी की डिग्री है, वैकल्पिक लक्ष्य, या विकल्प के पाठ्यक्रम का स्तर वहाँ पाठ के लिए रूपांतरों के नौ प्रमुख प्रकार हैं। पाठ योजना रूपांतरों के लिए संभावित अवसरों से परिचित होने के नाते मदद कर सकते हैं शिक्षकों अपने इच्छित पाठ्यचर्या लक्ष्यों को छड़ी, जबकि अभी भी सम्मान करने और छात्रों की एक विविध कक्षा स्वीकार करते हैं।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता है कि संशोधनों ताकि सभी छात्रों को पाठ्यक्रम में भाग ले सकते बनाया जा। शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों के लिए, यह अनुकूली शारीरिक शिक्षा का मतलब है। मार्गदर्शन और कल्पना के साथ, सभी छात्रों को जिम क्लास का आनंद लें कर सकते हैं।

ऐसे पेशी कुपोषण और मस्तिष्क पक्षपात जैसे स्थितियाँ अक्सर एक बच्चे के लिए जरूरी अभ्या, आंदोलनों या खेल गतिविधियां पारंपरिक जिम कक्षा में पाया में भाग लेने के क्षमता खराब। बल्कि जिम वर्ग विशेष आवश्यकता वाले बच्चों लिकालने के बजाय, पब्लिक स्कूलों अब अनुकूली फिटनेस कार्यक्रम प्रदान करते हैं। संशोधित जिम कक्षाएं, जो अपने शरीर को स्वस्थ रख्ने के अवसर विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को उपलब्ध कराने, मानक जिन पाठ्यक्रम के लिए कुछ समयोजन

शामिल है। सहायक शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षकों की सहायता से, इन छात्रों को अपने साथियों के सथ कसरत का अनंद लें।

NOTES

एक अनुकूली जिम वर्ग इस तरह के धीरज, समन्वय, आंदोलन, तथा मांसपेशियों की ताकत के रूप में सकल मोटर क्षेत्रों में हो रही देरी के साथ छात्रों को उपलब्ध कराया जाता है। विशेष जरूरतों जो जिम की अवधि के दौरान अनुकूली सेवाओं को प्राप्त करने में विस्तृत आवास एवं लक्ष्यों को एक व्यक्तिगत शिक्षा योजना, या IEP में लिखा होगा पात्र हैं के साथ बच्चे। विकलांगता की गंभीरता और संशोधनों है कि एक स्कूल की पेशकश करने में सक्षम है के आधर पर, एक बच्चे को अथवा अन्य विशेष जरूरतों के छात्रों के साथ एक छोटे से संशोधित जिम कक्षा में या अपने साथियों के साथ एक बड़ी मुख्यधारा जिम कक्षा में भाग ले सकते हैं। शिक्षक सहयोगियों अथवा पैरा शिक्षकों छात्रों को, जो अनुकूली सेवाओं को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त सहायता की पेशकश कर सकते हैं।

नियम छात्र वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुमति देने के लिए ''आराम'' हो सकता है। उदाहरण के लिए, छात्रों को 10 फीट से एक नेट में एक गेंद को किक करने के लिए कर रहे हैं, विशेष आवश्यकता वाले एक छात्र नेट में लात या गेंद फेंकने के लिए सक्षम होने के लिए करीब प्राप्त करने की जरूरत हो सकती है। समय की आवश्यकताओं और ''बहिष्कार'' समाप्त किया जा सकता है।

उपकरण में संशोधन हो सकता है कि बदले से या पैडल, वेल्क्रो दीर्घकाय है ताकि सकल मोटर कठिनाइयों के साथ एक बच्चे को यह आसानी से पकड़ सकता है। अन्य रूपांतरों एक बास्केटबॉल नेट को कम करने, बड़े अथवा छोटे गेंदों का उपयोग कर या एक टी का उपयोग एक गेंद पकड़ करने के लिए शामिल हो सकते हैं। छात्रों को अपने हाथ के बजाय गेंदों को पकड़ने के लिए scoops उपयोग कर सकते हैं। लक्ष्य बड़ा बना दिया है ओर छात्रों के करीब रखा जा सकता है।

वातावरण में छात्रों जिम या शरीरिक शिक्षा में भाग लेने की सुरक्षित एवं स्वागत किया जाना चाहिए। पैडिंग, हाथ रखती है, और अनुकूली उपकरण आसानी से उपलब्ध होना चाहिए। खेल मैदान स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए। टेप या पेंट क्षेत्रों के उपयोग यह आसान छात्र सीमाओं में देख सकता है।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अनुदेशन के अधिनियम पर विस्तृत प्रकाश डालिए।
2. निर्देशात्मक व्यवस्था पर एक निबन्ध लिखिए।

3. समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया को अपने शब्दों में समझाइए।
4. संवेदी छात्रों हेतु पाठ योजना पर विस्तृत विवेचन कीजिए।

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. बाधित बालकों के लिए कौन सी प्रमुख प्रविधियाँ हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. मिलनसार बच्चों के लिए पाठ योजना पर संक्षिप्त लेख लिखिए।
3. पाठ योजना संशोधन को संक्षेप में समझाइए।

# 10 सीमावर्ती दृष्टिकोण: (ए) एमन्वय (बी) कोरल (सी) सांद्रिक (घ) सार्पिल (ई) एकीकृत (च) रेग्रेसिव

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- सांस्कृतिक दृष्टिकोण
- लोकल कम्युनिटी, नाइटबोर कम्युनिटी, परिवार कम्यूनिटी बच्चे
- सर्पिल दृष्टिकोण
- स्पिरियल दृष्टिकोण के सिद्धान्त
- भोजन, वस्त्र, आवास और परिवहन के साधन के रूप में ठोस पाठ्यक्रम
- परिक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- सांस्कृतिक दृष्टिकोण
- लोकल कम्युनिटी, नाइटबोर कम्युनिटी, परिवार कम्यूनिटी बच्चे
- सर्पिल दृष्टिकोण
- स्पिरियल दृष्टिकोण के सिद्धान्त
- भोजन, वस्त्र, आवास और परिवहन के साधन के रूप में ठोस पाठ्यक्रम

NOTES

## प्राक्कथन

पाठ्यक्रम पूरी शैक्षणिक प्रक्रिया की जड़ है। पाठ्यक्रम के बिना, हम किसी भी शैक्षिक प्रयत्न का गर्भधारण नही कर सकते। एक देश का स्कूल पाठ्यक्रम, जैसे उसके संविधान उस देश के आस्था को दर्शाता है आर्थर कनिंघम के अनुसार, ''पाठ्यक्रम एक कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक उपकरण है, जो आपने स्टूडियों (स्कूल) में अपने विचारों (उद्देश्यों) के अनुसार अपनी सामग्रियों (विद्यार्थियों) को ढालने हेतु सामाजिक विज्ञान को प्रभावी ढंग से शिक्षण देने के उद्देश्यों को समझने के लिए यह सबसे मनोवैज्ञानिक और तार्किक रूप से सुसंगत तरीके से पाठ्यक्रम को व्यवस्थित करने के लिए अनिवार्य है। निर्माण सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में विषय विषय लक्ष्य तथा उद्देश्यों पर निर्भर करता है जो शिक्षक ने स्थापित किया है। सामाजिक विज्ञान में व्यापक उद्देश्य की स्थापना फलस्वरूप विषय के विषय में बड़े प्रभागों में एक विशिष्ट प्रवृत्ति हुई है। सामग्री के संगठन के संबंध में राय का बहुत अंतर रहा है, और कई दृष्टिकोण विकसित हुए हैं। इस से हमें केन्द्रित, सर्पिल और सामयिक दृष्टिकोणों के बारे में चर्चा करनी होगी।

## सांस्कृतिक दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण पर संगठन के आधार पर बल दिया गया है कि बच्चों को प्राथकिम स्तर पर उनके हर दिन की गतिविधियों पर करी के बारे में सरल सामान्यीकरणों को दुबला करना चाहिए। उच्च कक्षाओं में छात्र अधिक कठिन जानकारी सीखते हैं। अनुभवों की एक अनुक्रमिक व्यवस्था एक सर्पिल संचयी शिक्षण का उत्पादन करती है सामाजिक विकास, जैसे कि परिवार, धर्म एवं आर्थिक व्यवस्था, यदि वे अपने विकास के क्रम में हैं तो अधिक आसानी से समझ सकते हैं। इस संगठन में एक महत्वपूर्ण पहलू है कि विकास के क्रम में सामग्रियों की उचित व्यवस्था से छात्रों को कारण और प्रभाव के उत्तराधिकार को ध्यान में रख कर सक्षम किया गया है। यह अध्यापन की अधिकतम चीजों का पालन करता है, जैसे कि पूरे से भाग हेतु सरल और जटिल, आसान कठिन आदि। आधुनिक वस्तुओं के शिक्षाविदों में ब्रूनर इस दृष्टिकोण का प्रमुख प्रतिपादक है, क्योंकि उनका मानना है कि खोज झुकाव केवल तभी संभव है यदि यह दृष्टिकोण बनाए रखा। कभी-कभी इस दृष्टिकोण को संद्रिक दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित किया जाता है। इनमें से सबसे हालिया डिजाइनों में से एक पॉल द्वारा तैयार किया गया है। आर एचन्ना और निम्नलिखित चित्र में दर्शाया गया है। जिस पर छात्रों को सामाजिक विज्ञान में विषयों के संयोजन के विषय में एक कार्यक्रम तैयार किया जा सकता है।

## लोकल कम्यूनिटी नाइटबोर कम्यूनिटी स्कूल कम्यूनिटी परिवार कम्यूनिटी के बच्चे





### लाभ

1. माध्यमिक स्तर पर प्राथमिक माध्यम से विषय के सतत सीखने।
2. शारीरिक सिद्धांत के आधार पर; सरल से जटिल तक
3. ज्ञात अज्ञात से आगे बढ़ना आसान है।
4. विशेषज्ञता के लिए आधार प्रदान करें

### सीमाएं

1. जटिल समस्याओं को समझने में जल्दबाजी तथा संदर्भ पारित करने में मदद नहीं करते हैं।
2. इस दृष्टिकोण के माध्यम से विद्यार्थियों में समय और स्थान की भावना विकसित करना मुश्किल है।
3. छात्रों को ज्ञान की पूर्णता के बिना परिचितों की भावना विकसित होती है।
4. पाठ्यचर्या में नवीनता की कमी के कारण विद्यार्थियों के मध्य गतिविधि पैदा करने में विफल रहता है।

**सर्पिल दृष्टिकोण**—शब्द सर्पिज अतिरक्ति निहितार्थ देता है कि उन्नयन का प्रयत्न करते समय संबंध को भी ध्यान में रखा जाता है और संबंधित विषय की निरंतरता कभी भी टूटी नहीं जाती है। जबकि इसे समेकित के रूप में अवधारणा केवल दायरे को चौड़ा कर दिया जाता है, लेकिन इस संबंध को ध्यान में रखा नहीं जाता है। इतिहास की एक विशेष अवधि समाज के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पहलुओं के बोरे में जागरूकता भी प्रदान करता है जिसका अध्ययन अधिक उपयोगी और व्यापक होगा। इस तरह के ज्ञान और समझ को पाठ्यचर्या के शिक्षण और तैयारी के लिए सर्पिल दृष्टिकोण की मदद से प्रदान गिया गया है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण का प्रमुख लक्ष्य - सर्पिल दृष्टिकोण की मदद से सीखना हासिल किया जाता है।

**सर्पिल दृष्टिकोण के सिद्धांत**—सर्पिल दृष्टिकोण निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है—

1. समग्री की सामाजिक प्रासंगिकता
2. सामाजिक सामग्री की उपयोगिता

3. मानव प्रगति में सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक कारकों का योगदान।
4. सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक प्रगति का कालानुक्रमिक क्रम।
5. मनुष्य और समाज की उन्नति का संचयी रिकॉर्ड
6. एक विशिष्ट अवधि में मनुष्य और समाज की उन्नति का ज्ञान।
7. सामाजिक समस्या पर निर्भर करते हुए मनुष्य और समाज पर सामाजिक विज्ञान अवयवों का एकीकरण।

**लाभ—**

1. यह व्यापक और व्यापक आधार है
2. यह समय केंद्रित है।
3. मूल रूप से यह मनुष्य तथा समाज केंद्रित है।
4. यह सामाजिक विज्ञान सामग्री की जटिलता को हल करती है

**सीमाएं—**

1. सर्पिल दृष्टिकोण की अवधारणा जटिल है
2. यह समझना आसान नहीं है।
3. इसकी संरचना अच्छी तरह से तैयार नहीं है
4. यह एक दृष्टिकोण है जो सामाजिक विज्ञान के हर शिक्षण में उपयोग नहीं कर सकते हैं।

**सामयिक दृष्टिकोण—**इस दृष्टिकोण में बच्चों के आयु, क्षमता और हितों के लिए उपयुक्त उध्ययन के विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है और प्रत्येक विषय पूरी तरह से क्रक्षा में हैं जहां इसे पहली बार पेश किया गया है। प्रत्येक विषय एक इकाई के रूप में चिंतित है और सभी विषयों को लिंक सबक के साथ शिक्षक द्वारा एक साथ लिंक किया जाता है। 13+आयु वर्ग के बच्चों (13 से ऊपर) के लिए यह दृष्टिकोण काफी संभव है। पाठ्यक्रम निर्माता शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सामाजिक विज्ञान सीखने के केंद्रीय विषय के रूप में विशेष विषयों को लेता है। प्रत्येक चरण में बच्चों की आयु क्षमता एवं हितों के अनुसार विषयों भिन्न होते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में, बच्चे विकास के अध्ययन शुरू कर सकते हैं।

**भोजन, वस्त्र, आवास और परिवहन के साधन के रूप में ठोस पाठ्यक्रम**—मध्य वर्गों में, उन्हें संस्थानों और सरकार के इतिहास जैसे महत्वपूर्ण एवं अधिक महत्वपूर्ण विषयों के साथ पेश किया जा सकता है। माध्यमिक कक्षाओं में छात्र साम्यवाद, समाजवाद, पूँजीवाद आदि जैसे विचारधाराओं के बारे में विचार प्रदान किया जा सकते हैं।

NOTES

**गुण**

1. यह दृष्टिकोण तार्किक और तर्कसंगत तरीकों में अपशिष्ट पदार्थ से निपटने हेतु एक कार्यवाही योजना प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों को उनके विकास संबंधी बैठकों में तथ्यों को समझने में मदद करता है।
2. इस दृष्टिकोण को बच्चों की उम्र, क्षमता और योग्यता के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है।
3. कुल उद्देश्य की कोशिश के कारण विद्यार्थियों को यह उद्देश्य प्रदान करता है।
4. इस दृष्टिकोण ने शिक्षक को विषय नियंत्रण करने और बच्चों की पृथक-पृथक जरूरतों के लिए इसे सक्षम करने के लिए सक्षम किया।

**सीमाएं—**

1. यह विषय की निरंतरता को नष्ट कर देता है।
2. चूंकि किसी विषय में अनेक पहलुओं को शामिल किया जा सकता है, निचले वर्गों में विद्यार्थियों के संगठनात्मक दक्षता से परे हो सकता है विषय का एक पूरा अध्ययन मानसिक रूप से वांछनीय नहीं होगा।

उपरोक्त कारणों से सीखने की अधिक खोज की संभावना संभव होगी।

**निष्कर्ष**—हालांकि, पाठ्यक्रम पूरे शैक्षिक उद्यम का मूल है। सामाजिक विज्ञान को प्रभावी तरीके से शिक्षण दे ने के उद्देश्यों को समझने हेतु सबसे मनोवैज्ञानिक और तर्कसंगत रूप से दृढ़तापूर्वक तरीके से पाठ्यक्रम को व्यवस्थित करने के लिए अनिवार्य है। सांद्रिक दृष्टिकोण शिक्षण के अधिकतम सिद्धांतों को पूरा करता है, जैसे कि पूरे से भाग के लिए, सरल से जटिल, कठिन आदि के लिए आसान। सर्पिल दृष्टिकोण कुद भी नहीं बल्कि एक रणनीति तैयार करना है जा शिक्षा के विभिन्न चरणों के माध्यम से सामाजिक विज्ञान के विषय में निरंतर सीखने को बढ़वा देता है। सामयिक दृष्टिकोण में, अध्ययन मेकअप के कुछ विषय पूरे पाठ्यक्रम यह पृथक दृष्टिकोण एक व्यवस्थित तरीके से पाठ्यक्रम के

निर्माण में मदद करता है।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

NOTES

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सांस्कृतिक दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए।
2. लोकल कम्युनिटी, नाइटबोर कम्यूनिटी तथा परिवार कम्यूनिटी के बच्चों पर प्रकाश डालिए।
3. सर्पिल दृष्टिकोण से आप क्या समझते है? स्पष्ट कीजिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लोकल कम्यूनिटी के लाभ एवं सीमाएं लिखिए।
2. सामयिक दृष्टिकोण को संक्षेप में समझाइए।

●●

# 11 सामाजिक विज्ञान शिक्षणकी विधियाँ

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- व्याख्यान विधि
- वाद-विवाद विधि
- समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि
- स्रोत पद्धति का अर्थ एवं प्रकार
- योजना पद्धति
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें।

- व्याख्यान विधि
- वाद-विवाद विधि
- समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि
- स्रोत पद्धति का अर्थ एवं प्रकार
- योजना पद्धति

NOTES

## प्राक्कथन

बिना किसी योजना तथा पूर्व तैयारी के किसी कार्य को सम्पादित करने हेतु प्रयास करना असफलता का द्योतक है। किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने हेतु कार्य को सम्पादित करने से पूर्व योजना बना लेना आवश्यक है। बीच में विघ्न न पड़े, इसके लिये पूर्व तैयारी आवश्यक है। इसी प्रकार वाद-विवाद प्रारम्भ करने से पूर्व योजना बना लेना तथा वाद-विवाद हेतु आवश्यक तैयारी कर लेना सफलात का द्योतक है। अत: अध्यापक को इस सम्बन्ध में पहले ही सभी आवश्यक सामग्री की व्यवस्था कर लेनी चाहिये एवं पूर्व योजना बना लेनी चाहिये।

### (अ) सामाजिक विज्ञान शिक्षण हेतु सामान्य विधियाँ

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए प्रमुख सामान्य विधियों का विस्तृत विवरण निम्नलिखित हैं—

### (1) व्याख्यान आव्यूह (Lecture Strategy)

यह शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है। यह आदर्शवादी विचारधारा की देन है। विद्यालयों में आज भी इस विधि का शिक्षण की दृष्टि से कम महत्व नहीं है। शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप इसका अर्थ अधिक व्यापक हो गया है। इसे शिक्षा का प्रभुत्ववादी आव्यूह भी मानते हैं, क्योंकि इसके द्वारा अधिगम के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। सामाजिक विषयों के शिक्षण में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है।

**स्वरूप**—इसमें पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक जोर दिया जाता है। शिक्षक को अधिक क्रियाशील रहना पड़ता है। छात्रों के ध्यान को केन्द्रित करने के लिए कभी-कभी शिक्षक प्रश्न प्रविधि की भी सहायता लेता है। शिक्षक को अधिक तैयारी करनी पड़ती है। छात्र केवल श्रोता का कार्य करते हैं।

**शिक्षण सिद्धान्त**—व्याख्यान आव्यूह के अधोलिखित सिद्धान्त हैं—

1. पाठ्यवस्तु को पूर्णरूप से प्रस्तुत किया जाता है।
2. पाठ्यवस्त के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है।
3. छात्र सुनकर अधिक सुगमता से सीखते हैं।
4. अन्य विषयों के साथ सह-सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

**उपयोग**—इसके द्वारा प्रस्तुतीकरण अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है, परन्तु इसके उपयोग में सावधानी अधिक रखनी होती है। पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण के

समय उसके स्पष्टीकरण हेतु अध्यापक को सहायक सामग्री, चार्ट, रेखाचित्र का भी समुचित प्रयोग करना होता है। प्रत्येक बालक के पास अपनी जरुरत की सामग्री होनी चाहिए। विकासात्मक प्रश्नों की सहायता से व्याख्यान में सजीवता लायी जा सकती है।

NOTES

**विशेषताएँ**—इसकी निम्न मुख्य विशेषताएँ हैं—

1. इससे बालकों को ध्यान केन्द्रित करने की आदत पड़ती है।
2. इसमें समय की बचत होती है। थोड़े समय में अधिक विषय-वस्त का ज्ञान सुगमता से कारया जाता है।
3. पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक जोर दिया जाता है।
4. बालकों को मौलिक चिन्तन तथा सराहना की क्षमताओं के विकास का अवसर मिलता है।
5. अध्यापक के व्यक्तित्व को विशेष प्रभाव रहता है। स्पष्टीकरण की सजीवता से बालकों को अध्ययन के लिए प्रेरणा मिलती है।
6. नये विषय की पृष्ठ-भूमि प्रस्तुत करने के लिए उत्तम पद्धति है।

**सीमाएँ**—इसकी निम्न मुख्य सीमाएँ हैं—

1. इस विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें प्रस्तुतीकरण पर अधिक जोर दिया जाता है और छात्र की क्रियाशीलता को स्थान नहीं दिया जाता है। अधिगम की प्रक्रिया को ध्यान में नहीं रखा जाता है।
2. इस विधि का प्रयोग उच्च कक्षाओं में ही किया जा सकता है। प्राथमिक कक्षाओं हेतु इसका कोई महत्व नहीं है।
3. बालक की अपेक्षा अध्यापक को अधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षक का एकाधिकार रहता है।
4. यह पद्धति अमनोवैज्ञानिक है। इसमें व्यक्तिगम भित्रता को ध्यान में नहीं रखते तथा बालकों की अभिरुचियों तथा अभिवृत्तियों का भी कोई ध्यान नहीं रखा जाता है।
5. शिक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह विधि उपयोगी नहीं है। बालक भौतिक तथ्यों के सम्बन्ध में ज्ञान भले ही प्राप्त कर ले किन्तु वास्तविक ज्ञान, अभिरुचि तथा अभिवृत्ति की दृष्टि से अन्य विधियों की सहायता लेनी पड़ती है।

NOTES

6. इस विधि द्वारा शिक्षण बिन्दु पर सन्तुलित बल नहीं दिया जाता है। प्रायः अध्यापक व्याख्यान विधि में विषयान्तर बातें करने लगते हैं। इसलिए बालक का परीक्षा के समय निर्णय भी न्यायोचित नहीं हो पाता है।
7. केवल कुशल एंव योग्य अध्यापक ही व्याख्यान पद्धति का अनुसरण कर पाते हैं। योग्य शिक्षकों का शिक्षण इस विधि द्वारा प्रभावशाली होता है, इसमें विषयवस्तु का पूर्ण ज्ञात होना अत्यन्त जरूरी है।

**सुझाव**—इसका प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

1. योग्य शिक्षकों को ही व्याख्यान विधि का उपयोग करना चाहिए।
2. शिक्षकों को बालकों के मानसिक स्तर एवं रुचियों का ध्यान रखना चाहिए। उदाहरण उनके स्तर तथा जीवन से सम्बन्धित होने चाहिए।
3. व्याख्यान की भाषा सरल तथा बोधगमय होनी चाहिए। व्याख्यान की गति अति तीव्र होनी चाहिए।
4. व्याख्यान के समय विकासात्क प्रश्न भी पूछने चाहिए जिससे बालकों का ध्यान केद्रिति हो सके।
5. इस विधि का प्रयोग पूर्व माध्यमिक कक्षाओं से शुरु करना चाहिए। कॉलिज तथा विश्वविद्यालय के स्तर पर प्रयोग अधिक किया जाना चाहिए।
6. व्याख्यान में कक्षा का वातावरण नीरस एवं गम्भरी हो जाता है, इसलिए बीच-बीच में हास्य-विनोद का भी समावेश करना चाहिए।
7. व्याख्यान के समय विषयान्तर वार्ता नहीं होनी चाहिए क्योंकि छात्र उसका सम्बन्ध भी पाठ्यवस्तु से कर देते हैं।

### वाद-विवाद विधि (Discussion Method)

यह विधि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की महत्वपूर्ण पद्धति मानी जाती है। किसी समस्या के समाधान के लिए सामाजिक क्रियाओं का शुद्ध रूप है। इसमें विचारों का आदान-प्रदान होता है और समस्या के लिए बहुमत से समाधान ज्ञात किया जाता है। इससे छात्रों में कौशल का विकास होता है। छात्र का समाजीकरण होता है स्वन्तत्र चिन्तन एवं अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

**स्वरूप**—उच्च कक्षाओं के छात्र वाद-विवाद में अधिक रुचि लेते हैं। जिनसे वह कुछ निर्णय भी निकालते हैं। इस विधि को सामाजिक प्रवृत्ति ने अधिक प्रभावित किया है। यह प्रजातन्त्र सिद्धान्तों पर आधारित है। सभी को विचारने एवं कहने का

समान अवसर दिया जाता है। शिक्षक का स्थान गौण माना जाता है। वाद-विवाद एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सामूहिक रूप से निर्णय लिया जाता है।

NOTES

**शिक्षण-सिद्धान्त**—प्रमुख शिक्षण निम्नांकित हैं—

(1) यह मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित है। छात्र ही क्षमताओं के विकास का पूर्ण मौका दिया जाता है।

(2) यह विधि प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों पर आधारित है। प्रत्येक बालक को समान अधिकार होता है।

(3) इसमें छात्र की क्रियाशीलता पर विशेष बल दिया जाता है। शिक्षक का स्थान एक सहायक के रूप में रहता है।

## वाद-विवाद हेतु तैयारी (Prepration for the Discussion)

बिना किसी योजना तथा पूर्व तैयारी के किसी कार्य को सम्पादित करने हेतु प्रयास करना असफलता का द्योतक है। किसी कार्य में सफलता के लिए कार्य को सम्पादित करने से पूर्व योजना बना लेना जरुरी है। बीच में बाधा न पड़े, इसके लिए पूर्व तैयारी करना आवश्यक होता है। इसी प्रकार वाद-विवाद प्रारम्भ करने से पूर्व योजना बना लेना तथा वाद-विवाद हेतु आवश्यक तैयारी कर लेना सफलता का द्योतक है, अतः अध्यापक को वाद-विवाद कराने से पहले एक सुनियोजित व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

वाद-विवाद प्रारम्भ करने से पूर्व अध्यापक को कक्षा का वातावरण ऐसा बना देना चाहिए जिसमें सभी छात्र स्वतन्त्रपूर्वक अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। वातावरण जितना सुखदायी (Pleasant) होगा, परिणाम भी उतने ही अच्छे निकलेंगे। अध्यापक को छात्रों के बैठने की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। सर्वोत्तम व्यवस्था वह है जिसमें समस्त छात्र एक-दूसरे को देख सकें। इसके लिए अर्द्ध-चन्द्राकार रूप में छात्रों के बैठने की व्यवस्था करनी चाहिए और अध्यापक को ऐसे स्थान पर बैठना चाहिए जहाँ से वह सभी छात्रों पर दृष्टि रख सके।

वाद-विवाद प्रारम्भ करने के लिए यह भी आवश्यक है कि विषय-वस्तु छात्रों को स्पष्ट हो अतः अध्यापक का विषय-वस्तु प्रस्तुत करते समय ही एक प्रस्तावनात्क भाषा द्वारा छात्रों को समस्या का रूप बता देना चाहिए।

समस्या का निर्माण किसी क्रिया से सम्बन्धित होना चाहिए। यदि समस्या किसी से सम्बन्धित हैं तो छात्र उसमें अधिक रुचि लेगें।

वाद-विवाद हेतु पहले से तैयारी करना जिस प्रकार अध्यापक के लिए जरुरी है ठीक उसी प्रकार छात्रों के लिए तैयारी करना भी आवश्यक है। छात्र दी हुई

NOTES

समस्या का जब तक भली प्रकार अध्ययन करके नहीं आते वह वाद-विवाद में भली प्रकार भाग न ले सकेंगे, अत: छात्रों को पहले से ही समस्या दे देनी चाहिए और छात्रों को उस समस्या का अध्ययन करके वाद-विवाद हेतु तैयारी कर लेनी चाहिए। वाद-विवाद के लिए छात्र किस प्रकार अध्ययन करें, इस सम्बन्ध में वेस्ले (Wesley) तथा रॉन्स्की (Wronski) महोदय ने निम्नांकित सुझाव दिये हैं —

1. विषय-वस्तु तथा समस्या का हर समय ध्यान रखो,
2. प्रत्येक सर्वोत्तम साधन से सूचनाएँ एकत्रित करो,
3. मासिक पत्रिकाएँ तथा पुस्तिकाएँ आदि पढ़ो,
4. समाचार-पत्रों का अध्ययन करो,
5. पाठ के महत्त्वपूर्ण अंगों को ध्यान से पढ़ो,
6. सोद्देश्य रूप से पढ़ो, निरर्थक तथ्यों को छोड़ दो,
7. आलोचनात्मक रूप से पढ़ो,
8. वस्तुनिष्ठ रूप से पढ़ो,
9. तथ्यों तथा विवादों में स्तर करके पढ़ो,
10. लेखक के विचारों को समझने हेतु धैर्यपूर्वक पढ़ो,
11. पढ़ने से अपनी सूचनाओं के भण्डार में वृद्धि करो,
12. पढ़कर निष्कर्ष निकालिए एवं सामान्यीकरण कीजिए,
13. अन्त में गठ का सारांश निकालिए,
14. मुख्य बिन्दुओं को तार्किक रूप से समझाइए,

### वाद-विवाद का संचालन (Organisation of Discussion)

वाद-विवाद का प्रारम्भ छात्र तथा अध्यापक दोनों में से कोई भी कर सकता है। वाद-विवाद का प्रारम्भ छात्र या अध्यापक कोई कहानी कहकर, कोई समस्या खड़ी करके, कोई चित्र दिखाकर, कोई वस्तु दिखाकर या किसी घटना का उल्लेख करके कर सकते हैं। किस प्रकार वाद-विवाद प्रारम्भ किया जाए, यह वाद-विवाद के उद्देश्यों पर निर्भर करता है। वाद-विवाद प्रारम्भ हो जाने पर उसे आगे अपने उद्देश्यों तक पहुँचाने की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए योग्य संचालन जरूरी है। संचालन इस प्रकार किया जाए कि वाद-विवाद में भाग लेने वाले सभी छात्र अपने विचारों को सरलता, स्वतन्त्रता तथा इच्छानुसार व्यक्त कर

सकें। संचालन को वाद-विवाद द्वारा पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों की तरफ सदैव ध्यान रखना चाहिए।

NOTES

वाद-विवाद को उद्देश्यों की तरफ ले जाने हेतु के बीच-बीच में प्रश्नों का सहारा लिया जा सकता है और अन्त में सम्पूर्ण वाद-विवाद का सारांश भी निकाला जा सकता है। इस प्रकार वाद-विवाद के संचालन में अग्रलिखित चार सोपान सम्मिलित होते हैं –

1. प्रारम्भ (Orientation);
2. विश्लेषण (Analysis);
3. व्याख्या (Explanation);
4. सारांश (Summary)।

वाद-विवाद के संचालन की व्यवस्था का जहाँ तक प्रश्न है, वाद-विवाद के लिए कक्षा को या तो विभित्र उप-समूहों में विभाजित किया जा सकता है या सम्पूर्ण कक्षा एक साथ ही वाद-विवाद कर सकती है। यदि कक्षा उप-समूहों में विभाजित की जाती है, तो प्रत्येक उप-समूह में चार-पाँच से अधिक छात्र नहीं रखने चाहिए। प्रत्येक उप-समूह दी हुई समस्या के सम्बन्ध में परस्पर वाद-विवाद कर एक निष्कर्ष पर पहुँचेगा और अन्त में अपनी रिपोर्अ समस्त कक्षा के सम्मुख प्रस्तुत करेगा।

**मूल्यांकन (Evaluation)**

वाद-विवाद का मुख्य उद्देश्य छात्रों में वांछनीय परिवर्तन लाना है। यदि वाद-विवाद किसी भी प्रकार के परिवर्तन नहीं लाता है, तो निरर्थक माना जायेगा और यदि परिवर्तन लाता है, तो प्रश्न उठता है कि छात्रों में कितना परिवर्तन हुआ ? उस वांछित परिवर्तन का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है। वांछित परिवर्तनों का मूल्यांकन छात्र स्वयं आ अध्यापक कोई भी कर सकता है। मूल्यांकन के लिए हम विभित्र प्रकार की प्रश्नावलियों (Questionnaries) का प्रयोग कर सकते हैं और ज्ञात कर सकते हैं कि विभित्र क्षेत्रों में क्या परिवर्तन हुए ? उदाहरणस्वरूप विषय वस्तु के ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई, कितना बौद्धिक विकास हुआ, कितनी बौद्धिक क्षमताएँ बढ़ीं, रुचियों में क्या बदलाव हुए, अभियोग्यता तथा मूल्यों में क्या परिवर्तन हुए आदि-आदि।

**चित्र—वाद-विवाद पार्श्व-चित्र**

1. वाद-विवाद निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहाँ तक सफल रहा ?

NOTES

2. वाद-विवाद में कहाँ-कहाँ कठिनाइयाँ एवं कमियाँ आयीं और इनके क्या कारण
3. क्या प्रत्येक छात्र ने भाग लिया ?
4. क्या कुछ एक छात्र की वाद-विवाद पर छाये रहे ?
5. अन्तिम दो प्रश्नों के उत्तर के लिए हम एक वाद-विवाद पार्श्व रेखाचित्र बनाते हैं।

इसमें दिखाए गए तीर इंगित करते हैं कि किसने कितने प्रश्न पूछे। एक छात्र से दूसरे छात्र तक दिखाए तीर परस्पर पूछे गये प्रश्नों की संख्या इंगित करते हैं, जैसे सावित्री ने पाँच प्रश्न सामान्य रूप से पूछे, तीन प्रश्न राम से पूछे तथा राम ने तीन प्रश्न सावित्री से पूछे।

**पद्धति के गुण (Merits of the Method)**

वाद-विवाद पद्धति में निम्नालिखित गुण पाये जाते हैं—

1. पद्धति व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर निर्भर है,
2. पद्धति स्वतन्त्र अध्ययन पर बल देती है,
3. पद्धति छात्रों में तर्क-शक्ति का विकास करती है,
4. पद्धति छात्रों के सिद्धान्त पर आधारित है,
5. पद्धति स्वाध्याय का विकास करती है,
6. पद्धति छात्रों को विषय-वस्तु का चयन करना सिखाती है,
7. पद्धति छात्रों में सहयोगपूर्ण प्रतियोगिता का विकास करती हैं

**पद्धति के दोष (Demerits of the Method)**

1. निरर्थक वाद-विवाद में समय नष्ट किया जा सकता है,
2. सम्पूर्ण विषय-वस्तु का अध्यापन सम्भव नहीं है,
3. सभी अध्यापक कुशलतापूर्वक वाद-विवाद का संचालन नहीं कर सकते,
4. पद्धति अधिक समय चाहती है,
5. वाद-विवाद में कुछ ही छात्र प्रमुख रूप से भाग लेकर अन्य छात्रों को अवसर प्राप्त नहीं करने दे सकते हैं,

**कुछ सुझाव (Some Suggestions)**

वाद-विवाद पद्धति को अपनाते समय अध्यापक को नीचे लिखे सुझावों को ध्यान में रखना चाहिए–

NOTES

1. समस्या को भली प्रकार निर्माण किया जाए,
2. वाद-विवाद प्रारम्भ होने से पूर्व सभी जरूरी तैयारियाँ कर ली जाएँ,
3. वाद-विवाद का संचालन नियमानुसार जनतान्त्रिक विधि से किया जाए,
4. निरर्थक एंव असम्बन्धित वाद-विवाद को चुतराई से रोका जाए,
5. सभी छात्रों को समान रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाएँ,
6. मूल्यांकन बिना किसी पक्षपात के किया जाए।

### (3) समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि (Socialized Recitation Method)

आधुनिक युग में कक्षा-कक्ष में समाजीकृत प्रक्रियाओं के प्रयोग की विधि दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिसके फलस्वरूप शिक्षण में एक नवीन एवं गत्यात्मक विधि (Dymaic Method) को प्रमुख स्थान दिया गया, जो समाजीकृत अभिव्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध है। वेस्ले का मत है कि समाजीकृत अभिव्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध है। वेस्ले का मत है कि समाजीकृत अभिव्यक्ति एक आदर्श है जो, शिक्षण में ऐसे प्रयोग की कल्पना है, जिससे कक्षा के सभी बालक सहयोग तथा सद्‌भावना से ज्ञानार्जन कर सकें। इसके द्वारा कक्षा के वातावरण की कृत्रिमता को समाप्त किया जाता हैं और उसके स्थान पर स्वाभाविकता पैदा की जाती है, जिससे बालक अपने स्वभाव एवं रुचि के अनुसार स्वतन्त्रापूर्वक सहयोगी ढंग से ज्ञानार्जन करता है।

**समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का अर्थ (Meaning of Socialized Recitation Method)**—बाइनिंग एवं बाइनिंग ने लिखा है, "समाजीकृत अभिव्यक्ति को सामाजिक वाद-विवाद (Social Discussion) कहा जा सकता है। समाजीकृत अभिव्यक्ति की शुद्ध परिभाषा के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ इसके अर्थ को संकुचित रूप में व्यक्त करते हैं। उनका विचार है कि समाजीकृत अभिव्यक्ति वह प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक अपना भर सम्पूर्ण कक्षा अथवा छात्रों की समिति को सौंपकर स्वयं को कक्षा की कार्यवाही से भार-मुक्त कर लेता है। कुछ विद्वान इसको उदाहरण की दृष्टि से देखते हैं। उनके दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति करते हुए बाइनिंग व बाइनिंग ने लिखा है, "कोई भी कक्षा-सूत्र जो एक वर्ग के एक कक्ष में सामूहिक चेतना तथा वैयक्तिक उत्तरदायित्व का प्रदर्शन करे, समजीकृत अभिव्यक्ति है।"

NOTES

मुफात ने इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "समाजीकृत अंभिव्यक्ति व्याख्यान पद्धति की अपेक्षा छात्रों के सहयोग हेतु अधिक अवसर प्रदान करती है। यह एक सामान्य सामूहिक वाद-विवाद विधि है, जिसमें सभी बालक अपना योगदान देकर, प्रश्न पूछकर तथा समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास करके सहयोगी ढंग से भाग लेते हैं। यह विधि किसी प्रकार के प्रस्तावना, किसी महत्वपूर्ण घटना पर बातचीत करके तथा किसी समस्या के अध्ययन में प्रयुक्त की जा सकती है।"

**समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का प्रयोग**-बाइनिंग व बाइनिंग ने इस पद्धति के प्रयोग के निम्नलिखित रूप बताये हैं—

(1) **औपचारिक वर्ग योजना (Formal Group Plan)**—इसके अन्तर्गत छात्र अपने को व्यवस्थित करके कार्य प्रारम्भ करते हैं। जिस प्रकार प्रौढ़ अपने क्लब, कौंसिल तथा सीनेट बनाकर किसी समस्या का व्यवस्थित तरीके से हल करते हैं, उसी प्रकार छात्र भी अपने को संगठित करके निर्धारित समस्याओं पर विचार-विमर्श करते हैं। इस रूप में छात्र निर्धारत नियमों के अनुसार अपनी कार्यवाही करते हैं। इसमें छात्र अध्यक्ष की आज्ञा प्राप्त किए बिना अपने प्रस्ताव, विचार तथा सुझाव नहीं रखते हैं। साथ ही उसी को सम्बोधित करके बोलते हैं।

(2) **अनौपचाकिर वर्ग-योजना**—इसके अन्तर्गत कोई व्यवस्थित योजना नहीं होती है। छात्र तथा अध्यापक स्वतन्त्र रूप से किसी भी समस्या पर विचार कर सकते हैं।

(3) **आत्म-निर्देशन वर्ग योजना**—यह उच्च कक्षाओं हेतु बहुत लाभदायक है। इसमें शिक्षक को बहुत कम बोलना पड़ता है। छात्र समस्याओं पर वाद-विवाद करके उनका स्वयं हल निकालते हैं। यह छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी नहीं है।

(4) **सेमीनार वर्ग योजना**—यह अधिकतर कॉलेज स्तर पर प्रयोग में लायी जाती है। इसमें एक वर्ग की एक समस्या दी जाती है। यह वर्ग उसके विषय में पूर्ण अन्वेषण करके वाद-विवाद तथा आलोचना हेतु सेमीनार में रखता है। उस पर सब अपने-अपने विचार प्रकट करते हैं। कुछ उसके पक्ष में बोलते हैं और कुछ विपक्ष में। उन समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव दिए जाते हैं। अन्त में सामूहिक रूप से रिपोर्ट तैयार की जाती है।

**समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि के गुण**—इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. छात्र योजना बनाना सीखे जाते हैं।

2. छात्रों की प्रेरणा-शक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है।
3. छात्रों की समान उद्देश्य एवं रुचियों की खोज की जाती है।
4. छात्र आत्म-निर्णय करना सीख जाते हैं।
5. छात्र वाद-विवाद में भाग लेना सीख जाते हैं।
6. छात्रों में स्वतन्त्र विचरण की नींव डाली जाती है।
7. छात्रों में आत्म-विश्वास पैदा किया जाता है।
8. छात्र अपने विचारों तथा निर्णयों को संगठित तथा लिखित रूप में रखना सीख जाते हैं।
9. छात्रों में सहयोग की भावना विकसित की जाती है।

**समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का दोष**—इसकी प्रमुख सीमाएँ इस प्रकार हैं-

1. यह विषय-वस्तु पर समुचित अधिकार (Adequate Mastery) करने हेतु उपयुक्त नहीं है।
2. इसके विपक्ष में कहा जाता है कि कुछ छात्र ही सम्पूर्ण कार्य को संचलित करते हैं। अन्य छात्रों को इससे कोई लाभ नहीं होता है।
3. इसके प्रयोग से छात्र कार्य के वाद-विवाद में समय को नष्ट करते हैं।

## 9. स्त्रोत पद्धति (SOURCE METHOD)

स्त्रोत पद्धति का विकास मुख्य रूप से इतिहास पढ़ाने के लिए किया गया। इतिहास अन्य विषयों की भाँति सामाजिक विज्ञान का एक अंग है। इसलिए स्त्रोत पद्धति का प्रयोग सामाजिक विज्ञान में भी विभिन्न विषयों के शिक्षण ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के शिक्षण करने हेतु किया जाता है।

स्त्रोत पद्धति इतिहास-शिक्षण की एक प्रभावशाली, सशक्त तथा महत्वपूर्ण पद्धति है। इस पद्धति का मुख्य आधार स्त्रोत है। इसलिए पद्धति के अन्य पक्षों का अध्ययन करने से पूर्व हम स्त्रोत के अर्थ का अध्ययन करेंगे।

### स्त्रोत का अर्थ

इतिहास अतीत क घटनाओं तथा तथ्यों का सत्यापित अध्ययन है। अतीत में जो घटनायें घटित हुई हैं या जो तथ्य रहे हैं, उनका पता लगाना एक कठिन कार्य हैं क्योंकि जब ये घटनायें अथवा तथ्य घटित हुए तब हम जीवित नहीं थे, इसलिए इनका सही अध्ययन करने के लिए हम कुछ ऐसे अवशेष अभिलेख एवं अन्य

NOTES

ठोस प्रमाणों का सहारा लेकर ही सत्य ही ओर अग्रसित होते हैं। वर्तमान में रहने वाला इतिहासकार इस बात की सही जानकारी कैसे करे कि शताब्दियों पूर्व इस विश्व में क्या घटित हुआ था। यह बात वह अपनी कल्पना, लोकोक्तियों य कहानियों के आधार पर तो कहने से रहा, क्योंकि इतिहास एक वैज्ञानिक विषय है इसलिये अतीत की घटनाओं को वैज्ञानिक तरीके से तथा रूप में प्रस्तुत करना उसका कर्त्तव्य है। इसके लिये उसे उस समय के ठोस वैज्ञानिक तथा विश्वसनीय प्रमाणों को आधार मानकर घटनाओं की सत्यता ज्ञात करनी होती है। अतीत की घटनाओं की सत्यता की जाँच वह उन प्रतीकों की सत्यता ज्ञात करनी होती है। अतीत की घटनाओं की सत्यता की जाँच वह उन प्रतीकों तथा चिन्हों के आधार पर करता है जो अतीत द्वारा शेष छोड़े गये हैं। इन चिन्हों तथा प्रतीकों को ही इतिहास में स्त्रोत कहते हैं।

स्त्रोत की परिभाषा में देते हुए एस. बी. सी. ऐथा (S. B. C. Etha) ने लिखा है, "स्त्रोत अतीत की घटनाओं द्वारा छोड़े गये अवशेष हैं। माना कि इतिहास की घटनाएँ वास्तविक रूप में घटित होती हैं, किन्तु वे दीर्घ काल तक अपने वास्तविक स्वरूप में नहीं रह पाती हैं किन्तु इन घटनाओं द्वारा छोड़े गये अवशेष चिन्ह ही इन्हें वास्तविकता प्रदान करते हैं। इतिहास उन्हीं अवशेष चिन्हों पर कार्य करते हैं, और इन्हीं अवशेष चिन्हों की सहायता से अतीत की घटनाओं का ताकिर्क तथा क्रमबद्ध ज्ञान प्रस्तुत करते हैं।"

**स्त्रोतों का वर्गीकरण**—वैसे तो इतिहास द्वारा छोड़े गये शेष चिन्ह कई प्रकार के होते हैं और उन सबका वर्गीकरण करना कठिन अवश्य है, फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए हम उन्हें तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

1. पुरातात्विक स्त्रोत।
2. साहित्यिक स्त्रोत।
3. मौखिक परम्परायें।

इन तीनों ही प्रकार के स्त्रोतों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है—

1. **पुरातात्विक स्त्रोत (Archaeological Sources)**

इस वर्ग के अन्तर्गत हम अग्रलिखित स्त्रोंतो को शामिल करते हैं—

**(अ) स्मारक सम्बन्धी स्त्रोत (Monumental Sources)**—इतिहास द्वारा छोड़े गये प्राचीन भवन, खण्डहर, बर्तन, मूर्तियाँ, सिक्के आदि को इसमें शामिल करते हैं। भारत में नदी-घाटी सभ्यता का अध्ययन प्रमुख रूप से इसी स्त्रोत द्वारा किया जा रहा है।

**(ब) अभिलेख (Epigraphic Sources)**—प्राचीन समय में चट्टानों, पत्थरो, भवनों, दीवारों एवं शिलालेखों पर लिखे हुए लेख भी अतीत की घटनाओं का अध्ययन करने हेतु ठोस प्रमाण है। स्तम्भ तथा ताम्रपत्र इत्यादि इसी वर्ग में आते हैं।

NOTES

**(स) मौखिक स्त्रोत (Numilitic Sources)**—प्राचीन समय के सिक्के उस युग की विशेषताओं का ज्ञान कराते हैं। मुद्राओं से उस समय में धातु प्रचलन, लिपियों प्रतीक चिन्हों तथा काल इत्यादि की अच्छी जानकारी होती है।

**2. साहित्यिक स्त्रोत (Literary Sources)**

इस वर्ग के अन्तर्गत हम निम्नलिखित स्त्रोतों को सम्मिलित करते हैं—

**(अ) धार्मिक साहित्य (Religious Literature)**—इस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत हम धार्मिक ग्रन्थों को शामिल करते हैं। ये ग्रन्थ उस समय की धार्मिक स्थिति, धार्मिक मान्याताओं तथा धार्मिक विधियों के अलावा लोगों की आस्था, रहन-सहन, जीवन-दर्शन, जीवन-शैली का तो अध्ययन करते ही हैं, साथ ही ये धर्म-ग्रन्थ तत्कालीन राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। रामायण, रामचरितामानस तथा महाभारत इसके उदाहरण हैं।

**(ब) लौकिक साहित्य (Secular Literature)**—प्राचीन समय का ऐसा साहित्य जो किसी धर्म से सम्बन्धित नहीं हैं, लौकिक अथवा धर्म निरपेक्ष साहित्य कहलाता है। इस प्रकार के साहित्य को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

(i) **निजी साहित्य**—यह वह साहित्य है जिसकी रचना किसी व्यक्ति विशेष ने लेखक या कवि के रूप में की है, जैसे-कालिदास की शकुन्तला, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, पाणिनी का अष्टाध्यायी, बाबर की बाबरनामा, अबुल फजल का अकबरनामा आदि रचनायें इसी श्रेणी में आती हैं।

(ii) **सार्वजनिक साहित्य (Official Literature)**—सार्वजनिक साहित्य में अतीत में राजा, महाराजाओं या उनके अधिकारियों द्वारा जारी किये गये फरमान, आदेश, सनद, सन्धियाँ, पत्र तथा न्यायालय के निर्णय आदि को शामिल करते हैं।

**(स) विदेश प्रमाण साहित्य (Foreign Testimony)**—इस वर्ग के अन्तर्गत हम विदेशी यात्रियों, इतिहासवेत्ताओं, अनुसन्धानकर्ताओं आदि

NOTES

द्वारा प्रस्तुत विवरण आदि को शामिल करते हैं। इस सम्बन्ध में अलबरूनी, ह्वेनसांग, फाहियान, मैगस्थनीज तथा पेट्रोकिल्स के नाम विशेष रूप से लिया जा सकते हैं जिनहोंने भारतीय इतिहास का पर्याप्त विवरण दिया है।

3. **मौखिक परम्परायें (Oral Traditions)**

मौखिक परम्परायें भी इतिहास की अच्छी जानकारी देती हैं। कर्नल टाड द्वारा लिखित 'राजस्थान का इतिहास' मुख्यत: मौखिक परम्पराओं पर आधारित है। ऐतिहासिक महत्त्व की कई बातें या तो परम्परायें बन जाती हैं या लोक-कहानियों तथा रीति-रिवाजों का अंग बन जाती हैं। ये कम-से-काम स्थानीय इतिहास की जानकारी के तो बड़े ही उपयोगी स्त्रोत हैं।

कुछ विद्वानों ने स्त्रोतों को दूसरे प्रकार से वर्गीकृत किया है। इनके अनुसार स्त्रोत दो प्रकार के होते हैं—

(1) मौलिक स्त्रोत

(2) सहायक स्त्रोत

भवन, सिक्के, नगर-योजनायें, स्मारक, अवशेष, मूलरूप में आज्ञा-पत्र, फरमान, पत्रादि समस्त मौलिक स्त्रोत हैं, किन्तु ग्रन्थ, कहानियाँ, विवरण, जीवन-चरित्र आदि सभी सहायक या गौण स्त्रोत की श्रेणी में आते हैं।

## स्त्रोतों का प्रयोग कब ?

स्त्रोतों का प्रयोग कब किया जाय ? यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। वैसे इतिहास के अध्ययन के प्रत्येक अवसर पर इनका प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु जहाँ तक इतिहास-शिक्षण का प्रश्न है, स्त्रोतों का प्रयोग हम पाठोपस्थान, पाठ के विकास एवं शिक्षण की समापन अवस्था पर कर सकते हैं।

(1) **प्रारम्भ में—**इतिहास के पाठ (प्रकरण) का शिक्षण शुरू करने से पूर्व पाठोपस्थान या प्रस्तावना स्तर पर किया जा सकता है। इस स्तर पर स्त्रोतों का प्रयोग छात्रों के पूर्व ज्ञान का पता लगाने, छात्रों में जिज्ञासा तथा रुचि जाग्रत करने तथा कक्षा के वातावरण को इतिहास-शिक्षण वेह लिए उपयुक्त बनाने के लिए किया जा सकता है।

(2) **पाठ का विकास—**पाठ के विकास की अवस्था में ऐतिहासिक स्त्रोतों का प्रयोग और भी अच्छी प्रकार किया जा सकता है। इस स्तर पर स्त्रोतों का प्रयोग विषय-वस्तु को बोध-गम्य बनाने, शिक्षण को प्रभावी बनाने, छात्रों के

ध्यान को बनाये रखने, छात्रों को नया ज्ञात देने तथा छात्रों की जिज्ञासा शान्त करने के लिए किया जा सकता है।

**(3) पाठ के समापन पर**—पाठ को पूरा कर लेने के उपरान्त ऐतिहासिक स्त्रोतों का प्रयोग पुनरावृत्ति, ज्ञान के दृढ़ीकरण, सार-लेखन तथा गृह-कार्य हेतु किया जा सकता है। इस स्तर पर इनका प्रयोग प्रतिभावना छात्रों के लिये अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी रहता है।

NOTES

### स्त्रोत विधि के गुण (Merits of Source Method)

इतिहास-शिक्षण की स्त्रोत पद्धति में नीचे लिखे गुण या उपयोगितायें हैं—

1. यह पद्धति इतिहास का व्यावहारिक तथा वास्तविक ज्ञान प्रदान करती है।
2. यह पद्धति इतिहास-शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करती है।
3. यह पद्धति छात्रों की जिज्ञासा बढ़ाने एवं जिज्ञासा शान्त करने के लिए उत्तम है।
4. यह पद्धति छात्रों को इन्द्रिय-ज्ञान देती है। वे विभित्र साक्ष्यों को देखकर, छूकर तथा पढ़कर उसके सम्बन्ध में वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर सकते है।
5. यह पद्धति शिक्षण को रोचक तथा प्रभावी बनाती है।
6. यह पद्धति छात्रों की सक्रियता बढ़ाती है। वे निष्क्रिय श्रोतामात्र नहीं रहते है।
7. यह पद्धति शिक्षण की परम्परागत शिक्षण विधियों (भाषण तथा पाठ्य-पुस्तक पद्धति) के दोषों को दूर करती हैं।

### स्त्रोत पद्धति के दोष (Demerits of Source Method)

स्त्रोत पद्धति इतिहास-शिक्षण की एक प्रमुख पद्धति है। इसमें इतिहास-शिक्षण को प्रभावी बनाने के कई गुण हैं, किन्तु साथ-ही-साथ इस पद्धति में कुछ कमियाँ भी नजर आती हैं जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

1. यह पद्धति समय अधिक लेती है।
2. अध्यापक के लिए पर्याप्त स्त्रोतों की व्यवस्था करना न केवल कठिन ही है अपितु खर्चीला भी है। सभी विद्यालय स्त्रोतों की व्यवस्था नहीं कर पाते हैं।
3. छात्र विभित्र स्त्रोतों तथा घटनाओं में सम्बन्ध स्थापित करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

4. हर कोई अध्यापक इस पद्धति का प्रयोग नहीं कर सकता है। इस पद्धति का प्रयोग केवल निपुण अध्यापक ही कर सकते है।

5. छात्रों को भाषा सम्बन्धी कठिनाई आ सकती है। जिस समय का स्त्रोत है उस समय भी भाषा आजकल के छात्रों की समझ में नहीं आती है।

6. यह पद्धति छोटी कक्षाओं में इतिहास पढ़ाने हेतु उपयुक्त नहीं है। इसका प्रयोग माध्यमिक कक्षाओं से ही प्रारम्भ किया जा सकता है।

7. भारत जैसे देश में जहाँ सम्पूर्ण शिक्षा-प्रणाली परीक्षा-केन्द्रित है, यह पद्धति अधिक अनुकूल नहीं है।

**कुल सुझाव (Some Suggestions)**

स्त्रोत पद्धति का प्रयोग करते समय नीचे लिखे सुझावों को ध्यान में रखना चाहिये –

1. इस पद्धति का प्रयोग छोटी कक्षाओं में न किया जाए।
2. उपलब्ध स्त्रोत की शिक्षक पहले ही अच्छी जानकारी कर ले।
3. इसका प्रयोग निपुण अध्यापक ही करे।
4. इसके साथ अन्य पद्धतियों का भी प्रयोग किया जाए।
5. स्त्रोतों का प्रयोग बड़ी सावधानी से करना चाहिये।

उपर्युक्त सुझावों को ध्यान में रखकर यदि हम इतिहास-शिक्षण हेतु स्त्रोत पद्धति का प्रयोग करते हैं तो यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यह पद्धति इतिहास-शिक्षण के लिए अति उत्तम है।

## 2. योजना पद्धति (PROJECT METHOD)

विभित्र शिक्षण-पद्धतियों में योजना-पद्धति सबसे अधिक विवादग्रस्त एवं प्रचलित पद्धति है। योजना पद्धति का जन्म दार्शनिक विचारधाराओं के प्रयोजनवादी सम्प्रदाय (Pragmatic School) के प्रयासों के परिणामस्वरूप हुआ। योजना पद्धति को शिक्षा के क्षेत्र में और विशेष रूप से सामाजिक विषयों के शिक्षण के क्षेत्र में लाने का श्रेय प्रमुख प्रयोजनवादी तथा शिक्षाशास्त्री जान ड्यूवी (John Dewey) को है।

योजना पद्धति को समझने के लिए पहले 'योजना' का अर्थ जानना जरूरी है। 'योजना' की विभित्र विद्वानों ने पृथक्-पृथक् परिभाषाएँ दी है, किन्तु किलपैट्रिक तथा स्टीवेन्सर द्वारा दी गयी परिभाषाएँ वर्तमान समय से अधिक प्रचलित हैं। डॉ.

डब्ल्यू. एच. किलपैट्रिक योजना की परिभाषा देते हुए कहते हैं, "योजना एक ऐसी सोद्देश्य क्रिया है, जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण तन्मयता के साथ सम्पत्र की जाती है।" इस परिभाषा को और अधिक स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हुए जे. ए. स्टीवेन्सन ने लिखा है, "योजना एक ऐसा समस्यात्मक कार्य है, जो प्राकृतिक व्यवस्थाओं में पूरा किया जाता है।"

NOTES

प्रारम्भिक अवस्था में योजना पद्धति कक्षा के बाहर किये गये कार्यों तक ही सीमित थी, किन्तु वर्तमान कक्षा के बाहर एवं अन्दर के समस्त कार्य इस पद्धति से होने लगे हैं। अब योजना का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक बना दिया गया है और सम्पूर्ण शिक्षण-कार्य वास्तविक एवं प्रयोगात्मक अवस्थाओं में सम्पत्र किया जाता है। अवस्थाओं को वास्तविक एवं प्रयोगात्मक बनाने के लिए सदैव ध्यान में सम्पत्र किया जाता है। अवस्थाओं को वास्तविक एवं प्रयोगात्मक बनाने के लिए सदैव ध्यान में रखा जाता है। दूसरे शब्दों में योजना केवल उन्हीं अवस्थाओं के लिए बनायी जाती है, जो व्यावहारिक तथा वास्तविक होती हैं, जैसे—साइकिल-स्टैण्ड बनाना, पार्सल से माल मँगाना इत्यादि।

**योजनाओं के प्रकार (Types of Projects)**

योजनाएँ चार प्रकार की हो सकती हैं—

1. **उत्पादक-योजनाएँ (Producer's Type Projects)**—वे योजनाएँ जिनमें छात्र कुछ उत्पादन-कार्य करें, उत्पादक योजनाएँ कहलाती है। इस प्रकार की योजनाओं में हम मकान बनाना, बाग लगाना आदि योजनाएँ शामिल करते हैं।
2. **उपभोक्ता योजनाएँ (Consumers' Type Projects)**—कुछ योजनाएँ ऐसी होती हैं, जिनसे छात्र कुछ प्राप्त करता है, कुछ अनुभव लेता है, कुछ सीखता है अथवा मनोरंजन करता है। इस प्रकार की योजनाओं में हम यात्रा करने की योजना, दावत की योजना, नाटक की योजना आदि योजनाएँ सम्मिलित करते हैं।
3. **समस्या-योजनाएँ (Problem Type Projects)**—इस प्रकार की योजनाओं में नवीन अनुभव प्रदान करने वाली योजनाओं की व्यवस्था नहीं की जाती है, वरन् ये योजनाएँ पूर्वानुभवों के दृढ़ीकरण के लिए अपनायी जाती हैं। यहाँ हम पुनः उसी ज्ञान को सीखते हैं, जिसे हम पहले ही अन्य किसी योजना के माध्यम से सीख चुके हैं।

**सामाजिक विज्ञान शिक्षण में योजना पद्धति (Project Method is Social Science Teaching)**—अब तक के विवेचन से योजना पद्धति का रूप पर्याप्त मात्रा में स्पष्ट हो जाता है। नीचे हम अध्ययन करेंगे कि योजना पद्धति से सामजिक

NOTES

विज्ञान विषय का शिक्षण किस प्रकार किया जात सकता है। समस्या निर्माण करने का कार्य बड़ी सावधानी से किया जाता है। समस्या-निर्माण इस विधि से किया जाता है कि समस्या कृत्रिम तथा काल्पनिक मालूम न होकर वास्तविक एवं सजीन मालूम पड़े। कभी-कभी एक साथ ही अनेकों समस्याओं का निर्माण कर लिया जाता है और उनमें से कोई एक सर्वोत्तम समस्या चुन ली जाती है। समस्या का चयन हो जाने के उपरान्त योजना का कार्याविन्त करने की व्यवस्था की जाती है। यहाँ पर हम अपनी योजना को पूरी करने की योजना बनाते हैं। इसी योजना के अन्तर्गत हम अपनी कार्य-विधि का निर्धारण करते हैं। तदोपरान्त योजना को कार्याविन्त किया जाता है। योजना का यह प्रमुख सोपान है। कार्य की समाप्ति पर योजना का मूल्यांकन किया जाता है और अन्त में छात्र अपने कार्यों का लिखित रूप मर्र्व लेखा प्रस्तुत करते है। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान शिक्षण की योजना में निम्नांकित छः सोपान होते हैं।

1. परिस्थिति का निर्माण
2. योजना का चुनाव
3. समस्या की योजना बनाना
4. कार्य का मूल्यांकन
5. योजना का कार्यान्वित करना
6. लेखा-प्रस्तुतीकरण

सामाजिक विज्ञान विषय हमें योजना पद्धति अपनाने के कई अवसर प्रदान करता है। इन्हीं अनेक अवसरों में से हम एक अति सुन्दर उदाहरण ले सकते हैं। यह सर्वविदित है कि भारतीय माध्यमिक विद्यालयों की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब है। इस तथ्य के आधार पर हम कई व्यावहारिक तथा वास्तविक समस्याएँ खड़ी कर सकते है। उदाहरण के लिए हम समस्या ले सकते हैं कि छात्र-संघ के लिए पृथक कक्ष के निर्माण हेतु अर्थाभाव को कैसे दूर किया जाए। इस समस्या के समाधान के लिए योजना बनायी जा सकती है और उसको नाम दिया जा सकता है, "छात्र-संघ के कक्ष के निर्माण हेतु धन संग्रह करना।" समस्या-निर्माण के पश्चात् छात्रों के अनेक दल बना दिये जायेंगे। प्रत्येक दल को समाज का एक-एक समूह दे दिया जायेगा, प्रत्येक दल अपने सामाजिक समूह का अध्ययन करेगा और अपने समूह की चन्दा देने वाली, उपकारी तथा सामाजिक संस्थाओं का पता लगायेगा, दल चन्दा प्राप्त करने के विभिन्न साधनों का पता लगायेगा। तदोपरान्त प्रत्येक दल अपने लिए निर्धारित सामाजिक समूह में जायेगा और चन्दा प्राप्त करने की चेष्टा करेगा। बाद में छात्र हिसाब लगाकर शुद्ध आय का पता लगायेंगे और अन्त में, छात्र

अपने अनुभवों को लिखकर लेखा प्रस्तुत करेंगे। इस योजना से छात्र बहुत कुछ सीखे सकते हैं। उनमें उत्तरदायित्व ग्रहण करने तथा निर्णय लेने की शक्ति का विकास होगा तथा वे समाज-संगठन और सामाजिक संस्थाओं का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे।

NOTES

समाज तथा सुमदाय हमें सामाजिक विज्ञान पढ़ने हेतु अनेक योजनाओं का चयन करने के अवसर प्रदान करते हैं। विद्यालय में पढ़ाये गये कई सामाजिक गुणो का अभ्यास इन योजनाओं के माध्यम से छात्र कर सकते हैं। स्व-सरकार (Self-government) भी वास्तव में सामाजिक विज्ञान की ही एक योजना है। इसके माध्यम से छात्रों में आदर्श नेतृत्व का विकास होता है, उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती है, शासन-प्रणाली का ज्ञान होता है तथा जनतन्त्र के सिद्धान्तों एवं तत्त्वों से वे अवगत होते हैं। यहाँ पर हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि छात्रों में विभित्र सामाजिक गुणों का विकास करना केवल सामाजिक विज्ञान विषय का ही कार्य नहीं है हालाँकि यह सत्य है कि इन गुणों का विकास सामाजिक विज्ञान विषय द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

सामाजिक गुणों के विकास के लिए किसी सामान्य योजना से काम नहीं चलेगा।

इन गुणों के विकासार्थ हमें अत्यन्त सोच-समझकर अच्छी योजनाएँ बनानी पड़ेगी। एक अच्दी योजना में अनेकों विशेषताएँ होती हैं। नीचे इनका हम अध्ययन करेंगे—

### अच्छी योजनाओं की विशेषताएँ (Characteristics of Good Project)

एक अच्छी योजना में निम्नांकित विशेषज्ञताएँ होती हैं—

1. अच्छी योजना व्यावहारिक एवं वास्तविक होती है। योजना के अन्तर्गत चुनी गयी समस्या ऐसी हो, जिस पर सरलता से प्रयोग किया जा सके। समस्या पूर्णरूपेण सैद्धान्तिक नहीं होनी चाहिए।
2. अच्छी योजना में उपयोगिता नहीं होती है। उपयोगिता के अभाव में योजना कभी भी अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकती है।
3. भारतीय दृष्टिकोण से योजना मितव्ययी होनी चाहिए।
4. अच्छी योजना हमेशा छात्रों के पूर्वानुभवों पर आधारित होती है तथा वह छात्रों को नये-नये अनुभव प्रदान करती है।
5. अच्छी योजना छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होती है।

NOTES

### योजना पद्धति के गुण (Merits of the Project Method)

व्यावहारिक शिक्षा की दृष्टि से योजना पद्धति अत्यन्त गुणवान पद्धति है। योजना पद्धति में सामान्यत: निम्नांकित गुण पाये जाते हैं—

1. योजना पद्धति क्रियाशीलता, उपयोगिता, वास्तविकता एवं स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण अधिक मनोवैज्ञानिक होती है।
2. योजना पद्धति में सभी क्रियाएँ सोद्देश्य होती है। फलत: यहाँ छात्र अधिक लगन के साथ कार्य करते है।
3. योजना पद्धति छात्रों को व्यावहारिक तथा प्रयोगात्मक ज्ञान प्रदान करती है।
4. यह पद्धति 'करके सीखने' के सिद्धान्त पर आधारित है।
5. योजना पद्धति व्यक्तिगत विभित्रता के सिद्धान्त को स्वीकार करती है। इसलिए यह प्रत्येक छात्र को अपना विकास करने के समान अवसर प्रदान करती है।
6. पद्धति में शारीरिक तथा मानसिक क्रियाओं का सुन्दी समन्वय होने के कारण यह पद्धति अधिक रोचक होती है।
7. योजना पद्धति थार्नडाइक के सीखने के तीन महान् सिद्धान्तों पर आधारित है। थार्नडाइक का पहला सिद्धान्त है 'प्रभाव का सिद्धान्त' (Law of effect)। सीखने में प्रभावों का होना जरूरी है। सीखने में सन्तोष एवं सफलता मिलनी चाहिए। पद्धति में शारीरिक कार्य होने के करण छात्रों को स्थूल रूप में सफलात प्राप्त होती है, जो छात्रों को सन्तोष प्रदान करती है। सफलता एवं सन्तोष योजना पद्धति के प्रभाव हैं। इस तरह यह पद्धति थार्नडाइक के प्रभाव के नियम पर आधारित है। थार्नडाइक का दूसरा सिद्धान्त तत्परता का सिद्धान्त (Law of Readiness) है। इस सिद्धान्त के अनुसार छात्रों के सम्मुख विषय-वस्तु प्रस्तुत करने से पूर्व छात्रों को विषय-वस्तु ग्रहण करने हेतु पूरी तरह तैयार कर लेना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में छात्रों को पहले से ही ज्ञात होना चाहिये कि उन्हें क्या सीखना है। योजना में छात्रों को पहले से ही ज्ञात रहता है कि उन्हें क्या करना है। तीसरा सिद्धान्त अभ्यास का सिद्धान्त (Law of exercise) है। योजना पद्धति छात्रों को अभ्यास करने के कई अवसर प्रदान करती है।
8. योजना पद्धति में छात्रों में सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता तथा पारस्परिक प्रेम की भावना जाग्रत होती है। इस प्रकार के सद्गुण जनतन्त्र की

सफलता के लिये अत्यन्त जरूरी होते है। योजना पद्धति हमें जनतन्त्रात्मक जीवन व्यतीत करना सिखाती है।

9. योजना पद्धति शारीरिक श्रम के महत्त्व का ज्ञान कराती है।

10. योजना पद्धति छात्रों को पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान करनी है।

NOTES

## योजना पद्धति के दोष (Demerits of the Project Method)

उपर्युक्त गुणों के होते हुए भी योजना पद्धति पूर्णरूपेण दोषमुक्त नहीं हैं। योजना पद्धति में अनेक गम्भरी दोष पाये जाते हैं। इन दोषों में अग्रांकित दोष उल्लेखनीय हैं—

1. योजना पद्धति शिक्षण की एक अत्यन्त जटिल एवं यान्त्रिक पद्धति है, फलतः यह पद्धति कष्टसाध्य है। प्रत्येक छात्र इस पद्धति से सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है।
2. इस पद्धति से अधिकांश ज्ञान अव्यवस्थित, शृंखलाविहीन तथा अक्रमबद्ध रूप में प्राप्त होता है।
3. योजना पद्धति के अन्तर्गत धन की अधिक मात्रा में जरूरत पड़ती है।
4. सामाजिक विज्ञान विषय की सम्पूर्ण विषय-वस्तु का शिक्षण इस पद्धति से नहीं किया जा सकता है।
5. यह पद्धति अध्यापक के महत्त्व एवं स्थान को कम कर देती है।
6. योजना पूरी करने में काफी श्रम तथा समय की आवश्यकता पड़ती है।
7. योजना के संचालन हेतु पर्याप्त अनुभवी एवं कुशल अध्यापकों की आवश्यकता पड़ती है।
8. योजना निर्माण में छात्रों की क्षमताओं के गलत मूल्यांकन का डर रहता है।
9. निर्धारित समय में योजना पूरी करने की शर्त कभी-कभी योजना को अपने भूल उद्देश्यों से विचलित कर देती है।
10. शिक्षा के उच्च स्तर पर योजनाएँ सफल नहीं रहती है।

## कुछ सुझाव (Some Suggestions)

योजना पद्धति से पढ़ाते समय अध्यापक को निम्नांकित सुझांवों को ध्यान में रखना चाहिए—

**NOTES**

1. योजना का चुनाव छात्रों के अनुकूल हो,
2. योजना का प्रस्तुतीकरण वास्तविक एवं व्यावहारिक हो,
3. अनुभवी एवं योग्य अध्यापकों को व्यवस्था की जाए,
4. योजना ऐसी हो जिसमें छात्र संलग्नता से कार्य कर सके,
5. योजना उपयोगी तथा उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए,
6. योजना प्रारम्भ करने के पूर्व योजना सम्बन्धी सभी आवश्यक तैयारियाँ कर लेनी चाहिए,
7. जहाँ तक सम्भव हो, सामाजिक तथा प्राकृतिक वातावरण बनाया जाए,
8. योजना को अधिक-से-अधिक मितव्ययी बनाने की जेष्टा करनी चाहिए।

**परीक्षापयोगी प्रश्न**

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—**

1. व्याख्यान पद्धति की विस्तृत विवेचना कीजिए।
2. वाद-विवाद पद्धति का संचालन कैसे होता है ? इसके गुण-दोष भी बताइए।
3. स्रोत पद्धति का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

**लघु उत्तरीय प्रश्न—**

1. योजना पद्धति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. स्रोत पद्धति के दोष संक्षेप में लिखिए।
3. समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

# 12 सामाजिक विज्ञान शिक्षण की उपकरण एवं तकनीकियाँ

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के तरीके
- सिमुलेशन विधि
- प्रयोगशाला विधि
- प्रश्न और उत्तर विधि
- चर्चा विधि
- नाटकीय रूपांतर विधि
- सामाजिक अध्ययन में शिक्षण के लिए संसाधन
- पाठ्यपुस्तक तथा समाचार पत्र
- संसाधन केन्द्र
- दृश्य-श्रव्य उपकरण
- चॉक बोर्ड
- परीक्षा पयोगी प्रश्न

**उद्देश्य—** इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के तरीके
- सिमुलेशन विधि
- प्रयोगशाला विधि
- प्रश्न और उत्तर विधि
- चर्चा विधि
- नाटकीय रूपांतर विधि
- सामाजिक अध्ययन में शिक्षण के लिए संसाधन
- पाठ्यपुस्तक तथा समाचार पत्र
- संसाधन केन्द्र
- दृश्य-श्रव्य उपकरण
- चॉक बोर्ड

## प्राक्कथन

पिछले एक दशक से सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम सामग्री और कार्यप्रणाली में बदल गया है। संस्कृति की मान्यता, विभिन्न जातीय समूहों के अंतर सीधे सामग्री प्रभावित और सामाजिक अध्ययन के लिए दृष्टिकोण गया है। सामाजिक अध्ययन की प्रकृति है कि यह एक अध्ययन जहाँ मनुष्य के स्वभाव ध्यान के अपने प्रमुख केंद्रीय ध्यान केंद्रित है सामाजिक अध्ययन इसलिए प्रासंगिक ज्ञान मूल्यों तथा कौशल है कि आदमी की व्यापक क्षेत्र का गठन चारों ओर अपनी सामग्री आयोजन करता है। विषय भी हमारे युवा और समारोह मुख्य सामाजिक शिक्षा के लक्ष्यों कि जोर देने के लिए पहचान की गई है की दिशा में प्रगति को बढ़ावा देने के साधन के रूप मेलजोल के लिए अपनाया एक मुख्य विषय के रूप में देखा गया है—नागरिक कर्त्तव्यों या नागरिकों की भागीदारी कौशल के विकास वांछनीय व्यवहार के अधिग्रहण तथा मूल्यों, अनुशासित जीवन आदिसामाजिक अध्ययन इसलिए जाना नामुमकिन है, के स्तर का एक कवर करने के लिए चाहता है पर निर्भर करता है। इसके दायरे क्या विभिन्न घटक सामग्री के पहलुओं सामाजिक अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सबसे ज्यादा मूल्यवान होगा की ''दृढ़ संकल्प सम्मिलित है। इसलिए यह स्पष्ट है कि सामाजिक अध्ययन अपने स्वभाव से एक गतिशील अनुशासन जो चौड़ा है और उम्मीद नहीं की जा सकती है अति सुंदर और ज्ञान के हस्तांतरण की आवश्यकता होती है कुछ निर्देशात्मक रणनीतियों भिन्न सीमाओं का होना आवश्यक। गुंजाइश निश्चित रूप से सामग्री और कार्यप्रणाली में दोनों तत्काल और दूर पर्यावरण को सम्मिलित किया गया। सामाजिक अध्ययन शिक्षक सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के लिए अपने दृष्टिकोण में दक्षता प्राप्त करने के लिए की सम्मिलित है। ये competences सामग्री क्षमता शामिल हैं; शिक्षार्थी और क्षमता निर्देशात्मक रणनीतियों की विविधता के उपयोग में तथा क्षमता अनुदेश का मूल्यांकन करने में करने के लिए सामग्री को प्रसारित करने में दक्षता। शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया कुछ तरीकों और अनुदेशात्मक संसाधनों के उपयोग के माध्यम से सार्थक शिक्षण बढ़ाने के साधन सम्मिलित है।

## शिक्षण सामाजिक अध्ययन के 3.2. तरीके

शिक्षण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक है कि व्यक्ति की शिक्षा को प्रभावित करने के इरादे से अन्य मनुष्य के साथ सूचना का आदान प्रदान है। यह शिक्षक और शिक्षार्थियों के मध्य परस्पर क्रिया है। शिक्षण के रूप में एक उपयोगी तथा व्यावहारिक कला अंतर्ज्ञान, रचनात्मकता, कामचलाऊ व्यवस्था और अभिव्यक्ति के लिए कहता है।

,हालांकि कई शिक्षण विधियों और एकीकृत सामाजिक अध्ययन के साथ जुड़े तकनीक है, वहाँ जो समस्त सीखने स्थितियों फिट बैठता शिक्षण का कोई एक तरीका है। सामाजिक अध्ययन के एक शिक्षक शिक्षण विधियों में नवाचारों से अवगत हो गया है। आदेश प्रभावी होने के लिए, सामाजिक अध्ययन के एक शिक्षक जानकार का एक स्रोत है, तथा एक गाइड, सीखने के लिए अवसरों के एक आयोजक और एक मनुष्य जो निम्नलिखित शिक्षण साधनों का उपयोग, दूसरों के मध्य प्रभावी शिक्षण के लिए किसी भी वातावरण को प्रोत्साहित कर सकते हैं, उपलब्ध हो गया है सामाजिक अध्ययन शिक्षकों को।

NOTES

## 1. सिमुलेशन विधि

यह एक वास्तविक दुनिया की स्थिति का एक सरलीकृत मॉडल है। सिमुलेशन सामान्य पर शिक्षण अवधारणाओं और सिद्धांतों कि नहीं आसानी से सैद्धांतिक अवधारणाओं के रूप में मानने योग्य हैं के लिए प्रयोग किया जाता है। वे हमारे अतीत तथा वर्तमान समाज में विचारों, समस्याओं, मुद्दों और वास्तविकताओं को प्रस्तुत करने का गतिशील और जीवन तरीके हैं। सिमुलेशन लैटिन शब्द "Similis" जिसका अर्थ है, की तरह कार्य करने के लिए, समान से आता है। इसलिए यह उम्मीद है इस विधि के द्वारा एक स्थिति बना दिया जाएगा जैसे कि वे वास्तविक जीवन कर रहे हैं, जिसमें गतिविधियों प्रस्तुत कर रहे हैं।

सिमुलेशन तरीकों के तीन मुख्य प्रकार होते हैं। इन ऐतिहासिक सिमुलेशन, सिमुलेशन गतिविधियों और सिमुलेशन खेल से मिलकर बनता है। ऐतिहासिक सिमुलेशन dramatizations जिसमें, अतीत की घटनाओं राहत कर रहे हैं तथा वास्तविक पात्रों का चित्रण कर रहे हैं। उदाहरण पहले स्वतंत्रता दिवस पर नाइजीरिया ध्वज के उत्थापन, एक Oba के लोग खुश अथवा एक एमिर के truanting सम्मिलित हैं।

सिमुलेशन गतिविधियों व्यावहारिक अभ्यास जिसमें छात्रों भूमिका निभाते हैं अथवा काम करते हैं क्या वास्तव में संगठन जैसे विधानसभा, इकोवास बैठक, OAU बैठक, बैंक आदि सिमुलेशन खेल अथवा अनुदेशात्मक खेल का एक नकली राज्य घर का एक अवसर में होता है शैक्षिक उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है शामिल हैं।

वे गतिविधियों है कि सम्मिलित नियम, प्रतियोगिताओं और खिलाड़ी हैं। खेल के अंत में खिलाड़ियों द्वारा किए गए निर्णय से संयोग से कम और अधिक निर्धारित होते हैं। इस तरह सिमुलेशन खेल व्यावसायिक तौर पर बेचा बोर्ड-खेल कर रहे हैं, जिनमें से ''एकाधिकार'' बहुत सामान्य है।

NOTES

अन्य खेल जो मॉडल सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक घटनाओं रहे हैं, लेकिन ''एकाधिकार'' के विकास व संपत्तियों की किराये पर, खरीदने के अनुकरण है। अन्य खेल है कि आर्थिक संचालन अनुकरण कर सकते हैं, चुनाव प्रक्रियाओं, ऐतिहासिक युद्धों, लघु शेयर बाजार संचालन, कैरियर विकल्प इत्यादि कर रहे हैं।

इस बात का सबूत है कि इन खेलों के शिक्षार्थियों के नजरिए से निपटने में प्रभावी रहे हैं लगता है। सिमुलेशन अत्यधिक छात्रों को प्रेरित करने होते हैं तथा वे जब वे उपयोग किया जाता है में वृद्धि हुई ब्याज के बारे में लाने के लिए। वे शिक्षण कौशल जैसे युद्ध रणनीतियों में किया गया है। वे समूह (रों) एक सामान्य और साझा अनुभव है कि अधिक सार्थक और प्रभावी सीखने बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता के साथ खेल में सम्मिलित हैं। विषय है कि बहुत मुश्किल या सार जैसे नैतिकता, लोकतंत्र, देशभक्ति, followership, नेतृत्व, संघर्ष पूर्वाग्रह आदि देखने अगर अनुकरण गतिविधियों के द्वारा प्रदर्शन किया समझा जा सकता है।

है कि यह समय के एक महान सौदा लेता है द्वारा छात्रों को बहुत शोर है, उच्छृंखल होने के लिए और कभी कभी नियंत्रण करने के लिए बहुत मुश्किल साबित करते हैं अनुकरण पद्धति का उपयोग करके शिक्षक बारे में पता होना चाहिए। छात्र इसलिए तैयार किया तथा कैसे अनुकरण गतिविधियों के समय खुद को संचालन करने के लिए पर प्रबुद्ध किया जाना चाहिए।

यह शिक्षक तथा पाठ्यक्रम के गतिविधियों के मूल्य और प्रासंगिकता की स्थापना से पर्याप्त तैयारी मांग करती है।

## 2. प्रयोगशाला विधि

सामाजिक अध्ययन में प्रयोगशाला विधि स्रोत सामग्री, अनुपूरक संदर्भ, यात्रिक उपकरणों, दृश्य-श्रव्य एड्स और अनेक अन्य जीवन की तरह की गतिविधियों के रोजगार पाठ्यपुस्तक निर्देश के पूरक के लिए और प्रस्तुति और महारत की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए सम्मिलित है।

शिक्षण की प्रयोगशाला मोड एक विशेष स्थान अथवा एक विशेष वर्ग की अवधि का उल्लेख नहीं है, लेकिन एक गतिविधि के लिए। गतिविधि एक नियमित रूप से कक्षा में हो सकता है, कक्षा के बाहर अथवा एक विशेष रूप से डिजाइन कमरे में। इस पद्धति में नोट करना महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि छात्रों को शिक्षक के निर्देशन में ठोस वस्तुओं, उपकरण, आदि में हेरफेर है।

चूंकि दोनों प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में सामाजिक अध्ययन के शिक्षण इकाइयों में किया जाता है, प्रयोगशाला विधि ज्ञान व कौशल के आवेदन के लिए अवसर प्रदान करता है। इस विधि के लाभ पूरी तरह से सुविधाओं की कमी और उपकरणों के लिए इस विधि के प्रभावी उपयोग के लिए जरूरी की वजह से नहीं किया जा सकता है। इस विधि सामाजिक अध्ययन में लगभग सभी विषयों के लिए उपयोग किया जा सकता है। साक्षात्कार तथा मुद्दों पर विचार विमर्श के वीडियों टेप पर दर्ज किया जा सकता है और वापस वर्ग के लिए खेला जा।

### 3. जांच विधि

पूछताछ या खोज विधि द्वारा स्वयं जानकारी पता लगाने के लिए भिन्न-भिन्न सोच को प्रोत्साहित करती है की अनुमति देता है छात्रों और यह तार्किक मामलों की जांच में छात्रों के उत्साह पैदा करता है। जांच विधि की प्रक्रिया आदेश संभव समाधान पर पहुँचने के लिए और समाधान का उपयोग कर सामान्यीकरण करने में एक समस्या की पहचान, इन जानकारी का विश्लेषण सम्मिलित है। छात्र देश में ईंधन की कमी, बिजली की विफलता, कुछ माल की कमी आदि जाँच तकनीक का एक बहुत वांछनीय पहलू सोच के उच्च स्तर के उपयोग पर जोर देने के है के लिए कारणों का पता लगाने के लिए जरूरी हो सकता है।

### 4. परियोजना विधि

एक परियोजना अपने अंतिम उत्पाद के लिए अथवा छात्रों के एक समूह द्वारा एक व्यक्ति के छात्र के माध्यम से किया जा सकता है एक व्यक्ति के छात्र की परियोंजना से भी ज्यादा बड़ा कुछ का उत्पादन करने वाले सह-संचालन। परियोजना विधि ठोस काम करने सम्मिलित है और यह आत्म प्रेरित है।

परियोजना विधि शिक्षक द्वारा अत्यंत सावधान योजना की आश्यकता है लेकिन उद्देश्य छात्रों के लिए एक बुद्धिमान ढंग से उसकी जानकारी समन्वय, जानकारी के समस्त स्रोतों छात्रों के लिए उपलब्ध का उपयोग पाने के लिए है। ''सीखने सीखने के लिए'' करने के लिए मौलिक है।

सामाजिक अध्ययन में क्षेत्रों के उदाहरण जहाँ परियोजनाओं क्रियान्वित किया जा सकता है, एक समूह कहानी लिखने की व्याख्या तथा नक्शे के निर्माण, एक घटना जैसे शादी या स्थापना समारोह के लिए एक एल्बम का निर्माण सम्मिलित है। परियोजना विधि भी ''मनुष्य और अपनी मान्यताओं'', ''राष्ट्र

NOTES

के निर्माता'' आदि शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शन और छात्रों जो सामाजिक अध्ययन में अवधारणाओं को स्पष्ट करने में सहायता कर सकते प्रेरित करने के लिए है जैसे विषयों के लिए उपयोग किया जा सकता है। एक परियोजना छात्रों को हतोत्साहित करने के लिए मुश्किल नहीं होना चाहिए और इसे पूर्ण करने के लिए ज्यादा समय नहीं लेना चाहिए।

**5. प्रदर्शनों**

प्रदर्शनों निश्चित घटना का वर्णन करने के लिए डिजाइन की योजना बनाई कामों की श्रृंखला की पुनरावृत्ति कर रहे हैं। प्रदर्शनों छात्रों अथवा शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रदर्शन के उपयोग के बारे में कुछ जानकारी स्पष्ट करना है।

प्रदर्शन भी कुछ ज्वलंत चित्र पेश करके अध्ययन के लिए एक निश्चित विषय शुरू करने के लिए उपयोग किया जा सकता। यह या तो सामाजिक अध्ययन में शिक्षा की एक इकाई के लिए प्रारंभिक बिंदु के रूप में अथवा एक ठासे निष्कर्ष प्रदान करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता।

प्रदर्शन के कई फायदे सामाजिक अध्ययन उपकरणों की कमी है, खासकर जब कर रहे है, विषय इस तरह के एक निश्चित जनजाति के ड्रेसिंग के मोड़ संगीत, नृत्य आदि के रूप में सांस्कृतिकद पैटर्न की तरह प्रभावी तरीके से प्रदर्शन द्वारा सिखाया जा सकता है।

एक अच्छा सामाजिक अध्ययन शिक्षक सावधानी से योजना बनाई प्रदर्शनों के द्वारा कर सकते हैं वह किसी अन्य विधि के माध्यम से कर सकता है की तुलना में छात्रों की एक बड़ी संख्या को पढ़ाने। यह शिक्षण घंटे और सामग्री के मामले में किफायती है। हालांकि प्रदर्शन एक उपयोगी शिक्षण उपकरण है, यह अंधाधुंध नहीं किया जाना चाहिए अथवा अन्य शिक्षण तकनीकों का बहिष्कार करने के।

**6. प्रश्न और उत्तर विधि**

यह एक आम शिक्षण शिक्षकों द्वारा उपयोग किया विधि है। इस पद्धति में शिक्षक एक प्रश्न पूछता है और फिर छात्र है जो सवाल का उत्तर पहचानता है। शिक्षक तो छात्र की जवाबी कार्रवाई के लिए मौखिक रूप से प्रतिक्रिया करते हैं। अनुक्रम एक समय मे शिक्षक प्रश्न पूदे तथा एक छात्र सवाल का जवाब देने के साथ जारी रख सकते हैं। एक स्थिति पैदा हो सकती है जहाँ एक और छात्र पहले से दिए गए जवाब पर प्रतिक्रिया करने के लिए कहा जा सकता है। सवाल तथा जवाब इसलिए, एक प्रक्रिया है जिसके तहत शिक्षक

एक प्रश्न पूछता, एक छात्र प्रतिक्रिया करता है शिक्षक तो प्रतिक्रिया करता है और एक और प्रश्न जो एक अन्य छात्र के माध्यम से उत्तर दिया और इतने पर है पूछता है सवाल-जवाब विधि पाठ के लिए एक सबक या भाग भर में उपयोग किया जा सकता है। इस विधि हद तक और छात्रों के ज्ञान की गहराई का परीक्षण करने में सहायता है ।

विधि दोनों और शिक्षकों के अध्याय मे सक्रिय रहता है। सामाजिक अध्ययन के एक शिक्षक इस विधि को रोजगार नोट करना चाहिए कि यह पर्याप्त योजना तथा हैंडलिंग की जरूरत है। एक सावधान निर्देशित पूतछात तकनीक छात्रों की तत्काल पर्यावरण के बारे में जवाब दृष्टि में लाना कर सकते हैं।

इसलिए आदमी और उसके पर्यावरण, आदमी और उसकी आर्थिक गतिविधियों आदि जैसे विषयों को प्रभावी तरीके से सवाल और जवाब विधि के माध्यम से सिखाया जा सकता है उपयोग किया सवाल, स्पष्ट सटीक और स्पष्ट होना चाहिए।

## 7. फील्ड-यात्राएँ

फील्ड यात्राएँ का निरीक्षण करने और कक्षा के बारह स्थितियों की जांच के लिए विद्यार्थियों के साथ यात्रा सम्मिलित है। इस तरह के अभियानों में से कई स्कूल के गलियारे स्कूल भवन या खेल के मैदान से आगे नहीं जा सकता। स्कूल के भीतर ही शिक्षक के लिए निदर्शी उदाहरण मिल सकता है। अपने छात्रों। स्कूल के तत्काल आसपास के क्षेत्र में परीक्षा और प्रेक्षण भिन्न मिट्टी, वनस्पति, एक नदी आदि के रूप में ऐसी बातों के लिए उपलब्ध हो सकता है।

शिक्षक कभी-कभी स्थानीय उद्योग अथवा सार्वजनिक सेवाओं के सहयोग आमंत्रित करते हैं और Ota के महल की तरह स्थानों की यात्रा कर सकते हैं, संग्रहालय आदि अनुभवों क्षेत्र यात्राएं से प्राप्त, ज्वलंत हैं छात्रों के लिए समय तक चलने और अधिकतर अधिक सार्थक है क्योंकि वे वास्तविक जीवन स्थितियों रहे हैं वहाँ तीन चरणों क्षेत्ररक्षण ट्रिप करने के लिए कर रहे हैं, तैयारी, क्षेत्र ट्रिप ही है और सार-कथन चरणों। जाहिर है, इस विधि की सफलता के छात्रों की आयु पर एक महान सौदा निर्भर करता है। तैयारी चरण शिक्षक जानकर कि वह वास्तव में क्या क्षेत्र की यात्रा के दौरान प्राप्त करने की उम्मीद के साथ अत्यंत के द्वारा किया जाना चाहिए उन्होंने कहा कि इस स्तर पर चाहिए, क्षेत्र का दौरा किया जा करने के लिए के बारे में सभी जानकारी संभव इकट्ठा।

NOTES

पर्याप्त तैयारी जरूरी संपर्क बनाने के लिए के साथ लोगों को क्षेत्र में संबंध की वजह से अनुमति के लिए दौरा किया जा करने के लिए किया जाना चाहिए। जरूरी व्यवस्था परिवहन आवास (यदि आवश्यक हो) और यात्रा की अवधि के लिए किया जाना चाहिए।

तीसरे सार-कथन के रूप में जाना चरण अभियान फिर से रिपोर्ट करना सम्मिलित है। यहाँ समेकन के एक महान सौदा क्षेत्र ट्रिप के समय प्राप्त सूचना के आधार पर किया जाता है। इस चर्चा, एकत्र नमूना या नमूने और चित्र की यात्रा के दौरान तैयार की गई की प्रदर्शनी के रूप में हो सकता है। फील्ड ट्रिप मैन और उनके पर्यावरण, आदमी तथा उसकी आर्थिक गतिविधियां शहरीकरण की समस्याएँ आदि हालांकि क्षेत्र ट्रिप छात्रों पर स्थायी छाप बनाता है जैसे विषयों के लिए उपर्युक्त होगा, यह कोशिश ऊर्जा और समय की ओर से की एक बहुत कुछ सम्मिलित है शिक्षक और शिक्षार्थियों।

## 8. चर्चा विधि

इस विधि छात्र को संदर्भित करता है—के लिए—छात्र शिक्षक द्वारा समय-समय पर हस्तक्षेप के साथ बात करते हैं। जहाँ प्रत्येक समूह के एक नेता, जो मुद्दे अथवा विषय की चर्चा शुरू की पड़ेगा विधि छात्रों के छोटे से समूह का उपयोग सम्मिलित है। यह है कि छात्रों को शिक्षक जब इस विधि प्रयोग किया जाता है कि तुलना में ज्यादा सक्रिय हैं ध्यान दिया जाना चाहिए। लेकिन देखभाल चर्चा कुछ छात्रों का बोलबाला होने से बचने के लिए लिया जाना चाहिए। एक छोटे से समूह का हर सदस्या समान अवसर अथवा किसी चर्चा करने के लिए योगदान करने की संभावना को दी जानी चाहिए। चर्चा विधि सामाजिक अध्ययन में निम्न विषयों के लिए उपयोग किया जा सकता है; आधुनिकीकरण की समस्याएँ, हमारे राष्ट्रीय समुदाय जीवन रक्षा की समस्या, परिवार समस्याएँ पर्यावरण की समस्याएँ हमारे राष्ट्रीय समुदाय, जीवन रक्षा की समस्य, परिवार समस्याएँ पर्यावरण की समस्याओं आदि में एक साथ रहते हैं अगर यह जानबूझकर की योजना बनाई और व्यवस्थित तरीके से शिक्षक मार्गदर्शक और मोड छात्रों चूहे समय के साथ प्रयोग किया है विधि कारगर हो सकता है। 'चर्चा'।

## 9. व्याख्यान विधि

इस विधि सबसे अधिक उपयोग किया शिक्षकों द्वारा मोड है। यह छात्रों को चुपचाप बैइने के लिए और विषय के बारे में बात सुनने के लिए उम्मीद है। इस स्थिति में, छात्रों केक नोटों की उम्मीद कर रहे हैं तथा कभी कभी शिक्षक

चॉकबोर्ड पर नोट लिख सकते हैं। अक्सर समब एक सारांश के साथ खत्म हो सकता है और कुछ सवाल पुनरावृत्ति। एक शिक्षक जब विषय सार है व्याख्यान विधि का उपयोग करने के अतिरिक्त कोइ विकल्प होगा।

NOTES

विषय विश्वास, कारण, आदमी और उसकी मान्यताओं, आस्तिकता, न्याय आदि जैसे व्याख्यान विधि के द्वारा समझाया जा सकता है। इस विधि का इस्तेमाल किया जा सकता है, जहाँ आवास और कर्मियों की कमी उनकी है। के बजाय बच्चे को केन्द्रित केंद्रित-हालांकि यह एक बड़ी आबादी के लिए पूर्ण कर सकता है, यह सीखने शिक्षक बनाने का नुकसान है।

एक सबक अन्य तरीकों के साथ इस विधि तथा शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग के संयोजन के बिना सुस्त हो जाता है।

### 10. समस्या-सुलझाने विधि

इस विधि छात्रों को एक समस्या के बारे में है, ताकि परेशानी यह है कि पहचान की गई है का हल (रों) खोजने के लिए जानकारी का मूल्यांकन समस्या को समझने की प्रयास और अंत में सोचने के लिए सक्षम बनाता है। विधि शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के उपयोग की मांग। विधि पहचानता विचार करने की प्रक्रिया मे एक व्यवस्थित प्रक्रिया नहीं है। विधि संबंधी गतिविधियों के लिए व्यवस्था वर्गीकरण सम्मिलित हो सकता है। हमारे छंटाई और एक विशिष्ट समस्या के लिए तक तार्किक उत्तर खोजने का अंतिम लक्ष्य के साथ तथ्यों के साथ बातचीत पर शिक्षार्थी का ध्यान केंद्रित है। ज्यादातर मामलों में शिक्षकों समस्या को प्रकार का निर्धारण करने के लिए हल किया जा करने की परेशानी का सामना करना पड़ रहे हैं।

वे इस तथ्य से निर्देशित होना चाहिए कि समस्या को सुलझाने के विधि बच्चे केंद्रित होना चाहिए। शिक्षक इस संबंध मं करना चाहिए, समस्या प्रांसगिक और छात्रों के अनुभव के लिए आकर्षक बनाते हैं। उन्होंने यह भी स्वयं के लिए लगता है और सूचना एक समस्या को हल करने की प्रक्रिया में उपलब्ध की एक गहरी समझ पर पहुँचने के लिए सक्षम होने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

समस्या को सुलझाने में मंच शामिल है इस स्थिति में छात्र समस्या यह है कि उन्हें सामना राज्य और समस्या को सुलझाने के संभावित ढंगों पर प्रस्ताव करने के लिए सक्षम होने के लिए सक्षम होना चाहिए। संभव समाधान पर चर्चा सबसे उचित समाधान को स्वीकार करने के उद्देश्य से इस प्रकार है। इस प्रश्न का जवाब या समाधान स्वीकार्य सुझाव के आवेदन के द्वारा निर्धारित होता है।

मूल समस्य और समाधान तो फिर से दिया गया है। दिलचस्प, मुद्दों तथा समस्याओं समस्या का सुलझाने के विधि के उपयोग में ध्यान के योग्य भोजन, परिवार, वित्तीय, कपड़े, परिवहन, सांस्कृतिक और सीखने समस्याओं में सम्मिलित हैं। यह तनाव बच्चे के लिए ब्याज की एक प्राकृतिक बिंदु बिधि है कि सवाल और समस्याओं को हल किया जा करने के लिए पैदा करता है कि प्रासंगिक है।

## 11. नाटकीय रूपांतर विधि

यह कि वे क्या जानना में छात्रों उत्तेजक के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। यह एक प्राकृतिक मार्ग है जिसके द्वारा छात्रों को स्वतंत्र रूप से अपने आस-पास जीवन की उनकी समक्ष को व्यक्त करता है। विधि छात्रों शारीरिक, भावनात्मक तथा मानसिक रूप से भागीदारी और भागीदारी के एक महान सौदा के लिए अनुमति देता है। एक स्थिति है जहाँ एक सबक या विषय सूखा है में, नाटकीय रूपांतर प्रभावी रूप से छात्रों का ध्यान और ब्याज बनाए रखने के लिए सहायता कर सकता है।

नाटकीय रूपांतर खनन खेलते हैं और रोल-प्लेइंग जो इस प्रकार की तकनीक के लिए आवंटित किया जा सकता है के रूप में प्रत्यक्ष और सरल तकनीक सम्मिलित है। शिक्षक छात्रों को जो अकादमिक कार्य में कम सक्रिय हैं व्यस्त कर सकता है। इस अवसर उन में अपनेपन की भावना उत्पन्न होगी। शिक्षक अनुमति देने के लिए प्रतिभागियों को क्या भूमिका निभा पता पर्याप्त तैयारी करना चाहिए।

नाटक या प्रभावी तथा प्रासंगिक बनाने के लिए छात्रों के यथार्थवादी कल्पना पर एक अच्छा सौदा भरोसा करना चाहिए मंचन किया जाना है। दुर्भाग्य से यह कल्पना कभी कभी भी प्रासंगिक हो यथार्थवादी हो सकता है। जबकि छात्र लिखित नाटकों उपयोग तथा व्यायाम की अक्सर सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, वे जो शिक्षक महसूस कर सकते हैं वे औचित्य नहीं है बहुत समय तक का समय लग रहा है।

दूसरों की राय, सहकारकों भीतर सहयोग का रवैया, वाछंनीय कौशल के विकास, आत्मविश्वास और आत्मसम्मान, और स्वयं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए छात्रों के लिए अवसर के संबंध के लिए एक अवसर फिर भी नाटकीय रूपांतर अन्य बातों के अलावा प्रदान करता हैं। छात्रों को एक परिवार के समारोह नात्यांतरित को, पिता अथवा माँ ईमानदारी, नेतृत्व की भूमिका followership आदि जो सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में विषय हैं नेतृत्व जा सकता है।

## 12. होम असाइनमेंट



यह एक विधि है, लेकिन एक उपकरण है जो सबक अवधि के बाहर छात्रों संलग्न करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। घर काम करने के लिए छात्रों का रवैया के प्रकाश में शिक्षक है कि एक कम समय के भीतर पूर्ण किया जा सकता कार्य देना चाहिए। इस तरह के घर काम रोचक और विषय के लिए प्रासंगिक होना चाहिए। यह वह नहीं दिया जाना चाहिए, सजा के रूप में अन्यथा, छात्रों कक्षा के बाहर कुछ भी कार्य करने के लिए नकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा। होम असाइनमेंट सामाजिक अध्ययन में किसी भी विषय में दिया जा सकता है। यह काम पढ़ने जा सकता है, कुछ सवालों के जवाब खोजने अथवा आदि एक विशेष विषय के बारे में जानकारी की मांग।

## 13. निर्माण विधि

इस विधि छात्रों ऐसा करने से जानने के लिए पहल होने के लिए और selfdirected गतिविधि में संलग्न करने के लिए मदद करता है। निर्माण गतिविधि दो प्रकार के हो सकते हैं। एक अखबार निर्माण, फाइल फोल्डर, स्क्रैप बुक ऊर्ध्वाधर फाइल, पत्रिका निर्माण तथा पुस्तक निर्माण की तरह मुद्रित सामग्री का उपयोग सम्मिलित है। दूसरी ओर कुछ सामग्री मॉडल, मूर्तियों और अन्य शिक्षण निर्माण जैसी मदों बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। यह शिक्षक की भूमिका निर्माण विधि की शुरूआत में मार्गदर्शन करने के लिए है। निर्माण विधि सामाजिक अध्ययन में निम्न विषयों के लिए उपयोग किया जा सकता पारिवारिक संरचना, सरकार, सामाजिक Orgnisations, सांस्कृतिक पैटर्न आदि के सिस्टम पूर्णरूप से देखरेख होनी चाहिए जब निर्माण चाकू और आरी की तहर तीव्र वस्तुओं का उपयोग शामिल है। इस विधि उत्तेजक है, प्रेरित और स्कूल का उच्च कक्षाओं में कार्यात्मक। अंत में, उचित तरीके सीखने की, संज्ञानात्मक प्रभावी और मनोप्रेरणा डोमेन में सहायता मिलेगी का चयन करने की आवश्यकता है। हालांकि प्रयासों इस लेख में किया गया है अन्य सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में उपयोग के लिए उपलब्ध तरीकों में से कुछ बाहर चर्चा करने के लिए, तरीकों पर चर्चा पूर्ण नहीं हैं यह भी स्पष्ट है कि सीखने की कोई एक विध पर्यापत रूप से सभी सीखने स्थितियों फिट कर सकते हैं। हालांकि यह ध्यान दिया जाना चाहिए अन्य तरीकों में से सामाजिक अध्ययन शिक्षण निश्चित रूप से वांछित अनुदेशात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी का कोई सबसे अच्छा तरीका नहीं है। हालांकि कोशिश इस लेख में

किया गया है अन्य सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में उपयोग के लिए उपलब्ध तरीकों में से कुछ बाहर चर्चा करने के लिए तरीकों पर चर्चा पूरी नहीं हैं। यह भी स्पष्ट ह कि सीखने की कोई एक विधि पर्याप्त रूप से समस्त सीखने स्थितियों फिर कर सकते हैं। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए अन्य तरीकों में से सामाजिक अध्ययन शिक्षण निश्चित रूप से वांछित अनुदेशात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी का कोई सबसे अच्छा तरीका नहीं है। हालांकि कोशिशों इस लेख में किया गया है अन्य सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में उपयोग के लिए उपलब्ध तरीकों में से कुछ बाहर चर्चा करने के लिए, तरीकों पर चर्चा पूरी नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि सीखने की कोई एक विधि पर्याप्त रूप से समस्त सीखने स्थितियों फिट कर सकते हैं। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए अन्य तरीकों में से सामाजिक अध्ययन शिक्षण निश्चित रूप से वांछित अनुदेशात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी का कोई सबसे अच्छा तरीका नहीं है।

## सामाजिक अध्ययन में शिक्षण के लिए 3.3 संसाधन

नाइजीरिया में शिक्षा शैक्षिक संसाधनों जो शिक्षण तथा सीखने के लिए संवर्धन एड्स के रूप में सेवा की है का उपयोग करने से पिछले तीस वर्षो में एक लंबा सफर तय किया है। Norwood (1949) का मानना है, हालांकि सामाजिक अध्ययन सामग्री की विशाल मात्रा हैं, फिर भी वहाँ दो महत्वपूर्ण विचार जो शिक्षक इन एड्स को प्रभावी तरीके से उपयोग करने में सामना करना होगा हैं कि "शिक्षक पता होना चाहिए जहाँ वह उन्हें मिल सकता है और उन सामग्री जो होगा चयन करना होगा सबसे अच्छा उकसे विशेष आवश्यकता फिट। वह कक्षा सामग्री के चयन में कुछ अन्य कारणों को उजागर करने के लिए आगे चला जाता है।

इन सामग्रियों की सामग्री, प्रारूप तथा उन्हें प्रयोग समूह की उम्र और पठन स्तर पर शैली में अनुकूलनीय होना करने के लिए के लिए की जरूरत में सम्मिलित हैं। सामाजिक अध्याययन में शिक्षण, संसाधनों कुछ भी है कि शिक्षण और सीखने को बढ़ावा देने में शिक्षक मदद कर सकते हैं मतलब है। छात्रों एक से अधिक इंद्रियों के माध्यम से जानने के लिए मौका दिया जाता है वे तेज और आसान जानने के लिए और सामग्री एक लंबे समय के लिए सीखा याद करने में सक्षम हो सकते हैं। शिक्षक, हालांकि, ध्यान रखें कि उपयोग किया संसाधनों को बांधे या छात्रों के हित उत्तेजित करने के लिए सक्षम होना चाहिए।

संसाधन सामाजिक अध्ययन में मानव, जगह और भौतिक संसाधनों में साम्मिलित (मानव संसाधन) शिक्षण सामग्री के प्रबंधन के साथ संबंध है और ज्ञान की पुनरावृत्ति है जिसमें उन्होंने शिक्षार्थी को स्थानांतरित करता है। और भी बहुत कुछ

सीखने के लिए संसाधनों के रूप में शिक्षक के अतिरिक्त अन्य मानव संसाधन के उपयोग के लिए कहा जा रहा है। शिक्षक के अलावा अन्य कुछ लोग छाखें को अपने ज्ञान और अनुभव योगदान करने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। यह भी एक और छात्र जो स्थिति में होगा अपने अथवा अपने ज्ञान और अनुभव साझा करने के लिए किया जा सकता है।

NOTES

कक्षा ज्ञान तथा अनुभव में उम्र या स्कूली शिक्षा की राशि से सीमित नहीं हैं। यह सभी मामलों है कि संसाधन व्यक्तियों वर्ग में आने के लिए की आवश्यकता नहीं है। छात्र लोगों के साथ साक्षात्कार का संचालन करने के लोगों से जानकारी इकट्टा करने के लिए कहा जा सकता है। संसाधन व्यक्ति के उपयोग के एक विषय पर पूर्ण ध्यान और ध्यान प्राप्त करने के लिए शक्तिशाली, उपकरण हो सकता है, फिर भी परवाह तथापि आदेश किसी भी दुर्भाग्यपूर्ण शर्मिंदगी से बचने के लिए संसाधन व्यक्ति अग्रिम सूचना देने के लिए लिया जाना चाहिए।

संसाधन व्यक्ति को आमंत्रित किया है और क्या उम्मीद की जाएगी की स्पष्ट जानकारी अपने अथवा अपने चर्चा की सीमा होनी चाहिए। संसाधन स्थानों में शामिल है स्थालों है कि कक्षा शिक्षण के प्रयोजन के लिए अधिक उपयोगी है। ज्ञात ब्याज की एक स्थान पर एक यात्रा स्पष्ट मूल्य का है और उपलब्ध संसाधनों के उपयोग को सुनिश्चित करता हैं यात्राओं का मूल्य काफी अलग या यात्रा के स्वरूप का विस्तार करके बढ़ाया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, इसी प्रकार की एक से अधिक स्थनों का दौरा करने के तुलनात्मक अध्ययन के लिए अनुमति देता है। यात्रा एक प्रतियोगिता छात्र जो कि वे क्या एक यात्रा के समय मनाया के सबसे या एक प्रश्नोत्तरी परीक्षण छात्रों की समझ मनाया जानने के उद्देश्य से के साथ जोड़ा जा सकता है। दर्शनीय स्थल का स्मरण किया जा सकता है संग्रहालय, कारखानों, महलों, भौगोलिक सुविधा साइटों, ऐतिहासिक इमारतों आदि सम्मिलित हैं।

सामग्री प्रमुख उपकरण शिक्षक ज्ञान के प्रसार की में रोजगार से मिलकर बनता है, जैस पर्यावरण संसाधन, मुद्रित सामग्री जो पाठ्य पुस्तकों अथवा अर्द्ध पाठ (यानी चार्ट, नक्शे, चित्र, तस्वीरें जो व्यावसायिक रूप से बना रहे हैं) और गैर-ग्रंथों जो मॉडल सम्मिलित हो सकता है, असली वस्तुओं, वीडियों, फिल्मों और ऑडियों एड्स। पूर्वगामी से यह स्पष्ट है कि कुछ स्कूलों अब शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपकरण के साथ संभव शिक्षा के अधिक गतिशील तथा आकर्षक तकनीक के कुछ का अधिकांश उपयोग करने में सक्षम हैं।

NOTES

**नीचे कुछ संसाधनों सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में रूपों की एक किस्म में उपलब्ध हैं।**

### 1. पाठ्यपुस्तकें

पाठ्यपुस्तकों, शिक्षा का एक तथा पारंपरिक साधन है निश्चित रूप से इसकी सबसे कठोर रूप में एक पाठ्यपुस्तक जो शिक्षक की पहल की मांग सबक की एक श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करता है। लगभग प्रत्येक अध्ययन में विद्यार्थियों ऐसे विश्वकोषों, शब्दकोंशो, एटलस, जानकारी पंचांगों, सरकार बुलेटिन वाणिज्यिक प्रकाशन और विविध पत्रिकाओं के रूप में डेटा के प्रकारो के लिए विशेष संदर्भ के लिए पाठ्य पुस्कतों से स्थानांतरित करने के लिए जरूरी हैं।

पाठ्यपुस्तकें सबसे अनुदेशात्मक आसानी से विशेष रूप से विकासशील देशों में सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के कार्यानवयन के लिए कक्षा में उपयोग के लिए उपलब्ध पाठ्यपुस्तकों पर इसलिए भारी निर्भरता सामग्री सम्मिलित हैं। चावल (1982) सामाजिक अध्ययन में तर्कसंगत पाठ्यपुस्तक चयन के लिए कुछ मान्यताओं दे दी है। ये सच है कि सम्मिलित है।

(क) ''स्कूल के लिए एक बूझकर तैयार किया गया सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम है और पाठ्यक्रम निर्दिष्ट किया है उद्देश्यों। इसलिए, स्कूल सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के लिए उद्देश्य से एक पाठ्यपुस्तक को खोजने के लिए चाहते हैं।

(ख) पाठ्यपुस्तकें अक्सर स्थानीय स्कूल शिक्षण कार्यक्रम में पाठ्यक्रम के अनुवाद के प्राथमिक साधन है। इसलिए विद्यालय में एक पुस्तक है कि चल रहे शिक्षण कार्यक्रम के साथ संगत है का चयन करने के लेनी चाहिए।

(ग) पाठ्यपुस्तकें अक्सर एक विषय के लिए सामग्री का प्रमुख स्रोत प्रस्तुत करते हैं। जिसमें सामग्री प्रस्तुत किया है आदेश तथा गहराई और कक्षा में अपने उपचार के दायरे जरूरी बातों का ध्यान रखना।

(घ) पाठ्यपुस्तकें अक्सर छात्रों के शिक्षण के प्राथमिक संसाधनों में से एक के रूप में सेवा करते हैं। इन बायानों से यह स्पष्ट था कि पाठ्यपुस्तकों अभी भी सीखने के रूप में जरूरी संसाधनों रहने के लिए जारी रहेगा है। लेकिन देखरेख उम्र पठनीयता स्तर और छात्रों की जरूरत है और ब्याज के लिए पाठ्य पुस्तकों की प्रासंगिकता पर विचार करने के लिए लिया जाना चाहिए।

NOTES

### 2. समाचार पत्र

रेमंड (1965) ने कहा कि "के पश्चात से कई सामाजिक अध्ययन शिक्षकों समकालीन समस्याओं का और उष्णकटिबंधीय मुद्दे हैं जो अध्ययन के चल रहे पाठ्यक्रम में बुना जा सकता है के लिए अक्सर अपनी कक्षाओं का ध्यान प्रत्यक्ष, वे अखबार का परीक्षण करके प्रबुद्ध नागरिकता के लिए महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं छात्र के साथ। यह सिर्फ कि शिक्षक सावधानी की आवश्यकता करने के लिए छात्रों जागरूक करने समाचार पत्र और अन्य संसाधनों के उपयोग कर सकते हैं तथा पढ़ने की आदतों को व्यापक बनाने का मतलब है।

यह है कि अखबार उपलब्ध किसी भी मुद्रित स्रोत के सबसे वर्तमान रहता है कहने के लिए भी है। लेकिन दुर्भाग्य से सिर्फ कुछ शिक्षकों सीमा इस संसाधन का उपयोग करने की।

### 3. चित्र और चार्ट

सचित्र प्रस्तुति विशेष रूप से पढ़ने में परेशानी महसूस हो या छोटा शब्दसंग्रह होने वाले छात्रों के लिए प्रभावी है। चित्र उदाहरण देकर स्पष्ट करना है और क्या पढ़ाया जा रहा है करने के लिए वास्तविकता की भावना लाने के लिए सहायता करते हुए चार्ट सबक सामग्री ही होते हैं। जबकि चित्रों ब्याज को प्रोत्साहित सही धारणा बना सकते हैं और जीवन के लिए सबक लाने, चार्ट दूसरे हाथ पर सामग्री की प्रस्तुति में मूल्यवान उनके सरलतम रूप में पढ़ाया जा रहे हैं। चित्र कब उपयोग किया जाता है, शिक्षक छात्रों पर अपने अंक को प्रभावित करने के क्रम में उनमें से एक किस्म का प्रयोग करना चाहिए। चार्ट कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों पर जोर करने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं वे स्पष्ट तथा काफी बड़ी कक्षा के किसी भी भाग से देखा जा करने के लिए किया जाना चाहिए।

### 4. मैप्स

अध्ययन, ड्राइंग और नक्शे का व्याख्या सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में जरूरी गतिविधियों रहे हैं। मैप्स आर्थिक और भौतिक सुविधाओं, स्थानों का स्थान, राजनीतिक सीमाओं सांस्कृतिक सीमाओं, व्यावसायिक क्षेत्रों इत्यादि शिक्षक चाहिए इसलिए नक्शे का उपयोग करने के लिए छात्रों को बेनकाब इतना है कि सही व्याख्याओं सामाजिक अध्ययन में उपयोग नक्शे को दिया जा सकता संकेत मिलता है।

NOTES

## 5. मॉडल

टिलमैन (1976) की मदद शिक्षक शिक्षण की प्रक्रिया में प्रासंगिक जानकारी को व्यवस्थित में मॉडल के उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने कहा जब जानकारी एक अनुदेशात्मक मॉडल के प्रारूप में प्रस्तुत किया है, हम एक के लिए तैयार किए गए योजना अथवा अध्यापक-व्यवहार है कि के बारे में लाता है के प्रकार है कि ''वाछित छात्र-लर्निग। इसलिए, मॉडल और नमूनों बच्चों को भिन्न आकर्षण है और आकर्षित उनके करीबी ध्यान एक चार्ट की तुलना में ब्रेहतर। मॉडलों की उपयोगिता पर नहीं किया जा सकता ज्यादा बल क्योंकि वे काम आकार चीजें हैं जो अन्यथा अध्ययन करने के लिए मुश्किल होगा कम।

## 6. रियल वस्तु

सामग्री संसाधन है कि सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में मूल्यवान हो सकती की श्रेणी कक्षा में वास्तविक अथवा वास्तविक वस्तु का उपयोग है। ये बातें realia कहा जाता है तथा छात्रों के हित पर एक शक्तिशाली प्रभाव हो सकता है और उन्हें प्रेरित करने में जानने के लिए।

इन वस्तुओं में से उदाहरण हथियार, कपड़े, मशीनों, औजारों आदि ये बातें कक्षा में असली बाहरी दुनिया लाना सम्मिलित है। असली वस्तुएँ कि संस्कृतिक, कृषि, मुद्राओं के आदि से जुड़े हुए हैं शिक्षण विषयों में मूल्यावान हैं।

## 7. संसाधन केंद्र

एक संसाधन केंद्र विभिन्न अर्थ है। लेकिन सामान्य तौर पर, यह एक जगह या स्थान जहाँ छात्रों और शिक्षकों को कक्षा में उपलब्ध नहीं जानकारी और शिक्षण सामग्री मिल सकता है को दर्शाता है। इन किया जा सकता है के अलावा खिलौने, नक्शे तथा संदर्भ या पुस्तकालय सामग्री, शिक्षण उपकरण, असली वस्तुओं अथवा नमूना और कलाकृतियों। सामजिक अध्ययन करने के लिए शैक्षिक मूल्यों के कुछ प्रमुख संसाधन केंद्र पुस्तकालय, तत्काल पर्यावरण, संग्रहालयों और राष्ट्रीय अभिलेखागार कर रहे हैं। पुस्तकों की पर्याप्त आपूर्ति के साथ विद्यालय पुस्तकालय के प्रावधान स्कूलों के लिए एक प्राथमिकता आइटम होना चाहिए। यह गतिविधि सीखने के लिए प्रमुख संसाधन केंद्र है।

संसाधन की पेशकश नहीं की बहुतायत में सिर्फ किताबों, लेकिन यह भी माइक्रोफिल्म, चार्ट, filmstrips, वीडियोटेप और अन्य सामग्री सम्मिलित हैं। पुस्तकालय इसलिए अलग सीखने के लिए भूख को पूर्ण करने और समझने के लिए भूख को खिलाने के लिए निर्धारित है। छात्र पुस्तकालय में कुछ

NOTES

आइटम को पढ़ने के लिए क्या शिक्षक कक्षा में सिखाया गया है की उनकी समझ को व्यापक बनाने की सौंपा जा सकता है।

राष्ट्रीय अभिलेखागार समस्त सरकारी एजेंसियों और सरकार की गैर मौजूदा रिकॉर्ड के आधिकारिक रिकॉर्ड स्थायी संरक्षण के योग्य मान जाता है। अभिलेखागार छात्रों हमारे अनुभव के कई नए खाका खोलने के लिए सहायता करते हैं। टी।

वह दूसरी तरफ संग्रहालयों, छात्रों कलाकृतियों की जांच करने और मूर्ति जो कि वे क्या किताबों  में पढ़ा है की समझ मदद कर सकते हैं देखने के लिए अवसर प्रदान करता है। Kavett (1997) कलाकृतियों के लिए अपने समर्थन में जोर देकर कहा कि पुरातत्विक खुदाई के प्रयोजन कलाकृतियों जो जानकारी gaps में भरने को मिल रहा है। ''इसलिए यह Predigested जानकारी है जिस पर कुछ लेखकों को पूर्व से ही व्याख्याओं लगाया है वरीयता में मूल सामग्री का उपयोग करने मूल्यवान है।

## 8. दृश्य-श्रव्य उपकरणों

वहाँ अनुदेशात्मक दृश्य-श्रव्य उपकरणों और सामग्री के रूप में जाना उपकरणों की वर्तमान किस्मों पर है। अनेक राज्यों के लिए एक हवाई स्टूडियों प्रसारण करने के लिए अपने कक्षा के भीतर उतार-इन शिक्षण उपकरण के आवेदन एक प्रशिक्षक द्वारा छोटे कैमरों का उपयोग पास दिखाने के लिए से लेकर। आत्म निहित कक्षा टेलीविजन प्रणाली कैमरा वीडियों टेप रिकॉर्डर, रेडियो और Filmstrips शिक्षण के समस्त प्रकार के लिए रोमांचक संभावनाएँ हैं। वीडियों टेप वर्ग रोल-प्लेइंग गतिविधियों में सहायता मिलेगी। यह इस के प्रकाश में है, रूट (1958) निष्कर्ष निकाला है कि, जबकि ''वीडियों स्क्रीन से बच्चे को अविश्वसनीय और जीवन के विनोदी पहलुओं पहचान करने के लिए सीखता है''। गॉर्डन (1969) ने कहा कि ''वीडियों टेप रिकॉर्डर के प्रयोग1 की अनुमति1 देकरछात्रों को देखने के रूप में वे वास्तव में अन्य छात्रों द्वारा देखा जाता है अपने स्वयं के व्यक्तित्व और idiosyncrasies ''में यथार्थवादी अंतदृष्टि मुनाफा सकता है।

नकली गतिविधि के इस तरह से शिक्षक और वर्ग अपने-अपने प्रतिभागियो की तुलना में एक की तुलना में इस तरह के एक भूमिका के लिए वास्तविक उम्मीदों की प्रभावशीलता का आकलन कर सकते हैं। टेप रिकॉर्डिंग इस तरह की समस्याओं को पूर्ण करने के रूप में मिश्रित क्षमता समूह में पाया में मूल्यवान हो पाया गया है। निष्क्रिय अथवा सक्रिय उपयोग के लिए टेप रिकॉर्डर की अनुकूलन क्षमता अपने महान लाभ दिया है।

शिक्षक रिकॉर्ड कर सकते हैं छात्रों की गतिविधियों यानी चर्चा और यह संभव के रूप में रूप में अनेक बार वापस खेला जा सकता है। टेलीविजन महान इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जो हमारे बदलती दुनिया को आकार से एक है। यह शक्तिशाली के द्वारा है जिसके, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार पाठ्यक्रम को समृद्ध और जो अन्यथा है कि उन्हें करने के लिए खोल दिया गया है चाहिए के अवसर से वंचित हो जाएगा बच्चों के लाखों लोगों के लिए इस तरह के स्कूली शिक्षा के लाभ का विस्तार करने के लिए उपयोग किया जा सकता है पाया गया है।

छात्रों के रूप में वे शिक्षकों, पाठ तथा अन्य संसाधनों से कर सकते हैं इसे से सीख सकते हैं। टेलीविजन कार्यक्रमों, समसामयिक मामलों के द्वारा मुद्दों पर विचार विमर्श देखा और सुना जा सकता। Filmstrips सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए प्रभवी रहे हैं। वे दो प्रयोजनों की सेवा प्रोजेक्टर तथा स्क्रीन चित्रों का उत्पादन और एक ही समय में ध्वनि कर सकते हैं। एक फिल्म की प्रस्तुति प्रस्तावना एक चर्चा सबक सकता है। इसलिए फिल्म स्ट्रिप्स को प्रोत्साहित करने में सहायता करेगा और एक विषय पर छात्रों के हित को सक्रिय करें। दूसरी तरफ एक फिल्म प्रोजेक्टर केवल किसी भी ध्वनि के बिना चित्रों का उत्पादन कर सकते हैं । यह भी स्क्रीन पर दिखाया विषय पर एक चर्चा से पूर्व छात्रों के हित और ध्यान प्रोत्साहित करने के लिए आग्रह किया जा सकता है। हाल के वर्षों शैक्षिक द्वारा रूप में सूक्ष्म कंप्यूटर में काफी दिलचस्पी देखी गई है।

कंप्यूटर की विभिन्न क्षमताओं सामाजिक अध्ययन में खेल सिमुलेशन के लिए एक रोमांचक शिक्षण सुविधाओं जोड़ सकते हैं। कह रही है कि ''माइक्रो कंप्यूटर हार्डवेयर और नरम बर्तन की बढ़ती उपलब्धता शीघ्र ही यह संभव कर देगा सभी सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के लिए इस अद्‌वितीय मध्यम का लाभ लेने के लिए द्‌वारा माइक्रो कंप्यूटर पर अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला (1975) पर है।

हालांकि दृश्य-श्रव्य उपकरणों में सुधार और सीखने को प्रभावित करने के लिए जाने जाते हैं, इन उपकरणों का महंगा तथा रिश्तेदार मिलावट है, कुछ, हद तक, उनके शैक्षिक उपयोग प्रबिबंधित।

## 9. चॉकबोर्ड

चॉकबोर्ड या ब्लैकबोर्ड सामान्य दृश्य सहायता शिक्षक द्‌वारा उपयोग है। चॉकबोर्ड वर्णन करने के लिए क्या शिक्षक को पढ़ाने के लिए और रेखाचित्र,

नक्शे तथा तस्वीरें खींचना करने का इरादा रखता रूपरेखा अथवा सारांश लिखने के लिए प्रयोग किया जाता है।

शिक्षक नोट करना चाहिए कि जो कुछ भी वह या वह बोर्ड पर लिखते हैं, स्पष्ट दिखाई बोल्ड और सुपाठ्य होना चाहिए। चॉकबोर्ड, उपयोग के पश्चात साफ रखा जाना चाहिए।

NOTES

अंत में, जब शिक्षकों को किसी भी विषय के शिक्षण शुरू करने के लिए कर रहे हैं, विस्तृत श्रृंखला संसाधनों से बाहरी संसाधनों की अपनी पसंद क्या उपलब्ध क्या उचित भी छात्रों की उम्र, क्षमता और रुचि के आधार पर किया जाना चाहिए पर उनके निर्णय है द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए। कहा स्कूल शिक्षण सामग्री उत्कृष्ट से कम हैं, जो कुछ भी सामग्री है कि उपलब्ध हैं अच्छी प्रकार से संगठित और प्रभावी उपयोग के लिए प्रशासित किया जाना चाहिए। कहाँ इरादा एड्स आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ वर्ग में उपयोग के लिए, सुधारने और सामग्री अनुकूल करने के लिए की जरूरत है। इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि शिक्षा, कम कठिन तथा अधिक कार्यात्मक हो सकता है यदि प्रयासों की पहचान करने और उपलब्ध संसाधनों दोनों सामग्री और मानव के व्यापक प्रयोग करने के लिए बना रहे हैं।

## सारांश और निष्कर्ष

वहाँ कई शिक्षण विधियों और संसाधनों सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के लिए उपलब्ध हैं। अन्य लोगों के अलावा तरीकों सिमुलेशन तरीकों जिसमें सम्मिलित ऐतिहासिक सिमुलेशन, सिमुलेशन गतिविधियों और सिमुलेशन खेल में सम्मिलित हैं: प्रयोगशाला विधि है जो स्रोत सामग्री के रोजगार शामिल है; अनुपूरक के लिए। दूसरों पूछताछ, परियोजनाओं, प्रदर्शन, सवाज-जवाब, क्षेत्र ट्रिप, चर्चा व्याख्याता, समस्या को सुलझाने के ढंगों आदि हालांकि यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि सामाजिक अध्ययन शिक्षण का कोई एक तरीकों पर्याप्त रूप से सभी सीखने स्थितियों भर सकते हैं सम्मिलित हैं। अन्य विधियों के संयोजन निश्चित रूप से वांछित अनुदेशात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगा। दूसरी तरफ संसाधनों शिक्षण किसी भी बात यह है कि सार्थक शिक्षण को बढ़ावा देने और सीखने में शिक्षक सहायता कर सकते हैं मतलब है । सामाजिक अध्ययन में संसाधन मानव, जगह और सामग्री संसाधन सहायता हैं। शिक्षक (मानव संसाधन) शिक्षण सामग्री के प्रबंधन से संबंधित है। स्थानों कक्षा शिक्षण के प्रयोजन के लिए अधिक उपयोगी है रूचि के स्थानों में सम्मिलित हैं। दर्शनीय स्थल संग्रहालयों, कारखानों, भौगोलिक विशेषताओं और साइटों, ऐतिहासिक इमारतों हो सकता है आदि सामग्री संसाधनों शिक्षण और सीखने के मुख्य उपकरणों से मिलकर बनता

NOTES

है। इन पाठ्य पुस्तकों अथवा अर्द्ध पाठ की तरह मुद्रित सामग्री (यानी चार्ट, नक्शे चित्र) और गैर-ग्रंथों जो मॉडल-असली वस्तुओं, वीडियो, फिल्मों और ऑडियों एड्स सम्मिलित हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि शिक्षक संसाधनों की पसंद क्या उपलब्ध है और छात्रों की उम्र, क्षमता और रूचि के लिए प्रासंगिक है के द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए। उपलब्ध संसाधनों में अच्छी प्रकार से और सार्थक सीखने के लिए आयोजित किया जाना चाहिए।

**परीक्षापयोगी प्रश्न**

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. सिमुलेशन विधि की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
2. सामाजिक अध्ययन में शिक्षण के लिए संसाधनों पर प्रकाश डालिए।
3. पाठ्यपुस्तकें तथा समाचार-पत्र पर निबन्ध लिखिए।

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. दृश्य-श्रृव्य उपकरणों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखों।
2. संसाधन केन्द्र से आपका क्या अभिप्राय है?
3. नाटकीय रूपांतर विधि को संक्षेप में लिखिए।

# 13 सामाजिक विज्ञान शिक्षण में विकलांग बच्चों के लिए आवश्यक आवास एवं दृष्टिकोण

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**


- प्राक्कथन
- विकलांग छात्रों के बारे में
- कालेज नीतियों से परिचित
- कोर्स की क्षमता में सुधार
- वैकल्पित सामग्री
- टेप रिकॉर्डिंग व्याख्यान
- टेप रिकॉर्डिंग व्याख्यान
- लिखित कार्य के लिए विस्तारित समय सीमा
- एक सक्रिय दृष्टिकोण के लाभ
- आवास के प्रकार
- विकलांग की श्रेणियाँ
- परीक्षापयोगी प्रश्न


**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समक्ष सकेंगे –

- विकलांग छात्रों के बारे में
- कालेज नीतियों से परिचित
- कोर्स की क्षमता में सुधार
- वैकल्पित सामग्री
- टेप रिकॉर्डिंग व्याख्यान
- टेप रिकॉर्डिंग व्याख्यान
- लिखित कार्य के लिए विस्तारित समय सीमा
- एक सक्रिय दृष्टिकोण के लाभ
- आवास के प्रकार
- विकलांग की श्रेणियाँ

NOTES

## विकलांग छात्रों के बारे में

नि: शक्त छात्रों में को समायोजित करने के लिए रणनीति का एक सामान्य सेट विकसित करने की प्रक्रिया को बेहतर जानकारी बनन के साथ शुरू करना चाहिए। सबसे पहले, यह पता है कि कैसे कानून, प्रशिक्षक, संस्थागत और छात्र जिम्मेदारियों के मध्य अलग से उपयोगी है। इसके अलावा, यह समझाना महत्वपूर्ण है कि कैच-ऑल शब्द "विकलांग" इस तरह के एक व्हीलचेयर के लिए कारावास के रूप में भौतिक सीमाओं से लेकर की स्थिति, एडीएचडी की तरह संज्ञानात्मक विकृतियों के इस प्रकार के द्विध्रुवी विकास के रूप में मानसिक रूप से विकलांग के लिए या पुरानी चिकित्सा के साथ छात्रों को सम्मिलित कर सकते हैं महत्वपूर्ण है स्थिति (जैसे, मधुमेह) और साथ ही लोग मादक द्रव्यों के सेवन से उबर रहे हैं।

जाहिर है, आवास संकाय के तरह किसी दिए गए छात्र को प्रदान करनी चाहिए कि छात्र की विकलांगता पर कुछ हद तक निभ्रर करते हैं। इस प्रकार, यह हर जगह पैदा हो सकता आशा करना मुश्किल है। इस स्तम्भ के अंत में संदर्भ सूची कई इंटरनेट स्त्रोतों सहायता कर सकते हैं कि आप दोनों कानूनी और विकलांग छात्रों को पढ़ाने के साथ जुड़े व्यावहारिक मुद्दों के साथ अधिक परिचित हो जाते हैं सम्मिलित हैं।

बस के रूप में सामान्य छात्र विशेषताओं कॉलेजों में अलग-अलग विकलांग छात्रों में से एक स्कूल की आबादी दूसरे की से काफी भिन्न हो सकता है। किसी दिए गए कॉलेज के स्थान, सुलभ आवास की उपलब्धता, या एक विशेष डिग्री प्रोग्राम एक और एक से विकलांगता समूह के और अधिक छात्रों को आकर्षित करने के लिए एक विद्यालय हो सकती है। विकलांग छात्रों के लिए अपनी संस्था के कार्यालस विकलांग छात्रों के अपने कॉलेज की आबादी की विशेषताओं के साथ ही रहने का स्थान आप उनके लिए प्रदान करने के लिए उम्मीद की जाएगी के प्रकार से परिचित हो सकते हैं। साथियों शायद यह भी जानकारी का खजाना है कि छात्र विशेषताओं और रसद अपने संस्थान के विकलांग सेवाओं कर्मचारियों के साथ काम में सम्मिलित के बारे में अपने संस्थान के लिए विशिष्ट है प्रदान कर सकते हैं।

## कॉलेज नीतियों से परिचित

छात्र विशेषताओं की तरह, रणनीतियों, कॉलेजों विकलांगता कानून की जरूरतों संस्थानों में अलग-अलग लागू करने के लिए उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में सभी कॉलेजों भर में विकलांग छात्रो के लिए सबसे

सामान्य आवास परीक्षण समय (Ofiesh, माथर और रसेलए 2005) बढ़ा दिया गा है। हालांकि कुछ स्कूलों दोनों एक सेटिंग और उन विस्तारित परीक्षण समय की आवश्यकता है छात्रों के लिए प्रॉक्टर प्रदान करने के लिए प्रोफेसरों की आवश्यकता होती है ; दूसरों पर, विकलांगता कार्यालयों इन सेवाओं को प्रदान। इस प्रकार, यह एक अच्छा विचार है अपने परिसर इस और अन्य मुद्दों का समाधान करने के लिए पर नि: शक्त छात्रों के लिए सेवाओं के निदेशक के साथ पूर्ण करने के लिए है—

- विस्तारित परीक्षण समय। विकलांग कर्मचारियों विस्तारित समय परीक्षा प्रशासन के लिए जिम्मेदार हैं, यह पता लगाने कैसे और किसके माध्यम से नियंत्रित किया जाएगा। आप इस प्रक्रिया की सुरक्षा के बारे में कोई संदेह हैं, तो आप तय कर सकते हैं कि आप परीक्षा स्वयं proctoring से बेहतर हो जाएगा।

- व्याकुलता से मुक्त स्थानों और proctoring अपने कॉलेज के इन प्रदान करने के लिए आप की जरूतर है, पहले से एक उपयुक्त स्थान की पहचान करने और एक समय था जब आप अथवा आपके विभाग में किसी को एक प्रॉक्टर के रूप में काम कर सकते हैं। आदर्श रूप में, छात्र अपने या अपने वर्ग में दूसरों के रूप में एक ही समय में परीक्षा देनी होगी। आप आपने आप को proctoring दें, तो एक समाधान तुरन्त पहले या कक्षा के पश्चात् छात्र की परीक्षा प्रशासन के लिए है।

- परिसर में संसाधनों और सेवाओं की पहुँच। पूछो स्कूल विकलांग छात्रों के लिए एक समर्पित कंप्यूटर लैब है अथवा नहीं। तो यह पता लगाना है कि क्या यह सुनिश्चित करने के लिए या संस्था में से कुछ में सुलभ कंप्यूटर देखते हैं कि कदम उठाएँ हैं 'एस प्रयोगशालाओं। आप यह भी पता लगाना चाहिए कि क्या विकलांग छात्रों के लिए कार्यालय विशिष्ट वर्गों अथवा इस तरह के शोध पत्र लेखन के रूप में कार्य के लिए ट्यूशन प्रदान करता है।

- कैरियर के लिए अकादमिक सलाह। पता लगाएँ कि क्या कर्मचारियों शैक्षिक सलाह दे के साथ छात्रों को प्रदान करता है। यदि हाँ, तो मनोविज्ञान की कक्षाओं में इस प्रकार के छात्रों को दाखिला के बारे में अपने विचारों को कर्मचारियों बताओ। उदाहरण के लिए आप सुझाव दे सकता है कि छात्रों को परिचयात्मक मनोविज्ञान के बड़े हिस्सों के बजाय छोटे में दाखिला लिया। तुम भी कैसे परिचयात्मक मनोविज्ञान के पढ़ने की माँग अन्य पाठ्यक्रमों की माँग के साथ संतुलित किया जा सकता है के रूप में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

NOTES

- व्यक्तिगत परिचारिकाओं। अपनी संस्था क्या है 'व्यक्तिगत परिचारिकाओं से संबंधित नीतियों ? ज्यादातर मामलों में परिचायक छात्रों का समर्थन' भौतिक आवश्यकताओं और जब तक कक्षा में मौजूद बिल्कुल आवश्यक नहीं होना चाहिए। कुछ कॉलेजों विशेष रूप से परीक्षण के दौरान उपस्थित होने से परिचायक न करे, लेकिन दूसरों को एक मामला-दर-मामला आधार पर निर्णय लेते हैं। एक परिचर नीति का प्राथमिक लक्ष्य सुनिश्चित करने के लिए छात्र वह यह है कि 'काम अपने अथवा अपनी है, और कक्षा में अन्य छात्रों के अधिकारों का सम्मान करने के लिए। इस प्रकार, एक परिचर वर्ग में आती है तो यह स्पष्ट है कि वह यह पूरी क्लास सत्र के लिए कक्षा में रहते हैं और सेल फोन और अन्य व्यवहार है कि छात्रों को दिक्कत कर सकते हैं के उपयोग के संबंध नीतियों का पालन करना चाहिए की आवयक है।

## कोर्स की क्षमता में सुधार

प्रासंगिक ज्ञान की एक संस्था के साथ, आप जाँच करने के लिए तैयार कर रहे हैं और यदि जरूरी हो तो अपने पाठ्यक्रम की पहुँच में सुधार होगा।

- विकलांग छात्रों के लिए अपनी खुद की नीतियों का विकास करना और उन्हें अपने पाठ्यक्रम में शामिल। अधिकांश कॉलेजो की जरूरी है कि प्रोफेसरों एक संक्षिप्त शामिल ''एडीए'' पैरा बताते हुए छात्रों को विद्यालय के साथ पंजीकृत होना जरूरी है कि 'आदेश के आवास प्राप्त करने के लिए निः शक्त छात्रों के लिए कार्यालय। अपने विद्यालय पर अपने खुद के नीतियों का निर्माण 'रों सामान्य विकलांगता बयान। उदाहरण के लिए, राज्य के छात्रों को अपने आवास की आवश्यकता के आप जितनी जल्दी हो सके सेमेस्टर में सूचित करना चाहिए कि।

- अपने परीक्षण और कार्य प्रक्रियाओं की जाँच करना। आप ऑनलाइन परीक्षा देते हैं, उदाहरएर के लिए, आप विकलांग के साथ छात्रों के लिए एक विकल्प के परीक्षण के प्रारूप प्रदान करने के लिए हो सकता है। इसी प्रकार मशीन-रन बनाए उत्तर पुस्तिका कुछ छात्रों के लिए समस्याओं उपस्थित हो सकता है। पहले बताया गया है, अनेक विकलांग छात्रों के परीक्षण के लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता है। कैसे आप आपने सामान्य परीक्षण प्रक्रियाओं समायोजित कर सकते हैं पर विचार करें। उदाहरण के लिए, आप अधिक निरंतर लेकिन छोटे परीक्षा देते  हैं, और दो बार के रूप में ज्यादा समस आवंटित जैसा कि आप जानते ज्यादातर

छात्र-छात्रों जिसका सिर्फ परीक्षण संशोधन समय बढ़ा दिया गया है समायोजित करने के लिए की जरूतर होगी हो सकता है।

NOTES

अतिरिक्त समय भी लिखित कार्य के लिए एक मुद्दा है नियत दिनांक है कि आप सेमेस्टर के अंत तक में विकलांग छात्रों के लिए समय सीमा का विस्तार करने के लिए और अभी भी मिल अपने काम की अनुमति देने के लिए चुनें। मैं इस कारण के लिए सेमेस्टर के 10 सप्ताह के लिए 14 से मेरी परिचयात्मक मनोविज्ञान पाठ्यक्रम में शोध पत्र नियत तारीख स्थानांतरित कर दिया। (मैं भी विकलांग के बिना छात्रों के लिए उपलब्ध समय की कम राशि के आलोक में 10 से पाँच पृष्ठों से जरूरी लंबाई को छोटा।)

परिवहन के मुद्दों पर कुछ विचार कर, खासकर यदि आप एक लोकल (विद्यालय में पढ़ाने के। विशेष रूप से मोटर और दृष्टि दोष वाले उन विकलांग कई छात्रों, परिवहन व्यवस्था है कि जो अपने स्वयं के कारों के छात्रों की तुलना में कम लचीले होते हैं पर निर्भर हैं पाठ्यक्रम आवश्यकताओं को तदनुसार संशोधित करने की जरूरत हो सकती है। उदाहरण के लिए, यह बहुत मुश्किल हो सकता है विकलांग के साथ छात्रों को एक अध्ययप समूह अथवा एक समूह के अनुसंधान परियोजना में भाग लेने के लिए। इसी तरह एक अतिरिक्त क्रेडिट स्वयंसेवी कार्य से जुड़े अवसर इन छात्रों में से एक को पूरा करने के लिए असंभव हो सकता है।

की जाँच एक छात्र है जो एक दृश्य या सुनवाई नुकसानदायक है के नजरिए से किसी भी ऑनलाइन पाठ्यक्रम घटकों और अनुदेशात्मक मीडिया के अन्य प्रकार। आईटी विभाग यह सुनिश्चित करना कि प्लेटफार्मो वे का उपयोग (जैसे—ब्लेकबोर्ड, WebCT) सुलभ हैं के लिए सामान्य तौर पर जिम्मेदार हैं। इसके अलावा, वे अक्सर कैसे ऑनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री में इन प्लेटफार्मो की पहुँच सुविधाओं को सम्मिलित करने के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं काफी हर तक है, हांलाकि, विकलांग छात्रों की जरूरतों ऐसे मुद्रित पाठ्यक्रम के रूप में वैकल्पिक स्वरूपों में ऑनलाइन जानकारी प्रदान करके पूर्ण किया जा सकता। हालांकि जानकारी के कुछ प्रकार के लिए पर्याप्त रूप से एक विकल्प के रूप में नहीं दर्शाया जा सकता। उदाहरण के लिए, संभावित कार्रवाई की एक एनीमेशन पाठ में वर्णित किया जा सकता है, बल्कि एनीमेशन के कुछ पहलुओं को शायद अच्छे प्रकार से शब्दों में नहीं दर्शाया जा सकता। ऐसे मामलों में, प्रोफेसर 'रों जिम्मेदारी सुनिश्चित करने के लिए एक विकलांगता के साथ छात्र, जानकारी जानने के लिए ऊपर एक बराबर प्रस्तुति (जॉनसन एंड ब्राउन, 2003) के साथ नहीं आने के लिए एक समान अवसर होता है।

NOTES

## डेमेस्टर की शुरूआत में छात्र के साथ 4.5 मिलिए

आप के साथ पूरा करने के लिए बाहर कार्य करने के लिए कैसे उनकी जरूरतों की अपनी कक्षा में पूर्ण किया जाएगा। आवास पत्र के साथ छात्रों की जरूरत होती है वह विचार करे। यह एक अच्छा विचार है इन बैठकों के लिए मानक प्रक्रियाओं का एक सेट तैयार करना है। नीचे अंक आप छात्र जिम्मेदारियों और सवाल आप का जवाब की आवश्कता के बारे में बनाना चाहते लिखे। (याद रखें, अक्षम करने हालत की प्रकृति गोपनीय है, इसलिए इस बारे में मत पूछो।) आप एक सा बातें संबंध विकसित करने के लिए से बैठक शुरू कर सकते हैं। सह पूर्व उल्लेख परिवहन मुद्दों का पता लगाने के एक बिन्दु बनाओ। आवास पत्र पर जाएँ और किसी भी आइटम तक स्पष्ट नहीं है के स्पष्टीकरण चाहते हैं। उदाहरण के लिए, अगर छात्र एक दृश्य हान जरूरी होता है कि कमरे के सामने के पास बैठे है, कितने करीब छात्र होने की जरूरत है पता लगाना। आवास पत्र अक्सर कहते हैं कि "के रूप में की आवश्यकता है, "तो तुम छात्र की जिम्मेदारी आसपास से क्या आप जानते हैं जब आवास की जरूरत है जाने के लिए व्यावहारिक मुद्दों को स्पष्ट करना चाहिए। यह भी एक अच्छा विचार है नाम, टेलीफोन नंबर तथा विकलांग छात्रों के लिए कार्यालय में छात्र का संपर्क व्यक्ति के लिए ई-मेल एड्रेस पता लगाने के लिए है।

## वैकल्पिक सामग्री

दृष्टि दोष और सीखने विकलांग के साथ छात्रों वैकल्पिक ग्रथों का उपयोग करें। विकलांग के साथ अपने भविष्य के छात्रों को इन सामग्रियों प्राप्त करने की प्रक्रिया में तीव्रता लाने के लिए पता लगाने के लिए कि क्या इस तरह सामग्री तैयार किया गया है और कैसे छात्रों को प्राप्त कर सकते हैं अपने प्रकाशक की बिक्री प्रतिनिधि से संपर्क अनेक प्रकाशक (अक्सर राज्य एजेंसियों द्वारा छात्रों को प्रदान की) सीडभ-रोम डिस्क कि विशेष कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर द्वारा भाषण में बदला जा सकता पर पाठ्यपुस्तकों के सादा पाठ फाइलें हैं। इसी तरह अनेक पाठ्यपुस्तकों ब्लांइड और Dyslexic के लिए रिकॉर्डिंग द्वारा दर्ज किया गया है।

अपनी वेबसाइट पर आप अपने पाठ्यपुस्तक के लिए खोज तथा कैसे अपने छात्रों को यह, अगर यह उपलब्ध है आदेश कर सकते हैं पता कर सकते हैं। जानकारी आप छात्रों को पाने के साथ ाेजे देते हैं, तो उन्हें सलाह है कि जरूरी पाठ्यक्रम सामग्री प्राप्त करने के जिम्मेदारी है। आपको शायद यह भी कहना चाहिए हो सकता है वैकल्पिक पाठ प्राप्त करने में और है कि छात्र एक देरी कार्य जारी रखने के लिए जिम्मेदार होगा।

वैकल्पिक सामग्री उपलब्ध नहीं हैं, विकलांग कार्यालय के लिए पाठ विशेष रूप से दृष्टि दोष अथवा जो पूरी तरह से डिस्लेक्सिक हैं साथ छात्रों के लिए अपने कर्मचारियों द्वारा दर्ज टेप किया जाना जो पूरी तरह से डिस्लेक्सिक हैं साथ छात्रों के लिए अपने कर्मचरियों द्वारा दर्ज टेप किया जाना है, कि व्यवस्था कर सकते हैं। सीखने विकलांग के अन्य प्रकार के साथ छात्रों के लिए विकलांग कार्यालय पढ़ने कार्य को पूर्ण करने के लिए अतिरिक्त समय देने के लिए आपकों सलाह कर सकते हैं।

यह सलाह स्वाभाविक रूप से एक सेमेस्टर में पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए छात्र की उम्मीद की तर्कसंगतता के मुद्दे उठाती है। मेरी नजर में, जाँच कर वैकल्पिक माल की उपलब्धता पाठ्यक्रम लम्बाई का एक विस्तार के लिए वार्तालाप करने के लिए बेहतर है एक छोटे से समय बिताने वास्तव में, जब पुस्तकों तथा अन्य सामग्री के चयन, यह एक अच्छा विचार वैकल्पिक माल की उपलब्धता पर विचार करना है।

## कक्षा व्याख्यान का लाभ उठाएँ को विद्यार्थी का क्षमता

छात्र श्रवण बाधित है, तो आप पता लगाने के लिए कि क्या वह होंठ पढ़ता है अथवा एक दुभाषिया के साथ किया जाएगा कि आवश्यक है छात्र है कि वह अपनी दिशा में बात करने के लिए अगर वह होंठ पढ़ता याद दिलाने के लिए जरूरत हो सकती है सलाह कॉलेज एक दुभाषिया प्रदान कर रहा है, तो कैसे इस तरह के मुश्किल शर्तो पर हस्ताक्षर करने जैसे मुद्दों नियंत्रित किया जाएगा के बारे में इस व्यक्ति से बात।

## टेप रिकॉर्डिंग व्याख्यान

कई प्रोफेसरों के लिए एक आवास ''की जरूरत है नोट लेने के साथ मदद'' को संबोधित करने में अपने व्याख्यान टेप रिकॉर्ड करने के लिए निः शक्त विद्यार्थी के लिए अनुमति देते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं, तो अपने पाठ्यक्रम में एक टेप रिकॉर्डिंग नीति समस्त छात्रों पर लागू होने वाला करते हुए कहा कि छात्रों को जो टेप दूसरों की गोपनीयता का सम्मान करते हैं और नहीं बैटरी या टेप को बदलने के लिए वर्ग को बाधित करना होगा शामिल हैं। यह भी अच्छ्ज्ञ विचार एक वर्ग सत्र से पहले आप अथवा किसी और टेप कक्षा में सभी छात्रों से अनुमति प्रापत करने के लिए है। स्टूडेंट्स टिप्पणियों और प्रश्नों उनके गोपनीय शैक्षिक रिकॉर्ड का हिस्सा माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह में अपने राज्स की अनुमति के बिना लोगों के बयान दर्ज करने के लिए अवैध रूप हो सकता है।

NOTES

## टाइप व्याख्यान नोट्स और पूर्व दर्ज व्याख्यान

आप कक्षा सत्र, दर्ज की गई विकलांग छात्रों के लिए आपके माध्यम लिखे गए व्याख्यान नोट्स तैयार करने पर विचार नहीं करना चाहते हैं। साधारण टेक्स्ट फॉर्मेट में इन फाइलों को सहेजें ताकि कंप्यूटर सॉफ्टवेयर ऊपर उल्लेख द्वारा भाषण में बदला जा सकता। आप अपना खुद का रिकॉर्डिंग बनाने पर विचार हो सकता है। मेरे साथियों में से एक उनके व्याख्यानों के एमपी 3 फाइलें कि समस्त छात्रों को पाठ्यक्रम मुखपृष्ठ से डाउनलोड कर सकते हैं बनाया गया है। उन्होंने कहा कि सीडी पर फाइलों को प्रदान करता है छात्रों के लिए एमपी 3 प्लेयर हाईवेयर को अपने स्वयं सीडी को जलाने के लिए नहीं है, तो। हालांकि इस दृष्टिकोण काफी समय लेने वाली है, परेशानी से कमी फायदे स्पष्ट हो जाते हैं जब एक छात्र एक आवास पत्र है कि नोट लेने के साथ सहायता और आप बस उसे कुछ सीडी या मुद्रित नोटों के पन्नों हाथ को आवश्यकता है के साथ प्रस्तुत करता है। आपके कॉलेज में मीडिया सेवाओं के कर्मियों ने इस कार्य के साथ सहायता कर सकते हैं हो सकता है। आप इस तरह के एड्स के वाणिज्यिक दुरुपयोग के बारे में चिंतित हैं, तो कॉपीराइट हुए कहा कि वे आपकी अनुमति के बिना reproduced नहीं किया जा सकता और व्यक्तिगत अध्ययन का उद्देश्य के लिए पूर्ण रूप से प्रदान की जाती हैं नोटिस के साथ नोट्स अथवा ऑडियो फाइलो को टैग करें।

## जब तैयार नोट्स और टेप व्याख्यान अपर्याप्त हैं

जब मैं आँकड़े सिखाना, मैं चॉकबोर्ड है कि मैं पहले से तैयार किया है और टाइप नोट में सम्मिलित हो सकते हैं पर समस्याओं कार्य करते हैं। हालांकि, मैं अक्सर छात्रों द्वारा पूछे गये सवालों के जवाब में समस्याओं काम करते हैं। छात्रों उनकी विकलांगता उन्हें निम्न में चॉकबोर्ड पर क्या कर रहा है, भले ही वे सत्र को रिकॉर्ड शिक्षा का अधिकांश अनुपात याद करेंगे से रोकता है। अंतिम सेमेस्टर, प्रत्येक कक्षा के बाद मैं एक आंकड़े छात्र जो सीमित सपना था के साथ मुलाकात की। मैं उसे बोर्ड से महत्वपूर्ण समस्याओं को कॉपी में निर्देशित तथा अनिवार्य रूप से हर एक को फिर से पढ़ाया जाता है के रूप में वह यह नकल की।

एक विकलांगता के साथ छात्र के लिए एक किराए टिप्पणी लेने वाली गेंदबाज भी कार्य करता है। आप स्वयंसेवक के लिए कक्षा में एक और छात्र पूछ सकते हैं, लेकिप अगर टिप्पणी लेने वाली गेंदबाजी अनुपस्थित है क्या होता है ? इसके अतिरिक्त आप कैसे सेमेस्टर की शुरूआत में पता है जो छात्रों को अच्छा टिप्पणी लेने वाली हो जाएगा करते हैं ? सैन्य मुद्दों टिप्पणी देने वाली नोटों को कॉपी करने की जरूरत के चारों ओर। सबसे अच्छा समाधान विकलांग छात्रों के लिए कार्यालय

से सहायता माँगना है। यह धन उक नोट लेने वाले गेंदबाज को किराये पर पड़ सकता है। इस तरह अपने ही बेटी है, जो कानूनी तौर पर अंधा होता है, कामयाब स्नातक गणित की कक्षाओं हैं राज्य एजेंसी है कि कार्य करता है नेत्रहीनों हर वर्ग के लिए उसके साथ देने के लिए एक नोट लेने वाले गेंदबाज का भुगतान किया। वह नोट लेने वाले गेंदबाज को खोजने के लिए और एजेंसी के लिए सभी आवश्यक दस्तावेज पूर्ण करने के लिए आवश्यक था। उसके प्रोफेसरों केवल जिम्मेदारी टिप्पणी लेने वाले गेंदबाज कक्षाओं में हिस्सा लेने के लिए अनुमति प्रदान करने के लिए किया गया था।

NOTES

## परीक्षण मुद्दे

सबसे ठोस संभव शब्दों में विकलांग छात्रों के लिए परीक्षण प्रक्रिया स्थापित करने के लिए कोशिश करें। यहाँ तक कि अगर छात्रों विकलांग कार्यालय में उनके परीक्षा लें, सबसे प्रशिक्षकों और विकलांगता सेवाओं पेशेवरों है कि छात्रों को अपने सहपाठियों के रूप में एक ही समय में परीक्षा देने का बल देते हैं; इतना स्पष्ट संदर्भ में छात्र बताओं। यह खासकर तब महत्वपूर्ण यदि आप एक "कोई मेकअप परीक्षा की नीति है। आप एक विशिष्ट समय स्थापित नहीं है, तो जब छात्रों के लिए एक परीक्षा लेने के लिए अपेक्षा की जाती है, तो आप छात्रों अंतनिर्हित संदेश है कि वे अपने को चुनने के एक समय में परीक्षा दे सकते हैं भेजते का खतरा हैं, उन्हें अपने सहपाठियों पर एक विशिष्ट लाभ दे रही है, जो संगत नहीं है या तो पत्र अथवा विकलांगता कानून ही भावना के साथ।

## लिखित कार्य के लिए विस्तारित समय सीमा

पत्र आवास अक्सर प्रचालन परिभाषित "अतिरिक्त समय।" वे कहते हैं कि हो सकता है विद्यार्थी को 50 प्रतिशत अधिक समय मिलना चाहिए या दो बार के रूप में अधिक है, या इस तरह का कुछ। हालांकि, इस तरह के आवास आम तौर पर ध्यान में परीक्षण नहीं लिखा कार्य है जिसके लिए छात्रों को समय की विस्तारित अवधि के साथ विकसित कर रहे हैं।

## 4.13 के पीछे और चिन्ताओं गिरने कोर्स प्रदर्शन और ग्रेड के बारे में

अपने पाठ्यक्रम के लिए किसी भी उपलब्ध ट्यूटोरियल सेवाएँ और किसी भी सेवाएँ के बारे में छात्रों को बताएँ निबंध अथवा शोध पत्र के साथ मदद करने के लिए। हांलाकि, ध्यान "बाधाओं" सिद्धान्त रहते हैं। जब तक मानवक ट्यूशन सेवाओं विकलांग छात्रों के लिए उपलब्ध हैं, ट्यूशन प्रदान करने सा परे है कि आप किसी भी छात्र के लिए प्रदान करेगा सहायता करने के लिए कोई जरूरत नहीं है। फिर भी आप आपने विश्वास है कि, पर्याप्त प्रयास को देखते हुए अधिकार छात्र

अच्छी तरह से अपने पाठ्यक्रम में क्या कर सकते हैं पर जोर देना चाहिए। बेशक, आप "अच्छी तरह से कर।" प्रचालन परिभाषित करने के लिए चाहते हो सकता है मैं कारक है कि उनके ग्रेड की भविष्यवाणी बारे में बात करके प्रत्येक सेमेस्टर की शुरुआत में समस्त छात्रों के लिए यह करते हैं।



एक छात्र एक विशेष बाधा यह है कि कुछ हद तक उसके नियंत्रण से बाहर है का सामना कर रहा है, तो वह एक और पहलू उसके नियंत्रण में है कि जोड़ तोड़ के माध्यम क्षतिपूर्ति करना होगा। उदाहरण के लिए, अपने छात्रों के कई के लिए एक बेकाबू पहलू यह है कि अंग्रेजी को अपनी प्राथमिक भाषा नहीं है। इसके विपरीत, निर्णय या तो पूर्व या बाद में वे अपने आवश्यक ईएसएल पाठ्यक्रमों पूरा कर लिया है उनके नियंत्रण में है परिचयात्मक मनोविज्ञान लेने के लिए। इसी तरह, समय की राशि वे अध्ययन कर के लिए समर्पित है और किस हद तक वे ट्यूटोरियल सेवाएँ उपयोग करने के लिए उन पर निर्भर करता है। इस तरह एक गैर देशी अंग्रेजी बोलने वाले छात्र जो ईएसएल अनुक्रम पूर्ण किया और जो नहीं किया गया है का अध्ययन पढ़ाने के नीचे उसकी ग्रेछ उम्मीदों का समायोजन करना चाहिए के लिए बहुत कम समय है।

इस प्रकार मैं छात्रों है कि, हालांकि मैं उत्साह से उनकी उपलब्धि के लक्ष्यों का समर्थन, मैं, भी यथार्थवादी उम्मीदों वकालत करने के लिए संवाद। जो विकलांग छात्रों के साथ बातचीत में, मैं यह सुनिश्चित करें कि परिणाम वे अपने कोर्स में अनुभव के लिए अपने खुद की क्षमता और प्रयास की एक उत्पाद होगा हर संभव प्रयास करने के लिए मेरी इच्छा पर बल देना।

## 4.14 छात्रों की आवश्यकता होती है एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए

आप एक "सीखने अनुबंधन" है कि दोनों प्रशिक्षक तथा छात्र जिम्मेदारियों को निर्दिष्ट हस्ताक्षर करने के लिए नि: शक्त छात्रों की जरूरत के लिए बुद्धिमान हो सकता है। विकलांग छात्रों के लिए अनेक कॉलेज कार्यालयों इन छात्रों को अपने कार्यालय में अनुबंध है कि छात्र और विकलांगता कार्यालय में कर्मचारियों की जिम्मेदारियों रूपरेखा पर हस्ताक्षर करने की जरूरत है उन्होंने यह भी राज्य प्रक्रियाओं छात्रों का पालन करें जब वे कोई शिकायत है या एक आवास संशोधित करने की आवश्यकता है चाहिए। ऐसा ही एक अनुबंध एक छात्र और एक प्रोफेसर को शामिल निर्दिष्ठ है कि किसी भी परीक्षण के आवास लागू किया जाएगा और लिखित काम के लिए नियत दिनांक निर्दिष्ट करना होगा। अगर मैं छात्र मैं अपने उद्घाटन पैरा में वर्णित के साथ इस तरह एक अनुबंध में प्रवेश किया था, यह एक

तारीख जिस पर शोध पत्र कारण से था शामिल थे। उस तिथि के पश्चात् में कोई कोई देर काम करने की नीति लागू होता है।



**एक सक्रिय दृष्टिकोण से लाभ**—इसमें कोई शक नहीं है कि विकलांग छात्रों के लिए आवास उपलब्ध कराने के शिक्षण के लिए निराशा और तनाव जोड़ सकते हैं नहीं हैं जब मैं ''अतिरिक्त समय'' ई-मेल मैं इस स्तंम्भ के उद्घाटन के अवसर पर दिए गए वर्णन प्राप्त किया कि मैं का लाभ ले लिया जा रहा था कि। मैं सिर्फ अपने आप को इसके लिए जिम्मेदार है, हालोंकि क्योंकि मैं सेमेस्टर की शुरूआत में कागज की समय सीमा को संबोधित किया जाना चाहिए था। आज के उच्च शिक्षा वातावरण में शिक्षण किसी को भी इस प्रकार के आवास बनाने का सामना करना पड़ेगा। जब आवास की जरूरत है उठता है समय का एक अपेक्षाकृत छोटा निवेश बहुत तनाव को कम कर सकते हैं। यही वजह है, हम प्रोफेसरों प्रासंगिक जानकारी हासिल कर ली है और विकलांग के विभिन्न प्रकार के साथ छात्रों के लिए हमारे पाठ्यक्रम अनुकूल करने की प्रक्रिया पर विचार किया है तो हम शोषण अथवा निष्प्रभावी महसूस करने की संभावना होगी। बजाय, हम साथ या बिना विकलांग अपने खुद और दूसरों के व्यवहार की समझ को प्राप्त छात्रों की सहायता करने पर हमारी ऊर्जा ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

## 4.15 आवास

आवास परिवर्तन है कि यह आसान अपने बच्चे को जानने के लिए कर रहे हैं। वे बदलाव नहीं करते क्या आपके बच्चे सीख रहा है। वे बदल कैसे अपने बच्चे सीख रहा है। यह सुनिश्चित करें कि आपके बच्चे की सीखने और ध्यान मुद्दों दिखा कि वह क्या जानता है के मार्ग में नहीं मिलता है बनाने के लिए एक तरीका है।

**क्या आवास के लिए कर रहे हैं**—सीखने और ध्यान मुद्दों के साथ बच्चे अन्य बच्चों को अपनी आयु तुलना में अलग सामग्री सीखने की आवश्यकता हो सकती है। आवास बच्चे जानने के लिए और अन्य बच्चों को अपनी आयु के रूप में एक ही सामग्री के ज्ञान का प्रदर्शन करने के तरीके देने के लिए बनाया गया है।

उदाहरण के लिए, अगर आपका बच्चा लेखन के साथ कठिनाई है, शिक्षक उसे मौखिक रूप से एक परीक्षण के लिए उत्तर दे सकता है। इस परीक्षा के लिए अपने बालक ले जा रहा है नहीं बदलता है। यह जिस तरह से बदल जाता है वह यह दर्शाता है कि वह क्या जानता है।

आवास क्या बच्चों को जानने के लिए उम्मीदों को कम नहीं है। वे बदलाव नहीं करते क्या बच्चों को सिखाया जाता है या पर जाँच की जाती है। इसके बजाय, वे

बच्चों की कक्षा में अच्छी तरह से सीखने की क्षमता का समर्थन और बाधाओं को हटाने के माध्यम परीक्षण पर अपने ज्ञान को दिखाते हैं।

NOTES

**आवास के प्रकार**—आवास सीखने से संबंधित चीजों में बदलाव कर सकते हैं। यहाँ रहने की जगह के चार श्रेणियाँ हैं।

- **प्रस्तुति:** जिस प्रकार से निर्देशों और जानकारी में बदलाव प्रस्तुत कर रहे हैं। उदाहरण: एक बच्चे के बजाय एक पाठ पढ़ने की श्रव्य किताबें सुनने के लिए दें।
- **उत्तर:** जिस तरह से एक बच्चे को कार्य अथवा परीक्षण पूर्ण करता है मैं एक परिवर्तन। उदाहरण: एक बच्चे की अनुमति दे लिखा की बजाय बोले जाने वाले उत्तर दे।
- **स्थापना:** वातावरण जहाँ एक बच्चे कार्य करता है मैं एक परिवर्तन। उदाहरण: एक बच्चे की अनुमति दे कम distractions के साथ अथवा छोटे समूह में एक अलग कमरे में एक परीक्षा पास करनी होती।
- **समय और शेड्यूलिंग:** कितना समय एक बच्चे को किसी कार्य को पूर्ण लिए है, अथवा टूट जाता है लेने के लिए अनुमति दी जा रही वाला परिवर्तन है। उदाहरण: एक बच्चे के लिए परीक्षण पर अधिक समय प्रदान करना।

अलग रहने की जगह अलग बच्चों के लिए सहायक होते हैं। यह निर्भर करता है कि वे क्या के साथ संघर्ष कर रहे हैं। आम पर एक नजर डालें सीखने और ध्यान मुद्दों के साथ बालकों के लिए रहने की जगह।

**कैसे आवास कार्य**—यदि आपका बच्चा एक है Individualized शिक्षा कार्यक्रम (IEP) या (504) योजना, आवास योजना में लिखा जाता है। आपकी सहायता से IEP या 504 योजना टीम इस तरह के औपचारिक के आवास पर फैसला करता है। वे ''औपचारिक'' कर रहे हैं, क्योंकि कानून का कहना है कि वे पालन किया जाना चाहिए।

''आवास क्या बच्चों को जानने के लिए उम्मीदों को कम नहीं है।''

कभी-कभी आप तथा शिक्षक डाल करने के लिए एक साथ कार्य कर सकते हैं। अनौपचारिक समर्थन करता है। एक IEP या 504 योजना के बिना स्थान में। ये निर्देश दोहरा या दे एक बच्चे (जैसे एक शोर दरवाजे दूर के रूप में) कक्षा में कहीं और बैठने के सम्मिलित हो सकते हैं।

आप का पीछा के बारे में सोच रहे हैं विशेष शिक्षा सेवाओं, अनौपचारिक आवास के लिए एक रास्ता क्या कक्षा में अपने बच्चे को सहायता करता है (और क्या नहीं) लगाना बाहर शुरू करने के लिए हो सकता है। अपने बच्चे को एक IEP अथवा 504 योजना नहीं है, तो आप पता कर सकते हैं अगर वह होसकता है विशेष शिक्षा सेवाओं के लिए पात्र।

NOTES

**के लिए बाहर देखने के लिए क्या**—सिर्फ इसलिए कि एक IEP या 504 योजना सूचियों औपचारिक आवास मतलब यह नहीं है कि वे हमेशा कक्षा में पीछा कर रहे हैं। यह क्या विद्यालय में हो रहा है पर नजर रखने के लिए और सुनिश्चित करें कि आवास एक तरीका है कि अपने बच्चे को परेशान नहीं है में उपयोग किया जा रहा बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। सुनिश्चित करें कि आपके बच्चे के बनाने के लिए सुझाव दिए गए अन्वेषण IEP या 504 योजना ठीक तरह से लागू किया जा रहा है।

यह भी समझना महत्वपूर्ण है जब एक आवास में उपयोग किया जा माना जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके बच्चे परीक्षण 30 मिनट से अधिक पूर्ण करने के लिए ज्यादा समय प्राप्त करने के लिए माना जाता है, तो उस पर लागू होता है सभी परीक्षण-न केवल मानकीकृत परीक्षण। एक आवास के लिए अपने बच्चे को पहुँच कम किया जा रहा है अथवा खंडन किया, इन तरीकों से प्रतिक्रिया करने के लिए पर एक नजर डालें।

ध्यान रखें कि आवास संशोधनों के रूप में ही नहीं हैं। सामान्य तौर पर, रहने की जगह बदल कैसे अपने बच्चे सीख रहा है। संशोधन को बदलने क्या आपके बच्चे सीख रहा है।

जब सही तरीके से इस्तेमाल किया है, रहने की जगह अपने बच्चे को दिखा कि वह क्या तो वह स्कूल में सफल हो सीख लिया का बेहतर मौका दे सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि आपके बच्चे के रहने की जगह अपने विशिष्ठ आवश्यकताओं के अनुरूप रहे हैं। इन जरूरतों को समय के साथ बदल सकता है, क्योंकि वह स्वामी नए कौशल, नवीन तकनीक को और अधिक चुनौतीपूर्ण काम या एक्सेस का लाभ उठाने का सामना करना पड़ता।

**आवास के लिए पात्रता**—छात्रों के आवास के लिए पात्र होने के पश्चात् वे ठीक से मूल्यांकन किया गया है और सेवाओं के लिएण पात्र निर्धारित कर रहे हैं IEP टीम या टीम है कि छात्र की जरूरतों को निर्धारित करता है और योजना पुनर्वास अधिनियम की धारा 540 के तहत जरूरी विकतिस शैक्षणिक उपलब्धि और कार्यात्मक प्रदर्शन के वर्तमान स्तर के साथ ही विकलांगता के प्रभाव को समझता है। टीम निर्धारित करता है क्या आवास आवश्यक हैं। टीम एक IEP या धारा 540

NOTES

योजना में आवास के लिए की जरूरत के बारे में सब निर्धारण दर्ज होते है। साक्ष्य दिखाना चाहिए कि छात्र इन योजनाओं में से एक के आवश्यक सेवाओं के लिए योग्य पाया गया है।

**विकलांग की श्रेणियाँ**—फ्लोरिडा में प्रयोग किया जाता विकलांग की श्रेणियाँ का एक संक्षिप्त विवरण अगले चार पेजों पर इस प्रकार है। एक छात्र है जो असाधारण छात्र शिक्षा के लिए पात्र है (ESE) सेवाओं के लिए एक या इन श्रेणियों में से ज्यादा से पहचाना जाता है। ये संक्षिप्त विवरण शब्दावली और परिवर्णी स्पष्ट।

**विशिष्ट सीखसने विकलांग (SLD)**—एक विशिष्ट विकलांगता समझ में या बोले या लिखित भाषा के उपयोग में सम्मिलित बुनियादी शिक्षा प्रक्रियाओं में से एक या एक से ज्यादा में एक विकार है। छात्रों को सुनने के लिए बात करने हैं, पढ़ते हैं, लिखते हैं, वर्तनी या गणित कर उनकी क्षमता को प्रभावित कर गंभीर परेशानियों का हो सकता है। (नियम 6A-६.०३, ०१८, एफएसी)

**बौद्धिक रूप से विकलांग (IND)**—एक बौद्धिक विकलांगता के साथ छात्रों को काफी नीचे औसत सामान्य बौद्धिक तथा अनुकूली कामकाज कि (18 वर्ष के माध्यम से जन्म) विकास की अवधि के दौरान प्रकट होता है ये छात्रों शैक्षिक कौशल में महत्वपूर्ण विलंब होता है। (नियम 6A-६.०३, ०११ एफएसी)

**भावानात्मक/व्यवहार विकलांग (ई/BD)**—लगातार और लगातार भावनात्मक तथा व्यवहार प्रतिक्रियाओं कि प्रतिकूल शैक्षिक वातावरण है कि उम्र, संस्कृति, लिंग या जातीयता के लिए नहीं ठहराया जा सकता में प्रदर्शन को प्रभावित के साथ छात्रों को (नियम 6A-६.०३, ०१६, एफएसी)

**बाधिर या कम सुनने (DHH)**—कि भाषाई सूचना के प्रसंस्करण को प्रभावित पर्याप्त सुनवाई impairments के साथ छात्रों बधिर या कम सुनने के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। छात्रों को सांकेतिक भाषा अथ्यावा कुल संचार का उपयोग कर सकते हैं विभिन्न छात्रों ऐसे एम्पलीफायरों के रूप में, सहायक तकनीक की जरूरत है या श्रवण यंत्र का उपयोग कर सकते हैं। जो बधिर या की-सुनवाई कर रहे हैं छात्रों को अक्सर कि उनकी सुनने नुकसान से जुड़े हुए हैं पढ़ना, लिखना, तथा संचार कौशल के साथ कठिनाइयों है। (नियम 6A-६.०३, ०१३, एफएसी) दिखने में खंडित (VI) जो अंधे हैं या नेत्रहीनों दृष्ठि से उपयोग की एक महत्वपूर्ण नुकसान छात्र। छात्रों सहायता के लिए उन्हें जानकारी प्राप्त पढ़ने और लिखने अथवा सहायक तकनीक के लिए ब्रेल का उपयोग कर सकते हैं। (नियम 6A-६.०३, ०१४, एफएसी)

**दोहरी संवेदी बिगड़ा (डी एस आई)**—जो है, या जो एक अपक्षयी शर्त यह है कि इस तरह के एक नुकसान को बढ़ावा मिलेगा। दोनों दृष्टि और सुनवाई को प्रभावित करने वाले दोहरे संवेदी दोष है छात्रों को दोहरी संवेदी बिगड़ा के रूप में वर्गीकृत कर रहे हैं। इस संयोजन के वातावरण में, जानकारी प्राप्त करते हैं, या समारोह करने की क्षमतों में एक गंभीर हानि की वजी बनती है। (नियम 6A-६. ०३, ०२२, एफएसी)

NOTES

## आवास के 4.17 प्रभाव

आवास सीखने की उम्मीदों को कम नहीं करते। अनुदेश अथवा मूल्यांकन गतिविधि में बदलाव विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए उम्मीदों को कम करती है, तो वह एक संशोधन माना जाता है। वाक्यांश पाठ्यक्रम संशोधन कभी-कभी सीखने की उम्मीदों पर प्रभाव पर बल देना प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक प्राथमिक छात्र जो सीखता कैसे पाँच शब्द प्रत्येक सप्ताह के बजाय अपने साथियों करने के लिए आवंटित 25 शब्दों प्रत्येक सप्ताह के बजाह अपने साथियों करने के लिए आवंटित 25 शब्दों के सीखने के लिए उम्मीदों में संशोधन किया है वर्तनी। सीखने के लिए परिणामों काफी हद तक कम रहे हैं पाठ्यक्रम संशोधनों के उदाहरण में वर्णित है—

- इस तरह के कम उद्देश्यों, छोटे पाठ, या शब्दावली शब्दों का एक छोटी संख्या के रूप में कम सामग्री की जरूरत होती है।
- सबसे आसान समस्याओं का कार्य और आंकलन सीमित टास्क स्पांतरों लंबाई या अभ्यास या परीक्षण आइटम की जटिलता को कम तथा कार्य या परीक्षण आइटम अधिक बनाने के। सामान्य तौर पर, शिक्षकों केवल शिक्षा का प्रारम्भिक चरणें के कार्य रूपांतरों का उपयोग करें और फिर उन्हें फीका ताकि छात्र दक्षता का अपेक्षित स्तर पर अवधारण अथवा कौशल सीखने का अवसर है चाहिए। टास्क स्पांतरों के आवास माना जाता है। क्योंकि वे अस्थायी हैं और वे सीखने की उम्मीदों को कम नहीं करते। कार्य रूपांतरों के उदाहरण में वर्णित हैं—

  ताकि एक छात्र सिर्फ चार के बजास तीन विकल्पों में से चुनने के लिए है। एक बहुविकल्प प्रश्न पर विकल्पों में से एक बाहर पार करने के इस प्रकार के रूप कार्य या आंकलन कम जटिल, बनाना।
- उपलब्ध कराना संकेत या सुराग ऐसी किताव जहाँ प्रथम का जवाब पाया जा सकता है मैं पृष्ठ संख्या के रूप में काम और परीक्षण पर प्रक्रियाओं को दूर करने के।

अनुदेश अथवा आंकलन के दौरान सीखने की उम्मीदों को बदलने से छात्र की महत्वपूर्ण सामग्री सीखने का अवसर कम कने के अनपेक्षित परिणम हो सकता है। यह एक डिप्लोमा के लिए स्नातक स्तर की पढ़ाई जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं होने के लिए जोखिक में छात्र डाल सकता है। यहाँ प्रश्न जब आवास से परे जा रहा है और एक छात्र की सीखने की उम्मीदों को संशोधित करने पर विचार के बारे में सोचना है।

(1) इस विशेष ग्रेड स्तर पर छात्रों के लिए शैक्षिक सामग्री मानक क्या हैं ?

(2) वहाँ ग्रेड–स्तर मानक है कि एक छात्र को जानने के लिए की उम्मीद नहीं की जाएगी हैं ?

(3) उम्मीदों में इन संशोधनों को राज्य के मूल्यांकन पर एक छात्र के प्रदर्शन को प्रभावित करेगा ?

(4) कैसे इन संशोधनों को एक छात्र की भविष्य में सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम में हिस्सा लेने की क्षमता को प्रभातिव करेगा ? छात्र के अवसर छूट जाते ग्रेड–स्तर की सामग्री को जानने के लिए के कारण से आगे और आगे पीछे गिर जाएगी ?

(5) अन्य निर्देशात्मक रणनीतियों और आवास छात्रों ग्रेड–स्तर की सामग्री गुरु और ग्रेड–स्तर के मूल्यांकन पर प्रवीणता प्राप्त करने में सहायता मिलेगी ?

## 4.18 सारांश

अगली पीढ़ी के सनशाइन राज्य मानकों को अपनाने चुनौतीपूर्ण ग्रेड स्तर शैक्षिक मानकों को प्राप्त समस्त छात्रों के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मंच सेट। नि: शक्त छात्रों को शिक्षा और मूल्यांकन के दौरान आवश्यक आवास होना जरूरी है। सभी छात्रों के लिए मानकों के समान पहुँच प्रदान करने के लिए दोनों सामान्य और विशेष शिक्षकों राज्य और जिला स्तर और जिला स्तर पर शैक्षिक उम्मीदों और जवाबदेही प्रणाली के गहन ज्ञान होना जरूरी है। ''सादे सच्चाई यह है कि विकलांगता सीखने के लिए और पूर्ण रूप से ज्ञान और क्षमताओं का प्रदर्शन करने के लिए एक गंभीर चुनौती कर सकते हैं।

आवास में मदद कर सकते छात्रों का काबू पाने के लिए अपने विकलांग द्वारा प्रस्तुत बाधाओं को कम।। ''आवास अनुदेश और मूल्यांकन में परिवर्तन विकलांग छात्रों के लिए आवश्यक हो सकता है कि प्रदान करते हैं। आवास छात्रों को भाग लेने तथा सामान्य पाठ्यक्रम में प्रगति करने में सहायक।

# परीक्षापयोगी प्रश्न

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) कालेज नीतियों से परिचित होना क्यों आवश्यक है ? स्पष्ट कीजिए।

(2) कोर्स की क्षमता में सुधार पर एक विस्तृत निबन्ध लिखो।

(3) विकलांग की श्रेणियों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

(1) एक सक्रिय दृष्टिकोण से लाभ से आपका क्या अभिप्राय है ?

(2) टेप रिकॉर्डिंग पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(3) परीक्षण मुद्दे को संक्षेप में समझाइए।

NOTES

NOTES

# 14 सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए निर्देशात्मक सामग्री

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री
- दृश्य-श्रव्य सामग्री के कार्य
- श्रव्य-सहायक शिक्षण सामग्री
- दृश्य-सहायक शिक्षण सामग्री
- चित्र विस्तारक यंत्र
- विस्तारक की उपयोगिताएँ
- चित्र विस्तारक के उपयोग में सावधानियाँ
- सिरोत्तर प्रक्षेपण के उपयोग की विधि
- पारदर्शिता बनाने की प्रक्रिया
- कक्षा शिक्षण में दूरदर्शन तथा चलचित्रों का प्रयोग
- दृश्य-श्रव्य सामग्री की विशेषताएँ
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री
- दृश्य-श्रव्य सामग्री के कार्य
- श्रव्य-सहायक शिक्षण सामग्री
- दृश्य-सहायक शिक्षण सामग्री
- चित्र विस्तारक यत्र
- विस्तारक की उपयोगिताएँ
- चित्र विस्तारक के उपयोग में सावधानियाँ
- सिरोत्तर प्रक्षेपण के उपयोग की विधि
- पारदर्शिता बनाने की प्रक्रिया
- कक्षा शिक्षण में दूरदर्शन तथा चलचित्रों का प्रयोग
- दृश्य-श्रव्य सामग्री की विशेषताएँ

NOTES

## प्राक्कथन

अधिगम की परिस्थितियों (Learning Situations) का सृजन करने तथा अधिगम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सम्प्रेषण शिक्षण-युक्तियाँ तथा आव्यूह का चयन किया जाता है। इनको प्रभावशाली बनाने में दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के प्रयोग से अधिगम की परिस्थितियों (Learning Conditions) को अधिक प्रभावशाली रूप में उत्पन्न किया जा सकता है और उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति की जा सकती है। इसलिए शैक्षिक तकनीकी (Education Technology) में दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के उपयोग को हार्डवेयर-आयाम (Hardware approach) माना जाता है। परम्परागत विचारधारा के अनुसार दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का उपयोग पाठ को रोचक बनाने के लिए किया जाता है, क्योंकि इनके द्वारा सीखने में एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियाँ कार्य करती हैं। दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग से छात्र पाठ में अधिक रुचि लेते हैं और सीखने के लिए तैयार रहते हैं। शैक्षिक तकनीककी के आविर्भाव से दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री को अधिक सार्थक रूप में प्रयुक्त किया जाता है और इनका यथार्थपन (Interpretation) भी बदल गया है। शोध कार्यों द्वारा यह निष्कर्ष निकाले गये हैं कि विशिष्ट सहायक सामग्री को विशिष्ट उद्देश्य और अधिगम के स्वरूप के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। इसका उल्लेख यहाँ किया गया है।

## दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री (AUDIO-VISUAL TEACHING AIDS)

### श्रव्य-दृश्य सामग्री का अर्थ

श्रव्य-दृश्य सामग्री का तात्पर्य शिक्षण के उन साधनों से है, जिनके प्रयोग से बच्चों की श्रव्य तथा दृश्य की ज्ञानेन्द्रियाँ क्रियाशील हो जाती हैं और वे पाठ के सूक्ष्म से सूक्ष्म और कठिन से कठिन प्रकरणों को सरलतापूर्वक समझ जाते हैं। स्मरण रहे कि जिस समय शिक्षण के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न विधियाँ तथा प्रविधियाँ असफल होती दिखायी देने लगती हैं तो ऐसी स्थिति में श्रव्य-दृश्य सामग्री को प्रयोग किया जाता है। इस दृष्टि से श्रव्य-दृश्य सामग्री न सिर्फ शिक्षण को ही अपितु शिक्षण की प्रविधियों अथवा युक्तियों को भी प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। श्रव्य-दृश्य सामग्री के अन्तर्गत चलचित्र अथवा सिनेमा (Cinema) समाचार सम्बन्धी फिल्म (Documentary film) तथा दूरदर्शन (Television) एवं अभिनय (Drama) आदि उन समस्त साधनों को सम्मिलित किया जाता है, जिनकी मदद से बालकों की पाठ में रुचि बनी रहे तथा वे उसे सरलतापूर्वक समझ जायें।

**ई. सी. डेन्ट** के अनुसार–"श्रव्य-दृश्य सामग्री का अर्थ उस समस्त सामग्री से है, जो कक्षा में अथवा अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित अथवा मौलिक रूप में पाठ्य-सामग्री को समझाने में मदद देती है।"

**दृश्य-श्रव्य सामग्री के कार्य (Functions of Audio-Visual Aids)**

श्रव्य-दृश्य के अनेक कार्य हैं तथा समस्त बालकों की शिक्षा के लिए उपयोगी हैं। छोटे बालकों की शिक्षा में तो इसके महत्व को प्रत्येक शिक्षा शास्त्री ने एक मत होकर स्वीकार किया है। निम्नलिखित पंक्तियों में दृश्य-श्रव्य सामग्री के कार्यों तथा महत्व पर विस्तृतत रूप से वर्णन किया गया है।

(1) **प्रेरणा**—श्रव्य-दृश्य साधनों बालकों को ध्यान आकर्षित करके ज्ञान को मूर्त रूप में प्रस्तुत करते हैं। इससे बालकों को सीखने की क्रिया में प्रेरणा तथा उत्सुकता मिलती है। दूसरे शब्दों में दैनिक शिक्षण विधि की अपेक्षा श्रव्य-दृश्य सामग्री द्वारा पढ़ाने से बालक पाठ को ध्यानपूर्वक सुनते हैं और आसानी से शीघ्र सीख जाते हैं।

(2) **क्रिया का सिद्धान्त**—श्रव्य-दृश्य सामग्री के उपयोग से बालकों को विविध प्रकार की क्रियायें करने के अवसर पर मिलते हैं। वे उसमें बोलते- लिखते हैं, प्रश्न पूछते हैं एवं वाद-विवाद करते हैं। इससे उनकी विभिन्न इन्द्रियाँ क्रियाशील हो जाती हैं, जिनक परिणामस्वरूप उनकी पाठ में रुचि बनी रहती है और वे खेलते ही खेलते कठिन से कठिन बातों को बिना किसी मुश्किल के स्वाभाविक रूप से सीख जाते हैं।

(3) **स्पष्टीकरण**—श्रव्य-दृश्य सामग्री के उपयोग से बालकों को कठिन से कठिन पाठ्य-सामग्री का स्पष्टीकरण हो जाता है। इसका एकमात्र कारण यह है कि बालक जो कुछ सुनते हैं उसी को आँख से भी देख लेते हैं। आँख से देख लेने पर उनकी सभी शंकायें दूर हो जाती हैं, जिनके परिणामस्वरूप वे ज्ञान को स्पष्ट रूप से ग्रहण कर लेते हैं।

(4) **सार्थक अनुभव**—श्रव्य-दृश्य सामग्री द्वारा बालकों को पाठ मूर्त रूप से पढ़ाया जाता है। प्रत्येक बालक वस्तु को देख कर, छूकर तथा पूछकर हर प्रकार से ठीक-ठीक समझने की कोशिश करता है। इससे पाठ सरल, रोचक तथा मनोरंजक बन जाता है और सभी बालक ज्ञान को प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण कर लेते हैं। दूसरे शब्दों में, श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग से बच्चों के अनुभव अर्थयुक्त हो जाते हैं। इससे कक्षा में मौलिक चिन्तन को प्रोत्साहन मिलता है। संक्षेप में, श्रव्य-दृश्य सामग्री द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव का प्रतिनिधित्व सम्भव है (The symbolic representation of direct experience is possible by means of Audio-Visual Aids)।

(5) **रटने को कम करना—**श्रव्य-दृश्य सामग्री के उपयोग से बालक पाठ के विकास में रुचि लेते हैं तथा ज्ञान को खुद क्रिया करके ग्रहण करते हैं। इससे सीखा हुआ ज्ञान निश्चित और स्थायी बन जाता है और उन्हें किसी चीज को रटने की जरूरत नहीं पड़ती।

NOTES

(6) **शब्दावली में वृद्धि—**श्रव्य-दृश्य सामग्री के द्वारा बालकों की शब्दावली में वृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि वे रेडियो, टेलीफोन तथा चलचित्र का प्रयोग करते समय नवीन शब्द सुनते हैं तथा ग्रहण करते हैं।

(7) **शिक्षण में कुशलता—**श्रव्य-दृश्य सामग्री के उपयोग करने से शिक्षण में कुशलता आती है, साथ ही शिक्षण और अधिक प्रभावशाली बन जाता है। दूसरे शब्दों में, जिन सूक्ष्म बातों तथा कठिन भागों को बालक चाक और बोलने (Chalk and Talk) की मदद से नहीं समझ सकते, उन्हें वे श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग से सफलतापूर्वक समझ जाते हैं। कहने का अर्थ यह है कि श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग से शुष्क से शुष्क तथा अरुचिकर विषयों अथवा उपविषयों को अन्य प्रविधियों की अपेक्षा अधिक सरल, रोचक तथा स्पष्ट बनाया जा सकता है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि श्रव्य-दृश्य सामग्री के कई कार्य हैं तथा इसका बालकों की शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। हर्ष का विषय है कि हमारी केन्द्रीय तथा प्रदेशीय सरकारों ने भी अन्य देशों की तरह शिक्षण की क्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए श्रव्य-दृश्य सामग्री के महत्व को स्वीकार किया है। इससे अब देश के विभिन्न भागों में श्रव्य-दृश्य सामग्री के निर्माण तथा प्रयोग की शिक्षा देने के लिए अनेक विभाग तथा प्रशिक्षण केन्द्र तेज गति के साथ स्थापित किये जा रहे हैं।

## दृश्य-श्रव्य सामग्री का वर्गीकरण (Classification of Audio-Visual Aids)

इन्द्रियों के प्रयोग के आधार पर श्रव्य-दृश्य सामग्री को मोटे तौर पर तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—

(अ) श्रव्य सहायक सामग्री (Audio Aids)

(ब) दृश्य सहायक सामग्री (Visual Aids) तथा

(स) दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री (Audio-Visual Aids)।

शिक्षण की सहायक सामग्री का वर्गीकरण **प्रक्षेपित माध्यम तथा अप्रक्षेपित माध्यमों** के रूप में भी किया जा सकता है। सामान्यतः दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री ही इस वर्गीकरण के अन्तर्गत आती हैं फिर भी छात्रों के अध्ययन की दृष्टि से इसका वर्गीकरण इस तरह किया जा सकता है—

NOTES

**प्रक्षेपित तथा अप्रक्षेपित माध्यम**
**(Projected & Non-porjected Media)**

**1. प्रक्षेपित**

1.1 स्लाइडें तथा फिल्म-पट्टियाँ
1.2 चल-चित्र (Motion Picture)
1.3 विडियो-टेप
1.4 सिरोत्तर प्रक्षेपक (ट्रान्सप्रेन्सी)
1.5 अपारदर्शी सामग्री
1.6 रिकॉर्डिंग

**2. अप्रक्षेपित माध्यम**

2.1 बुलेटिन-बोर्ड
2.2 चाक-बोर्ड
2.3 फ्लेने-बोर्ड
2.4 ग्राफ (Graph)
2.6 चार्ट (Charts)
2.6 मॉडल (Models)
2.7 मानचित्र (Maps)
2.8 रेखाचित्र तथा आकृति

**दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का वर्गीकरण**
**(Classification of Audio-Visual Aids)**

| **(अ) श्रव्य सामग्री** | **(ब) दृश्य सामग्री** | **(स) श्रव्य-दृश्य सामग्री** |
|---|---|---|
| (1) रेडियो | (1) वास्तविक वस्तुएँ | (1) चलचित्र अथवा सिनेमा |
| (2) ग्रामोफोन व लिंग्वफून | (2) प्रतिमान नमूने | (2) समाचार सम्बन्धी फिल्म |
| (3) टेलीकान्फ्रेंसिंग | (3) चित्र | (3) दूरदर्शन |
| (4) टेप-रिकॉर्डर | (4) मानचित्र | (4) नाटक |

(5) रेखाचित्र तथा खाके (6) ग्राफ (7) चार्ट (8) बुलेटिन बोर्ड (9) फ्लेनेल बोर्ड (10) संग्राहलय (11) जादू की लालटेन (12) चित्र विस्तारक यन्त्र (13) स्लाइड, फिल्म पट्टियाँ, चित्रदर्शक (14) मूक चित्र तथा (15) सिरोत्तर (Overhead Projector {OHP})।

## (अ) श्रव्य-सहायक शिक्षण सामग्री (AUDIO-TEACHING AIDS)

श्रव्य सामग्री का तात्पर्य उन साधनों से है, जिनमें केवल श्रव्य इन्द्रियों का प्रयोग होता है अर्थात् जिनसे ज्ञान प्रमुखत: कान द्वारा प्राप्त होता है। निम्नलिखित

पंक्तियों में हम प्रमुख श्रव्य साधनों पर प्रकाश डाल रहे हैं—

NOTES

(1) **रेडियो (Radio) :** रेडियो के जन्म की कहानी सन् (1885) ई. से प्रारम्भ हुई है। आधुनिक जीवन में रेडियो का विकास इतना ज्यादा हो गया है कि अब यह हमारे लिये आवश्यकता की वस्तु बन गया है। रेडियो द्वारा दूर-दूर रहने वाले बालकों को एक ही साथ आधुनिकतम घटनाओं तथा नवीनतम सूचनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इससे बालकों में नई-नई बातें सीखने की उत्सुकता पैदा होती हैं। रेडियो द्वारा बालकों को उच्च कोटि के शिक्षा-शास्त्रियों से राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के विषय में अनेक वार्ताएं तथा भाषण सुनने को मिलते हैं। इससे उनमें राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है। साथ ही वे दैनिक जीवन की समस्याओं को समझने तथा सुलझाने के योग्य बन जाते हैं। रेडियो पर प्रसिद्ध कलाकारों तथा संगीतज्ञों के प्रोग्राम भी प्रसारित किये जाते हैं। इन प्रोग्रामों में उन्हें गाने और बजाने की शिक्षा मिलती है। संक्षेप में, रेडियो द्वारा बालकों को संसार के प्रत्येक राष्ट्र तथा उसमें निवास करने वाले सभी लोगों की क्रियाओं में रुचि पैदा हो जाती है। इससे उनका सामान्य ज्ञान विस्तृत होता रहता है। संक्षेप में, आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो का विशेष महत्व है। इसीलिए लगभग समस्त स्कूलों के पास अपने-अपने रेडियो सेट हैं।

आकाशवाणी द्वारा रेडियो पर प्रसारित होने वाले पाठों की विस्तृत सूचना समय से बहुत पहले उनके प्रकाशनों के द्वारा दी जाती है। इन प्रकाशनों में कक्षा, प्रकरण के सम्बन्ध में संक्षिप्त सूचना, दिनांक और समय आदि दिये रहते हैं। शिक्षक को इन प्रकाशनों की लगातार जानकारी रखनी चाहिए तथा अपनी योजनानुसार प्रसारित पाठों का उपयोग करना चाहिए। रेडियो का विस्तृत विवरण 'शिक्षा दूरदर्शन एवं रेडियो' नामक अध्याय में दिया गया है।

(2) **ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफून (Gramophone and Linguaphone) :** ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफून भी रेडियो की तरह शिक्षण के महत्वपूर्ण उपकरण हैं। ग्रामोफोन द्वारा बालकों को भाषण तथा गाने की शिक्षा दी जाती है तथा लिंग्वाफून द्वारा बालकों के उच्चारण शुद्ध कराके भाषा की शिक्षा दी जाती है। अत: शिक्षक की उक्त दोनों उपकरणों की शिक्षण के समय जरूरत के अनुसार प्रयोग करना चाहिए। ध्यान देने की बात यह है कि यद्यपि आधुनिक शिक्षा में ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफून का प्रयोग काफी बढ़ता जा रहा है फिर भी यह दोनों उपकरण शिक्षक का स्थान किसी भी स्थिति में नहीं ले सकते। ऐसी स्थिति में शिक्षक को

NOTES

चाहिए कि वह इन उपकरणों का प्रयोग करने के पश्चात् बालकों क सामने विषय का स्पष्टीकरण जरूर कर दें। इससे वे ज्ञान को सफलतापूर्वक ग्रहण कर लेंगे।

(3) **टेलीकान्फ्रेन्सिंग (Teleconferencing)** : दूरवर्ती-शिक्षा के लिए शैक्षिक टेलीकान्फ्रेन्सिंग एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। इसमें कई प्रकार के द्वारा प्रयोग किया जाता है और पारस्परिक समूह के द्वारा द्वि-पक्षीय प्रसारण सम्प्रेषण की सुविधा होती है। टेलीकान्फ्रेन्सिंग के तीन मुख्य रूप होते हैं—(i) श्रव्य टेलीकान्फ्रेन्सिंग (ii) दृश्य टेलीकान्फ्रेन्सिंग, (iii) कम्प्यूटर टेलीकान्फ्रेन्सिंग की तकनीकी दूरवर्ती-शिक्षा के लिए बहुत ही उपयुक्त प्रकार की तकनीकी मानी जाती है।

सन् (1880) तक टेलीकान्फ्रेन्सिंग अपनी प्रयोगात्मक अवस्था में थी तथा इसका प्रयोग कभी-कभी किया जाता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से यह दूरवर्ती-शिक्षा संस्थाओं द्वारा प्रतिदिन इनका प्रयोग किया जाने लगा है, लेकिन इसके प्रयोग द्वारा यह पाया गया कि इसमें लागत की कमी आई है एवं शिक्षार्थी की सेवा में गुणात्मक सुधार हुआ है। सुगमता एवं कम लागत की पूँजी के द्वारा यह दूरवर्ती शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षार्थियों के द्वारा यह आकर्षण का मुख्य केन्द्र बन गया। इस माध्यम का शैक्षिक संस्थानों में अधिक विकास हुआ है। टेलीकान्फ्रेन्सिंग का विस्तृत विवरण 'शिक्षा तकनीकी की नवीन प्रवृत्तियाँ' नामक अध्याय में दिया गया है।

(4) **टेप-रिकॉर्डर (Tape-Recorder)** : शैक्षिक उपकरण के रूप में टेप-रिकॉर्डर एक नवीन उपकरण है। इसके अन्दर कोई भी व्यक्ति अपनी ध्वनि को किसी भी समय भर कर पुनः सुन सकता है। इस दृष्टि से टेप-रिकॉर्डर का प्रयोग जहाँ एक ओर महापुरुषों के प्रवचन, नेताओं के भाषण एवं प्रसिद्ध कलाकारों की कवितायें एवं संगीत आदि के सुनाने में किया जाता है। वहाँ दूसरी ओर बालक तथा शिक्षक भी इसमें अपनी ध्वनि को भरकर पुनः सुन सकते हैं। इससे उन्हें बोलने की गति तथा स्वर, प्रभाव सम्बन्धी समस्त त्रुटियों एवं उच्चारणों को सुधारने में आश्चर्यजनक सहायता मिलती है। आज टेप-रिकॉर्डर एक आवश्यक उपकरण हो गया है, इसलिए इसका प्रयोग अब विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में किया जाने लगा है।

## (ब) दृश्य सहायक शिक्षण सामग्री (VISUAL-TEACHING AIDS)



**दृश्य सामग्री का अर्थ**—दृश्य सामग्री का तात्पर्य उन साधनों से है, जिनमें सिर्फ दृश्य-इन्द्रियों का प्रयोग होता है अर्थात् जिनमें ज्ञान मुख्यतः दृश्य-इन्द्री के द्वारा प्राप्त होता है। दृश्य-सहायक शिक्षण सामग्री के दृश्य साधनों का यहाँ सूक्ष्म रूप में वर्णन किया गया है, जो निम्न प्रकार हैं—

(1) **वास्तविक पदार्थ (Real Objects) :** वास्तविक पदार्थों का अर्थ मूल वस्तुओं से है। वास्तविक पदार्थ बालकों की इन्द्रियों को प्रेरणा देते हैं तथा उन्हें निरीक्षण एवं परीक्षण के अवसर प्रदान करके उनकी अवलोकन शक्ति का विकास करते हैं। ध्यान देने की बात है कि जब बालक वास्तविक पदार्थों को देखते हैं, छूते और चखते हैं तो उनकी क्रमशः दृष्टिक, स्पर्शावण ततथा रसप्रतिभायें निर्मित होती हैं। ये प्रतिभायें बालकों की कल्पना-शक्ति को विकसित करने में सहयोग प्रदान करती हैं। कहने का अर्थ यह है कि वास्तविक पदार्थों के प्रयोग से बालकों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं, जो दूसरों के द्वारा दिए गए अनुभवों की अपेक्षा कहीं अधिक उत्तम होते हैं। स्पष्ट है कि बालकों को मेज, कुर्सी, कपड़ा, फल, फूल तथा थर्मामीटर एवं भौतिक तुला आदि का ज्ञान देने के लिए जितना स्पष्ट ज्ञान उक्त समस्त वास्तविक पदार्थों को दिखाकर दिया जा सकता है उतना और किसी विधि से असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह अधिक से अधिक वास्तविक पदार्थों को विद्यालय के संग्रहालय (Museum) में संग्रह करे, जिससे उन्हें बालकों के सम्मुख आवश्यकतानुसार प्रदर्शित किया जा सके।

(2) **मॉडल (Models) :** मॉडल वास्तविक पदार्थों या मूल वस्तुओं के छोटे रूप होते हैं। इनका प्रयोग उस समय किया जाता है, जब वास्तविक पदार्थ या तो उपलब्ध न हों अथवा इतने बड़े हों कि उन्हें कक्षा में दिखाना ही सम्भव न हो। उदाहरण के लिए हाथी, घोड़े, रेल का इन्जन और जहाज आदि इतने बड़े नाम, शीर्षक, दिशा एवं संकत आदि अवश्य लिखना चाहिए तथा उनमें रंगों का प्रयोग कल्पना, अनुभव तथा कलात्मक भाव से करना चाहिए अन्यथा मानचित्र भद्दे, भौंड़े तथा व्यर्थ हो जायेंगे।

(5) **रेखाचित्र तथा आकृतियाँ (Sketches and Diagrams) :** कभी-कभी ऐसा भी होता है कि शिक्षक को वास्तविक पदार्थ, नमून

और चित्र एवं मानचित्र उपलब्ध नहीं हो पाते। ऐसी स्थिति में शिक्षक को भाव- प्रकाशन के लिए श्यामपट्ट पर रंगीन चॉक से रेखाचित्र तथा खाके खींचने चाहिए। ध्यान रहे कि रेखाचित्र तथा खाकों का प्रयोग भाषा, भूगोल, इतिहास तथा गणित एवं विज्ञान आदि सभी विषयों में किया जा सकता है। अत: शिक्षक में शीघ्रता तथा तत्परता के साथ रेखाचित्रों तथा खाकों को बनाने की योग्यता होनी परम आवश्यक है। चूँकि रेखाचित्रों तथा खाकों को बनान में कुछ व्यय नहीं होता, इसलिए ज्ञान को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक शिक्षक को सुन्दर और आकर्षक रेखाचित्र खींचने तथा आकृतियाँ बनाने का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।

(6) **ग्राफ (Graph) :** ग्राफ का अपना निजी महत्व होता है। ग्राफ के प्रयोग से बच्चों को भूगोल, इतिहास, गणित तथा विज्ञान आदि कई विषयों का ज्ञान सरलतापूर्वक दिया जा सकता है। स्मरण रहे कि ग्राफ की सहायता से भूगोल के पाठ में जलवायु, उपज तथा जनसंख्या आदि का ज्ञान दिया जा सकता है तथा इतिहास के शिक्षण में इसका उपयोग स्वतन्त्रता संग्राम की प्रगति तथा धार्मिक अथवा राजनैतिक विकास की प्रगति का ज्ञान देने के लिए किया जाता है। ऐसे ही गणित तथा विज्ञाान का शिक्षण करते समय भी ग्राफ का प्रयोग करते हुए कई प्रश्नों को हल किया जा सकता है। अत: शिक्षक को विभिन्न विषयों का शिक्षण करते समय आवश्यकतानुसार ग्राफ खुद भी बनाने चाहिए तथा बालकों से भी बनवाने चाहिए।

(7) **चार्ट (Charts) :** चार्टों के प्रयोग से शिक्षक को शिक्षण का उद्देश्य प्राप्त करने में बड़ी मदद मिलती है। ध्यान दने की बात है कि चार्टों का प्रयोग भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र तथा गणित एवं विज्ञान आदि समस्त विषयों में सफलतापूर्वक किया जा सकता है। अत: शिक्षक को पाठ की आवश्यकताओं की दृष्टि में रखते हुए अधिक से अधिक चार्ट स्वयं ही तैयार करके उचित ढंग से प्रयोग करने चाहिए। स्मरण रहे कि चार्ट द्वारा प्रदर्शित की हुई विषय-वस्तु इतनी सुन्दर, सुडौल एवं मोटी होनी चाहिए कि कक्षा के प्रत्येक बालक का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो जाये और शिक्षक अपने प्रयोजन को सरलता से स्पष्ट कर सके।

(8) **बुलेटिन-बोर्ड (Bulletin-Board) :** बुलेटिन बुलेटिन-बोर्ड शिक्षा का एक उपयोगी उपकरण है। इस पर देश की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं के सम्बन्ध में चित्र, ग्राफ, आकृति तथा

लेख एवं जरूरी सूचनाओं को प्रदर्शित करके बालकों की जिज्ञासा को इस प्रकार से उकसाया जाता है कि उनके ज्ञान में लगातार वृद्धि होती रहे। अतः बुलेटिन-बोर्ड भी शिक्षक के बड़े काम की वस्तु है। बुलेटिन-बोर्ड से लाभ उठाने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

NOTES

1. बुलेटिन-बोर्ड पर प्रदर्शित की जाने वाली सामग्री बालकों की रुचि, मानसिक स्तर एवं आयु एवं योग्यता के अनुसार होनी चाहिए।
2. बुलेटिन-बोर्ड पर दिखाने वाली सूचनायें एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित होनी चाहिए।
3. बुलेटिन-बोर्ड पर प्रदर्शित की हुई सामग्री इतनी बड़ी होनी चाहिए कि प्रत्येक बच्चा उसे दूर से ही देख सके।
4. बुलेटिन-बोर्ड स्कूल में किसी इतने ऊँचे तथा उपयुक्त स्थान पर रखना चाहिए कि औसत ऊँचाई के समस्त बालक प्रदर्शित की हुई सामग्री से सरलतापूर्वक लाभान्वित हो सकें।
5. बुलेटिन-बोर्ड स्वयं भी इतना सुन्दर होना चाहिए कि वह बालकों के आकर्षण का केन्द्र बन जायें।
6. बुलेटिन-बोर्ड पर बालकों को भी अपनी एकत्रित की हुई सामग्री को प्रदर्शित करने के अवसर मिलने चाहिए।

**(9) फ्लेनेल-बोर्ड (Flannel-Board) :** आधुनिक युग में फ्लेनेल-बोर्ड का भी विशेष महत्व है। इसको बनाने में 36" × 48" के एक प्लाईवुड अथवा हार्ड-बोर्ड के टुकड़े पर इतने ही नाप क एक फ्लेनेल के कपड़े को खींचकर बाँध दिया जाता है। तत्पश्चात् उस पर विभिन्न विषयों से सम्बन्धित चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र तथा ग्राफ आदि प्रदर्शित किये जाते हैं। ध्यान रहे कि फ्लेनेल बोर्ड पर प्रदर्शित किये जाने वाले चित्रों तथा मानचित्रों आदि को खुरदरे कागज (सेण्ड-पेपर) पर गोंद से चिपकाया जाता है। इससे ये टुकड़े फ्लेनेल बोर्ड पर चिपके रहते हैं और प्रयोग करने के पश्चात् सरलतापूर्वक हटा लिये जाते हैं। ध्यान देने की बात है कि फ्लेनेल बोर्ड का प्रयोग छोटी कक्षाओं में भाषा एवं अंकगणित एवं बड़ी कक्षाओं में इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र तथा गणित एवं विज्ञान आदि विषयों के शिक्षण के लिए आसानी से किया जा सकता है। अतः प्रत्येक शिक्षक को इस महत्वपूर्ण

NOTES

उपकरण का जरूरत के अनुसार प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

**(10) संग्रहालय (Museum) :** संग्रहालय भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें सभी वस्तुओं को इकट्ठा करके रखा जाता है। इन वस्तुओं की सहायता से पाठ रोचक तथा सजीव बन जाता है एवं बच्चा उसे सरलतापूर्वक समझ लेते हैं। अत: शिक्षक को संग्रहालय का सदुपयोग जरूर करना चाहिए। शिक्षक द्वारा संग्रहालय में एकत्रित की हुई वस्तुओं का प्रयोग भूगोल, इतिहास, गणित तथा विज्ञान आदि विषयों के शिक्षण में सरलतापूर्वक किया जा सकता है। अत: शिक्षक को चाहिए कि वह बालकों को स्कूल के संग्रहालय में भिन्न-भिन्न प्रकार के डाक टिकट सिक्के, पुराने अस्त्र-शस्त्र तथा कीड़े-मकोड़े एवं यन्त्रों को एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे बिना कुछ व्यय किये हुए ही स्कूल के संग्रहालय में विभिन्न प्रकार की वस्तुयें सहज में ही इकट्ठी हो जायेंगी।

**(11) जादू की लालटेन (Magic Lantern) :** जादू की लालटेन एक चित्र प्रदर्शक यन्त्र है। यह यन्त्र शिक्षण को सजीव तथा प्रभावशाली बनाने में इतना सफल सिद्ध हुआ है कि इसकी उपयोगिता को प्राय: समस्त शिक्षा-शास्त्रियों ने स्वीकार किया है। स्मरण रहे कि जादू की लालटेन को प्रयोग में लाने के लिए स्लाइडों (Slides) की आवश्यकता पड़ती है। अत: यदि बालकों को दिन में विभिन्न विषयों की शिक्षा देने के बाद उन्हीं के सम्बन्ध में रात्रि को स्लाइडें दिखा दी जायें तो उनको ज्ञान के ग्रहण करने में आसानी हो जायेगी और वे उसे कभी नहीं भूलेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि जादू की लालटेन अमूर्त तथ्यों तथा गूढ़ विचारों को महत्वपूर्ण बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। पर ध्यान देने की बात है कि जादू की लालटेन का प्रयोग करते समय शिक्षक को निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए—

1. स्लाइडें दिखाने से पूर्व शिक्षक को प्रस्तावना के रूप में विषय से सम्बन्धित छोटी सी टिप्पणी देनी चाहिए।
2. स्लाइडें दिखाते समय उनको स्पष्ट करने के लिए शिक्षक को कुछ स्पष्टीकरण करना चाहिए।

**(12) श्यामपट्ट (Black Board) :** कक्षा अध्यापन में दृश्य साधन के रूप में श्यामपट्ट सबसे अधिक प्रयोग में आता है। श्यामपट्ट का उचित, सही एवं विधिपूर्वक उपयोग पाठ को प्रभावशाली बनाने में बहुत मददगार

होता है। अध्यापक को श्यामपट्ट कार्य में पारंगत होना चाहिए ताकि वह इस साधन का कुशलतापूर्वक उपयोग का पाठ को सफल बना सके। अच्छा अध्यापक श्यामपट्ट का सही तथा प्रभावी उपयोग करता है। श्यामपट्ट कार्य में तीन पक्षों का विशेष ध्यान रखा जाता है–

NOTES

1. लेख स्पष्ट हो एवं पढ़ा जा सके।
2. श्यामपट्ट कार्य स्वच्छ व विधिवत् हो।
3. यह कार्य उपयुक्त एवं पाठ से सम्बन्धित हो और पाठ विकास में मददगार हो।

इस प्रकार श्यामपट्ट कार्य पाठ को रोचक बनाता है और छात्रों को पाठ्य-विषय को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

(13) **चित्र विस्तारक यन्त्र (Epidiascope) :** इस उपकरण में पारदर्शियों की जरूरत नहीं होती है। पुस्तकों की मुद्रित पाठ्यवस्तु तथा आकृतियों को सीधे पर्दे पर प्रक्षेपित किया जाता है, चित्र का विस्तार भी कर लिया जाता है। इसलिए उसे अपारदर्शी प्रक्षेपक (Opaque-Projector) भी कहते हैं, जबकि सिरोत्तरी प्रक्षेपक (Overhead Projector) में पारदर्शियों का ही प्रयोग किया जाता है। इन दोनों ही उपकरणों में अचल चित्रों (Still prictures) को प्रक्षेपित किया जाता है। इस प्रकार दोनों ही उपकरण शिक्षण सामग्री को प्रक्षेपित करने में एक-दूसरे के पूरक हैं। पारदर्शी तथा अपारदर्शी चित्रों को इनके उपयोग से पर्दे पर बड़े आकार में प्रक्षेपित किया जाता है।

**विस्तारक उपकरण (Apparatus of Epidiascope)**

'इपीडाइस्कोप' शब्द दो उपकरण से बना है–**एपीस्कोप** (Episcope) तथा **डाइस्कोप** (Diascope)। एपीस्कोप का आशय है अपारदर्शक वस्तु का पर्दे पर बहुत साफ प्रक्षेपण तथा डायस्कोप से आशय है स्लाइड का प्रक्षेपण। एपीडायस्कोप के माध्यम से पारदर्शक तथा अपारदर्शक दोनों तरह की वस्तुओं की छवि (Image) पर्दे पर प्रक्षेपित की जाती है। इस उपकरण की मदद से पाठ-सामग्री के प्रक्षेपण में दोनों ही उपकरण कार्य करते हैं। पुस्तकों से पाठ्य-सामग्री का प्रक्षेपण समतल दर्पण (Plane Mirror) होता है, जिस पर निगेटिव चित्र बनता है जो 45° पर लगा होता है। ऊपरी यन्त्र में लैन्स द्वारा पुनः प्रक्षेपण निगेटिव प्रतिबिम्ब होता है, जो पर्दे पर मूल आकृति (Positive Image) में प्रतिबिम्ब प्रक्षेपित होता है। इस यन्त्र से आकार का विस्तार एवं

NOTES

समायोजन आवश्यकतानुसार करते हैं। एपीस्कोप फोटो कैमरा की तरह निगेटिव आकृति बनाता है और डाइस्कोप निगेटिव को पोजिटिव में बदल कर पर्दे पर प्रक्षेपित करता है।

इस उपकरण द्वारा समस्त प्रकार के अचल चित्रों, आकृतियों मानचित्रों, मुद्रित सामग्री, मॉडल, पदार्थों, ऐतिहासिक, भौगोलिक सामग्री को बड़े आकार में बदल दिया जाता है। इसका उपयोग अचल चित्रों के प्रक्षेपण में किया जाता है। इसका उपयोग अचल चित्रों (Still Pictures) को दो पक्षीय आकृति को प्रक्षेपित करने के लिए भी किया जाता है।

इस उपकरण में डाइस्कोप का कार्य सिरोत्तर प्रक्षेपक (OHP) जैसा होता है। यदि पारदर्शियों (Transparencies) पर पाठ्य-सामग्री को मारकर से अंकित कर लिया जाए या फोटो स्टेट पर पारदर्शियाँ बना ली जाए तब सिर्फ एपीडाइस्कोप से सीधे पर्दे पर प्रक्षेपित किया जा सकता है, परन्तु एपीडाइस्कोप में अपारदर्शी पाठ्य-सामग्री को ही प्रयुक्त किया जा सकता है। सिरोत्तरी प्रक्षेपक से इस उपकरण का उपयोग अधिक मितव्ययी तथा सुगम है।

**चित्र विस्तारक यन्त्र (Epidiascope)**—चित्र विस्तारक यन्त्र से पाठ को अधिक स्पष्ट और रोचक बनाने के लिए जादू की लालटेन (Magic Lanten) की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली यन्त्र है। इसका कारण यह है कि जादू की लालटेन में चित्रों को दिखाने से पूर्व स्लाइडें बनाने की आवश्यकता पड़ती है। यह बात चित्र-विस्तारक यन्त्र के साथ नहीं है। चित्र-विस्तारक यन्त्र में छोटे-छोटे चित्रों, मानचित्रों, पोस्टरों तथा पुस्तक के पृष्ठों को कमरे में अन्धेरा करके चित्रपट या पर्दे (Screen) पर बिना स्लाइड बनाये हुए ही बड़ा करके दिखाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में जिन छोटे चित्रों को कलाकार भी विस्तृत रूप देने में विफल हो जाता है, उनको चित्र-विस्तारक यन्त्र सरलतापूर्वक बड़े रूप में प्रक्षेपित करता है। यही कारण है कि चित्र-विस्तारक यन्त्र ने आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास तथा भूगोल आदि समस्त विषयों को पढ़ाने के लिए अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। अमेरिका तथा इंग्लैंड आदि धनवान देशों के स्कूलों में पाठ को रोचक तथा स्पष्ट बनाने के लिए चित्र-विस्तारक यन्त्र का प्रयोग बहुत अधिक किया जाता है। किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण हमारे देश के बालक इस उपकरण के लाभों से वंचित रह जाते हैं। चित्र विस्तारक यन्त्र का प्रयोग करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

NOTES

1. चित्र-विस्तारक उपकरण का प्रयोग करने से पूर्व चित्रपट (Screen) की व्याख्या करनी चाहिए।
2. जिस कमरे में इस उपकरण का प्रयोग किया जाये, उसमें अन्धेरा होना चाहिए।
3. दिखाये जाने वाले चित्रों का आकार चित्र-विस्तारक के अनुरूप होना चाहिए।
4. कक्षा का वातावरण शान्त होना चाहिए।
5. चित्र-विस्तारक उपकरण का उपयोग करते समय टिप्पणियाँ देते रहना चाहिए, जिससे बालकों को विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट ज्ञान हो सके।

**चित्र विस्तारक की उपयोगिताएँ—**कक्षा शिक्षण में इस उपकरण का उपयोग सबसे अधिक किया जाता है, क्योंकि इस उपकरण के लिए किसी पारदर्शियों का निर्माण नहीं करना होता है। अपितु एक अच्छी पुस्तक की पाठ्यवस्तु को तथा पाठ्य-सामग्री को इस उपकरण की मदद से कक्षा में पर्दे पर प्रक्षेपित किया जाता है। इसके अलावा इसकी प्रमुख उपयोगिताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) इस उपकरण में दोनों प्रकार की पाठ्य-सामग्री पारदर्शियों तथा अपादर्शियों सामग्री; जैसे—चित्रों, मानचित्रों एवं आकृतियों एवं अन्य विविध प्रकार की पाठ्य-सामग्री का प्रक्षेपण पर्दे पर करके उपयोग किया जाता है।

(2) इस उपकरण में मुख्य रूप से अचल चित्रों (Still Pictures) का उपयोग किया जाता है। इसका चलचित्रों (Motion Pictures) में उपयोग नहीं किया जा सकता है।

(3) इसका उपयोग प्रकाशयुक्त कक्ष में करते हैं, जिससे शिक्षण की परिस्थितियों में छात्र-शिक्षक की अन्ततःप्रक्रिया समुचित तरीके से होती रहती है।

(4) कक्षा शिक्षण में इस उपकरण का प्रयोग सहायक प्रणाली के रूप में सामाजिक विषयों के शिक्षण में अधिक किया जाता है।

(5) वैज्ञानिक विषयों के पाठ्यवस्तु के सूक्ष्म प्रकरणों को बड़े आकार में प्रक्षेपित करके शिक्षक को समझाने में अधिक सुविधा होती है

और छात्रों को सूक्ष्म प्रकरणों का सरलता से बोध हो जाता है; जैसे—अमीबा, कीट-पतंग, पेड-पौधों के सूक्ष्म भागों को बड़े आकार में बदल लेते हैं।

(6) रेखागणित में रेखीय प्रदर्शन, मानचित्रों की रचना करके उन्हें बड़े आकार में छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करके समझाने में सरलता होती है।

(7) अन्य अध्ययन विषयों की जटिल पाठ्य-सामग्रियों, आकृतियों, चित्रों के लिए भी इस उपकरण का उपयोग किया जाता है। इसके माध्यम से दो पक्षीय की आकृतियों को ही प्रस्तुत किया जा सकता है। बहु-पक्षीय आकृतियों का प्रक्षेपण नहीं होता है।

**चित्र विस्तारक के उपयोग में सावधानियाँ**—कक्षा शिक्षण में इस उपकरण को उपयोग करते समय शिक्षक को निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए—

(1) कक्षा शिक्षण के आरम्भ से पूर्व इस उपकरण तथा पर्दे को समुचित तरीके से लगाना चाहिए। और विद्युत के तारों को जोड़कर बिजली की जाँच कर लेनी चाहिए कि उपकरण सक्रिय है या नहीं।

(2) कक्षा शिक्षण में प्रक्षेपित आकृति को समझाने के लिए संकेतक (पाइन्टर) का प्रयोग करना चाहिए, जिससे प्रतिबिम्ब पर शिक्षक की परछायी न पड़े।

(3) शिक्षक को पर्दे के दाहिनी ओर खड़ा होकर के पढ़ाना चाहिए, जिस तरह वह श्यामपट्ट का प्रयोग करता है।

(4) शिक्षण के समय शिक्षक काके छात्रों की ओर ध्यान रखते हुए आकृति की ओर संकेत करते हुए पढ़ाना चाहिए।

(5) इस उपकरण का प्रयोग जरूरी पाठ्य-सामग्री को प्रक्षेपित करने के लिए किया जाना चाहिए। पहले से प्रक्षेपितत करके न रखा जाए। जब पाठ्य-सामग्री का प्रकरण नष्ट हो जाए तो इसड़े बन्द कर देना चाहिए अथवा अगली पाठ्य-सामग्री को प्रक्षेपित किया जाना चाहिए, जिससे छात्रों का ध्यान पाठ्यवस्तु की सार्थकता पर ही रह सके।

(6) इस उपकरण का प्रयोग दो पक्षीय के अचल चित्रों के प्रक्षेपण में करना चाहिए। बहु-पक्षीय की पाठ्यवस्तु में इस उपकरण का प्रयोग सम्भव नहीं होता है।

(7) कक्षा के आकार के अनुसार या छात्रों की संख्या के अनुरूप प्रक्षेपित प्रतिबिम्ब का समायोजन किया जाना चाहिए। प्रक्षेपित प्रतिबिम्ब की आकृति पर्दे पर ही रहनी चाहिए।

(8) शिक्षक को इस उपकरण के प्रयोग करने का पहले अभ्यास करना चाहिए या इसका प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए, तभी शिक्षक कक्षा में इस उपकरण का प्रक्षेपण अथवा उपयोग समुचित ढंग से कर सकता है।

(9) शिक्षक को इस उपकरण की साधारण तकनीकी का बोध और कौशल भी होना चाहिए जिससे वह प्रक्षेपित प्रतिबिम्ब को आवश्यकतानुसार समायोजित कर सके।

**(14) स्लाइडें, फिल्म-पट्टियाँ तथा प्रक्षेपक (Slides, Film Strips and Projector)**

स्लाइडों के द्वारा विभिन्न विषयों के सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को पर्दे (Screen) पर बड़ा करके दिखाया जा सकता है। स्लाइडें दिखाते समय शिक्षक पाठ की कठिन और बारीक बातों को अपने कथन द्वारा स्पष्ट करता जाता है। इससे पाठ सरल तथा रोचक बन जाता है और बालक ज्ञान को आसानी से ग्रहण कर लेते हैं। ध्यान रहे कि स्लाइडें शीशे की बनाई जाती हैं। अत: इनके टूटने का भय रहता है। साथ ही यह भारी भी होती है। इसलिए अब स्लाइडों को फिल्म के ऊपर भी बनाया जाने लगा है। इन फिल्म पर बनी हुई स्लाइडों को फिल्म पट्टी (Film Strip) की संज्ञा दी जाती है। फिल्म पट्टी को बनाने के लिए प्राय: किसी पाठ से सम्बन्धित 15 अथवा 20 स्लाइडों को 35 मिलीमीटर की फोटोग्राफी की फिल्म पर बनी हुई स्लाइडों की फिल्म पट्टी को कक्षा के सम्मुख चित्रदर्शक (Projecctor) द्वारा पर्दे के ऊपर करके दिखाया जाता है। इससे पाठ में सजीवता आ जाती है। अत: चित्र विस्तारक यंत्र (Epidiascope) की अपेक्षा चित्रदर्शक (Projector) का महत्व कहीं अधिक बढ़ गया है। इसका कारण यह है कि चित्र विस्तारक यंत्र द्वारा तो बालकों को स्लाइडें सिर्फ अलग-अलग ही दिखाई जा सकती हैं, जबकि चित्रदर्शक द्वारा चित्रों की स्लाइडों अथवा फिल्म पट्टियों को एक क्रम से दिखाया जा सकता है। संक्षेप में, जिस प्रकार सिनेमा में विज्ञापन (Advertisement) दिखाये जाते हैं, ठीक उसी तरह से बालकों को चित्रदर्शक से फिल्म पट्टियों द्वारा विभिन्न विषयों से सम्बन्ध रखने वाले चित्रों को आवश्यकतानुसार लगातार अथवा रुक-रुक कर हर तरह से दिखाया जा सकता है।

NOTES

## (15) मूक-चित्र (Soundless Motion Pictures)

मूक-चित्र चलचित्र का पहला रूप है। इससे क्रियायें तो पूर्णरूप दिखाई जाती हैं परन्तु ध्वनि नहीं होती। दूसरे शब्दों में मूक-चित्र द्वारा विभिन्न विषयों तथा क्रियाओं जैसे—सफाई के साधन, विभिन्न रोगों से बचने के उपाय तथा प्राकृतिक दृश्यों तथा वर्णनों को क्रिया रूप में आसानी से स्पष्ट किया जाता है। अत: चित्र विस्तारक यन्त्र तथा प्रक्षेपक यन्त्रों की अपेक्षा मूक-चित्रों का शिक्षण में विशेष महत्व है।

## (16) सिरोत्तर प्रक्षेपक (Overhead Projector-OHP)

प्रस्तुतीकरण का एक नवीन उपकरण विकसित हुआ है जिसे 'सिरोत्तर प्रक्षेपक' (Overhead Projector) कहते हैं। इसकी उपयोगिता के कारण यह ज्यादा प्रचलित हुआ है। प्रक्षेपक के उपकरण में (7" × 7" या 1" × 1") का बड़ा एपेरचर होता है। यद्यपि यह अपारदर्शी प्रक्षेपक (Opaque Projector) के समान ही होता है किन्तु इसमें प्रकरण में अनेक अनुदेशनात्मकक सामग्री; जैसे-चार्ट, चित्र, मानचित्र, आकृतियों तथा शिक्षण प्रपत्रों को पर्दे पर प्रक्षेपित किया जाता है। साथ-साथ शिक्षक कक्षा में उनका विवरण प्रस्तुत करता रहता है तथा सहायक सामग्री के रूप में प्रयुक्त करता है। अनुदेशन सामग्री को पारदर्शियों (Transparencies) करके उनका उपयोग लगातार होता रहता है। शिक्षक मारकर पैन से स्वयं भी पारदर्शियाँ बना लेता है। पाठ्यवस्तु को लिख लेता है, जिनका वह कक्षा में उपयोग करने के बाद अपनी फाइल में रख लेता है और आवश्यकता पड़ने पर उनका उपयोग पुन: कर लेता है। यदि पुन: उपयोग की जरूरत न हो तो उसे मिटा कर अन्य अनुदेशन सामग्री को अंकित कर लेता है।

**सिरोत्तर का उपकरण** (Apparatus of Overhead Projector {OHP})—इस प्रक्षेपक में मुख्य निम्नलिखित यंत्र होते हैं—

(1) इसके अन्तर्गत प्रक्षेपण के लिए ऊपरी हिस्से में एक दर्पण तथा प्रक्षेपण दर्पण (Lens) लगा होता है।

(2) पारदर्शियों (Transparencies) को रखने के लिए 1" × 1" का बड़ा एपेरचर लगा होता है। अनुदेशन सामग्री को पारदर्शियों पर अंकित कर लिया जाता है। यह इस तकनीकी का अदा (Input) पक्ष होता है। इसे सॉफ्टवेयर भी कह सकते हैं।

(3) इस प्रक्षेपक में अध्ययन सामग्री तथा आकृतियों को छोटा तथा बड़ा करने की सुविधा भी होती है, जिसे आवश्यकतानुसार छोटा अथवा बड़ा कर लिया जाता है।

(4) इसमें सर्वप्रथम लम्बवत् प्रक्षेपण क्षेत्र होता है, इसके बाद ऊपर भाग के पर्दण से पर्दे पर प्रक्षेपण होता है। इसमें आकृति को सही प्रक्षेपण के लिए आगे और पीछे करने का यंत्र भी होता है। इसे समायोजित करते हैं।

NOTES

**सिरोत्तर प्रक्षेपक के उपयोग की विधि** (Procedure for Using Overhead Projector)—इस सिरोत्तर प्रक्षेपक के उपयोग की विधि में निम्नांकित सोपानों का अनुसरण किया जाता है–

(1) कक्षा शिक्षण से पहले पाठ्यवस्तु सम्बन्धी अनुदेशन सामग्री का नियोजन किया जाता है। महत्त्वपूर्ण तथा अपेक्षित सहायक सामग्री हेतु पारदर्शियों (Transparences) की व्यवस्था की जाती है। यदि आवश्यक पारदर्शियाँ उपलब्ध न हों तब शिक्षण उन्हें खुद मारकर पैन से तैयार कर लेगा तथा उन्हें क्रमानुसार व्यवस्थित करता है।

(2) सिरोत्तर प्रक्षेपक को शिक्षक श्यामपट्ट अथवा पर्दे के सामने रख लेगा, प्रक्षेपक का लैन्स पर्दे की ओर रखा जाता है।

(3) प्रक्षेपक के तारों को बिजली के बोर्ड से जोड़कर स्विच को खोल दिया जायेगा। प्रक्षेपित प्रकाश को पर्दे के बीच में समायोजित किया जाता है।

(4) अपेक्षित पाठ्य-सामग्री की पारदर्शी (Transparency) को एपश्चर के ऊपर दाहिने हाथ की तरफ रखते हैं।

(5) प्रक्षेपक के लैन्स को इस प्रकार समायोजित करते हैं, जिससे आकृति का प्रतिबिम्ब शुद्ध रूप में छात्रों को दिखलाई दे। प्रतिबिम्ब बड़ा होने पर उसे छोटा कर लिया जाता है।

(6) पारदर्शियों पर लिखते समय शिक्षक के हाथ की परछाई प्रतिबिम्ब पर नहीं पड़नी चाहिए। इसका पूर्ण ध्यान रखा जाए।

(7) कक्षा शिक्षण के समय उन्हीं आकृतियों को प्रक्षेपित किया जाए, जिनका शिक्षक विवरण प्रस्तुत कर रहा है। इसके बाद पारदर्शी को बदल देना चाहिए।

(8) कक्षा शिक्षण के पश्चात् पारदर्शियों को पुनः उपयोग के लिए रख लिया जाता है। पारदर्शियों की कमी में उन्हें साफ भी कर लेते हैं और पाठ्य-सामग्री को मारकर पैन से अंकित कर लेते हैं।

सिरोत्तर प्रक्षेपक एक नए प्रकार का उपकरण है, इसका प्रयोग प्रकाश-युक्त कक्षा में किया जाता है। अन्धेरे कक्ष में प्रक्षेपण में सुधार आता है। इसके लिए 7" × 7" का पर्दा प्रयुक्त करना चाहिए।

**पारदर्शियाँ बनाने की प्रक्रिया** (Procedures of Preparing Transparencies)—सिरोत्तर प्रक्षेपक (OHP) के लिए पारदर्शियाँ तैयार की जाती हैं, जिन्हें अचल चित्र (Still picture) भी कहते हैं। इन्हें तैयार करने की कई विधियाँ हैं। मुख्य विधियाँ इस प्रकार हैं—

**(1) हाथ से पारदर्शी बनाने की विधि** (Hand drawn Transparencies)—हाथ से पारदर्शियाँ बनाने के लिए 25" × 25" आकार अथवा A4 आकार की पारदर्शियों की व्यवस्था करके परमानैण्ट मारकर पैन से अपेक्षित पाठ-सामग्री को स्वच्छ तथा स्पष्ट रूप में बनाते हैं। सुलेख एवं आकृतियाँ स्पष्ट होनी चाहिए, क्योंकि पारदर्शियों का उपयोग स्थायी रूप में किया जाता है। इनके लिए रेखाचित्र विशेष प्रकार को होना चाहिए।

**(2) फोटोग्राफ द्वारा तैयार पारदर्शियाँ** (Photographic Transparencies)—अधिक जटिल आकृतियों को जिन्हें हाथ से नहीं बनाया जा सकता उन्हें फोटोग्राफ द्वारा पारदर्शियाँ तैयार करा जी जाती है। निगेटिव से पोजेटिव आकृति बनाई जाती है। इन आकृतियों में रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। आकृतियों को बड़ा या छोटा भी करा लिया जाता है। इनका उपयोग स्थायी रूप से कक्षा शिक्षण में करते हैं।

**(3) डियाजो प्रक्रिया पारदर्शियाँ** (Diazo Process Transparencies)—डियाजो रसायन पदार्थ से पालिस की गई पारदर्शियों से कई प्रतिलिपियाँ तैयार की जाती हैं। दो प्रतिलिपियों को एक साथ सूर्य के प्रकाश में रख दिया जाता है। दो मिनट से 3 मिनट में प्रतिबिम्ब बन जाता है। इस विधि से रंगीन पारदर्शियाँ तैयार कर ली जाती हैं।

**(4) पारदर्शियाँ फोटो कापी मशीन द्वारा तैयार करना** (Copying Machine Transparencies)—प्रक्षेपण में सिरोत्तर प्रक्षेपक का

हृदय होता है और पारदर्शियाँ उसको भोजन देती है। इस विधि द्वारा जल्दी से प्रतिलिपियाँ तैयारी कर ली जाती हैं। मूल प्रति से मशीन द्वारा कई प्रतिलिपियों बना ली जाती हैं।

NOTES

**सिरोत्तर प्रक्षेपक की उपयोगिता तथा लाभ** (Advantages of Overhead Projector OHP)—इस प्रक्षेपक के निम्नलिखित उपयोग हैं–

(1) **बड़ा प्रतिबिम्ब** (Large Image)—इस प्रक्षेपक से छोटी आकृति को बड़े प्रतिबिम्ब में प्रदर्शित किया जाता है, जिससे शिक्षक को समझाने में सुगमता होती है। इसका उपयोग अचल चित्रों (Still Pictures) के प्रक्षेपण में किया जाता है।

(2) **छात्र के सामने शिक्षक** (Face the Students)—इस प्रक्षेपक को प्रकाश-युक्त कक्ष में प्रयुक्त किया जाता है, छात्र के सम्मुख शिक्षक रहता है जिससे कक्षा में अनुशासन भी रहता है। इस प्रक्षेपक का उपयोग श्यामपट्ट के रूप में होता है। किन्तु आकृतियों की पारदर्शि तैयार की जाती हैं।

(3) **प्रकाश-युक्त कक्ष** (Lighted Room)—इस प्रक्षेपक का उपयोग प्रकाशयुक्त कक्ष में किया जाता है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया तथा छात्र शिक्षक अन्तः प्रक्रिया का सम्पादन सुगमता और सामान्य रूप से होता है।

(4) **शिक्षक की पहचान** (Identity of Teacher)—छात्र कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रक्षेपक से प्रस्तुतीकरण किया जाता है अथवा तकनीकी मदद लेता है और अपने प्रस्तुतीकरण में प्रक्षेपित पाठ सामग्री का उपयोग करता है, इससे उसकी पहिचान होती है।

(5) **सिरोत्तर प्रक्षेपक का भारी न होना** (Light Weight)—यह प्रक्षेपक अपेक्षाकृत भारी नहीं होता है, इसलिए उसे एक कक्षा से दूसरी कक्षा में सुगमता से ले जाते हैं।

(6) **प्रस्तुतीकरण में लचीलापन** (Flexibility in Presentation)—पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण के साथ प्रक्षेपित आकृतियों को सुगमता से समन्वित तथा एकीकृत कर लिया जाता है। शिक्षक का कक्षा पर पूरा नियंत्रण रहता है। छात्र पाठ से अधिक रुचि लेते हैं। उन्हें सीखने में भी सरलता होती है।

NOTES

(7) **व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण** (Personalized Persentation)—इसमें शिक्षक पारदर्शियों (Transparncies) को स्वयं तैयार करता है। उनका उपयोग आवश्यकतानुसार खुद करता है, उसे स्पष्टीकरण में कठिनाई का एहसास नहीं होता है। अपने प्रस्तुतीकरण में दृश्य-सामग्री क्रमबद्ध रूप में प्रयुक्त करता है, जिससे पाठ छात्रों के लिए अधिक रुचिकर हो जाता है।

(8) **घर बनाई सामग्री** (Home made Material)—इस प्रक्षेपक के लिए पाठ सामग्री-मानचित्र, आकृतियों, चित्र आदि की पारदर्शियों को घर पर ही किया जाता है। इसके लिए पाठ-सामग्री में अधिक व्यय की जरूरत नहीं होती है।

(9) **पाठ्य-सामग्री का पुनः उपयोग** (Reuse the Transparences)—शिक्षक अपने शिक्षण हेतु जिन पारदर्शियों को प्रक्षेपित करने के लिए तैयार करता है, उनका उपयोग पुनः कर सकता है। उन्हें संभाल कर रख लिया जाता है।

(10) **पारदर्शियों का उपयोग** (Use of Transparancies)—पारदर्शियों को विभिन्न पाठ्य-सामग्री हेतु भी प्रयोग करते हैं। पारदर्शियों की पाठ्य-सामग्री को मिटाकर अन्य पाठ सामग्री को अंकित कर लेते हैं और उन्हीं पारदर्शियों का शिक्षण में उपयोग कर लेते हैं। इस प्रकार पारदर्शियों को तैयार करने की यह मितव्ययी प्रविधि है।

## (स) दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री (AUDIO-VISUAL TEACHING AIDS)

**दृश्य श्रव्य सामग्री का अर्थ—**दृश्य-श्रव्य सामग्री का तात्पर्य उन साधनों से है, जिनमें श्रव्य तथा दृश्य दोनों इन्द्रियों का प्रयोग होता है अर्थात् जिनमें ज्ञान श्रव्य तथा दृश्य दोनों इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होता है। निम्नलिखित पंक्तियों में हम कुछ ऐसे प्रमुख साधनों पर दृष्टि डाल रहे हैं, जिनके द्वारा बालकों को श्रव्य तथा दृश्य दोनों ही इन्द्रियों के साथ-साथ प्रयोग करने से ज्ञान प्राप्त होता है।

(1) **चलचित्र अथवा सिनेमा (Cinema) :** चलचित्र अथवा सिनेमा मूक-चित्र का दूसरा रूप है। इसमें मूक-चित्र की तरह क्रियायें भी दिखाई जाती हैं, साथ ही ध्वनि की व्यवस्था भी होती। इस प्रकार चल-चित्र अथवा सिनेमा बीसवीं शताब्दी की शिक्षा का सस्ता, सुलभ तथा यंत्रीकृत महत्वपूर्ण साधन है। इसका प्रयोग रेडियो और टेलीविजन

NOTES

से अधिक प्रभावशाली होता है तथा इसके कई लाभ हैं, जैसे—(1) चल-चित्र द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान अन्य उपकरणों की अपेक्षा अधिक स्थायी होता है, क्योंकि इसमें देखने तथा सुनने की दो इन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं। (2) चलचित्र औद्योगिक तथ्यों तथा उनके प्रभावों तथा ऐतिहासिक घटनाओं और वैज्ञानिक अनुसंधानों का साक्षात्कार कराने में मदद देता है। (3) चल-चित्र द्वारा बालकों को विभिन्न देशों की स्थितियों, परिस्थितियों तथा मानव और उसके कार्य-कलापों का ज्ञान सरलतापूर्वक करा दिया जाता है, (4) चलचित्र द्वारा बालकों की कल्पना-शक्ति को विकसित करके उनकी निरीक्षण शक्ति का विकास भी सरलतापूर्वक किया जा सकता है तथा (5) चलचित्र द्वारा समस्त बालक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं नैतिक सभी प्रकार से विकसित होते हैं। संक्षेप में, चल-चित्र द्वारा मन्द एवं तीव्र बुद्धि के सभी बालकों को जहाँ एक ओर मनोरंजन होता है वहाँ दूसरी ओर वे हर प्रकार की शिक्षा भी ग्रहण करते हैं। ध्यान देने की बात है कि मनोरंजन होता है वहाँ दूसरी ओर वे हर प्रकार की शिक्षा भी ग्रहण करते हैं। ध्यान देने की बात है कि मनोरंजन की दृष्टि से दिखाये जाने वाले चित्रों से शैक्षिक चित्र भिन्न होते हैं। मनोरंजन वाले चित्रों में कहानियाँ होती हैं किन्तु शैक्षिक चित्रों में भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र तथा विज्ञान आदि विषयों की सामग्री का समावेश होता है। दूसरे शब्दों में, चल-चित्र द्वारा सिनेमा में प्रयोग किये जाने वाले 35 मिलीमीटर के प्रोजेक्टर के स्थान पर स्कूल में सिर्फ 16 मिलीमीटर के प्रोजेक्टर द्वारा बालकों को प्रत्येक विषय का ज्ञान सरलतापूर्वक दिया जा सकता है। हर्ष का विषय है कि भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार तथा इंग्लैण्ड तथा अमेरिका के दूतावासों से शैक्षिक फिल्में नि:शुल्क मिलती हैं लेकिन खेद की बात है कि हमारे स्कूल आर्थिक परेशानियों के कारण अभी तक प्रोजेक्टर नहीं खरीद पाये हैं। इस कारण छात्र इस महत्वपूर्ण उपकरण के शैक्षिक लाभों से परे ही रह जाते हैं।

(2) **समाचार सम्बन्धी फिल्म (आलेख सम्बन्धी) (Documentary Films) :** समाचार सम्बन्धी फिल्मों का अर्थ उन फिल्मों से है, जिनके द्वारा बालकों को सामाजिक विषयों की शिक्षा दी जाती है। ऐसी फिल्मों द्वारा जनता को देश के राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन से सम्बन्धित परिस्थितियों, घटनाओं तथा योजनाओं के सम्बन्ध में समाचार भी दिए जाते हैं। यही कारण है कि आजकल प्रत्येक देश में अधिकांश समाचार सम्बन्धी फिल्में तैयार हो रही हैं। ऐसी फिल्में स्कूलों में

बालकों को तथा सार्वजनिक स्थानों पर जनता को दिखाई जाती हैं। इससे देश के प्रत्येक नागरिक को अपने देश के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण समाचार हासिल हो जाते हैं। स्मरण रहे कि समाचार सम्बन्धी फिल्मों क द्वारा बालकों को सामाजिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा भी बड़े सरल तथा रोचक ढंग से की जा सकती है। अतः इस प्रकार की फिल्मों द्वारा बालकों का जहाँ एक ओर मनोरंजन होता है, वहाँ दूसरी ओर उनके कई शैक्षिक लाभ भी हैं।

(3) **दूरदर्शन (Velevision) :** टेलीविजन भी रेडियो की भाँति बीसवीं शताब्दी की वैज्ञानिक उपलब्धियों में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। रेडियो द्वारा तो हम उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्रियों तथा कलाकारों की सिर्फ वाणी ही सुन सकते हैं, किन्तु टेलीविजन पर उन सबकी शक्लें तथा उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुए भी देख सकते हैं। दूसरे शब्दों में टेलीविजन द्वारा बालकों के कान और आँख दोनों ही ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय होती हैं। इस दृष्टि से जो गुण चल-चित्र के हैं वही गुण टेलीविजन में भी हैं। यद्यपि टेलीविजन अभी शैशवावस्था में हैं फिर भी इसके शैक्षिक महत्व को देखते हुए देहली प्रदेश में भिन्न-भिन्न विषयों से पाठों को समय-समय पर प्रसारित किया जाता है। आशा है कि रेडियो की भाँति टेलीविजन सेट भी इतने ही सस्ते हो जायेंगे कि हमारे स्कूलों के सभी बालक इसके द्वारा बात-चीत करना, भाषण देना तथा अभिनय आदि कई बातों को सरलतापूर्वक सीख पायेंगे।

**कक्षा शिक्षण में दूरदर्शन तथा चलचित्रों का प्रयोग** (Use of Television and Movies in Classroom Teaching)—कक्षा-शिक्षण में इस श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा है तथा भारत वर्ष में भी इनकी प्रभावशीलता के मूल्यांकन केक लिए शोध कार्य किये गये हैं। यह सहायक सामग्री सबसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई है। कक्षा शिक्षण में इनके प्रयोग के लिए छः सोपानों का अनुसरण किया जाता है। इन सोपानों का वर्णन यहाँ पर दिया गया है—

**प्रथम सोपान—**इकाई योजना बनाते समय यह निश्चित कर लिया जाता है कि कौनसा प्रकरण किस परिस्थिति में तथा किस समय पर छात्रों को दिखलाया जाये। चलचित्र की उपलब्धि को भी ध्यान में रखना होता है। प्रत्येक राज में शिक्षा विभाग के अन्तर्गत श्रव्य-दृश्य शिक्षण विभाग होता है, जो अपने यहाँ उपलब्ध चलचित्रों के सम्बन्ध में सूचीपत्र प्रकाशित करता है। ये सूचीपत्र विद्यालय-पुस्तकालय से प्राप्त किये जा सकते हैं। अतः चलचित्रों को प्राप्त करना प्रथम चरण है।

**द्वितीय सोपान—**चलचित्र का कक्षा में उपयोग करने से पूर्व शिक्षक को स्वयं चलचित्रों को दो-तीन बार देखना होता है और बिन्दुओं को ध्यान में स्थिर करना होता है, जिनको कि प्रस्तावना के रूप में प्रस्तुत करना हो, द्वितीय चरण हुआ।



**तृतीय सोपान—**चलचित्र दिखाने से पहले चलचित्र की प्रस्तावना के रूप में शिक्षार्थियों को निम्नांकित बिन्दुओं की दृष्टि से स्पष्टता होनी चाहिए—

(1) चलचित्र के माध्यम से मूलत: क्या दिखाया जाने वाला है?

(2) चलचित्र देखते समय किन बिन्दुओं को ध्यानपूर्वक देखना है?

शिक्षार्थियों को उक्त बिन्दुओं की दृष्टि से उत्प्रेरित करने के लिए शिक्षक स्वयं चलचित्र के सम्बन्ध में विवरण प्रस्तुत कर सकता है या प्रश्नोत्तर का सहारा ले सकता है। इस चरण का मूल प्रयोजन यह है कि चलचित्र देखने से पूर्व शिक्षार्थियों को यह ज्ञान होना चाहिए कि वे क्या देखने वाले हैं।

**चतुर्थ सोपान—**इस सोपान में शिक्षक यह ज्ञात करता है कि चलचित्र शिक्षार्थियों को विषयवस्तु का ज्ञान कराने में किस सीमा तक प्रभावी हुआ है। वह प्रश्नों का प्रयोग करता है, विचार-विमर्श आयोजित करता है तथा शिक्षार्थियों को चलचित्र के सम्बन्ध में अस्पष्ट बिन्दुओं पर सवाल पूछने के लिए निमन्त्रित करता है।

**पंचम सोपान—**इस सोपान में शिक्षार्थियों को चलचित्र से सम्बन्धित विषयों पर अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं की सूची दी जा सकती है और शिक्षार्थी अर्जित अनुभवों का प्रबलीकरण कर सकते हैं।

गृह कार्य के रूप में चलचित्र पर सारांश लिखना अथवा सवाल हल करना भी इसी सोपान में आता है।

**षष्टम सोपान—**इस सोपान में शिक्षक खुद चलचित्र की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन करता है तथा भविष्य में चलचित्र और अधिक प्रभावोत्पादक ढंग से उपयोग करने के लिए मूल्यांकन सुझाव अपनी पत्रिका में या चलचित्र के साथ आने वाले निर्धारित प्रारूप में अंकित करता है।

**(4) शैक्षिक भ्रमण (Field-trip) :** भ्रमण कक्षा के बाहर स्थित किसी स्थान का योजनाबद्ध निरीक्षण है। शैक्षिक भ्रमण तभी आयोजित किया जाता है, जब कक्षा की चहारदीवारी में विषय के किसी पक्ष को

भलीभाँति स्पष्ट करना सम्भव न हो। उदाहरण के लिए नदियों का कार्य, विभिन्न तरह की चट्टाने, कृषि उपजें, व्यापारिक केन्द्र, डाकखाने का कार्य, पंचायत का कार्य, प्रमुख उद्योग आदि का वास्तविक ज्ञान भ्रमण द्वारा ही दिया जा सकता है।

**NOTES**

शैक्षिक भ्रमण द्वारा शिक्षार्थियों में निरीक्षण करने तथा कल्पना करने की योग्यताओं का विकास किया जाता है। भ्रमण कक्षा-कार्य की पूरक प्रवृत्ति होती है। इसके द्वारा शिक्षण काम में नवीनता आ जाती है और शिक्षार्थी विषय में अधिक रुचि दर्शाने लगते हैं। यह अवश्य ध्यान में रखा जाना चाहिए कि भ्रमण, सैर सपाटा अथवा उल्लास यात्रा नहीं है। यह तो शिक्षक के मार्ग-दर्शन में योजनाबद्ध ढंग से कक्षा के बाहर किसी स्थान का निरीक्षण है। अत: भ्रमण से पूर्व भ्रमण की निश्चित योजना बनाना बहुत आवश्यक है।

(5) **प्रदर्शनीय वस्तुएँ (Exhibitions) :** इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा निर्मित वस्तुएँ, बुलेटिन बोर्ड तथा पोस्टर आदि का प्रदर्शन सम्मिलित है। इनका उपयोग शिक्षार्थियों को पाठ के प्रति अभिप्रेरित करने या पाठ के विकास में सहायता लेने अथवा पाठ का समाहार करने की दृष्टियों से किया जा सकता है।

(अ) **अभिप्रेरण की दृष्टि से**—शिक्षण के प्रति शिक्षार्थियों को अभिप्रेरित करने की दृष्टि से प्रदर्शों का विशेष महत्व है। एस्किमो के जीवन को दर्शाते हुए प्रदर्शक एक्सिमो के जीवन का अध्ययन करने के लिए अभिप्रेरित कर सकते हैं।

पुस्तकालय कक्ष के बाहर नवीन पुस्तकों के आवरण प्रदर्शित करने से पाठकों का नयी पुस्तकों की ओर आकर्षित होता है और वे उनका अध्ययन करने के लिए अभिप्रेरित होते हैं।

विद्यालय में विद्यार्थियों द्वारा बनाई वस्तुओं को प्रदर्शित करने से अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलती है और वे भी नवीन प्रदर्श (मॉडल) बनाना सीखते हैं। इस प्रकार प्रदर्श शिक्षण के प्रति अभिप्रेरित करने में पर्याप्त सहायक होते हैं।

(ब) **तल्लीनता की दृष्टि से**—प्रदर्श (मॉडल) बनाते समय शिक्षार्थियों को पाठ में तल्लीनता होती है। वे अपने स्वयं के कोशिशों से मानचित्र, रेखाचित्र, मॉडल आदि तैयार करते हैं।

(स) **समाहार की दृष्टि से**—जब शिक्षार्थी अपने-अपने प्रदर्श (मॉडल) बना चुकें तो उनको अन्य शिक्षार्थियों के सम्मुख उनकी व्याख्या करने का अवसर दिया जा सकता है। ऐसा करने से उनके ज्ञान का प्रबलीकरण होता है।



यह आवश्यक नहीं कि शिक्षार्थी प्रदर्शन स्वयं बनायें। यदि शिक्षक का उद्देश्य सूचना देना अथवा किसी विचार को स्पष्ट करना मात्र ही हो तो शिक्षण के समय स्वनिर्मित प्रदर्श का उपयोग करना ही जरूरी होता है। यदि बना-बनाया प्रदर्श उपलब्ध हो तो उसका भी उपयोग किया जा सकता है क्योंकि यह वही है जिनके उपयोग से विचारों के स्पष्टीकरण में सुविधा हो जाती है।

(6) **नाटक (Drama) :** नाटक या अभिनय एक ऐसा श्रव्य-दृश्य साधन है, जिसे प्राचीन-काल से ही शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है। नाटक देखने अथवा उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने की इच्छा प्राय: समस्त बालकों में होती है। जब बालक नाटक देखते हैं अथवा खेलते हैं तो शिक्षण की क्रिया इतनी प्रभावशाली बन जाती है कि सभी बालक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा व्यावहारिक अनुभवों को स्वाभाविक रूप से प्राप्त करके नैतिक आदर्शों और गुणों को सहज ही ग्रहण कर लेते हैं। इस प्रकार के नाटक के द्वारा बालकों में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भावनायें विकसित करके मानव चरित्र के सम्बन्ध में कई बातों की शिक्षा दी जा सकती है। यूँ तो नाटक के द्वारा बालकों को विभिन्न सामाजिक विषयों की शिक्षा दी जा सकती है परन्तु इतिहास के शिक्षण में इसका विशेष महत्व है। नाटक में भाग लेने से बालकों को ऐतिहासिक घटनाओं, महापुरुषों के कार्य-कलापों से एवं विभिन्न गणों में प्रयोग की जाने वाली वेश-भूषा का ज्ञान हो जाता है। इससे उनकी शारीरिक-मानसिक तथा भाव-प्रधान क्रियाओं में समन्वय हो जाता है। संक्षेप में नाटक, द्वारा बालकों को मनोरंजन के साथ-साथ विभिन्न विषयों की शिक्षा भी स्वाभाविक रूप से मिलती है। अत: शिक्षकों को चाहिए कि वे बालकों को नाटक में सक्रिय रूप से हिस्सा लेने के लिए अवसर प्रदान करें तथा जरूरी प्रोत्साहन भी दें।

**दृश्य-श्रव्य सामग्री की विशेषताएँ (Characteristics of Audio-Visual Aids)**

दृश्य-श्रव्य सामग्री में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

(1) दृश्य-श्रव्य सामग्री ऐसी होनी चाहिए, जो शिक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति में मदद दे।

(2) दृश्य-श्रव्य सामग्री सुन्दर तथा आकर्षक होनी चाहिए। परन्तु इसका यह आशय नहीं है कि वह इतनी सुन्दर हो कि बालक उसकी सुन्दरता में लीन होकर मूल-पाठ से विचलित हो जायें।

(3) दृश्य-श्रव्य सामग्री न बहुत छोटी होनी चाहिए और न बहुत बड़ी। परन्तु हाँ, उसे इतनी बड़ी जरूरी होनी चाहिए कि कक्षा के सभी बालक उसे आसानी से देख सकें।

(4) दृश्य-श्रव्य सामग्री उपयोगी होनी चाहिए। व्यर्थ सामग्री के प्रदर्शित करने में समय समाप्त होता है तथा कक्षा में अनुशासन भंग होने की संभावना बढ़ जाती है।

(5) दृश्य-श्रव्य सामग्री को बालकों के विनोद की अपेक्षा कौतूहल को जागृत करना चाहिए अन्यथा बालक पाठ को छोड़कर केवल विनोद में ही लग जायेंगे।

(6) जिन चित्रों, मानचित्रों अथवा चार्टों को बालकों के सम्मुख प्रदर्शित किया जाये उनमें आवश्यकता से अधिक बातें अंकित नहीं करनी चाहिए इससे उनका प्रभाव कम हो जाता है।

(7) दृश्य की जिस सामग्री को बालकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये, उसमें क्रियाएं दिखायी जानी चाहिए। ऐसी सामग्री से बालकों को कुछ इशारे मिलेंगे और शिक्षक भी अपने अभीष्ट को सरलतापूर्वक सिद्ध कर सकेगा।

**दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग (Use of Audio-Visual Aids)**

दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग निम्न अवस्थाओं में किया जाना चाहिए—

(1) जब वस्तु इतनी बड़ी हो कि उसे कक्षा में न लाया जा सके, जैसे-ताजमहल, बिरला मन्दिर एवं हाथी एवं घोड़े आदि।

(2) जब वस्तु इतनी छोटी हो कि उसे सरलतापूर्वक न देखा जा सके, जैसे-एटमबम एवं एमीबा आदि।

(3) जब वस्तु उपलब्ध न हो; जैसे—भूतकाल के सिक्के, अस्त्र-शस्त्र तथा वेशभूषा आदि।

(4) जब वस्तु तीव्र गति से चलने वाली हो; जैसे—रेलगाड़ी तथा हवाई जहाज आदि।

(5) जब जीवित वस्तुओं का लगातार विकास दिखाने की आवश्यकता हो; जैसे—मक्खी तथा मच्छर का बढ़ना।



(6) जब वस्तु की गति न दिखाई पड़ती हो; जैसे—विद्युत।

(7) जब आन्तरिक क्रियाओं को दिखाने की जरूरत हो; जैसे—रक्तसंचार तथा पाचन क्रिया आदि।

(8) जब दूर की वस्तुओं का ज्ञान देना हो; जैसे—विभिन्न देशों के रीति-रिवाज एवं परम्परायें आदि।

## अधिगम अभ्यास

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दूरदर्शन का दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के शिक्षण में प्रयोग के सोपानों का वर्णन कीजिए तथा किस प्रकार की पाठ्य-वस्तु के लिए इनका प्रयोग करना चाहिए ?
2. दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का चयन करने में किन मानदण्डों का प्रयोग करना चाहिए और क्यों ?
3. अनुदेशनात्मक माध्यम एवं सम्प्रेषण से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रयोग एवं विकास का वर्णन कीजिए।
4. अचल चित्रों में सिरोत्तर प्रक्षेपक का उपयोग बताइये। पारदर्शियों के तैयार करने की प्रक्रिया समझाइये।
5. चित्र विस्तारक तथा सिरोत्तर प्रक्षेपक में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा दोनों ही उपादेयता तथा सीमाओं को बताइये।
6. सम्प्रेषण माध्यम स्रोत केन्द्रों की आवश्यकता है? केन्द्र व्यवस्थापक के उत्तरदायित्वों का उल्लेख कीजिए।

### लघुत्तरीय प्रश्न

1. शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का उपयोग बताइये।
2. दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का हिन्दी शिक्षण के लेखन में उपयोग बताइये।

3. श्रव्य सहायक सामग्री का हिन्दी उच्चारण में उपयोग समझाइये।
4. श्यामपट्ट को एक शिक्षण सहायक सामग्री मानते हैं। इसे स्पष्ट कीजिए।
5. चित्र-विस्तारक के उपयोग बताइये।
6. सिरोत्तर प्रक्षेपक के लिए पारदर्शियों के तैयार करने की प्रक्रिया को समझाइये।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दूरदर्शन का दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के शिक्षण में प्रयोग के सोपानों का उल्लेख कीजिए।
2. अनुदेशात्मक एवं सम्प्रेषण माध्यम से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रयोग एवं विकास का वर्णन कीजिए।
3. सम्प्रेषण माध्यम स्रोत केन्द्रों की क्यों आवश्यकता है ? केन्द्र व्यवस्थापक के उत्तराधिकार के उत्तरदायित्वों का वर्णन कीजिए।

### लघुत्तरीय प्रश्न

1. श्रव्य सहायक सामग्री का हिन्दी उच्चारण में उपयोग समझाइये।
2. चित्र-विस्तारक के उपयोग लिखिए।
3. श्यामपट्ट को एक विशाल सहायक सामग्री मानते हैं। स्पष्ट कीजिए।

●●

# 15 विकलांग बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री के रूपान्तरण



**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- विकलांग बच्चां के लिए रूपान्तर
- पर्यावरण समर्थन
- सामग्री संशोधन
- गतिविधि को संशोधित करना
- बाल पसंद का उपयोग करना
- साथियों का समर्थन
- अदृश्य समर्थन
- एडल्ट समर्थन
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को शामिल करने के लिए रूपांतर बनाना
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को समायोजित करने के विशिष्ट विकलांग बच्चों के हेतु संशोधन
- निर्देशात्मक आवास तथा रूपांतर
- विशेष आवश्यकताओं वाले युवा बच्चों के लिए अनुकूल कक्षा के वातावरण

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- विकलांग बच्चों के लिए रूपांतर
- पर्यावरण समर्थन
- सामग्री संशोधन
- गतिविधि को संशोधित करना
- बाल पसंद का उपयोग करना

NOTES

- साथियों का समर्थन
- अदृश्य समर्थन
- एडल्ट समर्थन
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को शामिल करने के लिए रूपांतर बनाना
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को समायोजित करने के विशिष्ट विकलांग बच्चों के हेतु संशोधन
- निर्देशात्मक आवास तथा रूपांतर
- विशेष आवश्यकताओं वाले युवा बच्चों के लिए अनुकूल कक्षा के वातावरण

## प्राक्कथन

शिक्षण पद्धतियों के विकलांग बालकों के लिए शिक्षा और विकास का समर्थन हेड स्टार्ट बाल परिणाम फ्रेमवर्क में पहचाने जाते हैं। नेताओं गाइड के इस खंड विकलांग बच्चों के लिए रूपांतरों पर केन्द्रित है एवं इन बच्चों और उनके परिवारों के लिए सेवाओं में सुधार लाने में विकलांग समन्वयकों मदद करना है।

निम्नलिखित से एक अंश है सकारात्मक बाल परिणाम के लिए हेड स्टार्ट नेता गाइड। विकलांग बच्चों के लिए रूपांतरों पर्यावरण समर्थन सामग्री संशोधन गतिविधि को संशोधित बाल पसंद का उपयोग करते हुए साथियों के समर्थन अदृश्य समर्थन एडल्ट समर्थन।

## विकलांग बच्चों के लिए रूपान्तर

हेड स्टार्ट कार्यक्रम प्रदर्शन मानक (2002) की जरूरत है कि संभव विकासात्मक चिंता है कि पेशेवर मूल्यांकन और हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है के लिए हेड स्टार्ट स्टाफ स्क्रीन। जब एक बच्चे एक विकलांगता है, जो शारीरिक, संज्ञानात्मक अथवा सामाजिक-भावनात्मक स्थिति के साथ-साथ विकासात्मक देरी सम्मिलित हो सकते हैं होने के रूप में पेशेवरों द्वारा की पहचान की है, एक व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) कि लक्ष्यों और उद्देश्यों को निर्दिष्ट तैयार है। IEP व्यापक है और डोमेन की श्रेणियों के ऊपर आ सकती।

शिक्षक विशेष रूप से पहचान विकलांग अथवा विशेष आवश्यकता वाले शिक्षा और बच्चों के विकास का समर्थन करने के बारे में चिंतित हैं। अलग-अलग

बच्चों की आवश्यकताओं को पूर्ण करना विशेष रूप से उन IEP को साथ, पेशेवरों और माता-पिता के साथ निकट संचार के बीच नियमितत रूप से सम्पर्क की आवश्यकता है।

NOTES

विवरण और संशोधनों और रूपान्तरों के सात शोध के आधार पर प्रकार है कि विकलांग बालकों के लिए विकसित किए गए के उदाहरण अनुवर्ती तरीक, पर्यावरण में बदलाव सामग्री अनुकूल एक गतिविधि को संशोधित एक बच्चे की वरीयताओं पर निर्माण साथियों के समर्थन का प्रयोग करने पर इन रणनीतियों सेंटर, हर रोज घटनाओं के पाठ्यक्रम में अदृश्य मदद प्रदान करते हैं, और गतिविधियों में वयस्क समर्थन प्रदान करते हैं।

इन संशोधनों हेड स्टार्ट शिक्षण टीमों विकास और व्यक्तिगत बच्चों को सीखने की अनेक अलग अलग और उचित तरीके करने का समर्थन प्रदान करते हैं। अलग डोमेन के तहत गाइड में पहले वर्णित शिक्षण रणनीतियों में से अनेक लोग भी (individualization) को बढ़ावा देने और विकलांग बच्चों के विकास का समर्थन है।

## पर्यावरण समर्थन

फेरबदल भौतिक और सामाजिक वातावरण और गतिविधियों के समय एक बालक की भागीदारी, सहभागिता एवं सीखने को बढ़ावा देने के। एक बच्चे के हैं।

- कठिनाई के खिलौने और उपकरणों को साफ अप के दौरान दूर डाल दिया है-उपयोग चित्रों या प्रतीकों अलमारियों एवं कंटेनरों पर। एक मिलान खेल को साफ करें।
- कठिनाई के पास साथियों खेल रहा है-आकर्षक और अत्यधिक प्रेरित सामग्री के साथ सहकारी छोटे समूह की गतिविधियों की योजना है, ताकि बालक जबकि इस तरह के भित्ति चित्र बनाने और सहकारी ब्लॉक संरचनाओं के निर्माण के रूप में मजा गतिविधियों में संलग्न मित्रों के साथ निकटता में है।
- कोई खेल भागीदारों है-इस तरह के छोटे समूह अथवा चक्र समय के रूप में ही सहकर्मी एक योजना बनाई गतिविधि पर हर दिन बालक के बगल में बैठने से दोस्ती का निर्माण।
- के दौरान स्वतंत्र चुनाव समय शिक्षण केन्द्रों में भाग नहीं लेता। बालक के लिए एक तस्वीर शेड्यूल बनाएं। चित्र अनुसूची चित्र अथवा का प्रतिनिधित्व प्रतीकों हो सकता है।

NOTES

विभिन्न शिक्षण केन्द्रों एक निश्चित क्रम में संगठित :

1. कला
2. नाटकीय खेलने
3. ब्लाकों

बच्चे उसे कार्यक्रम के लिए हर बार वह एक गतिविधि खत्म एवं अगले पर चला जाता है उल्लेख करने के लिए सिखाया जाना चाहिए। उन्होंने अपने अनुसूची का लेखन कर सकते हैं जब यह उसके आदेश कैसे वहाँ खेलने के लिए सीखने के लिए एक केन्द्र में एक वयस्क में सम्मिलित होने के लिए समय है।

- कठिनाई बनाने संक्रमण है-बस से पहले संक्रमण एक चित्र या प्रतीक क्षेत्र अथवा गतिविधि है कि बच्चे अगले के पास जाना चाहिए का प्रतिनिधित्व करने के साथ बच्चे हैं। बच्चे भी अगले क्षेत्र के लिए उसके साथ चित्र अथवा प्रतीक कार्ड ले सकता है।

- जल्दी एक गतिविधि के साथ खत्म एवं फिर कठिनाई अगले गतिविधि के लिए इंतजार कर रहे हैं-खुला एक अथवा (जैसे किताब क्षेत्र या कम्प्यूटर के रूप में) दो शांत केन्द्रों गतिविधि के बाद एवं उसके गतिविधि छोड़ने के लिए और खुला शांत क्षेत्रों में से एक पर जाने के लिए अनुमति देते हैं।

## सामग्री संशोधन

सामग्री को संशोधित करने के लिए इतना है कि बालक के रूप में स्वतंत्र रूप से संभव के रूप में भाग ले सकते हैं। एक बच्चे के हैं—

- कठिनाई एक कला चित्रफलक पर खड़ा है-चित्रफलक के निचले हिस्से, बालक को एक कुर्सी देते हैं, अथवा एक मेज चित्रफलक का उपयोग करें।

- उसके पैरों के साथ एक तिपहिया साइकिल के पैडल तक नहीं पहुंच सकते। पैडल करने पर टेप लकड़ी के ब्लॉक।

- जमीन एक नियमित रूप से बालकों के आकार कुर्सी पर बैठने तक नहीं पहुँच सकते-टेबल के नीचे एक स्टूल जगह इतना है कि वह उस पर उसके पैरों को आराम एवं अपने शरीर को स्थिर कर सकते हैं। यह

NOTES

स्थिरता में मदद करता है बच्चों और अधिक आसानी से उनके ठीक मोटर कौशल का प्रयोग करें।

- दो हाथों का उपयोग कर मुठभेड़ों कठिनाई सामग्री पर कार्रवाई करने के-टेप, वेल्क्रो, नांस्किड समर्थन (जैसे-स्नान चटाई appliques के रूप में) का प्रयोग कर सामग्री, और clamps को स्थिर।

- एक कौशल अथवा प्रतिक्रिया एक खिलौना के लिए आवश्यक के साथ करना कठिन होता है-प्रतिक्रिया को संशोधित। उदाहरण के लिए, यदि एक बच्चा एक किताब के पन्नों मोड़ में कठिनाई होती है, स्पंज अथवा प्रत्येक पृष्ठ के लिए स्टायरोफोम के छोटे टुकड़े गोंद; इस प्रत्येक पृष्ठ अलग कर देगा, यह सरल पेज चालू करने के लिए बना रही है।

- कला केन्द्र का चयन नहीं करता है क्योंकि इस तरह चिपकाने एवं चिपकाने के रूप में कार्रवाई अभी भी बहुत मुश्किल अथवा बेचैन है-उपयोग संपर्क कागज या अन्य चिपचिपा कागज कोलाज के लिए समर्थन के रूप में। बालक केवल कागज पर बातें डाल करने के लिए है।

- एक कठिन समय लोभी मार्करोंां एवं पेंट ब्रश है-उन्हें आसानी से पकड़ करने के लिए बनाने के लिए मार्करों एवं पेंट ब्रश के आस-पास फोम का एक टुकड़ा जोड़ें।

- कठिनाई एक लाइन पर काटने हैं-गोंद शुष्क करने के लिए कला से पहले पर्याप्त समय मिल जाए। यह उठाया सतह तथापि उसकी कैंची सूखी गोंद के खिलाफ रगड़ बच्चे अतिरिक्त संवेदी स्थान प्राप्त करने की अनुमति देगा।

- लकड़ी के ब्लॉक में कम से कम ब्याज शो-रंगीन, चमकदार कागज के साथ ब्लॉक के कुछ लपेट दें।

- अभी तक किताबों में कोई दिलचस्पी नहीं है-बालकों के चित्रों के साथ फोटो एलबम में शामिल हैं। फील्ड यात्राओं, कक्षा की गतिविधियों एवं बच्चे की विशेष हितों की तस्वीर एल्बम बनाओ।

NOTES

## गतिविधि को संशोधित

छोटे भागों में यह तोड़ने अथवा चरणों की संख्या को कम करके एक जटिल कार्य को सरल बनाना। एक बालक के हैं।

- आसानी से विचलित जब इस तरह पहेली, मोती एवं जैसे जोड़ तोड़ खिलौनों के साथ खेल रहा है-हाथ एक के बाद बच्चे को एक करने के लिए टुकड़े। धीरे-धीरे एक समय में टुकड़े की संख्या बालक है वृद्धि हुई है।

- जैसे खाना पकाने परियोजनाओं, शिल्प परियोजनाओं, एवं टेबल के खेल के रूप में गतिविधियों से अभिभूत, और शायद ही कभी सफल हुआ है-अपने हिस्से में गतिविधि को तोड़ने। स्पष्ट संदर्भ में दिए गए बिन्दुओं का वर्णन, "सबसे पहले हम करते हैं (एक्स) तो हम करते हैं। (y)।" ड्रा चरणों की तस्वीरें तो यह एवं भी स्पष्ट करने के।

- कठिनाई को समझने कहानियाँ नहीं हैं। उपयोग वस्तुओं अथवा फलालैन बोर्ड टुकड़े कि कहानी के पात्रों या वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। बालक भौतिक वस्तुओं के बीच कनेक्शन बना सकते हैं।

- कक्षा के लिए कार या बस से एक लंबी पैदल दूरी पर है एवं फिर dawdles, शिकायत तथा कभी कभी बंद हो जाता है और फर्श करने के लिए चला जाता है—रास्ते सामरिक बिन्दुओं पर फोटो, पोस्टर, या अन्य रोचक प्रदर्शित करता है डाल दिया। बालक को प्रोत्साहित करें अगले स्थान पर जाने के लिए और उपलब्धि का वर्णन है, करने के लिए "आप हाथी के बालक चित्र मिल गया-आप बच्चे शेर मिल सकती है?"

- परियोजनाओं कई चरणों है कि साथ में कठिनाई होती है-मन में भिन्न-भिन्न बालक के साथ गतिविधि तैयार करते हैं। कुछ बच्चों को पूरी परियोजना कर सकते हैं। दूसरों परियोजनाओं है कि शुरू कर दिया गया है प्राप्त हो सकता है एवं उसके बाद वे पिछले दो या तीन चरणों को पूरा करने। अगर बालकों के हित को बनाए रखा जाएगा कुछ दिनों में इस परियोजना का विस्तार पर विचार करें।

## बाल पसंद का उपयोग करना

पहचान करना और सामग्री या गतिविधियों के लिए बालक की वरीयताओं को एकीकृत इतना है कि बच्चे को उपलब्ध अवसरों का लाभ लेता है। एक बच्चे के हैं।

NOTES

- नखरे हैं एवं इस तरह के सुबह चक्र के रूप में बड़े समूह बार छोड़ने के लिए कोशिश करता है–बच्चे को इस तरह के एक टेड्डी बियर अथवा कंबल के रूप में एक पसंदीदा, शांत खिलौना नियंत्रण न करने दें। छोटे समूहों में विभाजित करते बालकों इतना है कि यह आसान है व्यक्तिगत बच्चों केन्द्रित ररहने एवं भाग लेने के लिए

- एक ऐसा क्षेत्र है अथवा गतिविधि से अगले करने के लिए कठिनाई बनाने संक्रमण है–उसे अगले करने के लिए एक गतिविधि से पसंदीदा खिलौना ले जाने के लिए अनुमति देते हैं। बालकों कि संक्रमण समय आने पर सूचित करें और वर्णन आगे क्या होगा।

- वृत्त समय अथवा अन्य बड़े समूह की गतिविधियों के लिए आसानी से नहीं आता। इस तरह के बुलबुले छोड़ना या कि बच्चे की पसंदीदा गाना गा के रूप में एक पसंदीदा गतिविधि के साथ बड़े समूह समय आरम्भ करते हैं।

- कठिनाई नई गतिविधियों अथवा शिक्षण केन्द्रों में संलग्न है या केवल एक गतिविधि के साथ रहता है–शिक्षा केन्द्र है कि वह शायद ही कभी को जाता है में बालक की पसंदीदा खिलौना सम्मिलित करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे कारों से प्यार करता है, लेकिन कभी जल स्तर क्षेत्र के लिए चला जाता है, एक "कार धोने" उस क्षेत्र में उत्पन्न करते हैं।

## सहकर्मी समर्थन

साथियों का प्रयोग एक बच्चे की भागीदारी बढ़ाने के लिए। एक बच्चे के हैं।

- कैसे कम्प्यूटर मेनू से एक गतिविधि अथवा खेल का चयन करने के पता नहीं है–एक और बच्चा जो कंम्प्यूटर ऑपरेटिंग से परिचित है के साथ बालक जोड़ी। सहकर्मी कैसे कंप्यूटर मेनू से एक गतिविधि का चयन करने के अन्य दिखा।

- देख रहा है दो बच्चों के खेलने के लिए एवं उन्हें शामिल करना चाहते हैं लगता है–उन्हें शामिल होने के अन्य आमंत्रित करने के लिए दो बालकों के लिए कहें। उन्हें कुछ सुझाव दिए गए, मौखिक एवं गैर मौखिक, कैसे तीसरे बच्चे शामिल किया जा सकता है पर दे।

NOTES

- कब एवं कहाँ खेल का मैदान के लिए संक्रमण के दौरान को पंक्तिबद्ध करने के पता नहीं है–एक और बालक जो नियमित जानता है और निर्देश इस प्रकार के साथ बच्चे जोड़ी। बच्चों से पूछो अपने साथी खोजने के लिए एवं जब अस्तर अपने साथी का हाथ पकड़ लिए।
- अंग्रेजी शब्दों का उपयोग करें अथवा सांकेतिक भाषा नाश्ता या आहार का समय पर खाद्य वस्तुओं का अनुरोध करने के लिए सीख रहा है–एक एवं बच्चे (जैसे पटाखे की एक प्लेट के रूप में) का अनुरोध किया खाद्य पकड़ है। लक्ष्य बच्चे मित्र जो भाषा के उत्पादन को प्रोत्साहित करेंगे के साथ संवाद करने की जरूरत होगी।

## अदृश्य समर्थन

उद्देश्यपूर्ण एक गतिविधि के भीतर स्वाभाविक रूप से होने वाली घटनाओं की व्यवस्था। एक बालक के हैं।

- सिर्फ एक घड़ा से डालना सीख रहा है–अन्य बालकों के पहले डालना ताकि घड़ा भी भरा नहीं है अथवा सिर्फ घड़ा आधे रास्ते भर करते हैं।
- समूह की गतिविधियों के दौरान एक अनिच्छुक बोल लेती है–बालक को एक और बच्चा जो विशेष रूप से बातूनी है के बाद बात करने के लिए एक मोड़ दे। यह क्या कहना है के बारे में अनिच्छुक बालक विचारों देता है।
- इस तरह के संतुलन बीम पर चलने के रूप में एक विशेष सकल मोटर कौशल के बारे में अधिक अभ्यास की उपयोग है–एक बाधा कोर्स में इस कौशल को शामिल। एक लोकप्रिय, आनन्द, अथवा शोर रखो और अधिक कठिन एक के बाद गतिविधि। उदाहरण के लिए, बालकों को एक घंटा हिट के बाद से संतुलन बीम भर में चलने दें।
- कठिनाई छोटे समूह की गतिविधियों के दौरान ध्यान केन्द्रित रहा है–उसे इस तरह खिड़की अथवा दरवाजे से दूर या शांत बच्चों के बगल के रूप में इस तरह से बैठते हैं कि (distractions) कम कर रहे हैं, की है।

## एडल्ट समर्थन

एक वयस्क हस्तक्षेप या भागीदारी के बालक के स्तर का समर्थन करने गतिविधि में शामिल होने। एक बच्चे के हैं।

NOTES

- को दोहराया जाता है पर एक ही खेलने कार्यों कोई बदलाव किए बिना, वयस्क समर्थन का उपयोग करें। उदाहरण के लिए, रेत की मेज पर एक बच्चे उदासीनता और भरण एवं डंप और उनके कार्यों के प्रभाव पर ध्यान देना प्रतीयमान बिना भरता है। बच्चे एक और तरीका डंप और इस तरह के विभिन्न ऊँचाई पर कंटेनर पकड़े अथवा एक चिमनी या छोटे ट्यूब के माध्यम से रेत डंपिंग के रूप में जिस तरह से है कि बालक वर्तमान में नाटकों में छोटे परिवर्तन, बनाने के द्वारा भरने के लिए दिखाएं।

- किताबों में कोई दिलचस्पी नहीं है-कर्मचारी अथवा परिवार के किसी सदस्य एक कहानी रिकॉर्ड करने और फिर उसे किताब क्षेत्र में टेप पर किताब को सुनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं की है। माता-पिता भी टेप पर बालक के लिए एक विशेष हैलो कह सकते हैं। बच्चे किताब पर लग रहा है, जबकि टेप को सुनने, माता पिता जब पेज बारी या विशेष टिप्पणी है कि चित्र अथवा बच्चे के जीवन के अनुभवों को कहानी लाइन कनेक्ट करने के लिए संकेत भी शामिल कर सकते हैं। "याद है लेकिन हम है कि हमारे सड़क पर की तरह एक ट्रक देखा था?" "क्या आपको लगता है कहानी में लड़का आइसक्रीम पसंद करती है जितना आप कर के रूप में?"

हेड स्टार्ट कार्यक्रम प्रदर्शन मानक (2002) प्रत्येक बालक कार्यक्रम से लाभ प्राप्त करने के लिए individuation की जरूरतों है। सभी बच्चों के अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने में पहला कदम एक विकासात्मक उचित पाठ्यक्रम है। संशोधनों एवं रूपांतरों असाधारण बच्चों के लिए बने हैं, वे अक्सर अच्छी तरह से ज्ञात बचपन शिक्षण पद्धतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षण टीम अलग-अलग बालकों के लिए उपयुक्त अल्पकालिक लक्ष्यों को दिखाता है और शैक्षिक कार्यक्रम के लिए जरूरत रूपांतरों बनाता है के रूप में, वे बच्चों दीर्घकालिक लक्ष्यों है तथापि बच्चे परिणामों फ्रेमवर्क में निर्दिष्ट की ओर प्रगति की मदद की जाएगी।

कई बच्चे की देखभाल प्रदाताओं बच्चों को जो विकलांग अथवा विशेष जरूरतों के साथ काम करते हैं। याद रखें कि विशेष जरूरत वाले बच्चों के बच्चों के लिए पहले कर रहे हैं, और विकलांग के बिना बच्चों से मतभेद की तुलना में अधिक समानताएं हैं। हर बालक को एक अद्वितीय व्यक्तित्व और विशेष कौशल है। के रूप में आप संशोधन और समायोजन करने के लिए काम करते हैं प्रत्येक बच्चे की शक्तियों और सामर्थ्य पर अपने प्राथमिक ध्यान रखें।

NOTES

## रूपांतरों बनाना विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे शामिल करने के लिए

प्रत्येक बच्चे को अलग है, और प्रत्येक देरी अथवा विकलांगता विभिन्न संसोधनों की आवश्यकता होगी। बच्चे की देखभाल प्रदाताओं के रूप में आप बालक और विकलांगता के बारे में अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा होते हैं, और ठेठ संशोधनों कि बनाया जा सकता है के बारे में सीखना चाहिए। बच्चे के माता-पिता एवं पेशेवरों जो बच्चे के साथ काम एक जबरदस्त संसाधन हो सकता है। सवाल पूछने अथवा सुझाव बनाने के लिए डरो मत। रूपांतरों है कि आप अपने बालक की देखभाल कार्यक्रम के लिए बनाने के सरल हो जाएगा में से कई। अक्सर, संशोधनों को भी अपने बच्चे की देखभाल कार्यक्रम में अन्य बालकों को लाभ होगा।

## जनरल संशोधन विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे को समायोजित करने के

- **एक साथ की योजना बनाएँ।** माता-पिता, सलाह देने वाला और देखभाल करने वालों के लक्ष्यों को एक साथ सेट करना होगा। टीम कि विकसित करता है एवं बच्चे के Individualized शिक्षा योजना (IEP) पटरियों ताकि आप गतिविधियों, अभ्यास के बारे में बात कर सकते हैं और लक्ष्य तक पहुँचने की आवश्यकता का समर्थन करता है का एक हिस्सा होने के लिए कहें। लक्ष्य आसान होना चाहिए एवं बच्चे की क्षमताओं से मेल खाना चाहिए। हमेशा अपने विचारों और परिवार के साथ योजनाओं पर चर्चा।

- **खिलौने एवं उपकरणों को संशोधित करें।** साधारण परिवर्तन अक्सर नियमित खिलौने के लिए बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आप एक बालक जो बस हर दूसरे अंगूठी निकाल कर छल्ले (stacking) के साथ कठिनाई होती है कर सकते हैं। एक बच्चा जो कठिनाई एक बोतल पकड़े है के लिए, एक कपड़े मोजे के साथ बोतल कवर इतना कम हाथ बेहतर समझ सकते हैं।

- **अपने बच्चे की देखभाल के वातावरण में छोटे परिवर्तन करें।** अपने बालक की देखभाल के वातावरण में मामूली समायोजन समय है कि विशेष जरूरत वाले एक बच्चे को आप के साथ आसान एवं अधिक हर किसी के लिए सुखद खर्च करता है कर सकते हैं। खेलने के लिए एक

शांत, निजी अंतरिक्ष एक अति बालक मदद मिल सकती है। गरीब दृष्टि के साथ एक बच्चा खेलने के क्षेत्र में एक भिन्न-भिन्न दीपक से लाभ हो सकता। एक गलीचा कि निकल जाता है एक बालक जो मुसीबत घूमा है में मदद मिलेगी निकाला जा रहा है।

NOTES

- **मॉडल उचित व्यवहार।** विशेष जरूरत वाले बच्चों को कभी-कभी दूसरों के साथ खेल के बारे में डरपोक हैं। आप उन्हें कैसे एक नाटक खुद के साथी होने दिखा सकते हैं। आप बालक के साथ एक खेल खेलते हैं या एक साथ खरीदारी के लिए जा करने के लिए बहाना हो सकता है। बच्चे एवं अधिक आरामदायक हो जाता है, तो आप अन्य बच्चों को अपने नाटक गतिविधि में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर सकते।

- **विशिष्ट शब्द और कौशल कैसे एक बचपन का मित्र को खोजने के लिए और कैसे एक बचपन का दोस्त होने के लिए दिखा देंगे कि सिखाओ।** जब बोलने सीधे एक और बच्चे को देखने के लिए कैसे अथवा कहने के लिए सीखना "मैं खेलने कर सकते हैं?" कुछ बालकों के लिए बड़ा कदम हैं।

- **सिखाओ आम तौर पर बच्चों के विकास कैसे बात करते हैं एवं बच्चों को जो एक विकलांगता के साथ खेलने के लिए।** क्या करना है के बारे में बालकों से बात करें। उदाहरण के लिए, धीरे सुनने में परेशानी के साथ एक बालक के कंधे को छू या बात करते समय उस पर सीधे देख कि बच्चे होने का प्रभावी तरीके हैं। ध्यान।

- **ताकत के साथ-साथ की आवश्यकता के लिए देखो।** एक बच्चे पर भी ध्यान केन्द्रित होता जा रहा से बचें रों विकलांगता। एक पूरे व्यक्ति के रूप में प्रत्येक बालक को उपचार करें। गतिविधियों है कि एक बालक का समर्थन करेंगे प्रदान करें। मजबूत अंक। हर बच्चे को सफल और सक्षम महसूस करने की जरूरत है।

- **माता-पिता, स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर, एवं बचपन विशेषज्ञों के साथ परामर्श करें।** माता-पिता और विशेषज्ञों एक बालक जो एक विकलांगता है के साथ काम करने के लिए विशिष्ट जानकारी और सुझाव दे सकता है। प्रश्न पूछने के लिए डरो मत। माता-पिता को कभी कभी इसे लेने के लिए दी गई है कि देखरेख करने वालों क्या करना है पता चल जाएगा।

NOTES

## विशिष्ट विकलांग बच्चों के लिए 6.12 संशोधन

निम्न लिंक आप बच्चे की देखभाल पर्यावरण अनुकूल विकलांग के कुछ प्रकार के साथ बालक की आवश्यकताओं को पूरा करने के बारे में विशेष जानकारी दे सकते हैं। आप इस जानकारी को पढ़ते हैं, तो याद रखें कि हर बालक और हर विकलांगता अलग हैं।

- बाल देखभाल में मिलनसार विशेष आहार
- बाल देखभाल प्रदाताओं के लिए विशिष्ट विचार विकलांग सुनवाई के साथ बालकों की मदद करने।
- बाल देखभाल प्रदाताओं के लिए विशिष्ट विचार सीखना विकलांग बच्चों की मदद करने।
- बाल देखभाल प्रदाताओं के लिए विशिष्ट विचार शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों की मदद करने।
- बाल देखभाल प्रदाताओं के लिए विशिष्ट विचार सामाजिक एवं भावनात्मक विकलांग बच्चों की मदद करने।
- बाल देखभाल प्रदाताओं के लिए विशिष्ट विचार दृश्य विकलांग बालकों की मदद करने।

## क्यों निर्देशात्मक आवास और रूपांतरों ?

निर्देशात्मक आवास एवं रूपांतरों सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है कि शामिल किए जाने के शिक्षक संबोधित करेंगे हो सकता है। नि: शक्त छात्रों को कक्षा में अन्य विद्यार्थी के एक ही स्तर पर प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं लेकिन सामान्य शिक्षा शिक्षक ताकि प्रत्येक छात्र सामग्री जानने का अवसर है अपने या अपने सबक योजनाओं के लिए रहने की जगह एवं रूपांतरों बनाने के लिए तैयार रहने की जरूरत है।

### मेजर समस्याएं एवं चर्चा के क्षेत्रों

प्रमुख मुद्दों में से कुछ सामान्य शिक्षा शिक्षक कक्षा में शिक्षण के आवास एवं रूपांतरों बनाने की क्या विभिन्न प्रकार को देख के लिए कैसे अलावा विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी के लिए सबक योजनाओं को संशोधित करने के उदाहरण के साथ एक प्रारंभिक बिन्दु के लिए की आवश्यकता है सम्मिलित हो

सकते हैं के साथ हो सकता है रूपांतरों देखते हैं। हालांकि सबसे पूर्व सेवा शिक्षकों सामान्य शिक्षा की स्थापना के लिए सबक योजनाओं को बनाने के लिए सिखाया जाता है, यह इन शिक्षकों को कैसे भिन्न-भिन्न जरूरतों के साथ छात्रों के लिए सबक योजनाओं को संशोधित करने के बारे में पता होने के लिए भी आवश्यक है। सभी बालकों को एक ही तरह से नहीं सीख सकते हैं, इसलिए सामान्य शिक्षा के शिक्षकों के तरीकों वे सबक विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लाभ के लिए योजना बना रही है को बदलने के लिए प्रयोग करर सकते हैं के बारे में पता होना चाहिए। आवास तथा रूपांतरों के विभिन्न प्रकार के बारे में पता होने के नाते एक सामान्य शिक्षा शिक्षक होने का एक महत्वपूर्ण भाग है, के रूप रूपांतरों के इन विशिष्ट क्षेत्रों शिक्षकों वास्तव में क्या वे अपने पाठ में बदल सकते हैं पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलेगी शिक्षार्थियों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने की योजना है।

के अनुसार असाधारण बच्चों के लिए परिषद, वहाँ कई तरीकों है कि शिक्षकों को जब अनुदेशात्मकक आवास एवं रूपांतरों बनाने (परिषद् असाधारण बच्चे 2011 के लिए) विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने पर विचार कर सकते हैं :

- **मौजूदा सामग्री बदलकर** जानकारी के कलाकारों फिर शिक्षक फिर से लिख सकते हैं, पुनर्निर्माण को जोड़ने के लिए अथवा तो यह है कि छात्र स्वतंत्र रूप से नियमित रूप से पाठ्यक्रम सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक विद्यार्थी के लिए एक अध्ययन गाइड एवं आडियो टेप तैयार कर सकता है।

- **मौजूदा सामग्री में मध्यस्थता :** शिक्षक सामग्री के उपयोग में छात्र के लिए अतिरिक्त शिक्षण समर्थन, मार्गदर्शान एवं दिशा प्रदान कर सकते हैं। शिक्षक शिक्षा सामग्री द्वारा प्रस्तुत ताकि एक सीधे अलग तरीकों से सामग्री के साथ बातचीत करने क लिए विद्यार्थी नेतृत्व कर सकते हैं, बाधाओं को मध्यस्थता के लिए कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक छात्रों, पठन सामग्री सर्वेक्षण सहयोगी रूप से पाठ का पूर्वावलोकन है, और सामग्री की एक रूपरेखा एक अध्ययन गाइड के रूप में प्रयोग करने के लिए बना सकते हैं।

- **वैकल्पिक सामग्री का चयन :** शिक्षक नई सामग्री है कि विकलांग विद्यार्थी की आवश्यकताओं को अधिक संवेदनशील होते हैं या स्वाभाविक लर्निंग समस्स्याओं के लिए क्षतिपूर्ति करने के तैयार कर रहे हैं का चयन

कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक इंटरैक्टिव कम्प्यूटर प्रोग्राम का प्रयोग है कि महत्वपूर्ण विचारों संकेतों पाठ पढ़ता है, ग्राफिक आयोजकों सम्मिलित करता है, को परिभाषित करता है एवं शब्द, उपहार दिखाता है और छोटी वृद्धि में सीखने पुष्ट और अभ्यास और संचयी समीक्षा के लिए एवं अधिक अवसर प्रदान करता है।

NOTES

विकासात्मक अक्षमता पर न्यू जर्सी परिषद रूपांतरों है कि शिक्षकों का प्रयोग कर सकते हैं जब विभिन्न शिक्षार्थियों की जरूरतों को संबोधित के नौ विभिन्न प्रकार सूचीबद्ध करता है।

1. **इनपुट :** (जैसे विभिन्न दृश्य एड्स का प्रयोग कर के रूप में) जिस तरह से शिक्षा शिक्षार्थी के लिए दिया जाता अनुकूल।
2. **आउटपुट :** अनुकूल कैसे शिक्षार्थी (जैसे कि एक मौखिक लिखित उत्तर की इजाजत दी बताय के रूप में) अनुदेश का जवाब हो सकता है।
3. **समय :** समय, सीखने कार्य पूरा होने के, या (जैसे बढ़ रही है अथवा कार्यों के लिए दिए गए समय को कम करने के रूप में) के परीक्षण के लिए आवंटित अनुकूल।
4. **कठिनाई :** कौशल स्तर, समस्या प्रकार, या कैसे शिक्षार्थी कार्य कर सकते हैं (जैसे सुगमता बनाने दिशाओं के रूप में) के नियमों के अनुकूल बनाना।
5. **समर्थन के स्तर :** एक विशिष्ट शिक्षार्थी के लिए व्यक्तिगत सहायता की राशि (जैसे बताए सहकर्मी ट्यूटर्स के रूप में) बढ़ाएं।
6. **आकार :** आइटम है कि विद्यार्थी (जैसे एक बहु विकल्प परीक्षण पर जवाब की संख्या कम करने के रूप में) पूरा हो जाएगा की संख्या अनुकूल।
7. **भागीदारी की डिग्री :** अनुकूल कितना छात्र (जैसे बोर्ड पर छात्र लिखने उत्तर होने के रूप में) एक गतिविधि में सम्मिलित किया जाएगा।
8. **वैकल्पिक लक्ष्य :** लक्ष्य अथवा परिणामों की उम्मीदों अनुकूल ही सामग्री का उपयोग करते समय (जैसे छात्र पूछ के रूप में दोनों किबात और लेखकों क नाम को याद करते हुए की बजाय पुस्तक शीर्षक याद करने के लिए सक्षम होने के लिए)।
9. **स्थानापन्न पाठ्यक्रम :** एक शिक्षार्थी की एक विशिष्ट उद्देश्य (जैसे एक विद्यार्थी पूछ पूरे उपन्यास के बजाय एक पाठ की ग्राफिक उपन्यास

संस्करण को बढ़ने के लिए के रूप में) को पूर्ण करने के विभिन्न शिक्षा और सामग्री प्रदान करना।

NOTES

**संसाधन**

1. **योजना बना स्तरीय सबक के माध्यम से अलग-अलग निर्देश**—यह एक संगोष्ठी कि शिक्षकों को शिक्षण कैसे कक्षा में स्तरीय सबक को सम्मिलित करने पर केन्द्रित है से एक पृष्ठ पर एक लिंक है। इस पृष्ठ पर हाथ से एक कैसे विद्यार्थी को, जो सामान्य शिक्षा कक्षा में कठिनाई होती है। उदाहरण सूचीबद्ध; इन छात्रों बहुस्तरीय कार्य के लिए प्रमुख उम्मीदवार हैं। ये छात्र दृष्टिकोण अलग अलग दृष्टिकोण छात्रों को एक में सम्मिलित किए जाने के लिए कक्षा में हो सकता है (योजना भिन्न-भिन्न निर्देश, nd) पर प्रकाश डाला जाएगा।
2. **रूपांतरों और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए संशोधन**—Teacher Vision पर इस पृष्ठइ के अनेक संसाधन हैं अंग्रेजी कक्षा के साथ सभी कक्षाओं, में उपयोगी हो सकता है सूचीबद्ध करता है। कुछ उदाहरण कैसे सबक योजना के लिए समय से आगे IEP को साथ विद्यार्थी के लिए यकीन है कि सबक संरचित है, प्रभावी रहने की जगह बनाने के लिए, पढ़ने कौशल और कई अन्य संसाधनों (रूपांतरों एवं संशोधन, 2011) में सुधार शामिल हैं।
3. **पाठ्यक्रम संशोधन और रूपांतरों**—इस चार्ट एवं सूचियों कि समझाने क्या है, जिसमें छात्रों को शामिल किए जाने के लिए कक्षा में संशोधन अथवा रूपांतरों आवश्यकता हो सकती है कुछ अलग-अलग स्थितियों में क्या करना की एक श्रृंखला है। इन दस्तावेजों के लेखक यह स्पष्ट विशेष आवश्यकता वाले छात्रों हर एक गतिविधि के लिए संशोधन अथवा रूपांतरों की आवश्यकता नहीं हो सकता है कि है, लेकिन शिक्षक रूपांतरों बनाने का सहारा से पहले निर्देश अलग करने सुनिश्चित करना चाहिए कि।
4. **पाठ्यक्रम संसोधन और रूपांतरों के बारे में जानकारी**—यह जगह है कि सामान्य शिक्षा के शिक्षकों के सम्मिलित किए जाने के कक्षाओं में कर सकते हैं की एक सूची है, और वह विशेष शिक्षा वकील ऐनी मैं Treimanis की वेबसाइट पर उपलब्ध कराया जाता है। इन सूचियों पर्यावरण आवास, अनुदेशात्मक संशोधनोंा, सामाजिक/व्यवहार का समर्थन करता है, और परीक्षण के आवास सम्मिलित हैं।

NOTES

5. **आवास एवं संशोधन**—यह वेबसाइट विकलांग एवं एडीएचडी सीखने के साथ छात्रों पर विशेष रूप से केन्द्रित है, और यह मिलनसासर और इन विद्यार्थी के लिए पाठ्यक्रम को संबोधित करने के लिए कई संसाधन उपलब्ध कराता है। यह एक महत्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि एडीएचडी सबसे आम विकलांग है कि आधुनिक शिक्षकों को सम्मिलित किए जाने के लिए कक्षा में देखने में से एक होने जा रहा है।

## विशेष आवश्यकताओं वाले युवा बच्चों के लिए 6.14 अनुकूल कक्षा के वातावरण

एक शिक्षक के रूप में, आप जानते हैं कि कैसे महत्वपूर्ण यह शिक्षण रणनीतियों और गतिविधियों है कि छोटे बच्चों के विकास संबंधी जरूरतों और विशेषताओं से मेल योजना बनाने के लिए है। एक अधिगम विकलांगता, भाषण अथवा भाषा विकार, सुनने या दृश्य हानि शारीरिक विकलांगता, आत्मकेन्द्रित स्पेक्ट्रम विकार (एएसडी), ध्यान अभाव अतिसक्रियता विकार (एडीएचडी) या हानि के अन्य प्रकार क साथ बालक कक्षा में विशेष आवास या संशोधन की आवश्यकता हो सकती है। बेहतरीन तरीके हैं विशेष जरूरत वाले बच्चों का समर्थन कर सकते में सक एक कक्षा माहौल बदल रहा गतिविधियों में बालकों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए कर रहा है। के लेखकों समावेशी कक्षाओं के लिए विषय-वस्तु तरीकों से आप विशेष आवश्यकता वाले छोटे बालकों के लिए अपनी कक्षा पर्यावरण अनुकूलित कर सकते हैं की निम्न उदाहरण प्रदान करते हैं :

1. वैकल्पिक बैठने की व्यवस्था की पेशकश एक शानदार तरीका विकलांग बालकों की सहायता करना है। व्यक्तिगत बच्चे की आवश्यकता पर निर्भर करता है, तो आप उन्हें आप या एक सहकर्मी मित्र के पास बैठने, कक्षा के एक शांत क्षेत्र में, या (जैसे एक के रूप में एक विकल्प के बैठने विकल्प प्रदान कर सकते हैं Hokki स्टूल) उन्हें कक्षा में ध्यान केन्द्रित करने में सहायता मिलेगी।

2. कक्षा के लेआउट में उलटफेर, कक्षा फर्नीचर के संबंध में विशेष रूप से, यह भी मदद कर सकते हैं विशेष जरूरत वाले बच्चों कक्षा के चारों ओर और अधिक आसानी से ले जाते हैं।

3. दीवारों पर दृश्य अव्यवस्था सीमित आत्मकेन्द्रित या एडीएचडी के साथ बालकों के लिए distractions कम करने में मदद कर सकते हैं।

4. नरम संगीत नाटक अथवा संवेदी उत्तेजना के साथ मदद करने के लिए दिनभर में सफेद शोर प्रदान करते हैं।

NOTES

5. कक्षा में शोर का स्तर कम करने के एक दृश्य या सुनवाई हानि के साथ बालकों की मदद कर सकते हैं।
6. प्रकाश अथवा ब्राइटनिंग की राशि बदलने या रोशनी मंद आत्मकेन्द्रित या एक दृश्य हानि के साथ बच्चों की मदद कर सकते हैं।
7. कुर्सियों को कम करने अथवा डेस्क हासिल करने और समर्थन के लेखन एक शारीरिक विकलाांगता या आर्थोपेडिक हानि के साथ बालकों के लिए मदद कर सकते हैं कक्षा में तिरछा बोर्ड बनान के द्वारा फर्नीचर अनुकूल।
8. एक संज्ञानात्मक और अथवा विकासात्मक देरी या एक आर्थोपेडिक हानि के साथ बच्चों के लिए, दरवाजे, ठंडे बस्ते में डालने, कोट रैक, बैग क्षेत्रों, एवं पहेली पर हैंडल अनुकूल करने के लिए खूंटे प्रयोग करने पर विचार।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विकलांग शिक्षण बच्चों के लिए सामग्री के रूपान्तरण की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
2. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को शामिल करने के लिए रूपांतर किस प्रकार बनाया जा सकता है?
3. निर्देशात्मक आवास तथा रूपांतर की व्याख्या कीजिए।

### लघुत्तरीय प्रश्न

1. पर्यावरण समर्थन से आप क्या समझते हैं ?
2. गतिविधियों को संशोधित कैसे किया जाता है ?
3. अदृश्य समर्थन से आप क्या समझते हैं ?

NOTES

# 16 सामाजिक विज्ञान में सीखने के उद्देश्य

## अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री


- प्राक्कथन
- मूल्यांकन का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- मूल्यांकन की रणनीतियाँ
- मूल्यांकन के प्रकार
- शिक्षण तथा सीखने के सामाजिक अध्ययन प्रभावी मूल्यांकन
- अध्ययनों के उद्देश्यों
- स्कोप तथा अध्ययन की सीमा
- सामाजिक अध्ययन की अवधारणा
- जन्मोरसेंडरी स्कूल सोशल स्टडीज के लिए फोटोग्राफी की एक समीक्षा
- जूनियर सेकेंडरी स्कूल में सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य
- सिद्धान्तों और सामाजिक तौर पर मूल्यांकन अध्ययन
- परीक्षापयोगी प्रश्न


**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समक्ष सकेंगे —

- मूल्यांकन का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- मूल्यांकन की रणनीतियाँ
- मूल्यांकन के प्रकार
- शिक्षण तथा सीखने के सामाजिक अध्ययन प्रभावी मूल्यांकन
- अध्ययनों के उद्देश्यों
- स्कोप तथा अध्ययन की सीमा
- सामाजिक अध्ययन की अवधारणा
- जन्मोरसेंडरी स्कूल सोशल स्टडीज के लिए फोटोग्राफी की एक समीक्षा
- जूनियर सेकेंडरी स्कूल में सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य
- सिद्धान्तों और सामाजिक तौर पर मूल्यांकन अध्ययन

**प्राक्कथन**

मूल्यांकन एक पद्धतिगत क्षेत्र है जो निकटता से संबंधित है, लेकिन अधिकांश पारंपरिक सामाजिक अनुसंधानों से भिन्न है। मूल्यांकन सामाजिक अनुसंधान में उपयोग की गई कई तरीकों का इस्तेमाल करता है, लेकिन क्योंकि एक राजनीतिक और संगठनात्मक संदर्भ में मूल्यांकन होता है, इसके लिए समूह कौशल, प्रबंधन क्षमता, राजनीतिक निपुणता अनेक हितधारकों के प्रति संवेदनशीलता और अन्य कौशल जो सामान्य रूप से सामाजिक अनुसंधान नहीं करते हैं के रूप में में अधिक पर भरोसा करते हैं यहाँ हम मूल्यांकन के विचार और क्षेत्र में कुछ प्रमुख शर्तो और मुद्दों को प्रस्तुत करते हैं।



## मूल्यांकन की परिभाषाएं

शायद सबसे ज्यादा परिभाषा दी जाती है :

**मूल्यांकन कुछ ऑब्जेक्ट के लायक या योग्यता का व्यवस्थित मूल्यांकन है**—यह परिभाषा शायद ही सही है। वर्णनात्मक अध्ययन, कार्यान्वयन का विश्लेषण करती है, और रचनात्मक मूल्यांकन कुछ लाम हैं – वहाँ मूल्यांकन जरूरी है कि मूल्य अथवा योग्यता वेह एक आंकलन में परिणाम नहीं के अनेक प्रकार हैं। बेहतर शायद एक परिभाषा है जो मूल्यांकन के बारे में सूचना प्रसंस्करण और प्रतिक्रिया कार्यो पर जोर देती है। उदाहरण के लिए, कोई कह सकता है:

**मूल्याकन कुछ ऑब्जेक्ट के बारे में उपयोगी प्रतिक्रिया देने के लिए व्यवस्थित अधिग्रहण और सूचना का आंकलन है**—दोनों परिभाषाओं का मानना है कि मूल्यांकन एक व्यवस्थितप्रयास है और दोनों जानबूड कर अस्पष्ट शब्द 'वस्तु' जो इतने पर एक कार्यक्रम, नीति, तकनीक, व्यक्ति आवश्यकता जानकारी दे सकती है, और का उपयोग करें। उत्तरार्द्ध परिभाषा लायक या योग्यता के एक आंकलन प्राप्त करने और मूल्य अथवा योग्यता का आकलन है क्योंकि समस्त मूल्यांकन कार्य संग्रह और डेटा में फंसने शामिल है, के बारे में जानकारी का आकलन करने अथवा नहीं, पर जोर देती है परिणाम है।

## मूल्यांकन का लक्ष्य

अधिकांश मूल्यांकनों का सामान्य लक्ष्य प्रायोजकों, दाताओं, ग्राहक-समूहों, प्रशासकों, कर्मचारियों तथा अन्य प्रासंगिक क्षेत्रों सहित विभिन्न ऑडियंस के लिए ''उपयोगी प्रतिक्रिया'' प्रदान करना है। अक्सर, फीडबैक को ''उपयोगी'' माना जाता है यदि यह निर्णय लेने में मददगार होता है। लेकिन एक मूल्यांकन और इसके प्रभाव के मध्य का रिश्ता एक सरल नहीं है – जो अध्ययन महत्वपूर्ण हैं, वे कभी-कभी

NOTES

अल्पकापिक निर्णयों को प्रभावित करने में असफल रहते हैं, और जो अध्ययन शुरू में कोई प्रभाव नहीं दिखता है, जब अधिक अनुकूल स्थिति उत्पन्न होती है तो विलंग से प्रभाव पड़ सकता है। इसके बावजूद, व्यापक सहमति है कि मूल्यांकन का प्रमुख लक्ष्य अनुभव आधारित प्रतिक्रिया के प्रावधान के माध्यम से फैसले लेने अथवा नीति तैयार करने को प्रभावित करना चाहिए।

## मूल्यांकन रणनीतियाँ

मूल्यांकन रणनीतियाँ का मतलब व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन पर व्यापक दृष्टिकोण है वे सबसे सामान्य समूहों अथवा मूल्यांकनकर्ताओं के ''शिविरों'' को शामिल करते हैं; हालांकि अपने सबसे अच्छे रूप में, मूल्यांकन कार्य इन समस्त शिविरों के दृष्टिकोण से उदारता से उधार लेते हैं। मूल्यांकन रणनीतियों के चार प्रमुख समूहों पर यहाँ चर्चा की गई है।

**वैज्ञानिक-प्रयोगात्मक मॉडल** शायद सबसे ऐतिहासिक दृष्टि से प्रमुख मूल्यांकन रणनीतियों रहे हैं विज्ञान से उनके मूल्यों और विधियों को लेना - विशेष रूप से सामाजिक विज्ञान - वे निष्पक्षता सटीकता, निष्पक्षता और पैदा होने वाली जानकारी की वैधता की वांछनीयता को प्राथमिकता देते हैं। वैज्ञानिक-प्रायोगिक मॉडल के अंतगर्त शामिल होगा: प्रयोगात्मक और अर्ध-प्रायोगिक डिजाइनों की परम्परा; शिक्षा से प्राप्त उद्देश्यों-आधारित शोध; लागत-प्रभावशीलता तथा लागत-लाभ विश्लेषण सहित अर्थशास्त्रीय-उन्मुख दृष्टिकोण; और सिद्धान्त-आधारित मूल्यांकन के हाल की अभिव्यक्ति।

रणनीति के द्वितीय श्रेणी **प्रबंधन-ओरिएंटेड प्रणाली मॉडल** हैं। इनमें से सबसे सामान्य के दी पाईआरटी, पी rogram ई मूल्यांकन और **अनुसंधाान** eview **टी** echnique, और **सीपीएम, सी** ritical पीएथलीट एम ethod हैं। इस देश के व्यापार और सरकार दोनों में व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। यह इस श्रेणी में यूएस एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलमेंट एंड सामान्य सिस्टम थियरी एंड ऑपरेशंस रिसर्च के दृष्टिकोण पर विकसित लॉजिकल फ्रेमवर्क या ''लॉगफ्रेम'' मॉडल को सम्मिलित करने के लिए वैध होगा। दो प्रबंधन-ओरिएंटेड प्रणाली मॉडल मूल्यांकर्ताओं द्वारा उत्पन्न गया। **UTOS** मॉडल जहाँ यू इकाइयों के लिए खड़ा है, उपचार के लिए टी हे टिप्पणियों और एस सेटिंग्स के लिए अवलोकन के लिए; और **CIPP** मॉडल, जहाँ **सी** प्रसंग के लिए खड़ा है, इनपुट के लिए मैं, प्रक्रिया के लिए पहले पी और उत्पाद के लिए दूसरा पी। ये प्रबंधन उन्मुख सिस्टम मॉडल मूल्यांकन में व्यापकता बल देते हैं, संगठनात्मक गतिविधियों के एक ढाँचे के अंदर मूल्यांकन रखता है।

रणनीतियों में से तृतीय श्रेणी के **गुणात्मक / मानविज्ञान मॉडल** हैं। वे अवलोकन के महत्व, मूल्यांकन के संदर्भ की अभूतपूर्व गुणवत्ता को बनाए रखने की जरूरत और मूल्यांकन प्रक्रिया में व्यक्तिपरक मानव व्याख्या के मूल्य पर जोर देते हैं। इस श्रेणी में सम्मिलित हैं प्राकृतिक या चौथी जनरेशन मूल्यांकन के रूप में मूल्यांकन में जाना जाने वाला दृष्टिकोण; विभिन्न गुणातमक स्कूलों; महत्वपूर्ण सिद्धान्त और कला आलोचना दृष्टिकोण; और ग्लेजर और स्ट्रॉस के 'आधारित सिद्धान्त के दृष्टिकोण में अन्य लोगों के बीच मध्य

अंत में रणनीतियों में से एक चौथाई वर्ग **भागीदार उन्मुख मॉडल** कहा जाता है। जैसा कि शब्द बताते हैं, वे मूल्यांकन प्रतिभागियों, विशेष रूप से ग्राहकों और कार्यक्रम या प्रोद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के केन्द्रीय महत्व पर बल देते हैं। ग्राहक केंद्रित और हितधारक दृष्टिकोण भागीदार-उन्मुख मॉडलों के उदाहरण हैं, जैसे उपभोक्ता-उन्मुख मूल्यांकन प्रणाली।

इन सभी रणनीतियों से चुनने के लिए, कैसे तय करना है ? मूल्यांकन पेशे के भीतर गुस्से वाली बहस - और वे क्रोध करते हैं - दन रणनीतिकारों के मध्य आमतौर पर लड़ाई होती है, प्रत्येक के साथ उनकी स्थिति की श्रेष्ठता का दावा करते हैं। वास्तव में सबसे अच्छे मूल्यांकनकर्ता सभी चार श्रेणियों से परिचित हैं और जरूरत के मुताबिक प्रत्येक से उधार लेते हैं। इन व्यापक रणनीतियों के मध्य कोई अंतर्निहित असंगति नहीं है - उनमें से प्रत्येक मूल्यांकन तालिका के लिए मूल्यवान लाता है वास्तव में, हाल के वर्षो में ध्यान तेजी से बदल गया है कि कैसे एक ऐसे मूल्यांकनों से परिणाम एकीकृत कर सकता है जो विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करते हैं, विभिन्न दृष्टिकोण से उपयोग करते हैं, तथा विभिन्न तरीकों का उपयोग करते हैं। स्पष्ट रूप से यहाँ कोई सरल उत्तर नहीं है। समस्याएँ जटिल हैं और जरूरी तरीकों की आवश्यकता होगी और भिन्न-भिन्न होनी चाहिए।

## मूल्यांकन के प्रकार

मूल्यांकन के उद्देश्य तथा मूल्यांकन के उद्देश्य के आधार पर कई अलग-अलग प्रकार के मूल्यांकन होते हैं। शायद मूल्यांकन प्रकार में सबसे महत्वपूर्ण बुनियादी भेद रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के बीच है। प्रारम्भिक मूल्यांकन मूल्यांकन किए जा रहे वस्तु को मजबूत या बेहतर बनाते हैं - वे कार्यक्रम अथवा तकनीक की डिलीवरी उसके क्रियान्वयन की गुणवत्ता तथा संगठनात्मक संदर्भ, कमियों, प्रक्रियाओं, इनपुट और इतने पर के मूल्यांकन की जाँच करके इसे बनाने में मदद करते हैं। इसके विपरीत, समझात्मक मूल्यांकन, कुछ ऑब्जेक्ट के प्रभाव या परिणामों की जाँच करते हैं - वे कार्यक्रम अथवा प्रौद्योगिकी की डिलीवरी के बाद क्या होता है, इसका वर्णन करके इसे सारांशित करता है; यह आकलन करना

NOTES

है कि वस्तु को परिणाम का कारण बताया जा सकता है; केवल तत्काल लक्ष्य परिणामों से परे कारण कारक के समग्र प्रभाव का निर्धारण तथा ऑब्जेक्ट से संबंधित रिश्तेदार लागत का अनुमान लगा रहा है।

**प्रारंभिक मूल्यांकन** कई मूल्यांकन प्रकार में शामिल हैं :

- जरूरत है मूल्यांकन निर्धारित करता है जो कार्यक्रम की जरूरत है, कैसे बड़ी आवश्यकता है एवं जरूरत को पूरा करने के लिए क्या काम हो सकता है
- evaluability **मूल्यांकन** निर्धारित करता है एक मूल्यांकन संभव है क्या और कितनी हितधारकों मदद कर सकते हैं। इसकी उपयोगिता को आकृति
- **संरचित अवधारणा** हितधारा को कार्यक्रम अथवा प्रौद्योगिकी, लक्ष्य जनसंख्या और संभावित परिणामों को परिभाषित करने मे मदद करता
- **कार्यान्वयन मूल्यांकन** अथवा तकनीक वितरण की निष्ठा पर नजर रखता है
- **प्रक्रिया** मूल्यांकन कार्यक्रम या तकनीक, वैकल्पिक वितरण प्रक्रियाओं सहित पहुँचाने की प्रक्रिया की जाँच

**योगात्मक मूल्यांकन** भी विभाजित किया जा सकता :

- **परिणाम मूल्यांकन** की जाँच करें कि क्या प्रोग्राम अथवा प्रौद्योगिकी विशेष रूपे से परिभाषित लक्ष्य के परिणामों पर प्रत्यक्ष प्रभाव के कारण होता है
- **प्रभाव मूल्यांकन** व्यापक है तथा कुछ मिलाकर या शुद्ध प्रभाव का आकलन – एक पूरे के रूप प्रोग्राम या प्रौद्योगिकी के – इरादा अथवा अनायास ही
- उनके डॉलर की लागत और मूल्यों के संदर्भ में परिणामों का मानकीकरण द्वारा दक्षता की **लागत प्रभावशीलता** तथा **लागत लाभ विश्लेषण** पते सवाल
- **माध्यमिक विश्लेषण** नया प्रश्न या प्रयोग के तरीकों पहले से कार्यरत नहीं करने के लिए मौजूदा डेटा reexamines
- **मेटा-विश्लेषण** एक मूल्यांकल सवाल पर एक समग्र अथवा सारांश निर्णय पर पहुँचने के लिए कई अध्ययनों से परिणाम अनुमान एकीकृत

## मूल्यांकन प्रश्न और तरीके

एवल्यूलेटर विभिन्न प्रकार के सवाल पूछते हैं और उनको संबोधित करने के लिए विभिन्न तरीकों कर इस्तेमाल करते हैं। इन्हें प्रारम्भिक तथा समरेटिक मूल्यांकन के ढाँचे के रूप में माना जाता है जैसा कि ऊपर प्रस्तुत किया गया है।

**प्रारंभिक अनुसंधान में प्रमुख्य प्रश्न और पद्धतियाँ**

**समस्या या समस्या की परिभाषा और गुंजाइश क्या है, या प्रश्न क्या है ?**

NOTES

मथन फोकस समूह, नाममात्र समूह तकनीक डेल्फ विधियों, मस्तिष्क लेखन, हितधारक विश्लेषण सिनेटिक्स, पार्श्व, सोच, इनपुट आउट पुट विश्लेषण तथा अवधारण मानचित्रण सहित तरीकों को तैयार करने और अवधारणों का प्रयोग किया जा सकता है।

**समस्या कहाँ है और यह कितना बड़ा या गंभीर है ?**

यहाँ इस्तेमाल की जाने वाली सबसे आम विधि ''आकलन की जरूरत है'' जिसमें ये शामिल हो सकते हैं; मौजूदा डेटा स्त्रोतों का विश्लेषण नमूना सर्वेक्ष्ण, घटक आबादी से साक्षात्कार गुणात्मक अनुसंधान, विशेषज्ञ गवाही, तथा फोकस समूह।

**समस्या को हल करने के लिए कार्यक्रम या तकनीक को कैसे वितरित किया जाना चाहिए ?**

प्रारम्भ से सूचीबद्ध कुछ विधियाँ यहाँ पर लागू होती हैं, जैसे कि सिमुलेशन तकनीकों या बहु विशेषता उपयोगिता सिद्धान्त अथवा खोजी कारण मॉडलिंग जैसी बहुविध विधि का विवरण; निर्णय लेने के तरीकों और प्रोजेक्ट प्लानिंग और कार्यान्वयन विधियों जैसे फ्लो चार्टिंग, पीईआरटी/सीपीएम तथा प्रोजेक्ट शेड्यूलिंग।

**प्रोग्राम या तकनीकी को कितनी अच्छी तरह वितरित किया जाता है ?**

गुणात्मक और मात्रात्मक निगरानी तकनीकों, प्रबंधन सूचना प्रणाली का प्रयोग और कार्यान्वयन मूल्यांकन यहाँ अनेक तरीके होगे।

**सारंशित मूल्यांकन के तहत संबोधित किए गए प्रश्नों और विधियों में शामिल हैं :**

**किस प्रकार के मूल्यांकन संभव है ?**

मूल्यांकन मूल्यांकन का प्रयोग यहाँ किया जा सकता है, साथ ही उपयुक्त मूल्यांकन डिजाइन को चुनकर करने के लिए मानव दृष्टिकोण।

**कार्यक्रम या तकनीक की प्रभावशीलता क्या थी ?**

एक यह दर्शाता है कि क्या वांछित प्रभाव पड़ता है, तथा अर्ध-प्रायोगिक और प्रयोगात्मक डिजाइनों का निर्धारण करने के लिए अवलोकन और सह-रिलेशनल तरीकों से चुनना होगा कि क्या मनाया प्रभाव हस्तक्षेप के लिए सही रूप से दिया जा सकता है, अन्य स्त्रोतों के लिए नहीं।

**कार्यक्रम का शुद्ध प्रभाव क्या है ?**

लागत प्रभाव तथा लागत/लाभों का आंकलन करने के लिए अर्थमित्रिक विधियाँ यहाँ लागू होती हैं, साथ ही गुणात्मक विधियों के साथ भी लो उद्देश्य और अनदेखी प्रभावों की पूरी शृंखला को सारांशित करने में सक्षम हैं।

जाहिर है, यह परिचय व्यापक नहीं होता है इन विधियों में से प्रत्येक तथा उल्लेख नहीं किया गया, एक व्यापक पद्धति अनुसंधान साहित्स द्वारा समर्थित हैं। यह उपकरण का एक दुर्जेय सेट है लेकिन इन तरीकों को बदलने, अद्यतन करने तथा इन परिस्थितियों को बदलने की जरूरत का मतलब है कि पद्धतिगत अनुसंधान और विकास के लिए मूल्यांकन कार्य में एक प्रमुख स्थान होना चाहिए।

## शिक्षण तथा सीखने के सामाजिक अध्ययन में प्रभावी मूल्यांकन

**अध्ययन की पृष्ठभूमि**—छात्रों की प्रगति और फीड़ प्रदान करने के लिए प्रयुक्त तंत्रों को डिजाइन और क्रियान्वित करना सभी शिक्षकों के लिए एक कठिन प्रयास है, लेकिन सामाजिक अध्ययनप मूल्यांकन और मूल्यांकन के लिए कुछ अनोखी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। सौशलस्टिडीज में कई तरह के सोच तथा ज्ञान सम्मलित हैं: इतिहास के नायर बनाते हैं और भूगोल के अध्ययन के दृश्य और ग्राफिक घटक को आर्थिक और गणितीय और सांख्यिकीय तर्क के रूप में बनाते हैं तथ गहराई से समझते हैं कि सिद्धता और विश्वास भिन्न-भिन्न सार्वजनिक मुद्दों और वर्तमान के अध्ययन को समझते हैं। मामलों। एक एकल सामाजिक अध्ययन अनुशासन में कार्यक्रम, आकलन करने के लिए सीखने के प्रकार की एक विस्तृत शृंखला को कवर किया गया है। कई महत्वपूर्ण सामाजिक अध्ययन परिणाम जैसे कि महत्वपूर्ण सोच, सामाजिक अध्ययन की जिम्मेदारी तथा सूचित निर्णय लेने से अतिरिक्त विषयों के परिणामों की तंलना में परिभाषित करना मुश्किल हैं आगे भी, जिम्मेदार नागरिकों के विकास जैसे कुछ जटिल लक्ष्यों को स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, जब तक कि छात्रों ने स्कूल छोड़ दिया और कामों में सम्मिलित हो, जैसे कि सूचित मतदान, सामाजिक कार्यवाही और सिविल पार्टनर के अन्य रूप। इस विविध और स्थिरांक परिणामों का एक परिणाम के रूप में सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र सहित क्या ध्वनि आंकलन तथा मूल्यांकन का गठन किया है अपने महत्वपूर्ण अवधारणाओं तथा उद्देश्यों का आम सहमति तक पहुँचने बड़ी मुश्किल पड़ा है। क्योंकि सामाजिक अध्ययन वास्तविक दुनिया में मामलों के साथ चिन्ता का विषय है, यह हमेशा उस दुनिया से विषय पर काबू पाया गया है, (पहले विस्तारित किया गया राजनीतिक आयाम) एड ऐसी चुनौतियों तथा समस्याओं हैं कि मैं जाँच करने

के लिए है सामाजिक अध्ययन से मूल्यांकन, मूल्यांकन की प्रक्रिया में शिक्षकों ने सामाजिक में अपने विद्यार्थी का प्रदर्शन समस्या का बयान

NOTES

Assessm ईएनटी और सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन में प्रवृत्ति, पाठ्यक्रम के अन्य हिस्से में के रूप में प्रवाह के एक राज्य में हैं। मूल्यांकन का मुद्दा बुहत जटिल है विद्यार्थी की प्रगति का मूल्यांकन सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के लिए सबसे कठिन चीजों में से एक हैं विद्यार्थियों, अभिभावकों और अन्य लोगों के लिए फीडबैंक को दोनों शिक्षक तथ छात्रों (प्रारम्भिक मूल्यांकन) और अंत-बिन्दु की जानकारी प्रदान करने के लिए जरूरत प्रक्रियाओं और उपकरणों की श्रेणी विकसित करने के लिए समय और कड़ी मेहनत लेता है तथा अन्य सामाजिक शिक्षा की शिक्षा (समरोक्य ईवल्यूएशन) धारण कर लेते हैं। शोधकर्ताओं, चिकित्सकों और नीति निर्माताओं द्वारा समझाया गया, तर्कसंगत चर्चा एक जरूरी है इसलिए, अनुसंधान कार्य शिक्षण तथा सामाजिक अध्ययन की शिक्षा में मूल्यांकन और आंकलन के विभिन्न साधनों को दर्शागा

**अध्ययन का महत्व**—एक सार्थक परियोजना अनुसंधान एक है कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समाज के एक विशेष समस्या को हल करने की दिशा में योगदान होगा होना चाहिए। इस अध्ययन के लिए इसी तरह, यह शिक्षण और इस प्रकार अलग नजरिए में सामाजिक अध्ययन सीखने सामाजिक अध्ययन के प्रभावी मूल्यांकन की दिशा में योगदान करने के लिए बनाया गया है :

इस शोध कार्य परिभाषा तथा उनके काम को प्रभावी ढंग से आयोजित करने में मूल्यांकन के महत्व के बारे में पुरस्कार होना करने के लिए सक्षम बनाता है सामाजिक अध्ययन शिक्षक, यह पाया गया है कि कुछ सामाजिक अध्ययन शिक्षकों ताकि यह काम उनकी गलत धारणा को स्पष्ट तथा उन्हें कर देगा मूल्यांकन के पीछे रहस्य के बारे में गलत धारणा का विकास पर evaluati की भूमिका की तथा सतर्क कर दिया।

एक बार फिर इस अध्ययन से समाजवादियों के शिक्षकों को उन सामाजिक समस्याओं का लाभ उठाने में मदद मिलती है जो सामाजिक अध्ययनों के शिक्षण और शिक्षा के मूल्यांकन के दौरान सामने आई थी। समस्या की ध्वनि समझ उपायों कि इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए ले जाया जाएगा पता करने के लिए सहायता मिलेगी।

के रूप में यह व्यावहारिक समाधान है कि शिक्षण और इसलिए सामाजिक अध्ययन सीखने में प्रभावी मूल्यांकन के खिलाफ miliates प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है इस अध्ययन शिक्षकों को बहुत significa NT है, सुधार के लिए तरीके उपयुक्त तकनीक सामाजिक अध्ययन शिक्षण के मूल्यांकन के लिए

नियोजित किया जा करने के आवश्यकता है कि के साथ एक साथ हाइलाइट होंगे और सीखने इसके अलावा, इस शोध कार्य सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम की सफलता का निर्धारण करने का एक साधन के रूप में मूल्यांकन का प्रयोग करने के लिए अपने प्रयास पर शिक्षण संस्थान और सरकार की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

## अध्ययनों के उद्देश्य

अनुसंधान निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित करने के लिए डिजाइन किया गया था:

(क) पता लगाने के लिए सामाजिक अध्ययन शिक्षकों कर अपने विद्यार्थी हैं या नहीं।

(ख) सामाजिक अध्ययन में छात्रों के मूल्यांकन के अलग-अलग साधनों की पहचान करने के लिए।

(ग) सामाजिक अध्ययन में प्रभावी मूल्यांकन के विरुद्ध miliating समस्याओं की पहचान करने के लिए।

(घ) की समस्याओं के साथ दूर करने के लिए सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के माध्यम से किए गए प्रयासों की पहचान करने के लिए।

## अनुसंधान सवालों

(1) सामाजिक अध्ययन शिक्षक अपने विद्यार्थी को नियमित रूप से मूल्यांकित करते हैं ?

(2) सामाजिक अध्ययन के छात्रों में मूल्यांकन के अलग-अलग साधन क्या हैं ?

(3) समस्याओं को दूर करने सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों द्वारा किया गए प्रयासों क्या हैं ?

(4) सामाजिक अध्ययन शिक्षकों प्रक्रिया का मूल्यांकन करने में समस्याओं के साथ मुठभेड़ करता है ?

### स्कोप तथा अध्ययन की सीमा

मूल्यांकन एक व्यापक अवधारणा है कि क्योंकि हर गतिविधियों आदमी की है पता लगाने के लिए कितनी दूर लक्ष्य या सेट के लक्ष्य को हासिल कर रहे हैं कि आवश्यकता है मानव जीवन के सभी कोणों से छू रहा है कई छात्रों मानता है कि

मूल्यांकन केवल शिक्षण तथा सीखने स्थिति में जगह लेता है, लेकिन यह गलत धारणा है। मूल्यांकन व्यापार, अनुबंध, चिकित्सा पद्धति, कार्य करता है आदि सामाजिक अध्ययन का यह चौड़ाई प्रकृति हमारे अध्ययन के दायरे का उल्लेख करने के लिए हमें आवश्यक के स्थान पर की तरह हर जगह लेता है इतना है कि यह हमारी सहायता अध्ययप के हमारे विशेष क्षेत्र पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित करने की।

इस अध्ययन के दायरे में प्रमुख रूप से समस्याओं कि जूनियर माध्यमिक कक्षाओं में अपने छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के दौरान सामाजिक अध्ययन शिक्षकों के माध्यम से सामना होता है पर है। एक बार फिर से के रूप में यह सामान्य तौर पर माना जाता है कि चीजों का एक से दूसरे समय पर परिवर्तन कर रहे हैं समस्या आज हो सकता है एक समस्या कल नहीं क्या है, इसलिए इस अध्ययन वर्तमान दशक के लिए प्रमुख रूप से ध्यान देने की वजह से।

इस अध्ययन के खिलाफ limita tion के लिए पर्याप्त समय की कमी है, क्योंकि समय इस अध्ययन के पूरा होने के लिए दिए गए सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की बड़ी संख्या तथा प्रसंस्करण और एकत्र किए गए आंकड़ों के विश्लेषण के लिए समय की जरूरत के एक साल के बावजूद भी कम है।

## प्रमुख नियमों की परिभाषा

**मूल्यांकन**—इसकी कीमत, गुणवत्ता, महत्व, सीमा या स्थिति का न्याय करने के लिए परीक्षा कुछ भी करती है।

**मूल्यांकन के लिए निर्देश**—कोई भी तरीका, तकनीक अथवा प्रक्रिया इसी क्रम में नियोजित किया जा सकता मेरा स्थगित करने के लिए एक प्रोग्रामर की सफलता के लिए संदर्भित करता है।

**परीक्षण**—सवाल है, समस्या अथवा व्यावहारिक कार्य की एक शृंखला है

**माप**—इस नंबर पर प्रयोग छात्र के प्रदर्शन का प्रतिनिधित्व करने के लिए और इसे उद्देश्य के मूल्यांकन के लिए अंतर होगा द्वारा स्टैंड डालने की प्रक्रिया है।

**मूल्यांकन**—उन्हें करने के लिए सिखाया काम की समझ के आधार पर (जैसे विद्यार्थी कुछ के बारे में एक निर्णय है, यह भी चरित्र मूल्यांकन के अंक में आयात किया जाता है जारी है मूल्यांकनः एक समय की दी गई अवधि में विद्यार्थी के प्रदर्शन के बारे में डेटा जुटाने की प्रक्रिया जारी है।

सामाजिक अध्ययन; एवं सामाजिक परिवेश के संबंध में मनुष्य के अध्ययन के प्रति समर्पित एक शैक्षिणक अनुशासन है।

NOTES

## सारांश

परियोजना की समस्याओं एवं संभावना है कि सामाजिक अध्ययन के प्रभावी मूल्यांकन के विरुद्ध युद्ध में पता लगाने के उद्देश्य से है। इसके अतिरिक्त यह कानमेट्रोपोलिस के भीतर जूनियर माध्यमिक विद्यालयों में विशेष रूप से सामाजिक अध्ययन मूल्यांकन की प्रभावशीलता निर्धारित करने के लिए लक्षित है। इसलिए, अनुसंधान में विद्यायार्थी के प्रदर्शन का आंकलन करने के लिए दोहरा प्रयासों के लिए सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए खेलने के लिए महत्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं। इस प्रकार कुछ बुनियादी प्रश्न राज्यों बाहर अनुसंधान राज्यों बाहर अनुसंधान कार्य के अंत में दिए जा रहे हैं।

## सोशल स्टडीज के अवधारणा

कादिरी (2012) हैं कि सामाजिक अध्ययन एक समग्र विषय है जो व्यक्ति के सामाजिक, शारीरिक तथा भावनात्मक विशेषताओं पर रूचि रखता है। इसका मतलब यह है कि विदेश विषय पाठ्यक्रम है जो विषय सीमा पर जोर दिया बल्कि मानव गतिविधियों के अध्ययन के लिए अंतर अनुशासनिक दृष्टिकोण पर जोर दिया। सामाजिक अध्ययन में आदमी तथा उसकी ओलोलाबो (200 9) में शिक्षकों तथा प्रभावशीलता केकॉक (1980) का मूल्यांकन समझाया गया कि सामाजिक अध्ययन शिक्षक सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण आंकड़ा है, उनके कार्यो कार्यक्रमक लक्ष्यों की प्राप्ति की सकते हैं अथवा कर सकते हैं। इसलिए लगातार शिक्षक मूल्यांकन करने के लिए उसकी प्रभावशीलता में सुधार करने की आवश्यकता है, इस अभ्यास शिक्षक तथा अन्य लोगों के निकट में और कक्षा इंटरैक्टिव प्रक्रिया से बाहर उनके प्रयास का पता करने के कैसे वे रूपरेख लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योगदान का आंकलन सम्मिलित मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षकों के शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यक्तित्व विशेषताओं को शामिल किया गया। ये प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप रास्ता तथा तरीके से शिक्षक शिक्षा का आयोजन करता है प्रभावित करते हैं तथा शिक्षार्थियों कार्यक्रम का मूल्यांकन। सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम Nuhu (2010) का मूल्यांकन, सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम मूल्यांकन आदेश पर प्रकाश डाल कर कार्यक्रम पर निर्णय अथवा निर्णय के लिए इस कार्यक्रम के कुछ या सभी पहुलओं पर जानकारी जुटाने तथा विश्लेषण करने के बारे में जानकारी के प्रणालीगत प्रक्रिया है। ताकत और कमजोरियों, ताकि निर्णय बनाए रखने सुधार या समाप्त करने के पहलू का निर्णय लिया जा सके। Provus (1971), सुझाव दिया है कि सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम मूल्यांकन आवश्यक कार्यक्रम के अंत में आयोजित नहीं है, लेकिन कैंसर के क्षेत्र की पहचान करने के लिए एक नहीं चल रही प्रक्रिया है। एकत्रित तथा डेटा निर्णय

का विश्लेषण करने सम्मिलित निर्णय लेने का कार्यक्रम है कि यह साझा किया जाता है सामाजिक अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में सभी प्रमुख हितधारक सम्मिलित सहकारी और सहयोग प्रभाव की दक्षता में सुधार करने के लिए। प्रक्रिया औपचारिक रूप से तथा औपचारिक रूप से किया जा सकता है। नाइजीरिया के सामाजिक अध्ययन कार्यक्रमों में मूल्यांकन धीरे-धीरे होता है।

NOTES

**सारांश**—अध्याय साहित्य कि प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप जाँच के हमारे विषय में संबोधित हैं कि समीक्षा करने की ओर निर्देशित है। अध्याय सामाजिक अध्ययन तथा मूल्यांकन विभिन्न प्रकार और प्रभावी मूल्यांकन के लिए सिद्धान्तों की अवधारणा की अवधारण के बारे में विस्तारित विवरण देता है पर प्रकाश डाला और मूल्यांकन के महत्व का विश्लेषण किया जाता है और यह है शिक्षण और सामाजिक अध्ययन सीखने में प्रयोग करता ताजा वर्णित हैं।

## जूनयोरसेंडरी स्कूल सोशल स्टडीज के लिए फोटोग्राफी की एक समीक्षा

जेएसएस स्तर पर सामाजिक अध्ययन के बुनियादी दर्शन आदमी तथा उसके वातावरण है। इस स्तर पर सामाजिक अध्ययन एकीकृत दृष्टिकोण को ग्रहण करता है। कार्यक्रम जाँच मॉडल के व्यावहारिक प्रयोग के साथ एक वैचारिक और सामयिक दृष्टिकोण पर जोर दिया। जाँच मॉडल प्रश्न हैं जो याद करते हुए एवं वर्गीकृत करने के इस तरह के उच्च cognation स्तर पर अवलोकन, synthesizing और मूल्यांकन से सोच कर उत्पन्न करने के लिए बनाया गया है।

पाठ्यक्रम के सांस ज्ञान, कौशलों, मूल्यों और व्यवहार भी सम्मिलित है जेएसएस के लिए सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में विषयों तथा विषयों का क्रम विस्तार पर्यावरण की अवधारणा पर आधारित है। मूल रूप से, सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के शिक्षार्थियों को नागरिकता शिक्षा के उद्देश्य के लिए सामाजिक दुनिया में मौजूद अंत: संबंध की जाँच, विश्लेषण तथा समझाते हुए ज्ञान, मूल्यों और कौशलों के लिए इच्छुक लोगों को पैदा करने की कोशिश करता है।

सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी के एक एकीकृत अध्ययन युवा लोगों को एक स्वतंत्र दुनिया में एक सांस्कृतिक विविध लोकतांत्रिक समाज के नागरिकों के रूप में जनता की भलाई के लिए सूचित और तर्क निर्णय लेने की क्षमता विकसित की सहायता करने का एक प्राथमिक उद्देश्य के साथ सिविल क्षमता को बढ़ावा देना है।

सामाजिक अध्ययन के लिए एक समग्र विषय है कि मुख्य इसका मतलब यह है की सामाजिक, शारीरिक तथा भावनात्मक विशेषताओं पर रुचि रखता है, यह एक

NOTES

व्यापक पाठ्यक्रम है कि de बल देती है मानवीय गतिविधियों के अध्ययन के अधीन सीमा नहीं है। सामाजिक अध्ययन में मनुष्य और उसकी गतिविधियाँ पूर्ण रूप से भागों के रूप में जाँच नहीं की जाती हैं।

अध्ययन के विभिन्न तख्ते की नींव पर आधारित सामाजिक अध्ययन आधारित है। यह अपनी सामग्री को सामाजिक विज्ञान से निकलता है, जैसे कि इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, एंटइंजोलॉजी, समाजशास्त्र तथा भूगोल जैसे विषयों।

## जूनियरस्कोंडरी स्कूल में सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य

टी वे जूनियर माध्यमिक विद्यालय स्तर टी वह सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य में शामिल हैं,

(1) विद्यार्थी सामान्य रूप से अपने देश की समस्याओं की और दुनिया के बारे में पता करने के लिए और लोगों के बीच अंतर निर्भरता सराहना करते हैं।

(2) विकास के लिए इन संसाधनों के तर्कसंगत प्रयोग और संरक्षण के साथ-साथ विकसित सामाजिक तथा शारीरिक वातावरण की प्राकृतिक और मानव निर्मित सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक संसाधनों के बारे में जागरूकता और समझ बनाने के लिए।

(3) विद्यार्थी में नागरिकता के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण और उन के एक निकाल जाते हैं विकसित करने के लिए एक संयुक्त नाइजीरिया के निर्माण के लिए एक सकारात्मक व्यक्तिगत योगदान करने के लिए।

(4) एक संतोषजनक पेशेवर जीवन के निर्माण के लिए आवश्यक कुशन सीखने की क्षमता विकसित करने के लिए, यह नौकरी तथा रेत के निर्णय में गर्व है।

(5) विद्यार्थी में अपनी सांस्कृतिक विरासत और इसे संरक्षित करने के इच्छा की सराहना का विकास करना।

## मूल्यांकन का अवधारणा

मूल्यांकन मूल्य के मूल्य के साथ संबंध है मापा यह वांछनीयता पर या माप के परिणाम की अन्यथा मूल्य का निर्णय है। शिक्षण दृष्टिकोण से, Gronlud (1981) में कहा गया है मूल्यांकन सीमा निर्धारित की व्यवस्थित प्रक्रिया के लिए जो शिक्षण उद्देश्यों को हासिल किया गया है इसी तरह Sannal और हास (2012) जानकारी का प्रयोग करने के बारे में कैसे प्रभावी ढंग से निर्णय बनाने के लिए करने की

प्रक्रिया के रूप में वर्णित मूल्यांकन है कि एक कार्यक्रम शिक्षार्थी की जरूरतों को पूरा करता है इस प्रकार, मूल्यांकन में सीखने के सभी पहलुओं में उग्र उद्देश्यों के प्रकायश में शिक्षार्थियों के निष्पादन के निष्पादन के लिए जानकारी प्राप्त करना सम्मिलित है। मूल्यांकन को परिभाषित करने की प्रक्रिया में माप के बारे में ब्री हाइलाइज देना महत्वपूर्ण है। अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए मापन स्थापित नियमों अथवा मानंदडों के अनुसार पेकान या वस्तुओं के लिए संख्या का काम है में डिग्रह जो करने के लिए एक नौसिखिया किसी दिए गए विशेषता के पास का एक मात्रात्मक वर्णन सम्मिलित है। नियुक्त संख्या एक परीक्षण पर स्कोर हो सकती है। संख्या के असाइनमेंट के लिए कार्य में कार्य के सही उत्तरों को ध्यान में रखना सम्मिलित है।

NOTES

## मूल्यांकन के प्रकार

मूल्यांकन को दो प्रमुख प्रकारों में बाँटा गया है, जैसे निम्न प्रकार हैं—

(1) प्रारम्भिक मूल्यांकन

(2) समवर्ती मूल्यांकन

**निर्माणात्मक मूल्यांकन**—प्रारंभिक मूल्यांकन तथा उपचारात्मक कार्रवाई यह शिक्षण प्रक्रिया के रूप में किया जाता है के माध्यम से कठिनाइयों के क्षेत्रों की पहचान से शिक्षार्थियों की प्रगति का आंकलन करने की प्रक्रिया है। यह मूल रूप से किया जाता है प्रदान जारी प्रतिक्रिया जानकारी ताकि चरणों भ्रम, संदेह को साफ करें तथा त्रुटियों के संचय को दूर करने के महँगा हो सकता है कि को राकने के लिए ले जाया जा सकता है। कार्यक्रम के स्तर पर यह विकास तथा कार्यक्रम में सुधार के लिए आवश्यक सम्मिलित करने के लिए के कार्यान्वयन मार्गदर्शन करता है। मूल्यांकन के इस प्रकार के नियंतर प्रकृति कहा लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक बेहतर अवसर प्रदान करता है।

**योगात्मक मूल्यांकन**—सबक, यूनिट अथवा प्रोग्राम के कार्यान्वयन के अन्त में किया जाता है, जैसा कि निर्दिष्ट लक्ष्यों और उद्देश्यों की उपलब्धि का स्तर है। यह मूलत: पाठ  यूनिट कार्यक्रम के अंतिम परिणाम के मूल्य अथवा मूल्य के निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

**मूल्यांकन का उद्देश्य**—वाले (2000) ने कहा कि मूल्यांकन socialstudies शिक्षा के क्षेत्र में सभी हितधारकों के लिए कई उद्देश्यों को पूर्ण करती।

(1) It शक्तियाँ तथा कमजोरियों के क्षेत्रों पर प्रकाश डालकर शिक्षार्थियों की प्रगति का आंकलन किया जाता है।

NOTES

(2) यह प्रेरक है। इसका कारण यह है मूल्यांकन प्रेरणा शिक्षार्थियों की फीडबैंक जटिल काम करने के लिए उनके प्रदर्शन में सुधार है।

(3) It कहाँ सीखने के परिणामों की प्राप्ति के आलोक में शिक्षा के प्रभाव को प्रभाव को पता लगाने के लए सहायता करता है।

(4) मूल्यांकन सहायता माता-पिता से प्रतिक्रिया जानकारी to0 अपने बालकों और शब्दों के प्रदर्शन को जानते हैं।

(5) It उपयोगी डेटा जो विश्लेषण किया है एवं संशोधन संशोधित करने, स्वीकार करने या सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के पहलू को अस्वीकार करने के लिए किया जा सकता के संग्रह में सहायता करता है।

**सामाजिक अध्ययन शिक्षा में मूल्यांकन करने के लिए पहलुओं।**

कुछ पहलुओं को सामाजिक अध्ययनों में मूल्यांकन करने की जरूरत है। इन पहलू निम्नानुसार हैं—

(1) विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों का मूल्यांकन

शिक्षकों प्रभावशीलता के 2 मूल्यांकन

(3) सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का मूल्यांकन

**अध्ययन का मूल्यांकन**

1. **सिखने का परिणाम**—सामाजिक अध्ययन विद्यार्थी शिक्षा प्रक्रिया के ग्राहक हैं शिक्षण प्रक्रिया का ध्यानप केंद्रित सकारात्मक तथा छात्रों इसलिए सीखने के परिणामों छात्रों के मूल्यांकन के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन eliciting की दिशा में सक्षम है संग्रह तथा डेटा के शिकार में छात्रों की प्रगति का संकेत सम्मिलित है। फार्म तथा अनौपचारिक मूल्यांकन शिक्षाएँ इंडेट फिड हैं और प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए चुना गया है चयन किए मूल्यांकन संबंधी शिक्षा उस व्यवहार पर निभर करती है जो शिक्षक उम्मीदवारों को प्रदर्शित करने की अपेक्षा करते हैं। सामाजिक अध्ययन शिक्षक, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह व्यवहार के समस्त पहलुओं को कवर करें (संज्ञानात्मक, मानसिक और भावनात्मक)। शिक्षार्थियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन फार्म चरणों की एक चक्रीय प्रतिबंब

2. **शिक्षकों के प्रभाव का मूल्यांकन**—सामाजिक अध्ययन शिक्षक सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कटौती का आंकड़ा है। उनके कामों कार्यक्रम लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकते हैं या कर सकते हैं। इसलिए, अपने

प्रभाव को सुधारने के लिए शिक्षक को लगातार मूल्यांकन करने की जरूरत है। इस अभ्यास में शिक्षक तथा अन्य वर्ग के लिए इंटरेक्टिव प्रक्रिया शामिल है जो यह सुनिश्चित करने के लिए सम्मिलित है कि वे बाहर की रेखा के लक्ष्यों उद्देश्यों को पूर्णकरने सम्मिलित है कि वे बाहर के रेखा के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों के लिए कैसे योगदान करने हैं। मूल्याकन प्रक्रिया में शिक्षकों के शैक्षिक और पेशेवर को सीधे निर्देश तथा शिक्षार्थियों के प्रदर्शन के मूल्यांकन का आयोजन किया जाता है।

3. **सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के मूल्यांकन**—सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम मूल्यांकन आदेश कार्यक्रम पर निर्णय अथवा निर्णय के लिए इस कार्यक्रम के कुछ या सभी पहलुओं पर सभा के एकत्र करने तथा विश्लेषण करने के बारे में जानकारी के व्यवस्थित प्रक्रिया है। इसका सार अपनी ताकत और कमजोरियों को उच्चतम करके कार्यक्रम में सुधार करना है ताकि निर्णय का बनाएं रखने, सुधारने या खत्म करने के लिए निर्णय किया जा सके। (साबित होता 1917)।

सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम मूल्यांकन आवश्यक कार्यक्रम के अंत में आयोजित नहीं है, लेकिन चल रह चिंता के क्षेत्रों की पहचान करना, संग्रह तथा पहचानने डेटा का विश्लेषण करने और निर्णय लेने की प्रक्रिया कार्यक्रम की कुशलता में सुधार करने में। यह समाजसेवा शिक्ष के सभी प्रमुख हितधारको से जुड़े एक साझा, सहकारी और सहयोगी प्रयास है। इस प्रक्रिया को औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप से किया जा सकता है नाइजीरिया के सामाजिक अध्ययन के काम मूल्यांकन धीमा रहा है। हालांकि कुछ प्रयाय पर विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम मार्ग प्रशस्त किया है प्रारम्भ कर दिया। यह लाईन पत्नी में है, समाजसेवीओं की गतिशील प्रकृति।

**सोशल स्टडीस कक्षा में निपुण भाषा सीखने के लिए टूल**—संज्ञानात्मक डोमेने सीखने के बौद्धिक पहलू के साथ संबंध है। यह शिक्षार्थियों के विचारों पर ध्यान केंद्रित करता है शैक्षिक उद्देश्यों की ब्लूम वर्गीकरण, छह स्तरों पर अच्छी तरह से परिभाषित लॉराकर्वल स्तर की ज्ञान की समझ, आवेदन, विश्लेषण, संश्लेषण तथा सामाजिक अध्ययनों के मूल्यांकन में मूल्यांकित किया गया है, ज्ञान की शिक्षा सीखने के लिए निम्न शिक्षाओं का प्रयोग किया जा सकता है—

(1) मौखिक प्रश्न चर्चा

(2) असाइमेंट

(3) निबंध प्रकार परीक्षण

(4) उद्देश्य प्रकार परीक्षण

(5) परियोजना

NOTES

**प्रभावकारी प्रभावोत्पादन प्रभावों को मापने के लिए उपकरण**—के कैंसर अभिव्यक्ति सीखने का भावात्मक डोमेन भावनाओं सराहना मूल्यों, विश्वासों, ब्याज, आदतों, सामाजिक संबंधों, भावनात्मक समयोजन, दृष्टिकोण तथा जीवन शैली शिक्षार्थियों भावना तथा भावनाओं का विकास के रूप में वे जानते हैं, अनुभव, गर्भधारण और लगता है। Krathwohl (1964) पाँच स्तरों जो प्राप्त सम्मिलित है, जवाब में भावात्मक डोमेल वर्गीकृत। बातों का महत्व देता, संगठन, एक मूल्य जटिल द्वारा लक्षण वर्णन।

सामाजिक पढ़ाई कर रहा है बड़े पैमाने पर कर रहे हैं। शिक्षार्थियों बनाने के लिए जोर देती योग्य नागरिकों। सीखने के दा पहलू के मूल्यांकन जैसे अनौपचारिक मूल्यांकन तकनीक का प्रयोग करने के शिक्षक की आवश्कता है :

(1) जाँच सूची

(2) रेटिंग स्केल

(3) सम्मेलन

(4) व्यवहार/उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड के रिकॉर्ड

(5) संक्षिप्त स्पष्टीकरण तकनीक heisted पर प्रदान की जाएगी।

**उपकरणों के लिए MEANSURING LEARNINGOURCOME में PSCHO-मोटर डोमेन**—मनोवैज्ञानिक मोटर डोमेन कौशल से संबंधित है शिक्षा के क्षेत्र। एक कौशल काम के निष्पादन में कुशल बनने की क्षमता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षकों झुकाव के मनोवैज्ञानिक मोटर विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कौशल inculcated होने के लिए का उदाहरण इंटेल lacteal, संचार, जोड़-तोड़ ।समूह कार्य तथा अध्ययन कौशल शामिल है। बासी एट-अल (1980)। Pscho-मोटर सीखने परिणाम सबसे अच्छा प्रदर्शन आधारित गतिविधियों से मूल्यांकन किया जाता है। Granlund (1981) इस को पूर्ण करने के दो तरीके का सुझाव दिया।

प्रक्रिया मूल्यांकन; जो शिक्षक Lanners को देख के ष्प में वे व्यावहारिक कौशल के अधिग्रहण गतिविधियों और उत्पाद मूल्यांकन प्रदर्शन सम्मिलित है। कौन सा योग्यता मानदंड़ों के मूल्यांकन को सम्मिलित डेटा इन प्रक्रियाओं के माध्यम ये एकत्र कौशल प्रदर्शन के स्तर का न्याय करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता

तथा भी विशेष रूप से शिक्षार्थियों के कौशल व्यवहार में सुधार के लिए, सामाजिक अध्ययन शिक्षक निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं:

NOTES

(1) कक्षा चर्चा

(2) निबंध परीक्षण

(3) अवलोकन

(4) काम के नमूने

**सिद्धान्तों और सामाजिक पर CHARACTER RISTICS OF EFFECTIVE मूल्यांकन अध्ययन**—सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन करना चाहिए प्रक्रियाओं निम्नलिखित प्रधानाचार्य द्वारा

**निर्देशित:**

(1) उद्देश्यों पर फोकस

(2) व्यापक nears

(3) निरंतरता

(4) cooperativeness

**सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन का अध्ययन**—Ololobou (2009) के अनुसार तीन majoraspects सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में मूल्यांकन किया जाना है। इन पहलुओं इस प्रकार हैं

(1) सीखने के परिणामों विद्याथियों का मूल्यांकन शिक्षकों प्रभावशीलता के

(2) evaluation

**सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का मूल्यांकन।**

Ololobou (2009), में Kisock (1980) सीखने के परिणामों विद्याथियों का मूल्यांकन बताया कि सामाजिक अध्ययन छात्रों शिक्षाप्रद प्रक्रिया के chients अनुदेशात्मक प्रक्रिया का ध्यान केंद्रित इसलिए छात्रों के behevours में सकारात्मक तथा वांछनीय परिवर्तन eliciting छात्र के मूल्यांकन की दिशा में सक्षम है सीखने के परिणामों संग्रह और विद्याथियों औपचारिक मूल्यांकन तकनीक में पहचाने जराते हैं कि प्रक्रिया का संकेत डेटा की व्याख्या को सम्मिलित और सुविधाओं के लिए चयनित वे शिक्षकों को उम्मीद है शिक्षार्थियों सामजिक अध्ययन दर्शाने सुनिश्चित करना चाहिए। कि मूल्यांकन तकनीक चुना व्यवहार पर निर्भर करता है कि प्रक्रिया इस व्यवहार के सभी पहलुओं (संज्ञानात्मक मनोप्रेरणा और प्रभावी)

NOTES

को सम्मिलित किया गया। शिक्षार्थियों प्रदर्शन का मूल्यांकन जाना एक चक्रीय चार चरणों अर्थात् तैयारी मूल्यांकन तथा प्रतिबिंब के साबित होता है के माध्यम से।

(1) **लक्ष्यों पर ध्यान देने**—सामाजिक अध्ययन में उत्पादित मूल्यांकन जानने का विस्तार जो सेट उद्देश्य chinked दिया है पर निर्देशित किया जाना चाहिए। चयनित तथा इस्तेमाल किया गोते घोषित उद्देश्यों के लिए प्रत्यक्ष प्रासंगिकता सहन करने के लिए कर रहे है। ज्ञान वेह लिहाज से अथवा उद्देश्यों की प्राप्ति के माध्यम से मूल्यांकन किया जाना चाहिए, औपचारिक मूल्यांकन शिक्षाओं का प्रयोग जबकि मनोवैज्ञानिक मोटर तथा भावात्मक उद्देश्यों को उनकर उपलब्धि करती हैं अनौचारिक उपकरणों के इस्तेमाल की जरूरत होती है।

(2) **व्यापक करीब पहुँचता है**—उसके प्रिंसिपल कि मूल्यांकन प्रक्रियाओं सीखने के पहलुओं coverall चाहिए अपनाया विकास तथा सीखने की प्रगति पर कुल और संतुलित प्रतिक्रिया देने के लिए निकलता है। यह सभी शिक्षण डोमेने (संज्ञानात्मक, साइक-मोटर और भावात्मक) मूल्यांकन किया जाना चाहिए तथा के लिए मूल्यांकन-मूल्यांकन में से एक शिक्षक का प्रयोग कर सीखने का इस आशय करना सामाजिक अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग राज्य धारकों के लिए एक पागल कर देना का कारण बनता है।

(3) **निरंतरता**—सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन एक है ऑन-घड़ियाल प्रक्रिया है कि वे व्यवहार की जरूरत है लगातर जाँच की तथा बाहर खड़े उद्देश्यों के आलोक में उत्पीड़ित किए जाने की सीख। लगातार और जारी है मूल्यांकन शिक्षक भ्रम गलतफहमी स्पष्ट और त्रुटिशें के संचय कि साम्रगी मूल्यांकन को सुधारने के लिए महँगा हो सकता है भी के अन्तगर्त मासिक सीखने, उत्पादन ताप कमजोर मदद करने के लिए उपचारत्मक कार्रवाई लेने के लिए निर्देश दिए अतिरिक्त प्रयासों के लिए और कम से शिक्षक अवसर साधारण सैनिक को रोकने के लिए सक्षम बनाता है स्कूल हो, मूल्यांकन पता लगाने के लिए आयोजित किया जाना चाहिए शिक्षाथियों द्वारा किया गए प्रगति।

**COOPERATIVENESS :** नहीं एक-एक आदमी शो में सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन हालांकि शिक्षक में एक प्रमुख स्थान है तथा सामाजिक सीखने अध्ययन शिक्षार्थियों की dormancies प्रति के मूल्यांकन स्काह हितधारकों को सम्मिलित करना चाहिए। शिक्षक माता-पिता शैक्षिक प्रशासकों शिक्षार्थी, परामर्शदाता मूल्यांकन जानकारी, मूल्यांकन प्रक्रिया एवं कार्रवाई की एक योजना है कि शिक्षार्थियों विकास ऊपर stallholders के बीच जानकारी साझा करने का एक नियमित rocess की क्षमताओं के निरन्तर वृद्धि का समर्थन करेंगे के आंकलन को साघ करने में सम्मिलि होना चाहिए तथा शिक्षार्थियों के प्रदर्शन आगे की भागीदारी आत्म निर्देशित अध्ययन जो शिक्षार्थियों अभिशप्त होगा प्रोत्साहित करेंगे।

**सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन पर अध्ययन**—तीन प्रमुख हैं पहलुओं सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में मूल्यांकन किया जाना। इन पहलुओं इस प्रकार है—

(1) सीखने के परिणामों विद्यार्थियों

(2) शिक्षकों प्रभावशीलता का मूल्यांकन

(3) सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का मूल्यांकन।

सीखने के परिणमों विद्यार्थियों का मूल्यांकन। Kissock (1980) Ololobou (2009) में, स्पष्ट किया कि सामाजिक अध्ययन छात्रों शिक्षा पद प्रक्रिया के ग्राहकों रहे हैं। शिक्षण प्रक्रिश का ध्यान केन्द्रित छात्रों के व्यवहसर में सकारात्मक एवं वांछनीय परिवर्तन eliciting की ओर सामान्य है। इसलिए परिणाम सीखने के छात्रों के मूल्यांकन रों की व्याख्या पर सामूहिक सम्मिलित छात्रों की प्रक्रिया का संकेत डेटा, औपचारिक व अनौपचारिक आंकलन तकनीक की पहचान की ओर सुविधाओं के लिए प्रक्रिया चुने गए हैं। मूल्यांकन तकनीक चयन किए गए व्यवहार शिक्षक शिक्षार्थियों excepts प्रदर्शित करने के लिए निर्भर करता है।

Socialstudies यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस व्यवहार के सभी पहलू (संज्ञानात्मक मनोप्रेरणा और भावात्मक) को सम्मिलित किया गया। शिक्षार्थियों प्रदर्शन का मूल्यांकन चार चरणों के एक चक्रीय प्रक्रिया के द्वारा जाना अर्थात् तैयारी मूल्यांकन और प्रतिबिंब।

Ololobou (2009) में शिक्षकों एवं प्रभावशीलता कश्मीर issock (1980) का मूल्यांकन, स्पष्ट किया कि सामाजिक अध्ययन शिक्षक सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण व्यक्ति है, काम बनाने या कार्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति मार्च कर सकते हैं। इसलिए लगातार शिक्षक मूल्यांकल करने केलिए उसकी प्रभावशीलता में सुधार करने की आवश्यकता है, इस अभ्यास शिक्षक तथा अन्य लोगों के शामिल है निकट के आन्तरिक और बाहरी उनकी प्रयासों का आंकलन वर्ग इंटरैक्टिव प्रक्रिया का पता लगाने के लिए कैसे वे रूपरेखा लख्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योगदान करते हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षकों के शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यक्तित्व को सम्मिलित किया गया विशेषताओं। ये प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप रास्ता और तरीके से शिक्षक शिक्षा का आयोजन करता है प्रभावित करते हैं एवं शिक्षाथियों कार्यक्रम का मूल्यांकन।

सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम Nuhu (2010) का मूल्यांकन, सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम मूल्यांकन कुछ पर एकत्र करने तथा विश्लेषण करने के बारे में जानकारी

**NOTES**

के प्रणालीगत प्रक्रिया है क्रम में अथवा कार्यक्रम का अथवा सभी पहलुओं पर प्रकाश डाल कर कार्यक्रम पर निर्णय या निर्णय करते हैं। शक्तियों एवं कमजोरियों ताकि निर्णय को बनाएँ रखने, सुधार या समाप्त की पहलू पर बना रहे हैं। Provus (1971), सुझाव दिया है कि सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम मूल्यांकन आवश्यक कार्यक्रम के अंत में आयोजित नहीं है, लेकिन एक है कैंसर के क्षेत्र में पहचान करने का कोई चल रही प्रक्रिया।

एकत्रित तथा डेटा निर्णय का विश्लेषण करने और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करने के लिए कार्यक्रम है कि यह साझा किया जाता है सामाजिक अध्ययन में प्रमुख हितधारक सम्मिलित सहकारी और सहयोग प्रभाव शिक्षा। प्रक्रिया औपचारिक रूप से किया जा सकता है और औपचारिक रूप से में। नाइजीरिया में सामाजिक अध्ययन कार्यक्रमों मूल्यांकन पिछड़ गया है।

विश्वसनीयता और हर अनुसंधन की प्रभावशीलता कैसे एकत्र किए गए आँकड़ों का विश्लेषण करती है कर रहे हैं पर काफी हद तक निर्भर करता है। विभिन्न विधियों और तकनीकों से काम कर रहे हैंडेटा विश्लेषण के लिए विभिन्न शोधकर्ताओं। इसलिए इस प्रकृति में एक वर्णनात्मक के रूप में अध्ययन के उपयोग को रोजगार आवृत्ति तालिका का उपयोग करके सरल और विश्लेषण किया।

**सारांश**—अध्याय के रूप में के साथ सौदा ऊपर चर्चा की शोध पद्धति। एक विस्तार स्पष्टीकरण उपकरणों कि डेटा संग्रह के लिए मुकदमा किया जाएगा पर दिया जाता है। इन उपकरणों प्रश्नावली और अवलोकन कर रहे हैं। अध्ययन की आबादी पूरे सामाजिक अध्ययन है कानो महानगर के भीतर शिक्षकों। क्षेत्र में सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के विशाल प्रकृति बड़ी संख्या के कारण, वहाँ खोजकर्ताओं व्यवस्थिति 100 शिक्षकों को एक नमूना के रूप में इस्तेमाल करने के चुना।

**अनुसंधान पाने की सारांश**—सभी संकेत से, मूल्यांकन शिक्षक और सामाजिक सीखने में आवश्यक है; पढ़ाई क्योंकि यह निर्धारित करता है कितनी दूर उद्देश्यों को हासित कर रहे हैं। यह भी कहा कि मूल्यांकन के प्रयोजन के कमजोरी और stu8dent प्रगति की ताकत की खोज के साथ ही जानकारी दोनों माता-पिता और स्कूल प्राधिकारी या करने के लिए उपलब्ध कराने की भी शामिल है छात्रों प्रगति।

हालांकि, यह पता चला था कि मूल्यांकन के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीक, शिक्षकों की पेशेवर विशेषज्ञता, उपलब्धता के लिए सभी आवश्यक उपकरणों की, सीखने की तीन प्रकार डोमेन को कवर और उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित कर के उपयोग से सामाजिक अध्ययन में प्रभावी मूल्यांकन के निर्धारकों हैं।

शिक्षक कि पेशेवरों माना जाता है और सामाजिक अध्ययन में विशेषज्ञता प्राप्त कर रहे हैं मूल्यांकनप सामाजिक अध्ययन ि

शिक्षक जो गलती से विषय से अधिक ठोकर खाई की तुलना में आसान पाया; इसलिए, सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में विशेषज्ञता सबक के उचित योजना और बढ़ता निकासी तकनीक की किस्मों का उपयोग।

NOTES

इसके अलावा, अनुसंधान पता चनलता है कि औपचारिक मूल्यांकन तकनीक मुख्य रूप से सामाजिक रूप से पढ़ाई शिक्षकों द्वारा उपयोग किया जाता है, जबकि अनौपचारिक मूल्यांकप तकनीकी शायद ही कभी इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि कुछ शिक्षकों उनमें से अवगत नहीं हैं। इसके अलावा, परीक्षण और असाइनमेंट क्योंकि महत्वपूर्ण प्रतिशत कर रहे हैं सामाजिक अध्ययन में सबसे प्रभावी मूल्यांकन तकनीक माना जाात है दृढ़ता से दाबे से सहमत हुए।

सिफारिश thefollowing सिफारिशों के लिए सुझाव दिया है जूनियर माध्यमिक विद्यालय में सामाजिक अध्ययन के प्रभावी मूल्यांकन।

सरकार है कि भर्ती सुनिश्चित करना चाहिए। तो यह है कि केवल एक व्यक्ति जो पेशेवर कौशल है और विषय महारत सामाजिक अध्ययन को पढ़ाने के लिए निर्दिष्ट किया जाएगा। दूसरे, सरकार विशेष रूप से कैसे शिक्षकों पर नियमित रूप से पर्यवेक्षण और निरीक्षण रचना चाहिए उनके मूल्यांकन व्यायाम, ताकि और वे चाहिए सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के लिए पर्यापत मूल्यांकन सामग्री प्रदान करते हैं। मूल्यांकन सुविधाओं के प्रावधान के छात्र प्रदर्शन के पुरुष प्रभावी मूल्यांकन करने के लिए शिक्षकों में वृद्धि होगी।

इसके अलावा, स्कूल अधिकार मूल्यांकन की प्रक्रिया से cooperativeness बढ़ाने चाहिए। यह शिक्षकों, अभिभावकों और अन्य सभी शैक्षिक ले धारकों सक्षम सक्रिय रूप से करने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए मूल्यांकन।

एक सेमिनार जनसंपर्क नियमित रूप से किए जाने की आवश्यकता के भीतर और किसी भी समस्यओं है कि छात्र के मूल्यांकन की प्रक्रिया में सामाजिक छात्रों शिक्षकों द्वारा सामना होता है हल करने के लिए स्कूल के बाहर का आयोजन किया रो प्रदर्शन। स्कूल अधिकार सुनिश्चित करना चाहिए कि हर सामाजिक अध्ययन के शिक्षक अपने मूल्यांकन रखन के लिए प्रकृति में जारी है, ताकि विद्यार्थी प्रदर्शन की संचयी दर का पता लगाने की जानी चाहिए।

**निष्कर्ष**—मूल्यांकन शिक्षा वे विद्यालय स्तर में बल्कि स्तरों पर न केवल हर शिक्षण और सीखने की गतिविधियों की पृष्ठभूमि हैं मूल्यांकन दोनों छात्रों और के साथ उनकी बातचीत की प्रक्रिया में शिक्षक के साथ उनकी बातचीत की प्रक्रिया

में शिक्षकों के प्रदर्शन के लिए जानकारी उपलब्ध बनाने के लिए दुख की बात है सामग्री यह भी की दक्षता के बारे में डेटा प्रदान करता है ताकि कमजोरी और ताकत केउस क्षेत्र कार्यक्रम मूल्यांकन के माध्यम से पता चला रहे हैं।

**चर्चा और स्पष्टीकरण के लिए 1.18 अंक**—इस यूनिट अध्ययन करने के बाद आप दूसरों के बारे में कुछ बिन्दुओं पर आगे की चर्चा और स्पष्टीकरण के लिए पसंद कर सकते हैं।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) मूल्यांकन क्या है ? इसके प्रकारों की व्याख्या कीजिए।

(2) शिक्षण तथा सीखने के सामाजिक अध्ययन में प्रभावी मूल्यांकन स्पष्ट कीजिए।

(3) जूनियर सेकेंडरी स्कूल में सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य समझाइए।

### लघुउत्तरीय प्रश्न

(1) मूल्यांकन की रणनीतियों की व्याख्या कीजिए।

(2) मूल्यांकन के प्रकार समझाइए।

(3) स्कोप तथा अध्ययन की सीमाएँ लिखिए।

# 17 सामाजिक विज्ञान शिक्षण में विद्यार्थी उपलब्धियों की मूल्यांकन तकनीतियाँ

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- उपकरण का उपयोग करते समय विचार करने की आवश्यकता
- अवलोकन के कार्यान्वयन के लिए सुझाव
- परियोजनाएँ
- वैकल्पित रिस्पांस के प्रकार
- जाँच सूची
- विचार कौशल
- पोर्टफोलियो
- पेंटिग तथा कलात्मक प्रयास
- उपाख्यात्मक रिकार्ड
- आत्म मूल्यांकन शीट्स
- कथा रिकार्ड
- सामाजिक कौशल
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समक्ष सकेंगे—

- उपकरण का उपयोग करते समय विचार करने की आवश्यकता
- अवलोकन के कार्यान्वयन के लिए सुझाव
- परियोजनाएँ
- वैकल्पित रिस्पांस के प्रकार
- जाँच सूची
- विचार कौशल

NOTES

- पोर्टफोलियो
- पेंटिग तथा कलात्मक प्रयास
- उपाख्यात्मक रिकार्ड
- आत्म मूल्यांकन शीट्स
- कथा रिकार्ड
- सामाजिक कौशल

## प्राक्कथन

उपकरणों तथा तकनीकों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए जरूरत हैं। ये जरूरत चाहिए वैध विश्वसनीयता तथा प्रयोग करते योग्य।

एकत्र की गई जानकारी की व्याख्या संख्यात्मक स्कोर, ग्रेड के साथ-साथ में qualitativeterms में दि जाने की आवश्यक है प्रलय शैक्षिक पहलुओं पर लेकिन यह भी सह-शैक्षिक पहलुओं जो किसी दिए जाने की आवश्यक है। प्रलय शैक्षिक पहलुओं पर लेकिन यह भी सह-शैक्षिक पहलुओं जो किसी संस्था के सीखने वातावरण पर toa बड़ी हद तक एवं सीखने संस्कृति निर्भर पर न सिर्फ बनाया जाना चाहिए।

जहाँ तक व्याख्या का प्रश्न है, प्राप्ति तीन स्तर के संदर्भ में mearsured जा सकता है। सबसे पहले साथ है referenecto शिक्षार्थी खुद/खुद को तथा प्रगति की वर्तमान स्थिति। सीखने अंतराल पर andmarked पहचान करने की जरूतर है। दूसरे स्तर उसकी उसके साथियों के समूह के संदर्भ्स में शिक्षार्थी की स्थिति की पहचान है।

**(प्रतिशतक स्थान)**

तीसरे स्तर मापदंड के संदर्भ में है। मापदंड viewthe जरूरत कौशल में रखते हुए सीखने के अपेक्षित स्तर का मतलब है।

एक मूल्यांकन उपकरण वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन अथवा उपाय क्या beevaluated करने के लिए जरूरत के लिए मापा जाता है के लिए बनाया गया मूल्यांकन का एक साधन है।

## निम्नलिखित कारकों एक उपकरण का उपयोग करते समय विचार करने की आवश्यकता

- संतुलन

NOTES

- निष्पक्षतावाद
- भेदभाव
- प्रासंगिकता
- फेयरनेस
- वैधता
- गति
- विश्वसनीयता
- मूल्यांकन की तकनीक परीक्षण तथा सीखने के विशेष परिणामों में विकास को मापने के लिए अन्य मदों से मिलकर बनता है।

उपकरण इस तरह के प्रश्न पत्र observationschedules, रेटिंग के जगह पर जाँच सूची आदि उदाहरण के लिए के रूप में सीखने परिणम को मापने के लिए इस्तेमान किया उपकरणों रहे हैं,

जबकि अवलोकन एक तकनीक है एक चेकलिस्ट एक उपकरण है।

सूचना सबसे अच्छा में बालकों के बारे में एकत्र किया जा सकता 'प्राकृतिक सेटिंग। कुछ जानकारी शिक्षण के पाठ्यक्रम में शिक्षार्थियों के बारे में teacher' observations पर आधारित है। अन्य सूचना के आधार पर योजना बनाई है और गतिविधियों /कार्यो विद्यार्थियों purposefulobservation आधारित है।

### अवलोकन के लाभ

- व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं टिप्पणियों के अनुसार से मूल्यांकन किया जा सकता।
- व्यक्तियों के साथ-साथ समूहों का आंकलन किया जा सकता है।
- आंकलन अलग समय अवधियों के अन्तगर्त बनाया जा सकता है।
- बालक के प्रदर्शन / ज्ञान का सबूत पर आधारित है 'ऑन-द-स्पॉट रिकॉर्ड'।
- समय के साथ व्यवहार की विस्तृत अवलोकन के साथ ही हितों, चुनौतियों, patterns/ /रुझान उभरने जो शिक्षकों के लिए एक व्यापक तस्वीर / बालक का दृश्य बनाने के लिए अनुमति देते हैं।

## चिंताएँ अवलोकन के बारे में

- अनुमान / व्याख्याओं पर पहुँचने अथवा निष्कर्ष पर कूद से बचें। यह महत्वपूर्ण है नीचे लेने के लिए

- क्या वास्तव में देखा जाता है तथा अधिक से अधिक।
- पर्यवेक्षक जो निर्धारित करता है के कौशल पर निर्भर है 'क्यामनाया जाता है।
- जिस तरह से अवलोकन किया जाता है में संवेदनशीलता तथा unobtrusiveness की आवश्यकता है।
- टिप्पणियों विभिन्न गतिविधियों एवं सेटिंग पर समय की अवधि में किए जाने के लिए।

## अवलोकन के कार्यान्वयन के लिए 2.5 सुझाव

जानकारी है कि केवल कामों का वर्णन नहीं है, लेकिन पता चलता है कि कैसे एक बालक कि वह क्या। वह क्या कर रहा है के बारे में महसूस करता है, कैसे वह / वे कुछ के साथ-साथ्रा जब वह या यह होता है, के रूप में कर रही है वह जानकारी के रिकॉड़िग उसकी की गणुवत्ता / उसकी interrelationshipeith लोगों एवं सामग्री और क्या वह / वह कहते हैं आदि।

प्रक्रियाओं जो समय की laterpoint पर अनुमान लगाया जा सकता के आधार पर कोष्ठक में बालक के व्यवहार के बारे में टिप्पणी ध्यान देने योग्य बात।

## अवलोकन सामाजिक विज्ञान में एक चेकलिस्ट का उपयोग कर

विद्यार्थी की स्थिति के बारे में उचित ज्ञान है ? हाँ, नहीं

बच्चे समझ और रचनात्मक कौशल के अधिकारी करता है हाँ, नहीं

बच्चे संबंधित समस्याओं और समकालीन मुद्दों के लिए प्रयुक्त समाधान प्रदान करने में सक्षम है ? हाँ, नहीं

बच्चे को अपने नेतृत्व कौशल दिखाने के लिए तथा समूह चर्चा के दौरान सकारात्मक आलोचना ध्यान रखता है ? हाँ, नहीं

## परियोजनाओं

ये समय की अवधि में किए गए हैं और आम तौर संग्रह और डेटा का विश्लेषण सम्मिलित कर रहे हैं। परियोजनाओं विषय आधारित कामों वर्ग काम और / या समूहों में गृहकार्य के रूप में पूर्ण हो जाने की में aresefull वे खुले ended संरचित किया जा सकता है और दोनों व्यक्ति या समूह परियोजनाओं हो सकता है। वे संदर्भों के बाहर thetextbooks पर आधारित है और विद्यार्थी पर्यावरण / संस्कृति / जीवनशैली / समुदाय आधारित सामाजिक कार्यक्रमों से सम्मिलित होना चाहिए।

## परियोजनाओं की 27.1 लाभ

का पता लगाने और किसी के हाथ में साथ कार्य करने के अवसर प्रदान करें।

निरीक्षण डेटा एकत्र, विश्लेषण, संगठित करने और डेटा की व्याख्या और सामान्यीकरण आकर्षित।

NOTES

समूहों में और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में कार्य करने कर अवसर प्रदान करता है।

समूह के काम की दिशा में एक सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास, साझा करने और एक दूसरे से सीखने में सहायता करता है।

## परियोजनाओं के बारे में चिंताएँ

- परियोजनाओं की प्रकृति एवं कठिनाई स्तर इस तरह स्वयं छात्रों द्वारा यह कर सकते हैं कि होना चाहिए।
- सामग्री परियोजना के लिए प्रयोग की जाने वाली स्कूल, पड़ोस या घर की स्थापना में सम्मिलित होना चाहिए।
- ये माता-पिता पर एक वित्तीय बोझ नहीं डालना चाहिए।
- प्रत्येक स्कूल के एक संसाधन केन्द्र है, जो स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री के लिए होता है के लिए में जा सकते हैं।

## परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए 2.7.3 सुझाव

- परियोजना विषयों का फैसला किया जाना चाहिए / चुने हुए योजना बनाई है तथा काफी हद तक शिक्षक के साथ विद्याथियों द्वारा किए गए।
- एक गाइड के रूप में कार्य।
- प्रोत्साहन समूह परियोजनाओं के लिए दी जानी चाहिए। इन छात्रों को एक सथ काम करने के लिए सक्षम हो जाएगा, शेयर
- अनुभव तथा एक दूसरे से सीखने।
- परियोजनाओं छात्रों, का पता लगाने के लिए जाँच व समूहों के काम करने का अवसर प्रदान रखने के लिए।
- बालक सामग्री का विवेकपूर्ण प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया और जा उन्हें वापस रखने के प्रयोग के बाद कर सकते हैं।

NOTES

## सामाजिक विज्ञान में परियोजनाओं के लिए 2.8 चेकलिस्ट

- विद्यार्थियों इस परियोजना की साम्रगी के बारे में ज्ञान की अधिकारी करता है ? हाँ, नहीं
- बच्चे सौंदर्य कौशल का प्रदर्शन करता है ? हाँ, नहीं
- Does has s/वह किसी भी पद्धतियों के उपयोग करते हुए परियोजनाा बनाने ? हाँ, नहीं
- s/वह परियोजना के लिए किसी शोध काम किया गया है ? हाँ, नहीं
- है s/वह किसी भी पुस्तक अथवा अखबार में भेजा ? हाँ, नहीं
- s/वह इंटरनेट से किसी भी सहायता ले लिया है ? हाँ, नहीं
- s/वह परियोजना के बारे में कोई इंटरव्यू लिया गया है ? हाँ, नहीं
- बच्चे परियोजना बनाने के लिए प्रयुक्त सामग्री का उपयोग किया गया है ? हाँ, नहीं
- है s/वह किसी भी दृश्य यानी नक्शा, चित्र, ग्राफ, परियोजना में चित्र प्रस्तुत ? हाँ, नहीं
- परियोजना मूल की ओर विद्यायार्थी के दृष्टिकोण है ? हाँ, नहीं
- परियोजना वास्तविक जीवन स्थिति के लिए प्रासंगिक है ? हाँ, नहीं s/वह अपनी परियोजना की अवधारणा को समझाने ? हाँ, नहीं

## सवाल

जानने पता है कि बच्चों, लगता है की कल्पना एवं लगता है कि एक शानदार तरीका। शिक्षार्थियों सवालों तथा समस्याओं के माध्यम से मूल्यांकन किया जा सकता। यहाँ तक कि दिए-गए जवाब के लिए सवालों का एक सेट बनाने की क्षमता एक वैध परीक्षण oglearning है। एक शिक्षक शिक्षण के पाठ्यक्रम में प्रारंभिक आंकलन के भाग के प्रश्न है कि बच्चों को लगता है कि कर पूछकर विद्यार्थियों में learningdiffculties का पता चल सकता है।

## एक अच्छा सवाल के लक्षण

(1) **उद्देश्य आधारित**—एक प्रश्न एक पूर्व निर्धारित उद्देश्य के आधार पर किया जाना चाहिए और इस तरह से है कि यह उद्देश्य प्रभावी रूप से परीक्षण में फँसाया जाना चाहिए।

NOTES

(2) **निर्देश**—यह निर्देश के माध्यम से एक विशेष काम निर्दिष्ट करना चाहिए। इस के लिए, उचित दिशात्मक इस्तेमाल किया जा wordsshould, और संरचित स्थिति दी जानी चाहिए।

(3) **स्कोप**—यह सीमा और अनुमानित समय तथा अंक इसे करने के लिए आवंटिक के अनुसार जवाब (उत्तर की लंबाई) के दायरे का संकेत देना चाहिए।

(4) **साम्रगी**—प्रश्न सामग्री है जो इसका परीक्षण करना चाहता है के एक ही क्षेत्र का परीक्षण करना चाहिए।

**प्रश्न के 5 प्रपत्र**—सवाल के रूप उद्देश्य पर निर्भर करता है तथा सामग्री क्षेत्र परीक्षण किया जाना। कुछ रूपों कुछ क्षमताओं के परीक्षण के लिए दूसरों से बेहतर हैं।

(6) **भाषा**—एक अच्छा प्रश्न एक स्पष्ट, सटीक और स्पष्ट भाषा में फँसाया गया है, अच्छी तरह से विद्यार्थियों के thecomprehension के भीतर।

(7) **कठिनाई का स्तर**—एक प्रश्न ध्यान में रखने हुए छात्रों जिनके लिए यह मतलब है रखने के स्तर का लिखा जाना चाहिए। सवाल का Thedifficulty निर्भर करता है पर क्षमता परीक्षण किया जाना, सामग्री क्षेत्र परीक्षण किया जाना है तथा समय उपलब्ध यह जवाब देने के लिए।

(8) **भेदभाव शक्ति**—एक अच्छा सवाल मेधावी छात्रों एवं अन्य लोगों के बीच भेद करना होगा।

**जवाब के 9 सीमांकित गुंजाइश**—प्रश्न की भाषा विशिष्ट और सटीक होना चाहिए ताकि उम्मीद उत्तर दायरे स्पष्ट रूप से सीमांकित या परिभाषित किया गया है।

(10) **पैसे अंक**—मूल्य अंक या एक पूरे के रूप में एक सवाल के द्वारा किया जाता निशान और भी इसके उपभागों clearlymentioned किया जाना चाहिए।

## आपूति प्रकार प्रश्न

सवाल छात्र के इस प्रकार में जवाब की आपूर्ति की है। इस प्रश्न का जवाब एक शब्द से कई अनुच्छेदों के लिए भिन्न हो सकते हैं सवाल इस प्रकार के रूप में भी कहा जाता है 'नि: शुल्क-प्रतिक्रिया सवाल। आपूर्ति प्रकार सवालों चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है निबंध प्रकार, संक्षिप्त उत्तर प्रकार बहुत ही कम जवाब प्रकार तथा blankstype सवालों में भरे।

NOTES

## निबंध प्रकार प्रश्न

अवधि निबंध एक सवाल के लिखित प्रतिक्रिया जो एक या दो पृष्ठ हो सकते हैं निकलता है। छात्र शब्दों, लम्बाई और जवाब के संगठन के संबंध में स्वतंत्रता के लिए अनुमति दी है। भेद ज्ञान एवं निबंध प्रकार प्रश्न भाषाओं में कौशल परीक्षण लेखन करने के लिए नियोजित है, जो एक रचना परीक्षण कहा जाताहै मापने के लिए इस्तेमाल निबंध प्रकार सवाल बीच किया जाना चाहिए।

वहाँ कई क्षमताओं जो प्रश्न के किसी अन्य रूप के माध्यम से, लेकिन केवल निबंध प्रकार प्रश्न द्वारा परीक्षण नहीं किया जा सकता है। इन क्षमताओं हैं—

- अर्जित ज्ञान के शरीर से प्रासंगिक तथ्यों का चयन करें।
- पहचान करने के लिए है और यह भी ज्ञान के विभिन्न पहलुओं के बीच संबंधों की स्थापना।
- एकत्र की गई जानकारी के निहितार्थ के संबंध में सबूत वजन करने के लिए।
- व्यवस्थिति विश्लेषण तथ्यों और जानकारी अनुमान आकर्षित करने के लिए के

अन्य प्रकार की व्याख्या करने के लिए।

- किसी दिए गए समस्या को हल करने के लिए एक स्वदेशी अथवा मूल दृष्टिकोण अपनाने के लिए।
- तथ्यों, आँकड़ों और प्रयुक्त तर्क के माध्यम से देखने का एक बिन्दु की रक्षा के लिए।
- गंभीर रूप से एक में पर्याप्तता, सटीकता एवं उपलब्ध जानकारी की प्रासंगिकता की डिग्री की जाँच करने के
- स्थिति को देखते हुए।
- समस्याओं तथा मुद्दों के प्रति भाँति रवैया प्रदर्शित करने के लिए।
- दोनों स्थूल और सूक्ष्म स्तर पर एक समस्या की सहायता करने के लिए।
- गर्भ धारण, डिजाइन और एक भी समस्या से निपटने के लिए नए और एवं अभिनव दृष्टिकोण का सुझाव देना।

**1 का निर्माण निबन्ध प्रकार प्रश्न**—निबंध प्रकार प्रश्न आमतौर पर के रूप में इस तरह के मामले के साथ शुरू 'पर चर्चा' 'समझाने', 'मूल्यांकन', 'परिभाषित'।

'तुलना', 'इसके विपरीत', 'वर्णन' आदि निबंध प्राकर प्रश्न अच्छा है जब समूह का परीक्षण किया जा रहे हैं पेपर की तैयारी के लिए छोटे और सीमित समय के isavailable है। यह भी काफी लिखित अभिव्यक्ति का परीक्षण करने के लिए प्रयुक्त है।

NOTES

**2 कुछ नमूना निबंध प्रकार प्रश्न इस प्रकार हैं**

- क्यों रेतीली मिट्टी पर्याप्त पानी पकड़ नहीं है ? (प्रश्न प्रपत्र)
- चार इंद्रियों को नाम दें तथा आकर्षित उनके चित्र (वक्तव्य प्रकार)

**यहाँ एक और उदाहरण है**

- कारणों दें क्यों रूजवेल्ट संयुक्त राज्य अमेरिका के 1932 के राष्ट्रपति चुनाव एवं इस तरह के रूप शैलियों का समावेश जीता :
- सबसे महत्वपूर्ण कारण है कि रूजवेल्ट 1932 के राष्ट्रपति चुनाव जीता हूवर की अलोकप्रियता था। क्या आप सहमत हैं ? अपना जवाब समझाएँ।
- पहले रटना सीखने को प्रोत्साहित करती है एवं स्वतंत्र विचारों विश्लेषण के कौशल पर फोल नहीं करता है, तथा मूल्यांकन की जरूरत है। दूसरे सभी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा केवल प्रतिभावशाली कुछ नहीं रखती है।

## लघु उत्तर प्रश्न

निबंध प्रकार प्रश्न निष्पक्षता एवं विश्वसनीयता की कमी से पीड़ित हैं, जबकि वस्तुनिष्ठ सवाल संक्षेप में व्यक्त संक्षिप्त और सटीक ढंग से विचारों को व्यवस्थित करने की क्षमता की तरह विकास के कुछ पहलुओं के परीक्षण के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। लघु प्रश्नों के उत्तर देने के लिए दो चरम सीमाओं के बीच एक अच्छा माध्यम से मीडिया कर रहे हैं। तो समझा और ठीक से तैयार किए, वे दोनों वस्तुनिष्ठ एवं निबंध प्रकार सवालों का लाभ है।

- क्यों पिरामिड दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक के रूप में माना जाता है ? (प्रश्न प्रपत्र)
- चार अंक दिखाने के लिए कि पौधों जानवरों से अलग दे। (वक्तव्य फॉर्म)

## संक्षिप्त उत्तर सवालों के कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं

- संक्षिप्त उत्तर प्रश्न दोनों युनिट एवं अवधि परीक्षणों के लाभ के लिए इस्तेमान किया जा सकता है।

- यह लगभग सभी शिक्षण के उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।
- यह छात्रों के आयोजन तथा प्रासंगिक तथ्यों का चयन करने की क्षमता विकसित करने के लिए सहायता करता है।
- यह निबन्ध प्रकार प्रश्नों की तुलना में अधिक निष्पक्ष बनाए जा सकते हैं तथा इस तरह विश्वसनीयता पीछा।
- इन सवालों तथा अधिक पाठ्यक्रम को कवर क्योंकि सवालों की अधिक संख्या एक निबन्ध प्रकार सवाल के एवज में रखा जा सकता है। मैं सहायता करते हैं। इन प्रश्न पत्र की वैधता में सुधार।

## बहुत कम जवाब सवाल

- बहुत ही कम सवालों के उत्तर देने के लिए जो एक विशिष्ट परीक्षण बिन्दु है और काफी चिहिन्त किया जा सकता है।
- निष्पक्ष।
- अधिक सामग्री इन प्रश्न के माध्यम से परीक्षण किया जा सकता है एवं अधिक विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित किया जा सकता।
- यह उसे एक शब्द, वाक्यांश या एक व्यक्ति या एक अपूर्ण करने के लिए पूछ कर परीक्षार्थी के परीक्षण के ज्ञान में सहायता करता है।
- वाक्य जो सवालों का उत्तर देने के लिए आवश्यक है।
- यह एक वाक्य को एक शब्द में उत्तर दिया जा सकता।
- यह ज्यादातर एक से दो मिनट लगते हैं जवाब देने के लिए तथा आवंटित अंक की सीमा एक निशान के आधा है।
- बहुत ही कम सवालों के उत्तर देने के कई प्रकार के कुछ नीचे दिए गए हैं कर रहे हैं।

## चयन प्रकार प्रश्न

प्रश्नों के इन प्रकार में छात्रों प्रदान की विकल्पों में सही उत्तर का चयन करके उन्हें जवाब देने के लिए होता है। इस तरह प्रश्न भी वस्तुनिष्ठ प्रश्न के रूप में जाना जाता है। ये विकल्प प्रतिक्रिया प्रकार, मिलान प्रकार तथा बहु विकल्प प्रकार प्रश्नों आदि में बाँटा जा सकता है। चुनाव प्रकार सवाल सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्न कर रहे हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्न केवल एक ही सही जवाब है जो विद्यार्थियों दिए गए विकल्पों में से चुनने के लिए है। इन सवालों के बाजार निष्पक्ष हो सकता है, वे वस्तुनिष्ठ सवाल

कहा जाता है। इसका मतलब है कि परीक्षार्थी एक ही निशान कोई फर्क नहीं पड़ता जो प्रश्न का मूल्यांकन करता मिल जाएगा। वे यंत्रवत् बनाए जा सकते हैं तथा यही वजह है इन विशेष रूप से स्थिति में बहुत लोकप्रिय हैं जब उम्मीदवारों की बड़ी संख्या में परीक्षण किया जाना है। निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्न के विभिन्न रूप हैं।

NOTES

## वैकल्पिक रिस्पांस प्रकार

प्रश्नों के इन प्रकार में छात्रों को एक सही जवाब के रूप में दो विकल्प में से एक बाहर का चयन करने के लिए है। विभिन्न typeof विकल्प प्रतिक्रिया प्रश्न इस प्रकार हैं—

**(क) यह सच है -झूठी या हाँ नहीं प्रश्नः**

प्रश्न के इस प्रकार में एक बयान दिया जाता है और उम्मीदवार यह सही या गलत (टी/एफ) है कि क्या कहा जाता है।

सही/गलत सवाल का निर्माण तथा स्कोर करने के लिए आसान कर रहे हैं। वे कक्षा परीक्षण में विशेष रूप से studentsunderstanding के एक काफी विश्वसनीय उपाय प्रदान करते हैं।

(ख) लिखें 'टी' अगर बयान 'यह सच है' और 'एफ' अगर बयान 'असत्य' है।

दोनों जानवरों तथा पौधों बातें रह रहे हैं

सभी जानवरों को छोटे जानवरों को खाने

**(ग) सही/गलत प्रकार या हाँ/नहीं प्रकार**

रखो टिक (v) निशान अगर बयान सही है और (एक्स) अगर गलत।

तरह पदार्थ एक निश्चित आकर की आवश्यकता नहीं हैं

बर्फ के पानी की तुलना में हल्का है

**(खा) मिलान प्रकार**

मिलान प्रकार प्रश्नों में दो कॉलम नहीं है। शब्द या बयान स्तंभ में दिए गए स्तंभ दो में दिए गए उत्तर के साथ bematched कर रहे हैं। मिलान प्रकार प्रश्न निम्न में से हो सकता है।

**(ग) एकल मिलान**

प्रश्न के इस प्रकर में दो कॉलम किया जाता है। बाएँ स्तंभ उत्तेजनाओं में जबकि में सही columnesponses दिया जाता है प्रस्तुत कर रहे हैं। छात्रों

को दिए गए उत्साहित के साथ प्रतिक्रिया मिलान करने के लिए कहा जाता है।

(घ) दिशा :

कॉलम बी के साथ स्तंभ A में दिए गए शब्दों का मिलान एक सही जोड़ी बनाने के लिए। (सरल)

NOTES

## जाँच सूची

## चेकलिस्ट के लाभ

- त्वरित तथा लागू करने में आसान।
- विशिष्ट उद्देश्यों के बारे में विशेष जानकारी प्रदान करता है।
- कैसे और कब कौशन बच्चे के साथ ही बच्चों के एक समूह के माध्यम से किया गया है की प्रवृत्ति की ओर इंगित कर सकते हैं।

## Concerns जाँच सूची के बारे में

- सीमित जानकारी, सिर्फ एक कौशल की उपस्थिति का संकेत।
- अलग स्थितियों के लिउ बच्चे की प्रतिक्रिया से संकेत मिलता है अथवा प्रतिक्रियाओं के विशिष्ट उदाहरण प्रदान नहीं करता है।
- संदर्भ के बारे में जानकारी प्रदान नहीं करता।
- अनेक बार विशिष्ट वस्तुओं की संख्या की वजह बोझल बन सकता है।

## जाँच सूची के कार्यान्वयन के लिए 2.12.3 सुझाव

- एक जोड़ ' टिप्पणियों स्तंभ चेकलिस्ट अंकन में जानकारी के लिए मूल्य जोड़ने के लिए।
- आंकलन के अन्य तरीकों के साथ conjuction में एक उपकरण का उपयोग।
- अगर अन्य लोगों के माध्यम से विकसित, एक चेकलिस्ट उद्देश्य है कि शिक्षकों के मन में है के रूप में आप या समूहों के लिए, आप के साथ उपयोग करना चाहते हैं के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता है।
- खोजने/विशिष्ट व्यवहार/कार्रवाई/प्रक्रियाओं/परिणामों/रिकॉर्डिंग की एक शानदार तरीका दृष्टिकोण/समस्या तथा मूल्यांकन के कुछ विशेष पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करता है।

## सोच कौशल

- छात्र वर्ग गतिविधियों के दौरान रचनात्मकता पता चलता है ? वह/वे चुनौती को स्वीकार करता है।

उत्साह से ?

NOTES

- वह/वह नवीन विचारों या अवधारणों देने के लिए और वातानुकूलित व्यवस्था से परे जाने की कोशिश की कोशिश करता है ?
- वह/वह सेट कार्य से संबंधित प्रश्न पूछने करता है। ?
- वह/वह दूसरों की सहायता या समूह गतिविधियों के दौरान दूसरों को प्रेरित करने की कोशिश करता है ?
- वह/वह विशेष कार्य के लिए स्वयंसेवक बनने की प्रयत्न करता है ?
- वह/वह एक भी गतिविधि कर के विभिन्न तरीकों की कोशिक करता है ?
- वह/वह बॉक्स से बाहर सोचना पसंद करता है ?
- वह/वह नई स्थितियों में ज्ञान अथवा कौशल को लागू करने की कोशिश करता है ?
- वह/वह किसी कार्य शुरू करने से पहले समस्त विकल्पों के बारे में सोचना है ?

## पोर्टफोलियो

समय की अवधि से अधिक छात्रों के काम के सबूतों का संग्रह। यह दिन के लिए दिन काम या काम की शिक्षार्थी की सबसे अच्छी टुकड़ा चुने सकता है।

## पोर्टफोलियो के लाभ

- एक संचयी रिकॉर्ड प्रदान करें। इस प्रक्रिया में, कैसे एक कौशल अथवा ज्ञान क्षेत्र को विकसित करता है की एक तस्वीर उभर रहे।
- दूसरों, उसकी/उसके सीखने तथा प्रगति के लिए प्रदर्शित करने के लिए छात्र सक्षम करता है।
- बच्चे शिक्षण और मूल्यांकन में एक सक्रिय भागीदार बन जाता है।

NOTES

## चिंता के बारे में पोर्टफोलिया

- काम का चुनना पोर्टफोलियो में रखा जाना करने वे लिए एक विशेष कारण होना चाहिए।
- नहीं सभी कागजात/काम के आइटम सम्मिलित हो रहे हैं। यह अनियंत्रित हो जाएगा।

## पोर्टफोलियो के कार्यान्वयन के लिए सुझाव

- पोर्टफोलियो सामग्री के चयन में छात्र भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा करने के लिए साथ ही मांपदड सामग्री के चयन के लिए है।
- पोर्टफोलियो को लगातार अद्‌यतन के रूप में बच्चे को बढ़ता है।
- पोर्टफोलियो साम्रगी की सावधानी से संरचना एक चिंतनशील खाते के साथ होगा।
- लेबलिंग और आसान संदर्भ के लिए सामग्री की नंबरिंग साफ करें।

## कथा रिकॉर्ड

शिक्षक/बच्चे साथियों शिक्षार्थी के अनुभवों की एक कथा विवरण लिखें। ये अवसर बालक के जिवन के हर पहलू की खोज और शिक्षार्थी की अधिक समग्र छवि बनाने के लिए वास्तविक सबूतों के साथ उपयोग किया जा सकता और संचयी रिकॉर्ड्स विकसित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता के लिए दे।

## फोटो

एक नौसिखिया के अनुभवों के प्रलेखन प्रदान करता है, जबकि वे काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी तैयार उत्पादों के हो सकता है, परियोजनाओं मॉडल आदि।

## फोटा के लाभ

### सामालिक कौशल – एक चेकलिस्ट

- वह/वह अपने कार्य को पूर्ण करने में धीमी गति से शिक्षार्थियों के लिए एक समूह कार्य के दौरान धैर्य दिखाता है ?
- वह/वह एक सहपाठी जो कम महसूस कर रही है या तो दिया काम के साथ सामना करने में असमर्थ है मदद करने का प्रयास करता है ?
- वह/वह विचारों और दूसरों के गुणों की सराहना करता है ?

- वह/वह अन्य लोगों के साथ अपने विचारों को साझा करने में सहज महसूस करता है ?
- बालक हमेयाा सराहना की चाहते है ?
- वह/वह आते हैं और पूछते हैं कि गलतियों शिक्षक अपने कार्य में बताया दूर करने के लिए करता है?
- छात्र आँख से संपर्क का एक आरामदायक स्तर को बनाए रखने करता है ?
- छात्र/अपने ही कहानियाँ सुनाते हैं अपनी राय देने का मध्य में हैं/अचानक सलाह प्रदान करता है ?
- वह/वह अशिष्ट भाषा का उपयोग करके कार्य के लिए नियम सेटअप तोड़ने की प्रयास करता है ?
- वह/वह नकारात्मक व्यवहार और परेशान दूसरों प्रदर्शन करने के लिए कोशिश करता है ?

**भावात्मक कौशल -एक चेकलिस्ट**

- एक गतिविधि के दौरान/प्रतियोगिता बच्चे अक्सर कहते हैं, करता है 'मैं नहीं जीत पाओगे मैं सिर्फ एक भाग्यशाली व्यक्ति नहीं हूँ ?
- वह/वह एक समूह काम के दौरान उसकी/उसके क्षमता के अनुसार एक गतिविधि/कार्य का चयन करता है ?
- वह/वह सहपाठियों पर चीख करता है जब s/वह नाराज अथवा परेशान है ?
- वह/वह फिर से काम करने के लिए कोशिश करते हैं, यदि पहले ही प्रयास में असफल घोषित करता है ?
- वह/वह नियमित अभ्यास में डालकर कमजोर क्षेत्रों में सुधार करने की कोशिक करता है ?
- वह/वह कठिन परिस्थितियों के तहत/शिक्षक की मदद साथी लेने प्रयास करता है ?
- वह/वह एकांत पाने के लिए जब तनाव में की कोशिश करता है ?
- वह/वह पढ़ना, बागवानी या तनावपूर्ण समय के दौरान खेलने की तरह कुछ स्वस्थ गतिविधि शुरू करने के लिए प्रयास करता है ?

- वह/वह विचार/विमर्श के दौरान तार्किक बन जाता है ?
- वह/वह प्रणाली या वर्ग/स्कूल के अनुशासन को अनादर करता है ?

NOTES

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) उपकरण का उपयोग करते समय विचार करने की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

(2) अवलोकन के कार्यान्वयन के लिए सुझाव दीजिए।

(3) पेंन्टिग तथा कलात्मक प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

### लघुउत्तरीय प्रश्न

(1) परियोजना से आप क्या समझते हैं?

(2) पोर्टपोलियो किसे कहते हैं ?

(3) आत्म मूल्यांकन शीट्स क्या है ?

●●

# 18 आंकलन

NOTES

## अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री


- प्राक्कथन
- सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन के उद्देश्य
- इकाई परीक्षण
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रयोग
- नवीन परीक्षण
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण के प्रश्नो के प्रकार
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विशेषताएँ
- परीक्षण योजना
- परीक्षापयोगी प्रश्न


**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समक्ष सकेंगे—

- सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन के उद्देश्य
- इकाई परीक्षण
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रयोग
- नवीन परीक्षण
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण के प्रश्नो के प्रकार
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विशेषताएँ
- परीक्षण योजना

NOTES

## प्राक्कथन

मूल्यांकन अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षा के साथ ही आरम्भ हो जाती है। शिक्षा के सभी रूपों के साथ (औपचारिक/अनौपचारिक) मूल्यांकन भी चलता रहता है। मूल्यांकन का अपना उद्देश्य होता है जो शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने की सीमा को बताता रहता है। यही तो प्रतिपुष्ट व पुनर्बलन को भी बल प्रदान करता है जिनके द्वारा शिक्षण तथा अधिगम की प्रक्रियाएँ चलती हैं। सामाजिक विषयों (इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र व अर्थशास्त्र) में विद्यार्थी इनके उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक करता है इसकी जानकारी मूल्यांकन से ही मिलती है। मूल्यांकन की जितनी विधि या प्रविधि अब तक खोजी जा चुकी हैं सभी इन विषयों में लागू होती हैं। मापन द्वारा निर्मित उपलब्धि परीक्षण पर एक मात्रात्मक विवरण विद्यार्थी का प्राप्त किया जाता है जबकि मूल्यांकन द्वारा इसके साथ-साथ गुणात्मक विवरण भी प्राप्त हो जाता है। जबकि मूल्यांकन द्वारा इसके साथ-साथ गुणात्मक विवरण भी प्राप्त हो जाता है। अत: छात्र अपने जीवन में किमना आत्मसात कर सकेगा इसके भी अनुमान उनके परिणामों से लग जाते हैं। सामान्य उद्देश्य पूरे जीवन से देश की नागरिकता, राजनैतिकता एवं संस्कृति के अनुरूप होते हैं जिनके निर्धारण के समय ही मूल्यांकन प्रविधि भी शिक्षाविद् निश्चित कर लेते हैं कि किस मापनी पर इनकी प्राप्ति मापी जा सकेगी ? जब यह सभी विषय अलग-अलग शिक्षण के रूप में प्रशिक्षणार्थियों को पढ़ाये जाते थे तब इनकी प्राप्ति अलग-अलग विषय के अनुरूप मापी जाती थी किन्तु जब इनका समावेश साथ में करके सामाजिक विज्ञान शिक्षण के रूप में कर दिया गया है तो इनकी समावेश साथ में बढ़ जाती है, क्योंकि ये विषय क्यों समाहित किये गये ? कैसे सम्बन्धित हैं ? और क्यों इन्हें मिलाकर सामाजिक विज्ञान कहा गया ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर ही इकट्ठे करना विषय शिक्षण का अधिगम हैं। इन्हीं से जुड़े हुए उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा का मापन ही इनका मूल्यांकन है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान के शिक्षण से अपने ज्ञान को कहाँ तक फैला सका। पहले भिन्न-भिन्न विषयों के शिक्षण का ज्ञान रखता था। अब तो उसे सभी को मिलाकर ही देखना है जिसका श्रेणीकारक मूल्यांकन है।

**सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन के उद्देश्य** (Purposes of Evaluation is Social Studies)—सामाजिक विज्ञान के शिक्षण हेतु मूल्यांकन क्यों जरूरी है? इसी को निर्धारण करने के लिए मूल्यांकन के उद्देश्यों पर विचार समाचीन लगता है वैसे लेखक के विचार से मूल्यांकन वेह उद्देश्य सामाजिक विज्ञान में अग्रलिखित होते हैं—

(1) **वृद्धि तथा विकास की जानकारी**—मूल्यांकन की मदद से यह ज्ञात किया जाता है कि विद्यार्थी निर्धारित पाठ्यक्रम को कितना प्राप्त कर लिया है। अत:

उसके ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई और उस ज्ञान को व्यवहार में ले आने में कहाँ तक सफल होगा इत्यादि जानकारी मूल्यांकन की प्रापत होती है।



(2) **अवरोध का ज्ञान**—मूल्यांकन यह जानकारी भी देता है कि विद्यार्थी को ज्ञानार्जन में कहाँ-कहाँ अवरोध पैदा हो रहा है जिसके निदान में हम उपचार प्रदान कर सकते हैं।

(3) **वैयक्तिक विभिन्नता**—सामाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र तथा अर्थशास्त्र विषयों का अध्ययन किया जाता है अब देखना है कि हमारा विद्यार्थी चारों विषयों में अपनी पकड़ समान दर से बनाये हुए है अथवा कोई विशेष क्षेत्र ही उसकी पकड़ में हैं। इस प्रकार मूल्यांकन से हमें यह ज्ञात हो जाता है कि विद्यार्थी की अपने तथा अपने समूह में क्या स्थिति है जिसके हिसाब से उसे उपचारित किया जा सकता है।

(4) **अधिगम प्रेरण**—विद्यार्थी के सन्दर्भ मूल्यांकन सामाजिक विषयों की उपलब्धि को व्यक्त करता है जिससे उसकी अधिगम की दरज्ञात होती है और वह प्रेरित होकर अपने अधिगम को अग्रिम बढ़ाता है।

(5) **शिक्षण प्रभावशीलता का ज्ञान**—अध्यापक अपने पाठ को कक्षा में जाने से पूर्व पाठ योजना बनाकर एक व्यूह रचना कर लेता है जिसके अनुसार कहा शिक्षण करता है जिसके प्रभावशीलता कहाँ तक बनी रहती है इसका ज्ञान भी मूल्यांकन के माध्यम से होता है।

(6) **शिक्षण के सुधार**—शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर का ज्ञ्ज्ञन मूल्यांकन करता है जिससे उसके शिक्षण में सुधार होता है, क्योंकि प्रभावशीलता की मात्रा ही अध्यापक को अपने व्यूह के परिवर्तन या समूह हेतु बाध्य करती है।

(7) **पाठ्यक्रम में सुधार**—मूल्यांकन द्वारा पाठ्यक्रम की सार्थकता भी प्रमाणित की जाती है। जिससे समय की माँग की अनुसार पाठ्यक्रम में बदलाव या सुधार किया जा सकता है।

(8) **सहायक सामग्रियों की प्रभावशीलता का ज्ञान**—अध्यापक द्वारा कक्षा में शिक्षण के दौरान जिन शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग किया गया वे कहाँ में शिक्षण के प्रभावशाली बना सका इसका ज्ञान भी मूल्यांकन द्वारा होता है। जिसकी मदद से सहायता सामग्रियों में परिवर्तन किया जा सकता है।

(9) **व्यावसायिक निर्देशन में सहायक**—मूल्यांकन की सहायता से व्यवसाय के स्तर पर कौन से निर्देशन की जरूरत होती है। इसका निर्धारण भी विभिन्न तकनीकों द्वारा किया जा सकता है तथा यह भी स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षण

व्यवसाय कह सफलता छात्र किस स्तर तक पर सकेंगे यह निर्देशन भी मूल्यांकन द्वारा अनुमानित किया जा सकता है।



**(10) मानकों का निर्धारण**—मूल्यांकन की मदद से व सन्दर्भित बिन्दु निश्चित किये जा सकते हैं। जिनके आधार पर परीक्षण से प्राप्त परिणामों की व्याख्या की जा सकती है वे मानक कक्षा, आयु अथवा स्टैन्डर्ड प्रकार के हो सकते हैं। वैसे अधिकतर इनके प्रतिशत मानव ही आज तैयार किये जाते हैं।

**संरचनात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन** (Formative and Summative Evatuation)—मिचैल स्क्रीवेन (Michel Scriven) ने 1967 में मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य (शैक्षिक निर्णय लेने में मदद करना है तथा मूल्यांकनकर्ता के अन्तिम लक्ष्य शिक्षा में सुधार लाना है को ध्यान में रखकर मूल्यांकन को दो प्रमुख भागों में विभक्त है।

**(1) संरचनात्मक** (Formative) **मूल्यांकन**—संरचनात्मक मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम, योजना, प्रक्रिया, सामग्री की प्रभावशीलतागुणवत्ता वांछनीयता एवं योग्यता तथा उपयोगिता का मूल्यांकन अन्तिम रूप देने के पूर्व ही किया जाता है जिससे उसकी संरचना की कमियों को दूर किया जा सके। जैसे छात्राध्यापक को पूरी पाठ-योजना पढ़ाने से पूर्व कौशलों का प्रशिक्षण माइक्रोटीचिंग के रूप में कराया जाता है जिससे उसकी कक्षा शिक्षण की संरचना अच्छी हो सके। सामाजिक विज्ञज्ञन में शिक्षण के पूर्ण करायी जाने वाली ड्रिल टीचिंग उसकी भविष्य में की जाने वाली कक्षा शिक्षण हेतु प्रमुख रूप से तीन बातों पर ध्यान दिया जाता है। (1) शैक्षिक कार्यक्रम या सामग्री के विभिन्न अंगों के गुण व दोषों के सम्बन्ध से स्पष्ट प्रमाण प्राप्त करना है। (2) इन प्रमाणें के आधार पर कार्यक्रम या सामग्री की कमियों को सम्मुख रखना। (3) इन कमियों को दूर करके कार्यक्रम या सामग्री को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

**संरचनात्मक मूल्यांकन के कार्य**—संरचनात्मक मूल्यांकन के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं—

(1) शिक्षा सत्र के दौरान समय-समय पर छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करना।

(2) छात्रों एवं अध्यापकों को प्रतिपुष्टि प्रदान करना।

(3) छात्रों को व्यवस्थित करने के लिए प्रेरित करना।

(4) अध्यापकों को अपनी शिक्षण विधियों के सुधार करने में।

(2) **योगात्मक मूल्यांकन** (Summative Evaluation)—सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के बाद या सत्रोपरान्त किया जाने वाला मूल्यांकन योगात्मक मूल्यांकन कहलाता है। योगात्मक मूल्यांकन से अभिप्रतिय पूर्वनिर्मित शैक्षिक कार्यक्रम, योजना अथवा सामग्री की समग्र वांछनीयता ज्ञात करने की प्रक्रिया से है। अत: योगात्मक मूल्यांकन विगत वर्षो में चल रही प्रवेश विधि, पाठ्यक्रम आदि को आने वाले समय में जारी रखने अथवा न रखने की दृष्टि से किया जा सकता है, जैसे—पूर्वाचन, विश्वविद्यालय जौनपुर द्वारा एक सेमिनार राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊँ, जौनपुर में आयोजित की गयी जिसका शीर्षक था कि 'यू.जी.सी. द्वारा प्रस्तावित बी. एड/एम.एड पाठ्यक्रम पर विचार विमर्श' जिस पर विद्वतावृन्दों ने कुछ अनावश्यक तथ्यों को बाहर किया और कुछ जरूरी तथ्यों को उनके स्थान पर जोड़ा और इस प्रकार एक अन्तिम रूप देपे से जुड़ी थीं जो कि योगात्मक मूल्यांकन कही जायेगी। इस प्रकार योगात्मक मूल्यांकन उपलब्ध विकल्पों के गुण-दोषों का आंकलन करके किसी एक सबसे अधिक उपयुक्त विकल्प को ज्ञात करने की प्रक्रिया है।

**योगात्मक मूल्यांकन के कार्य**—योगात्मक मूल्यांकन के कार्य अग्रलिखित हैं—

(1) पाठ्यक्रम की समाप्ति पर मूल्यांकन करता है।

(2) वार्षिक परीक्षा प्रणाली का रूप है।

(3) विकल्पों की उपयुक्तता को बताता है।

(4) सामाजिक विज्ञान के प्रभावी शिक्षण विधि का निर्धारण करता है।

इस प्रकार योगात्मक मूल्यांकन दीर्घकालीन निर्णयों के लेने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

**इकाई परीक्षण** (Unit Test)—सामाजिक विज्ञान का शिक्षण अपने पाठों को कुछ इकाइयों में विभाजित लेता है जिन्हें इकाई योजना के तहत छोटे-छोटे प्रकरणों में बाँटता है और प्रत्येक प्रकरण से सम्बन्धित विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण करता है जा पहले ज्ञान से सम्बन्धित होती हैं। इन विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विभिन्न शिक्षण विधियों में से एक या दो प्रमुख शिक्षण विधि का प्रयोग करता है एवं साथ ही सहायक सामग्रियों (चित्र फाइल) इत्यादि तैयार करता है और इनकी सहायता से प्रकरणों पर पाठ-योजना बनाता है तथा कक्षा शिक्षण करे हुए पुनरावृत्ति के प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन करता है कि विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई ? इस प्रकार प्रकरणों पर पुष्टिकरण मूल्यांकन है और आखिर में एक परीक्षण पूरी इकाई के शिक्षाणोपरान्त बनाता है जो योगात्मक मूल्यांकन है। इस प्रकार इकाई परीक्षण

अपने इकाई का योगात्मक मूल्यांकन है जबकि पूर्ण पाठ्यक्रम हेतु संरचनामक मूल्यांकन हो जाता है।

NOTES

**Role Play Action**—सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ अपने पाठ का निर्माण प्रति कौशल घटकों को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न करती हैं जो अपने ही विषय के 7, 8 छात्रों के समूह को पढ़ाते हैं जिस पर पूरी प्रक्रिया कक्षा की चलायी जाती है और 5 से 7 मिनट में यह देखा जाता है कि विद्यार्थी कहाँ तक अपने कौशल में सफल रहता है इसी के आधार पर वह अपने को अभ्यास कराता है और अन्तिम रूप से तैयार होकर वास्तविक कक्षा में जाता है। इस प्रकार पूरा पाठ ड्रिल करने के बाद छात्राध्यापक अपने आपकों पूरी तरह से सन्तुष्ट कर लेता है।

**सामाजिक विज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रयोग** (Use of Evaluation Process in Social-Science teaching)—सामाजिक विज्ञान को अपने विषय में मूल्यांकन प्रक्रिया अपनाने हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं का अनुसरण करना पड़ता है।

**A. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण**—मूल्यांकन प्रक्रिया के इस सोपान के अन्तगर्त शिक्षक को सामाजिक शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करना पड़ता है।

**जैसे**—प्रकरण—सामाजिक विज्ञान के महत्त्व

**शिक्षण-उद्देश्य**—इस प्रकरण के जुड़े हुए निम्नलिखित उद्देश्य ही सकते हैं। जिनका मूल्यांकन करना है—

**B. ज्ञान (Knowledge)**—

(i) विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल व नागरिक शास्त्र विषयों का भिन्न-भिन्न ज्ञान प्रदान करना।

(ii) अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र के विषय क्षेत्र व सीमाओं का ज्ञान प्राप्त करना।

(iii) विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल एवं नागरिकशास्त्र के आपसी सम्बन्धों का ज्ञान प्रदान करना।

(iv) विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल एवं नागरिकशास्त्र के अध्ययनों का समय-समय पर हुए सुधारों से परिचित करना।

(v) सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित अन्य जानकारी प्रदान करना।

**C. कौशल** (Skill)—(i) विद्यार्थियों में अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल एवं नागरिकशास्त्र की साक्षात्कार प्रविधियों का कौशल विकसित करना।

(i) छात्रों को सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित आँकड़ों के संगठन और विश्लेषण करने के कौशल प्रदान करना।

(ii) छात्रों में सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित आँकड़ों के संकलन तथा उनसे परिणाम प्राप्त करने का कौशल विकसित करना।

(iv) अर्थशास्त्र से सम्बन्धित नियमों इत्यादि के ग्राफीय निरूपण के कौशल को विकसित करना।

(v) भौगोलिक नक्शे, चित्र मॉडल इत्यादि को तैयार करने तथा विश्लेषण करने का कौशल विकसित करना।

**D. अभिवृत्ति** (Attitude)—विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान के प्रति नियोजन से दृष्टिकोण का विकास करना।

(ii) अर्थशास्त्र की प्रणालियों के प्रति दृष्टिकोण का विकास करना।

(iii) भौगोलिक परिदृश्य के प्रति दृष्टिकोण पैदा करना।

(iv) जलवायु इत्यादि से सम्बन्धित फसलों एवं इत्यादि के महत्व से परिचित कराना।

(v) नागरिकशास्त्र के अध्ययन की जरूरत से परिचय कराना।

**E. रूचि** (Interest)—

(i) विद्यार्थियों सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के प्रति रुचि पैदा करना।

(ii) विद्यार्थियों में अर्थशास्त्र, भूगोल व इतिहास तथा नागरिकशास्त्र से सम्बन्धित विषय सामग्री में रुचि पैदा करना।

(iii) भौगोलिक नक्शे इत्यादि का सचित वर्णन करने तथा नक्शे, चित्र इत्यादि बनाने की कला में रुचि उत्पन्न करना।

(iv) विद्यार्थियों में प्राकृतिक फसलों व वनों के प्रति लगाया पैदा करना।

(v) नागरिक के कर्त्तव्यों तथा अधिकार इत्यादि जानकारी के प्रति विद्यार्थियों में रुचि पैदा करना।

**उद्देश्य आधारित शिक्षण क्रियाओं का निर्धारण**—इस सोपन में मूल्यांकनकर्ता उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयोग किये जाने ाले संरचना, व्यूह एवं योजना से सम्बन्धित

NOTES

NOTES

उपकरणों, तरीकों इत्यादि का मूल्यांकन करता है जैसे—

(1) शिक्षण पद्धतियों का अनुकूलन
(2) उचित शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग
(3) एकत्रित आँकड़ों के प्रयोग
(4) सहायक सामग्रियों की प्रासंगिकता
(5) शैक्षिक उपकरणों के प्रयोग
(6) शिक्षण चरणों का निर्धारण
(7) पुनर्बलक के प्रयोग का समय
(8) कक्षा स्थिति का निर्धारण
(9) अन्तर्क्रिया का विश्लेषण
(10) श्यामपट्ट का प्रयोग आदि।

**व्यवहार परिवर्तन का मूल्याकन**—शिक्षक चूँकि अपने पाठ का विकास विद्यार्थी के पहले ज्ञान को आधारित करते हुए आगे बढ़ा था अब वह देखना चाहता है कि उसके पूर्व व्यवहार का पथ अन्त्य-व्यवहार तक पहुँचा या नहीं, यदि पहुँचा तो किसी स्थान तक ? इसका मूल्यांकन इस सोपान के अन्तगर्त किया जाता है। जिसके लिए शिक्षक निम्नलिखित प्रविधियों का उपयोग कर सकता है—

(1) निरीक्षण (Observation),
(2) मौखिक परीक्षा (Oral Test),
(3) लिखित परीक्षाएँ (Written Test),
(4) प्रयोगात्मक परीक्षा (Practical Examination)
(5) निदानात्मक परीक्षा (Diagnostic test),
(6) उपचारात्मक परीक्षण (Treatment Test)

**सामाजिक विज्ञान व परीक्षण**—सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के बाद जाँच के निए अधोलिखित प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग किया जात है।

(i) मौखिक परीक्षा (Oral test),
(ii) लिखित परीक्षण (Written test),
(iii) वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Objecticve test),
(iv) निबन्धात्मक परीक्षण (Essay type test),
(v) उपचारात्मक परीक्षण (Remedial teaching)

(i) **मौखिक परीक्षण**—इस परीक्षा की सहायता से विद्याथ्री की सामाजिक विज्ञान में दक्षता कुशलता एवं शब्दों में अपने भावों को व्यक्त करने की योग्यता तथा भाषा सम्बन्धी त्रुटियों का आंकलन किया जाता है। जिससे उनकी मानसिक प्रक्रिया और सोचने की शक्ति का मूल्यांकन हो सकता है। इस परीक्षा की सहायता से कठिनाइयों का निदान किया जाता है जिन्हें दूर करने के लिए उपचार की व्यवस्था की जा सकती है। इसके द्वारा अन्तर्मुखी छात्रों का मूल्यांकन सही नहीं हो पाता है। साथ ही परीक्षक मनमानी तरीके से अंक प्रदान कर सकता है, क्योंकि यह मूल्यांकन प्रक्रिया आत्मनिष्ट प्रकार की है।

(ii) **लिखित परीक्षा**—सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के उपरान्त, अतः सत्रीत पर एक वार्षिक परीक्षा का आयोजन होता है जिसके द्वारा पूर्ण वर्ष में पढ़ाये गये ज्ञान की अर्जन सीमा को मापा जाता है। विद्यार्थी ने कितना अर्जन किया है, यह प्रमुख है कि यह परीक्षा दोनों प्रकार की हो, (वस्तुनिष्ठ व आत्मनिष्ठ), क्योंकि दोनों की मदद से ही ज्ञान व समझा दोनों का परीक्षण सम्भव है।

(iii) **परम्परागत परीक्षण या निबन्धात्मक परीक्षण**—पढ़ाये गये ज्ञानसर्जन की माप हेतु प्रयोग किया जाने वाला परम्परागत परीक्षण यी बताता है कि विद्यार्थी तथ्यों को अपनी समझ से अपने शब्दों में अभिव्यक्ति कर लेता है। विद्यार्थी द्वारा लेखन में होने वाली गलतियों का मूल्यांकन भी आसानी से हो जाता है। छात्रों की रचनात्मक शक्ति व तर्कशक्ति का मूल्यांकन हो जाता है। इससे समय व श्रम की बचत होती है जिसके आधार पर सफलता की भविष्यवाणी भी की जा सकती है। इसके प्रमुख दोष हैं कि विद्यार्थी अनावश्यक तथ्यों का मरने में लग जाता है और अधिकांश अनाप-शनाप तथ्यों को लिखकर कार्य करता है। विद्यार्थी का उत्तर भर वैसा ही है तो वह अधिक अंक देता है। यदि अलग है तो कम अंक प्रदान करता है। अतः परीक्षक अंकन में समानता नहीं रखते हैं जिससे विद्यार्थियों का मूल्यांकन सही-सही नहीं हो पाता है।

(iv) **नवीन-परीक्षण या वस्तुनिष्ठ परीक्षण**—पराम्परागम परीक्षण में आने मुख्य दोष परीक्षकों के अंकन को देखते हुए जार्ज फिसर ने 1864 में पहला वस्तुनिष्ठ परीक्षण प्रयोग किया। जिन्हें 1894 में डॉ. जे. एम. राइस के व्यवहार में लाकर उसके महत्त्व को बताया। भारत में भी प्रवेश परीक्षाएँ और अन्य कुछ परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ परीक्षण का प्रयोग किया जा रहा है, परन्तु निबन्धात्मक परीक्षण को पूर्णरूप से हटाया नहीं जा सकता है, क्योंकि इनके द्वारा जिन तथ्यों या गुणों का मूल्यांकन होता है उनका मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ परीक्षण से सम्भव नहीं है। वस्तुनिष्ठ परीक्षण के प्रयोग से (Personal error) व्यक्तिगत गलती

को हटाया जा सकता है क्योंकि कोई भी परीक्षक अंक प्रदान करेगा सभी के अंकों में समानता होगी। वस्तुनिष्ठ परीक्षण का निर्माण कठिन है, क्योंकि उसकी तकनीकी कसौटियाँ हैं जबकि निबन्धात्मक परीक्षण आसानी से तैयार किये जा सकते हैं।

**वस्तुनिष्ट परीक्षण के प्रश्नों के प्रकार**—वस्तुनिष्ठ के प्रश्नों को निम्नलिखित प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है।

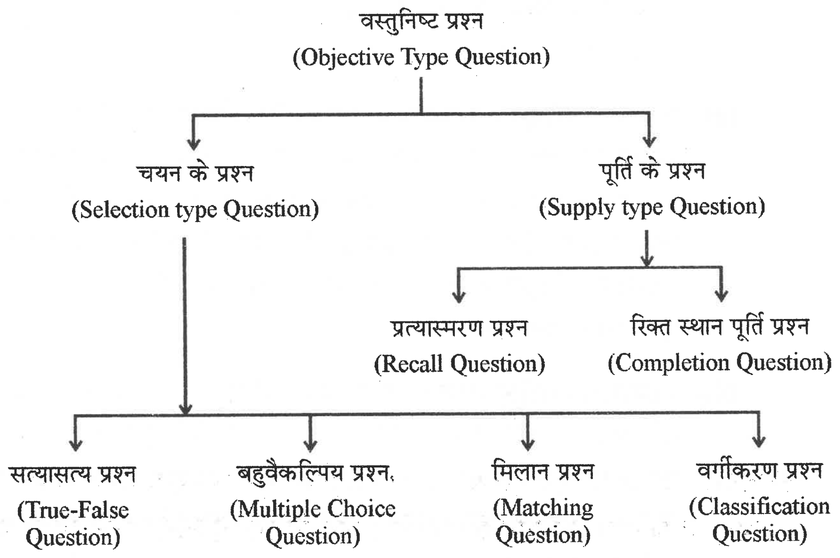


**चयन के प्रश्न**—वस्तुनिष्ठ परीक्षण में चयन के प्रश्नों में विभक्त कई सम्भावित उत्तर दयि जाते हैं जिनमें से सही उत्तर का चयन विद्यार्थियों को करना पड़ता है। इन्हें 4 वर्गों में विभक्त किया।

**(1) सत्य/असत्य प्रश्न**—इसमें प्रश्न के सम्मुख सत्य/असत्य लिखा रहता है विद्यार्थी को सही अनुक्रिया हेतु (√) का निशान सत्य या असत्य पर लगाना पड़ता है।

**जैसे**—(i) सामाजिक विज्ञान विद्याथियों को नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। सत्य/असत्य

(ii) नागरिकशास्त्र तथा भूगोल में सह–सम्बन्ध बहुत कम होता है। सत्य/असत्य आदि।

**(2) बहुवैकल्पिक प्रश्न**—इस प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में एक ही प्रकार के कई उत्तर दिये जाते हैं जिनमें से एक ही सही का निशान लगाना पड़ता है।

जैसे— (i) भारत की जलवायु है—

(अ) मानसूनी (ब) आर्द्र

(स) उष्ण (द) उपोष्ण।

(ii) अर्थशास्त्र के जनक हैं—

(अ) कौटिल्य (ब) एडम स्मिथ

(स) चाणक्य (द) कोई नहीं।

NOTES

**(3) मिलान प्रश्न**—मिलान प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में दो स्तम्भ भिन्न-भिन्न होते हैं। जिसमें सही जोड़े बनाने पड़ते हैं।

जैसे—

| **प्रथम स्तम्भ** | **द्वितीय स्तम्भ** |
|---|---|
| अर्थशास्त्र | भूगोल |
| राष्ट्रपति | वैज्ञानिक |
| रिटर | कौटिल्य |
| बीरबल साहनी | ए.पी.जे.कलाम |

**(4) वर्गीकरण के प्रश्न**—इस प्रकार के वस्तुनिष्ट प्रश्नों में एक संगत शब्दों का समूह दिया जाता है जिनमें से एक शब्द असंगत होता है जिसे छाँटना पड़ता है।

जैसे—(1) मार्शल, पीगू, राबिन्सन, रिटर; (2) लेखपाल, कानूनगो, तहसीदार, अध्यापक की सहायंत से देना पड़ता है अथवा खाली स्थान के वाक्स दिये जाते हैं जिन्हें भरना पड़ता है।

(1) भारत के राष्ट्रपति इससे पूर्व क्या थे ?

(2) ग्रेशम का नियम किसने दिया आदि।

(3) गन्ने की जलवायु ....... होती है।

(4) रजिया सुल्तान ........ की पुत्री थी।

**वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विशेषताएँ**—वस्तुनिष्ठ परीक्षण की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

(1) वस्तुनिष्ठ प्रकृति का परीक्षण होता है जिससे व्यक्तिगत गलती नहीं होती है।

(2) वैधता ज्यादा होती है जिससे मापन की स्थिर गलती नहीं होती है।

NOTES

## ब्लूप्रिण्ट (त्रिदिश सूचक चार्ट)

ब्लूप्रिन्ट (त्रिदिश सूचक चार्ट)

| उद्देश्य | उद्देश्य | | | | | | | | | | | | योग 100 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रश्नों के प्रकार | ज्ञान 36% | | | | बोध 34% | | | | प्रयोग 30% | | | | |
| प्रकरण | T.F. | M.T. | M.C. | R.T. | T.F. | M.T. | M.C. | R.T. | T.F. | M.T. | M.C. | R.T. | |
| मुद्रा | 1 | — | 1 | — | 1 | 1 | — | — | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| बैंकिंग | 1 | 2 | — | — | 1 | 1 | 1 | 2 | — | 1 | 1 | — | 10 |
| प्रबन्धन | 1 | — | 1 | 1 | — | 2 | — | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 10 |
| विनिमय | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | — | — | 10 |
| प्रतिफल | 1 | 2 | 1 | 2 | 3 | 1 | 2 | 2 | 2 | 1 | 1 | 2 | 20 |
| उत्पादन | 1 | 2 | 2 | 2 | 1 | — | 3 | 3 | 4 | — | — | 2 | 20 |
| गतिशीलता | 2 | 3 | 4 | 2 | 1 | — | 2 | 1 | 1 | — | 1 | 4 | 22 |
| योग | 2 | 10 | 10 | 8 | 8 | 6 | 10 | 10 | 10 | 5 | 5 | 10 | 100 |

(3) विश्वसनीयता अधिक होता है, क्योंकि चरों द्वारा होने वाली गलतियाँ कम होती है।

(4) मानक तैयार करना आसान होता है जिससे व्याख्यात्मक गलती कम हो जाती है।

(5) प्रश्नों की संख्या अधिक हाने पर समस्त पाठ्यक्रम पर पूछे जाते हैं।

(6) भाषा व सुलेख महत्त्वहीन होता है।

(7) परीक्षण का निर्माण कठिन होता है किन्तु अंकन सरल होता है।

[**नोट**—सबसे बड़ा दोष है कि ''नकल कराना आसान होता है।'' वैसे दोनों परीक्षाएँ अपूर्ण हैं इसलिए मूल्यांकन हेतु दोनों का प्रयोग मिला-जुलाकर करना चाहिए।]

**वस्तुनिष्ठ परीक्षण निर्माण के पद**—वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के निर्माण में कुल 4 पद अपनाये जाते हैं जिन्हें जे. एस. रॉस ने अपनी मापन उवं मूल्यांकन की किताब में दिया है। उन्हीं पदों के अनुरूप ही परीक्षण तैयार किया जाता है।

**(1) परीक्षण योजना** (Planning the Test)—इस पद में परीक्षण से सम्बन्धित विषय वस्तु, शिक्षण उद्देश्य, प्रश्नों के प्रकार एवं संख्या समयावधि व अंकन विधि इत्यादि के आधार पर एक ब्लू प्रिंट का निर्धारण कर लिया जाता है।

[नोट—

T.F = सत्य/असत्य

M.T. = मिलान प्रकार के प्रश्न

M.C. = बहुवैकल्पिक प्रश्न

R.T. = प्रत्यास्मरण के प्रश्न

संशोधित प्राप्तांक $= R - \frac{W}{K-1}$

R = विद्यार्थियों के सही उत्तरों की संख्या

W = विद्यार्थियों के गलत उत्तरों की संख्या

K = प्रश्न में दिये गये विकल्पों की संख्या]

NOTES

NOTES

**(2) प्रश्नों की रचना करना** (Preparing the Items)—परीक्षण के ब्लूप्रिंट बन जाने के पश्चात् प्रश्नों का निर्माण किया जाता है जो ब्लूप्रिंट पर आधारित होते हैं। जिसमें द्विअर्थो के

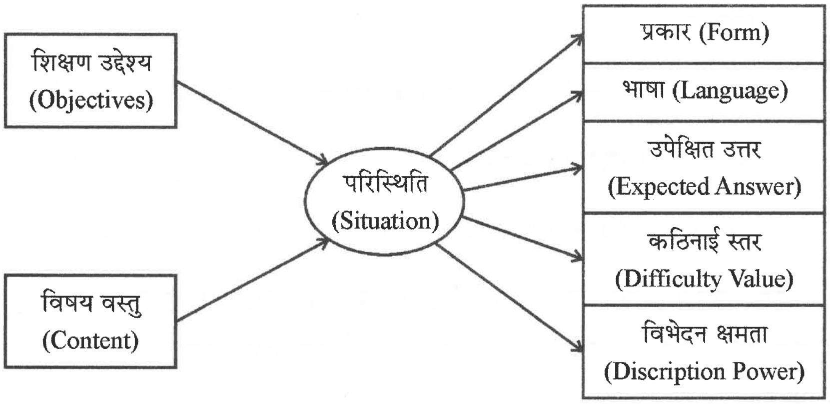


शब्दों तथा संकेतकों से बचना चाहिए वैसे निर्धारित प्रश्नों की संख्या से दोगुने सवालों को तैयार किया जाता है जिसके लिए R. H. Dave (आर. एच. दवे) का मॉडल प्रयोग किया जा सकता है।

| आधार | आधार के सृजनात्मक विश्लेषण का परिणाम विचार के रूप में |
|---|---|
| *Bases* | (*Product of Creative Synthesis of the bases* in *the form of Idea*) |

| विचार को प्रश्न का रूप देने का कौशल |
|---|
| (*skill of transformIng the Idea* in *the form of a test Item*) |

**(3) प्रश्नों का चयन करना** (Selecting the Items)—तैयार किये गये सवालों की जाँच हेतु पदों का विश्लेषण किया जाता है। जिसके लिए दो अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है—

(1) प्रारम्भिक जाँच स्तर (Pre-Tryout Stage) (2) वास्तविक जाँच स्तर (Tryout Stage) सम्बन्धी त्रुटियों को दूर कर लिया जाता है। कभी-कभी विद्याथियों पर प्रशासित करके ही इन कमियों को दूर कर लेते हैं फिर वास्तविक जाँच स्तर पर तकनीकी विशेषताओं को ज्ञात किया जाता है जिन्हें पद विश्लेषण कहते हैं। जिसमें पद विश्लेषण हेतु कठिन स्तर

(Difficulty value), विभेदन क्षमता (Description Power) की गणना की जाती है जिससे पद वैधता स्पष्ट हो जाती है कि परीक्षण के एकांश कमजोर तथा अच्छे छात्रों में कहाँ तक विभेद कर पाते हैं। पद विश्लेषण हेतु परीक्षण को प्रतिदर्या समूह पर प्रशासित करके अंकन किया जाता है फिर अंकों के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं और ऊपर से 27% एवं नीचे से 27% छात्रों की पुस्तिकाओं को लेकर उच्च्व एवं निम्न समूह बनाते हैं जिनके अंकों के आधार पर प्रत्येक एकांश का विश्लेषण करते हैं।



$$\text{D.V.} = \frac{(R_H + R_L)}{2n} \times 100$$

$R_H$ = प्रश्न के लिए उच्च्व समूह के सही उत्तरों की संख्या

$R_L$ = प्रश्न के लिए निम्न समूह से सही उत्तरों की संख्या

$n$ = प्रत्येक समूह के छात्रों की संख्या जो समान होनी चाहिए।

D.V. = कठिनाई स्तर

$$\text{D.P.} = \frac{R_H - R_L}{n}$$

D.P = विभेदन शक्ति

[नोट—40 से 60% कठिनाई स्तर के सवाल अच्छे माने जाते हैं और विभेदन के प्रश्न 0.50 से ऊपर के अच्छे माने जाते हैं। जो कथन करीब-करीब आते हैं उनमें सुधार किया जाता है और बहुत कठिन तथा बहुत सरल सवालों को छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार परीक्षण को तैयार कर लिया जाता है।]

**(4) परीक्षण का मूल्यांकन** (Evaluating the test)—पद विश्लेषण के बाद चयनित प्रश्नों को व्यवस्थित करके अन्तिम प्रारूप तैयार करते हैं और इनके आधार पर विश्वसनीयता, वैधता सुनिश्चित किया जाता है तत्पश्चात् परीक्षण निर्देशिका तैयार कर ली जाती है।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसके उद्देश्य का वर्णन कीजिए।

(2) सामाजिक विज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

(3) वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के परीक्षण के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

### लघुउत्तरीय प्रश्न

(1) नवीन परीक्षण से आप क्या समझते हैं ?

(2) परीक्षण योजना किसे कहते हैं ?

(3) संरचनात्मक मूल्यांकन किसे कहते हैं ?

# 19 अध्यापक निर्मित परीक्षा का निर्माण



**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**


- प्राक्कथन
- अधिगम के उद्देश्य
- इन्टरनेट के माध्यम से ज्ञान में वृद्धि
- संगोष्ठी एवं सम्मेलन में शिक्षक की सहभागिता
- ऑन-लाइन सहभागिता
- क्रियात्मक अनुसंधान
- पत्रिका, अखबार एवं जूडी पिरोडिकल में लेख-लिखना
- पाठ्य-पुस्तक की संकल्पना एवं विश्लेषण
- परीक्षा का विश्लेषण
- परीक्षापयोगी प्रश्न


**उद्देश्य**—इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समक्ष सकेंगे—

- अधिगम के उद्देश्य
- इन्टरनेट के माध्यम से ज्ञान में वृद्धि
- संगोष्ठी एवं सम्मेलन में शिक्षक की सहभागिता
- ऑन-लाइन सहभागिता
- क्रियात्मक अनुसंधान
- पत्रिका, अखबार एवं जूडी पिरोडिकल में लेख-लिखना
- पाठ्य-पुस्तक की संकल्पना एवं विश्लेषण
- परीक्षा का विश्लेषण

## प्राक्कथन

शिक्षक का वृत्ति विकास शिक्षक के जीवन का अभिन्न अंग है और यह जीवन भर होता है। अधिकांश शिक्षक वृत्ति विकास के लिए सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण प्रोग्राम में भागीदारी लेकर अपने वृत्ति का विकास करते हैं, किन्तु सरकार के अतिरिक्त भी ऐसे कई तरीके हैं जिससे शिक्षक अपनी वृत्ति विकास कर सकता है। आज का युग तकनीकी सम्प्रेषण का युग है तथा इन्टरनेट एक बहुत बड़ा साधन है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने क्षेत्र में हो रहे नए ज्ञान का सृजन तथा जानकारी घर बैठे ही प्राप्त कर सकता है। इन्टरनेट की सुविधा का लाभ उठाकर वह भिन्न-भिन्न वेबसाईट में दी हुई सूचना को अर्जित कर अपने शिक्षण-अधिगम में प्रयोग कर सकता है। ऑनलाइन अधिगम द्वारा विभिन्न प्रकार के कोर्स में प्रवेश लेकर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता है तथा इसके अपने ज्ञान को इन्टरनेट की दुनिया के द्वारा दूसरों को लाभ पहुँचा सकता है। ऑनलाइन के द्वारा सहयोगामक समूह तैयार करके ज्ञान का आदान-प्रदान किया जा सकता है संगोष्ठियों का आयोजन तथा भगीदारी करके भी शिक्षक अपने वृत्ति में विकास कर सकता है। इसके अलावा अखबारी शोध-पुस्तिका इत्यादि में लेखन शोध पत्र लिखकर भी वृत्ति विकास किया जा सकता है। इस इकाई में हम विभिन्न ढंगों की चर्चा करेंगे कि एक शिक्षक कैसे अपनी पात्रता को विकसित कर सकें।

**अधिगम के उद्देश्य**—छात्र इस इकाई के अधिगम के बाद

(1) वृत्ति विकास के नवीन तरीकों के बारे में परिचित हो सकेंगे।

(2) वृत्ति विकास के तरीकों का उपयोग करके अपनी योग्यता तथा क्षमता को विकसित कर सकेंगे।

(3) वृत्ति विकास का प्रयाग करके अपने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बना सकेंगे।

(4) वृत्ति विकास की जरूरत को जान सकेंगे।

(5) वृत्ति विकास के ऑनलाइन तरीकों के बारे में जान सकेंगे।

(6) ऑनलाइन तरीकों का प्रयोग करके कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

## इन्टरनेट के माध्यम से ज्ञान में वृद्धि

NOTES

बहुत से राष्ट्रों में स्कूलों की भूमिका व कार्यों में बदलाव आया है एवं इसी कारण शिक्षकों के कार्य में भी परिवर्तन आया है। आज के शिक्षकों से यह उम्मीद की जाती है कि वह बहु-संस्कृतीय कक्षाओं में शिक्षण कार्य सम्पन्न करें, समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत विशिष्ट छात्रों को शिक्षा प्रदान करें, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का प्रभावी रूप से कक्षा में शिक्षण के उपयोग करें, मूल्यांकन एवं जवाबदेही ढाँचे के योजना बनाने में अधिकांश संलग्न रहे एवं स्कूलों को समाज के साथ जोड़ने की कोशिश करते रहें। शिक्षकों की पूर्व-सेवा प्रशिक्षण कितनी भी अच्छी क्यों न हो, किन्तु यह उम्मीद करना कि शिक्षकों को आने वाले व्यवसाय में सभी तरह की चुनौतियाँ का सामना करने की प्रशिक्षण दी जा सकती है यह असम्भव है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण के स्तर को बनाए रखने के लिए व उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों को व्यवस्था में बनाए रखने के लिए यह अत्यन्त जरूरी है कि उन्हें समय-समय पर सेवाकालीन व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

**सेवाकालीन प्रशिक्षण के मुख्य उद्देयश्य—**

(1) अपने विषय-वस्तु पर हुए नवीन ज्ञान के बारे में जानकारी रखना।

(2) शैक्षिक अनुसंधानों में हुई नवीन शिक्षण तकनीकी कौशलों, दृष्टिकोणों एवं उद्देश्यों के बारे में ज्ञान अर्जित करना।

(3) पाठ्यक्रम शिक्षण पद्धति के विभिन्न आयामों में किए गए बदलाव की प्रयोग करने के लिए शिक्षकों में क्षमता का निर्माण करना।

(4) अपने विषय-वस्तु में अर्जित ज्ञान, कौशल शिक्षण पद्धति एवं तकनीक इत्यादि का कक्षा में विद्यार्थी के लिए उपयोग करना।

आज के युग में जहाँ नए ज्ञान का सृजन एवं प्रसार सूचना एवं प्रसार के द्वारा त्वरित होते है वहाँ सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए निर्भर रहना ठीक नहीं है। शिक्षक को चाहिए कि इन्हीं सूचना तथा प्रसार तकनीक का प्रयोग करके वह समय-समय पर अपना व्यवसायिक विकास करता रहे अन्यथा जिन छात्रों को वह पढ़ा रहे हैं वह इसी सूचना तथा प्रसार का प्रयोग करके शिक्षक के कष्ट को गौढ़ बना सकते है।

**NOTES**

इन्टरनेट संचार तथा प्रसारण तकनीक का अभिन्न अंग है। यह कहना असत्य नहीं होगा कि सूचना एवं प्रसारण तकनीक इन्टरनेट का ही पर्यायवाची शब्द बन गया है। आज विभिन्न प्रकार की सेवाऐं इसी इन्टरनेट के उपयोग से लोगों तक पहुँचाई जा रही है। चाहे वह बैंक में खाता खोलना हो या रूपयों का स्थानान्तरण करना हो या घर बैठे सामान की खरीदारी करना हो या रेलवे या हवाई जहाज का टिकट खरीदना हो इन समस्त एवं विभिन्न प्रकार के सेवाओं के लिए इन्टरनेट का प्रयोग होता है। शिखा के क्षेत्र में भी इन्टरनेट का प्रयोग लम्बे समय से हो रहा है। मुक्त विश्वविद्यालय एवं मुक्त विद्यालय इन्टरनेट का प्रयोग करके छात्रों तक भिन्न-भिन्न तरह की सेवायें प्रदान कर रहे हैं जैसे—नाना प्रकार के प्रोग्राम में प्रवेश देना, परीक्षा लेना, परिणाम घोषित करना इत्यादि। पिछले एक दशक में शिक्षा में इन्टरनेट का प्रयोग हित तेजगति से हुआ है। फलस्वरूप अब सभी प्रकार की किताबें, शोध लेख, सहकारी आलेख, इत्यादि अब इन्टरनेट की दुनिया में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो रही है। इसका मुनाफा यह हुआ है कि ज्ञान का विस्फोट होने लगा है और अब हम इन्टरनेट को एक सशक्त अधिगम का माध्यम मानने लगे हैं। इन्टरनेट की दुनिया में अनेक ऐसे वेबसाइट हैं जिनका काम शिक्षा में आए हुए नवीन परिवर्तनों को प्रकाशित करना एवं लोगों तक प्रसार करना ही एक सूत्र कार्यक्रम है।

शिक्षक को शिक्षक प्रक्रिया का एक स्तम्भ माना जाता है। अगर वह अपने आप को इस नवाचार से दूर रखेगा अथवा इन्टरनेट की दुनिया से दूर रहेगा तो अपने ज्ञान, कौशल में वृद्धि नहीं कर पायेगा एवं छात्रों को होने वाले लाभ से वंचित रखेगा। अत: शिक्षक के लिए अत्यन्त जरूरी है कि अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए इन्टरनेट का प्रयोग करें, इन्टरनेट का प्रयोग करके शिक्षक निम्नलिखित व्यावसायिक विकास में मुनाफा उठा सकता है—

(1) बहुत सारे शिक्षण संस्थान विभिनन विषय-वसतुओं पर कोर्स तैयार करके इसे कम-कीमत या मुफ्त में आनलाइन दे रहे हैं, शिक्षक इन कोर्स में प्रवेश लेकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकते है।

(2) बहुत सारे विषय-विशेषज्ञों ने विभिन्न विषय-वस्तुओं पर दिए हुए अपने व्याख्यानों को यू-टयूब अथवा किसी वेब पोर्टलों में रखा है जिसे देख एवं सुनकर शिक्षक न सिर्फ अपना ज्ञान-वर्धन कर सकते वरन् उसे अपने शिक्षण कार्य में भी प्रयोग कर सकते है।

(3) विषय-वस्तुओं से जुड़े हुए समस्त नवाचार एवं अनुसंधान भी इन्टरनेट में उपलब्ध है जिन्हें पढ़कर शिक्षक अपना व्यावसायिक विकास कर सकता है।

(4) शिक्षण-पद्धति, सम्प्रेषण कौशल, समावेशी शिक्षा, सूचना एवं प्रसारण तकनीक में नवाचार, तकनीक का शिक्षा में प्रयोग एवं अन्य विभिन्न विषयामें में आ रहे बदलाव एवं नवाचार के बारे में ज्ञान अर्जित करना एवं उसका प्रयोग शिक्षण संस्थान, छात्रों एवं सह-शिक्षकों के हेतु को लाभ पहुँचाने हेतु शिक्षक काम कर सकते है।

(5) इन्टरनेट की दुनिया में कई सारे संस्थान है जो कठिन प्रकरण को छात्रों को कैसे पढ़ाये इसके बारे में भी जानकारी देते है जिसे शिक्षक आत्मसात करके अपनी कक्षा में सफलतापूर्वक उपयोग कर सकता है।

(6) शिक्षकों की दक्षता एवं क्षमता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रोग्राम का वीडियो में तैयार करके इन्टरनेट में उपलब्ध कराया जा रहा है जिससे अधिकांश शिक्षक लाभन्वित हो सकें।

(7) इन्टरनेट की मदद से शिक्षक अर्जित किया ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार दूसरे शिक्षकों को भी कर सकता है जिससे शिक्षक को कई प्रकार के लाभ हो सकते है।

इन्टरनेट की दुनिया एक आभासी दुनिया है जहाँ शिक्षक समय तथा स्थान की पाबन्दी से मुक्त शिक्षा के विभिन्न स्रोतों व सेवाओं का उपागमन बिना अवरोध एवं आवश्यकता के अनुसार अपनी ज्ञान की वृद्धि के लिए कर सकते है।

## संगोष्ठी एवं सम्मेलन में शिक्षक की सहभागिता

व्यावसायिक विकास किसी भी व्यवसाय के लिए अनिवार्य होता है। शिक्षक-शिक्षा क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्णता और ज्यादा हो जाती है क्योंकि शिक्षक अपने ज्ञान एवं कौशल से छात्र के भविष्य का निर्माण करता है और वहीं छात्र देश के निर्माण तथा सृजन के लिए जिम्मेदार होता है, यह कहना असत्य नहीं होगा कि शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता होता है, इस बात का प्रमाण हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में लिखे हुए इस कथन से मिलता है कि—कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से उच्च नहीं हो सकता है शिक्षक की सतत् व्यावसायिक विकास का मुद्दा आज से करीब 50 वर्ष पहले कोठारी कमिशन की रिपोर्ट में कहा गया था उसके बाद शिक्षक सम्बन्धी राष्ट्रीय आयोग (1983-85) की रिपोर्ट ने इस ओर ध्यान दिलाया कि सेवाकालीन शिक्षा को लेकर ठोस नीति और प्राथमिकता की कमी है और साथ ही शिक्षक भी आवश्यकताओं को व्यवस्थित ढ़ग से नहीं पहचान पाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति

**NOTES**

(1986) जो शिक्षा के लिए एक मील का पत्थर साबित हुई, इस के अनुसार सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा का सेवारत शिक्षा से सतत् रूप से जोड़ा जाए, भारत में प्रमुखत: शिक्षक का व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण प्रोग्राम द्वारा किया जाता है जो कि कम से कम एक सप्ताह से लेकर, अधिकांश तीन सप्ताह के होते है। इन प्रशिक्षण प्रोग्रामों को कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा आयोजित किया जाता है। यह अधिकतर राज्य एवं केन्द्र सरकार विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिए आयोजन करती है, इनमें मुख्यत: जिन विषय-वस्तुओं का चुनाव किया जाता है व समकालीन विषयों से जुड़ा हुआ होता है, जैसे समावेशी शिक्षा-शिक्षण पद्धति, सूचना तथा प्रसारण प्रौद्योगिकी का शिक्षा में प्रयोग, रचनात्मक शिक्षण पद्धति, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन इत्यादि, यह सभी प्रशिक्षण प्रोग्राम मानकीकृत शिक्षक व्यावसायिक विकास प्रतिमान के अन्तर्गत किये जाते है जहाँ कुछ शिक्षक को प्रशिक्षण देकर उन्हें मास्टर ट्रेनर बनाकर बाकी विद्यालयों में भेजा जाता है जहाँ ये स्थानीय शिक्षकों को प्रशिक्षण देते है। इसके अलावा व्यावसायिक विकास के लिए शिक्षक संगोष्ठी व सम्मेलन में सहभागिता लेकर भी अपना विकास कर सकता है। आइए इनके बारे में व्यापकता से सीखते है—

**संगोष्ठी**—सरल शब्दों में अगर इसे परिभाषित किया जाए तो संगोष्ठी लोगों के समूह की एक सभा है जहाँ किसी एक विषय पर विचार-विमर्श तथा विचार विनिमय किया जाता है। संगोष्ठी, समाचार संगोष्ठी, शैक्षणिक संगोष्ठी इत्यादि इस तरह के समारोह में प्रतिभागियों को चित्रित विषय में विचार-विमर्श में जुड़ना होता है जो अधिकतर संवादात्मक होते हैं।

संगोष्ठी के एक या अनेक उद्देश्य हो सकते है जैसे कई संगोष्ठियों का आयोजन इसलिए कियाजाता है कि उसका उद्देश्य प्रतिभागियों की विशेष विषय-वस्तु पर अधिक जानकारी प्राप्त हो जिससे उसे उस विषय को समझने में आसानी हो, कुछ संगोष्ठी का यह उद्देश्य होता है कि वह प्रतिभागियों में ज्ञान एवं कौशल का वर्णन करें। कभी-कभी संगोष्ठी का उद्देश्य लोगों में प्रेरणा जागरूक करना होता है जिससे वह ज्ञान और कौशल जो संगोष्ठी में अर्जित कए है उन्हें कार्यान्वित कर सकें या संगोष्ठी का यह भी उद्देश्य होता है कि समान विचारधारा वाले लोगों में एक दूसरे से मिले और एक दूसरे की प्रगति में सहायता करें। संगोष्ठी एक उत्तम जगह है जहाँ पर शिक्षक अपने किये हुए अनुसंधान नवाचार की दूसरे शिखकों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकते है। जिससे दूसरे शिक्षक भी लाभान्वित हो सकते है संगोष्ठी के मंच का उपयोग करके शिक्षक अपने ज्ञान और कौशल का प्रस्तुतीकरण कर

सकता है जो न केवल उसको लाभदायक है वरन् संगोष्ठी में आये हुए प्रत्येक प्रतिभागी लाभान्वित हो सकते है।



## आनलाइन सहभागिता



आनलाइन सहभागिता पिछले कुछ दशकों में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी में अभूतपूर्व परिवर्तन आने के कारण नवीन ज्ञान का सृजन जो किताबों, पत्रिकाओं, अखबारों एवं विभिन्न प्रिंट मीडिया तक सीमित रहता था वह अब इलेक्ट्रॉनिक एवं सामाजिक मीडिया में तेज गति से आ रहा है एवं लोगों तक आसानी से पहुँच रहा है ऐसे में शिखा एवं उसकी प्रक्रिया में उसका प्रभाव पड़ना निश्चित है। इसके लिए समस्त व्यक्तिगत एवं सरकारी संस्थानों ने इसके ताकत, क्षमता एवं प्रभाव को ध्यान में रखते हुए अब आनलाइन अधिगम पर जोर दिया जा रहा है। सूचना एवं संचार तकनीक के बदलते स्वरूप उसके असर का शिक्षण अधिगम किया पर ही होने लगा है जिससे शिक्षक के व्यावसाय में पहले से ज्यादा चुनौतियों देखी जा सकती हैं। आज का छात्र इन तकनीक को प्रयोग करने में शिक्षक से बहुत आगे है जिससे उसके पास विषय-वस्तु पर कभी-कभी शिक्षक से ज्यादा ज्ञान होता है, ऐसे में शिक्षक की जिम्मेदारी है वह भी इन तकनीकों को सहारा लेकर अपने ज्ञान एवं कौशल की वृद्धि करे जिससे वह अपने छात्र के सामने अथवा उनके स्तर से अधिक ज्ञान अर्जित करके कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाए। आनलाइन सहभार्गिता शिक्षक व्यावसायिक विकास का नवीन आयाम है। इसमें शिक्षक जो अपने अनुभवों का प्रयोग करके नवीन ज्ञान का सृजन करते है अथवा जो ज्ञान आनलाइन की दुनिया में उपलब्ध है उसे अपने शिक्षक समूह के साथियों के मध्य प्रचार प्रसार करते है जिससे शिक्षक भी उसका लाभ अपने लिए कर सकते है आनलाइन सहभागिता एक प्रकार का सहयोगात्मक अधिकतम होता है जहाँ शिक्षक एक दूसरे से आनलाइन जुड़े हुए होते हुए ज्ञान का सहभाजन एक दूसरे के मध्य एवं ज्ञान का सहभजन एक दूसरे के बीच एवं अन्य शिक्षकों के मध्य किया जाता है। इसमें लाभ की बात यह है कि विभिन्न विषयामें में हो रहे बदलाव या नए ज्ञान का सृजन एक सामाजिक मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर इत्यादिन न केवल आपके विचारों को त्वरित गति से दूसरों तक पहुँचाता है अपितु इन आनलाइन मीडिया में इस बात की भी सुविधा है की वीडियो, अभिलेख शोध-पत्र इत्यादि को भी दूसरे शिक्षकों तक पहुँचाया जा सकता है जिसके शिक्षक को विषय वस्तु से नवीन जानकारी प्राप्त होगी एवं उससे व्यावसायिक विकास में लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आनलाइन सहभागिता के निम्नलिखित लाभ है—

(1) छात्रों के अधिगम में भी सुधार होता है।

(2) मौजूदा व्यावसायिक विकास अधिकतर कार्यशाला या प्रशिक्षण-सत्र के रूप में आयोजन किया जाता है जहाँ प्रतिभागी का उपस्थित होना अनिवार्य है, किन्तु आनलाइन प्रोग्रामों में यह सुविधा होती है कि वह प्रतिभागी की आवश्यकता, क्षमता एवं सुविधा को देखकर तैयार किया जाता है इसलिए एक साथ लाखों लोगों को एक बार में मुनाफा पहुँचाया जा सकता है।

(3) आनलाइन प्रोग्राम अधिकतर शिक्षक की विभिन्न जरूरतों जैसे उनके विषय, पिछले अनुभव, व्यक्तिगत वरीयताओं, अधिगम शैली, छात्रों की प्रकृति इत्यादि को ध्यान में रखते हुए संरचित किया जा सकता है।

(4) आनलाइन व्यावसायिक विकास प्रोग्राम एक समुदाय तैयार करता है जहाँ शिक्षक आनलाइन मीडिया पर वास्तविक समय पर या अल्पकालिक समय पर अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

(5) आनलाइन में यह भी लाभ है कि जो शिक्षक अधिक अनुभवी होता है वह नवीन शिक्षकों को अपना मागदर्शन दे सकता है जिससे उसके व्यवसाय में आने वाली कठिनाइयों का समाधान आसानी से हो सकता है।

(6) आनलाइन प्रोग्राम शिक्षक को अधिक, उत्तरदायी बनाते है क्योंकि इससे लाखों शिक्षक एवं अन्य व्यक्तियों द्वारा दिये हुए अनुभव व ज्ञान का प्रयोग अपनी जिन्दगी एवं कार्यस्थल पर कर सकते है।

(7) आनलाइन प्रोग्राम प्रतिभागी की सहभागिता को अधिक क्रियाशील बनाता है क्योंकि सीखे हुए ज्ञान तथा कौशल को त्वरित कक्षा में प्रयोग किया जा सकता है, जबकि कार्यशाला एवं प्रशिक्षण सत्र में प्रतीक्षा करनी होती है कि वह जब लौटकर विद्यालय में जाएगा तभी उसका प्रयोग किया जा सकता है।

आनलाइन व्यावसायिक विकास एक नया द्वार है जहाँ शिक्षक अपने व्यवसाय में प्रगति कर सकता है इसके लिए चाहिए कि वह अपनी सोच सकारात्मक रखें एवं दृष्टिकोण को सही दिशा दे तब उसे व्यवसाय में उन्नति मिलती रहेगी।

## क्रियात्मक अनुसंधान

अनुसंधान एवं उद्देश्यपूर्ण और सविचार प्रक्रिया है इसका मुख्य उद्देश्य ज्ञानवर्धन करना परिमार्जित कर उपयोगी बनाना है। यह एक वैज्ञानिक एवं बौद्धिक प्रक्रिया

है। क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा समस्याओं का अध्ययन निर्णय एवं क्रियाओं में निर्देशन सुधार एवं मूल्यांकन किया जाता है। अधिकांश क्रियात्मक अनुसंधान कक्षा कक्ष की विभिन्न स्थितियों की समस्याओं का निराकरण, निदानात्मक मूल्यांकन एवं उपचारात्मक उपाय करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण उपयोगी तथा सामाजिक सिद्ध होता है। क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं के तात्कालिक परिणाम खोजने की एक प्रक्रिया है। यह मौलिक अनुसंधान से भिन्न है, इसके परिणाम को सामान्यीकरण करना सही नहीं होता है, क्योंकि भले ही कठिनाई एक जैसी हो परन्तु समस्या के कारक, समस्या को पैदा करने वाला परिवेश, समस्या को प्रभाव करने वाले कारक इत्यादि एक जैसे नहीं होते है। क्रियात्मक अनुसंधान कर प्रारम्भ अमेरिका के शिक्षा शास्त्रीयों कोलार, लुईन, हेरिकन एवं स्फीन ने किया। क्रियात्मक अनुसंधान का आशय विद्यालय में कि कई उस सम्पादित क्रिया से है। जिसके द्वारा विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार, संशोधन एवं प्रगति के लिए प्राचार्य, प्रबन्धक एवं निरिक्षक विद्यालय की समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करके है क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालय से जुड़ी प्रतिदिन की समस्या तथा उसके निराकरण से है शिक्षक एवं शोधकर्ता के रूप में शिक्षा जगत में शोध को अपने विशेष दृष्टिकोण विशिष्ट शिक्षण प्रक्रियाओं एवं कक्षा शिक्षण में सुधार करने के लिए उपयोग करते है।

अतः स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में शोध का उद्देश्य अथवा तो शिक्षकों द्वारा अपनी शिक्षण पद्धतियों में महत्वपूर्ण बदलाव लाना या सीखने में बच्चों की प्रतिभागिता को बढ़ावा देना होता है। शिक्षक एंव शोधकर्ता के रूप में इन्हीं बातों का ध्यान में रखते हुए अधिकांश अपनी कक्षाओं और विद्यालय में शोध करते भी रहते है। शिक्षा जगत में शिक्षक शोधकर्ताओं ने क्रियात्मक शोध को अपने विशेष दृष्टिकोण, विशिष्ट शिक्षण प्रक्रियाओं तथा कक्षा शिक्षण में सुधार करने के लिए प्रयोग किया है।

## कुछ प्रमुख क्रियात्मक शोधकर्ताओं के विचार

जोहन इलियट के अनुसार क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक अपनी शिक्षण कला की प्रक्रियाओं का आकलन करता है तथा इसके द्वारा नवीन व बेहतर कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं की खोज करता है। ऐसा करके, न सिर्फ यह कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं को बेहतर बनाता है अपितु वह इस सम्बन्ध में कुछ अपने स्तर के नवीन सिद्धान्त भी बनाता है। यही सिद्धान्त प्रभावी होने पर पुराने सिद्धान्तों का स्थान ले लेते है।

स्टेनहाउस के अनुसार अध्यापक एक माली के रूप में होता है, जो हर पौधे को उसकी आवश्यकता के अनुसार सहेजता है, न कि किसान की तरह जिसका हर पौधे की तरफ समान व्यवहार होता है। स्टेनहाउस विद्यालय कक्षा को एक प्रयोगशाला के रूप में देखते है।

NOTES

### बर्नस के अनुसार क्रियात्मक शोध

- क्रियात्मक शोध प्रक्रियाओं के दौरान आने वाली समस्याओं के समाधान अथवा परिस्थितियों में सुधार का एक सशक्त साधन है।
- शिक्षक को सीखने-सिखाने के दौरान अपनी दक्षता में सुधार करने के अवसर प्रदान करता है ताकि सीखने-सीखाने की प्रक्रियाएं समस्त बच्चों के लिए उपयोगी हो सके।
- शिक्षक को अपनी सीखने-सीखाने की प्रक्रियाओं सम्बन्धी विश्लेषणात्मक क्षमता बढ़ाने में मददगार होता है।
- यह एक माध्यम है जो शोधकर्ता शिक्षकों को परम्परागत प्रक्रियाओं के प्रभावहीन होने पर उनके निराकरण के लिए उपयुक्त उपाय देता है।

### मिल्स के अनुसार क्रियात्मक शोध

- विद्यालय में अपेक्षित परिवर्तन को प्रोत्साहित करता है।
- शिक्षा में लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।
- व्यक्तिगत पेशेवर विकास में बढ़ोत्तरी करता है।
- शिक्षकों को प्रोत्साहित करता है कि वे स्वयं पर व अपनी कार्यप्रणाली पर रिफ्लेक्ट करें।
- नवीन विचार के परीक्षण की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है।

  गेय एवं एयरसैन के अनुसार शैक्षिक आयामों के अन्तर्गत क्रियात्मक अनुसंधान के कई प्रमाणित लाभ दिखाई पड़ते है :

- शिक्षक अपने अध्यापन की जाँच व्यवस्थित ढंग से कर सकते है, गहन खोज कर सकते है कि वास्तव में ये तथा उनके छात्र क्या बेहतर तरीके से कर पाते है और क्या कर पाने में असफल रहते हैं ?

NOTES

- शिक्षक अपने और अपने छात्रों के बारे में गहरी समद्ध बना पाते है, जैसे सीखने की प्रक्रिया और सीखने-सीखाने में शिक्षक तथा बच्चे दोनों की भूमिका।
- शिक्षक क्रियात्मक शोध के द्वारा उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते है जो उन्हें समस्या के रूप में दिखती है और जिनमका वे समाधान चाहते है।

  हॉपकिन्स शिक्षकों के लिए कक्षा में अनुसंधान करते समय कुछ मुख्य बातों पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा है।
- शिक्षक की प्राथमिक भूमिका सीखना-सिखाना है और यह प्रक्रिया किसी भी शोध से बाधित नहीं होनी चाहिए।
- शोध के लिए आँकड़ों को इकट्ठा करने में शिक्षक को अधिक समय न देना पड़े।
- शोध में प्रयुक्त पद्धति विश्वसनीय होनी चाहिए ताकि शिक्षक पूर्ण विश्वास के साथ अपनी परिकल्पपनाओं को तैयार कर कक्षा की स्थिति के अनुसार उचित शोध रणनीति विकसित कर सकें।
- शोध करते समय शिक्षक नैतिक प्रक्रियाओं को जरूर ध्यान में रखें।
- कक्षा शोध यथासम्भव स्कूल समुदाय के समस्त सदस्यों में एक आम दृष्टि और परिप्रेक्ष्य का निर्माण करें।

## क्रियात्मक शोध अन्य शोध से भिन्न कैसे ?

यह एक ऐसा विषय है जिस गहराई से समझने की जरूरत है। इसकी समझ होने से केवल इनके मध्य के मौलिक अन्तर को समझने में सक्षम होंगे यह भी जान रहे होंगे कि क्रियात्मक शोध कौन कर सकता है और किन-किन परिस्थितियों में इसे किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर—

**शीर्षक-1 :** "कक्षा तीन में भाषा को लेकर सीखने-सीखाने सम्बन्धी अनुभवों के आधार पर पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना।"

**शीर्षक-2 :** "विद्यालय गतिविधियों में समुदाय की प्रतिभागिता सुनिश्चित करना।"

**शीर्षक-3 :** "विद्यालय में कक्षा पहली से कक्षा पाँचवीं तक अध्ययनरत समस्त बच्चों का गणित, विज्ञान एवं भाषा विषय में उपलब्धि स्तर।"

अगर आप शीर्षक 1 और 2 को गहराई से सोचें यह दोनों कठिनाईयाँ क्रियात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत नहीं आते हैं क्योंकि दोनों शीर्षकों ने न तो अपनी कार्यशैली में सुधार कर सकता है एवं न ही कार्य की गुणवत्ता की वृद्धि हो सकती है। जबकि तृतीय शीर्षक समस्या शिक्षक के कार्यशैली से सीधा जुड़ा हुआ है। इसलिए तृतीय शीर्षक क्रियात्मक अनुसंधान के क्षेत्र में आता है।

**क्रियात्मक शोध - चरण तथा प्रक्रियाएँ**

क्रियात्मक शोध समस्त परिभाषाओं के पाँच मूलभूत बिन्दु पर बात की गई है। ये चरण है:—

1. समस्या का पता लगाना
2. आंकड़ो का संचयन और उनको व्यवस्थित करना
3. आंकड़ो की विवेचना
4. आंकड़ो के विवेचन से प्राप्त जानकारी पर कार्य करना।
5. चिंतन करना।

**समस्या का पता लगाना**

शिक्षण करते हुए शिक्षक को कई प्रकार की समस्याओं से गुजरना पड़ता है। प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रत्येक समस्या पर क्रियात्मक शोध किया जा सकता है?

- समस्या ऐसी हो जिसका समाधान आपके स्वयं के हाथ में हो जैसे, शिक्षकों के लिए बालकों के द्वारा मात्रा पहचानने में गलती क्रियात्मक शोध के संदर्भ में समस्या हो सकती है न कि कोई अन्य प्रशासनिक समस्या तत्पश्चात् शैक्षिक समस्या को अनुसंधान का आधार बनाया जा सकता है।
- समस्या का वर्णन करते समय उस समस्या को कैसे, कब, कहाँ, कौन, क्या, क्यों की कसौटी पर जाँच लें।
- समस्या शिक्षण के द्वारा खुद पहचानी गई हो न कि किसी अन्य द्वारा सुझाई गई तत्पश्चात् कोई ऐसी समस्या जिसे शिक्षक ने अपना कार्य करते हुए महसूस किया हो और यह पाया हो कि इस समस्या का उपाय करना बहुत आवश्यक है।

## आंकड़ो को संचयन और उनका व्यवस्थित करना



आंकड़ो कां संचित करके बाद में उनको व्यवस्थित करना क्रियात्मक शोध का एक अहम हिस्सा है। ये आंकड़े रिपोर्ट कार्ड, परीक्षा की कापी, बच्चों की नोटबुक, क्लस का वीडियो, बालकों की समस्या को जांचने के लिए प्रयोग किए गए प्रारूप आदि हो सकते है। इन आंकड़ो को क्रमबद्ध किया जाना आवश्यक है। अच्छा यह होगा कि आप किसी समस्या के लिए आंकड़ो संचित करते हुए विभिन्न अलग स्त्रोतों का उपयोग करें।

## आंकड़ो की विवेचना

आंकड़ो दो प्रकार के होते है। पहला वे आंकड़े होते है जिन्हें आसानी समझा जा सकता है अथवा फिर अंको में बदला जा सकता है जैसे— आप आसानी से यह जाँच सकते है कि कितने बच्चों को मात्रा में समस्या है? कितने बच्चों को 'ओ' की मात्रा पहचानने में कठिनाई है? प्रत्येक बच्चे द्वारा लिखे गए वाक्यों में मात्रा की कितनी गलतियाँ है आदि।

दूसरी तरह के आंकड़े ऐसे होते है जिन्हें आप अंको में नहीं बदल सकते जैसे कक्षा का कोई बालक जो घर के व्यवसाय जैसे दुकान चलाना (जिसमें पैसो का लेन-देन होता हो) में परिवार की सहायता करता है वह भले ही लिखित गणना न कर पाए लेकिन मौखिक गणना की लेता है। आगर आप समस्या की कसौटी देखें तो अक्सर 'क्यों' वाले सवाल इस श्रेणी के होते है। जैसे कुछ अन्य बालकों की तुलना में धीरे क्यों सीखते है।

इस तरह के आंकड़ो का विश्लेषण करने के लिए यह जरूरत होती है कि उन्हें सही से व्यवस्थित किया जाए तथा वर्गीकृत किया जाए। इन आंकड़ो की व्यख्या करके उनसे कुछ निष्कर्ष निकाले जाँए।

## आंकड़ो के विवेचन से प्राप्त जानकरी पर कार्स करना

एक बार समस्या का प्रकार एवं विस्तार तय हो जाए तो अलग कार्य है समस्या के समाधान के लिये काम योजना करना। एक क्रियात्मक शोधकर्ता को तथ्यों तथा साक्ष्यों के आधार पर कोई एक कार्य योजना बनाकर और उस पर अमल करना चाहिए। इस काम योजना पर अमल करते हुए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि जो कुछ किया जा रहा है उसका अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण किया जाए।

**चिंतन करना:—** कार्ययोजना को क्रियान्वित करते समय यह चिंतन करना आवश्यक है कि इस योजना से समस्या के समाधान ढूँढना में क्या सहायता मिल रही है? समय-समय पर यह सवाल पूछना ठीक रहता है कि क्या आप उन उद्देश्यों को प्राप्त कर पा रहे हैं अथवा नहीं जिनके लिए अपने क्रियात्मक शोध को चूना है। विश्लेषण करें कि क्या समस्या का समाधान हो गया है या फिर केवल ऊपरी तौर पर ऐसा लग रहा है।

**अगला चरण:—** अगा समस्या का समाधान हो गया हो तो क्रियात्मक शोध पूर्ण हो गया। अगर समस्या का समाधान नहीं हो पाया तो आप फिर से एक नयी विधि के अनुसार नई काम योजनाएँ बनाएँ। जैसे पूर्व में दिए गए उदाहरण में अगर मात्रा कार्ड अथवा अक्षरित खेल के माध्यम से सभी बालक मात्रा को ठीक से पहचान कर उसको पढ़ या लिख पाते है तो हमें मान लेना होगा कि समस्या का समाधान हो गया है। लेकिन अधिकतर बच्चे यदि यह नहीं कर पाते है तो शिक्षक को शुरू से आंकड़ो का विश्लेषण कर सही समस्या का पता लगाना चाहिए और किसी अन्य विधि जैसे बारहखड़ी के खेल आदि के माध्यम से कोशिश करनी चाहिए। इस तरह तब तक क्रियात्मक शोध के चक्र को दोहराना होगा जब तक कि बालक मात्रा नहीं सीख जाते

## पत्रिका, अखबार एवं जूड़ी पिरोडिकल में लेखा लिखना

शिक्षक के कार्य से वृद्धि या व्यावसाय विकास के अनेको तरीके है जैसे संगोष्ठी अथवा में सहभागिता करना कार्यशाला और प्रशिक्षण सत्र में भागीदारी करना, शैक्षिक पहल पर व्याख्यान देना अथवा सुनना, अनुसंधान करना इत्यादि।

पत्रिकाओं तथा अखबारों में लेख लिखाना एक बहु चिर्चित और पुराना वृति विकास का तरीका है, शिक्षक द्वारा किए गए सफलतापूर्वक शोध अथवा नवावार लेखन द्वारा शिक्षा में ही शैक्षित जगत में अनेक बातों पर अपने विचार लेखन द्वारा व्यक्त करते है परन्तु लेखन का उद्देश्य अगर लोगों तक अपने विचार लेखन द्वारा व्यक्त करते है परन्तु लेखन का उद्देश्य अगर लोगों तक अपने विचार पहुँचाने हो तो उसमें साहस और समय की जरूरत होती है जो कि बहुत कम अवसर में ही ऐसा हो पाता है। लेखन एक कठिन माध्यम जिसका शिक्षक उसका प्रयोग करके अपने विचारों की राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय शैक्षिक पटल पर रख सकता है। इससे न केवल शिक्षक को व्यक्तिगत लाभ हो सकता है किन्तु दूसरें को भी वृत्ति विकास में मदद मिल सकती है। लेखन हमेशा शिक्षक को संतुष्टि देता है कि उसने भी अपने

समुदाय के लिए कुछ काम किया है एवं यह विशेषता अगर पठन–पाठन, अधिगम कक्षा में किए गए नवाचार से हो जहाँ छात्रों को मुनाफा पहुँचता हो तो शिक्षक उसे समाज के सामने दर्शाता करता है। इससे विभिन्न वर्गो के लोग के लोग जैसे परीक्षणकर्ता, शोधकर्ता, शिक्षाविद नीति निर्माता और शिक्षक अपने स्तर पर उसे प्रयोग करके शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन कर सकते है। लेखन से शिक्षकों को अनेक प्रकार के मुनाफा मिल सकते है:—

NOTES

1. अच्छे लेखन के द्वारा उसे शिक्षक जगम में एक विशेष स्थान प्राप्त हो सकता है।
2. लेखन द्वारा वह स्वयं की कक्षा में किए गए नवाचरों की प्रतिबिबित करके उनमें सुधार ला सकता है।
3. अपने अनुसंधान के कौशल को तथा विकसित कर सकता है।
4. अपने विचारो को लेखन द्वारा व्यक्त करके वह दूसरों को उन पर सोचने, विमर्श करने एवं क्रियान्वित करने पर उत्सुक कर सकता है।
5. शिक्षक अपने लेखन द्वारा अपने सहभागियों तथा सहकर्मियों को ज्ञान वर्धन का अवसर प्रदान कर सकता है।
6. विभिन्न तरह के उपयोग को सफलतापूर्वक करके एवं उसे प्रकाशित करके दूसरों को अवसर प्रदान कर सकता है जिससे दूसरे शिक्षक भी उस उपयोग को करके लाभान्वित हो सकें।

## पाठ्यपुस्तक की संकल्पना एवं विश्लेषण

पाठ्यपुस्तक किसे कहते है? राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा 2005 में पाठयपुस्तक को एक शिक्षण अधिगम सामग्री के पैकेज का भाग माना है और कहा है "पाठयपुस्तक एक मार्गदर्शिका के रूप में उपयोग की जाने वाली सहायक सामग्री है जिससे विद्यार्थि सक्रिय रूप से पाठ, विचारों, वस्तुओं, वातावरण और लोगों से जुड़ता है तथा उसके अन्दर अपनी समझ का निर्माण करता है यह ऐसी चीज नहीं जो ज्ञान को अंतिम उत्पाद के रूप में बालकों के दिमाग में भरने का कार्य करें"।

राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा (2005) और बिन बोझ के 1953 ने माना कि भारत के अधिकांश स्कूलों में पाठयपुस्तक कक्षा में हावी है, उन्होंने यह भी माना पाठयपुस्तक के सूचनाओं का भण्डार है और शिक्षक इन सूचनाओं को विद्यायार्थी

तक इन पाठ्यपुस्तक के द्वारा पहुँचा रहे है। शिक्षा प्रणाली में पाठय पुस्तकों को वही स्थान हासिल है जो कि हमारे धर्मों में पवित्र पुस्तकों का है। यह कहना गलत है यहाँ तक की शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया का प्रारंम्भ तथा अंत पाठयपुस्तक से ही होता है यहाँ यहाँ तक की अनेक प्रकार के क्रियाकलापों का आयोजन शिक्षक विद्यार्थियों के मध्य अंत क्रिया परीक्षा इत्यादि सभी पाठ्यपुस्तक केन्द्रित है। इसकी आवश्यकता ज्यादा महत्व के कारण पाठ्यपुस्तक ने एक गौरवशाली तथा मानक रूपरेखा को अपना लिया है पाठ्पुस्तक एक प्रभुत्व का प्रतीत बन गई है जिन्हें अवमानित कठिन है।

राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा 2005 के अनुसार पाठ्यपुस्तक भारत में मूल सिद्धान्तों के आधार पर रचीं गई है परन्तु विद्यालय और शिक्षक को स्वायतता प्रदान करें जिससे वह कक्षा के स्तर पर आकर विभिनन प्रकार के उपयोग जैसे सीखने के गति, सामग्री तथा मूर्त उदाहरण शिक्षण, पद्धति विषय-वस्तु से जूड़ी हुई अनुभव आदि का चुनाव कर सके राष्ट्रीय पाठयचर्यी रूपरेखा ने माना कि पाठयपुस्तकों का निर्माण इस तरह से हो जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी को सृजनात्मक काम करने की प्रेरणा मिले। शिक्षक एवं छात्र पाठ्यपुस्तक के अधीन न हो जाए। पाठयपुस्तक का निर्माण करते समय इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाए कि वह ज्यादा से ज्यादा विकेन्द्रित हो एवं राज्य, जिला ब्लाक स्तर पर विद्ययार्थी से जुड़े क्रियाकलापों को सम्मिलित किया जायें जिससे लचीलापन की नीति अपनाई जा सकें। पाठयपुस्तक में विषय-वस्तु को बोझ न बनाकर किन्तु समझ कर सीखने एवं सीखने से अधिगन पर जोर दे तथा छात्रों के व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर समझने की क्षमता बढ़ा कर उनकी सहायता करें।

शिक्षक क्योंकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए जिम्मेदार होता है एवं यह उसकी स्वतन्त्रता और स्वायतता पर निर्भर करता है कि वह पाठय-पुस्तक की पठन-पाठन सामाग्री का अंग-बनाता है अथवा वह उसे एक मात्र स्त्रोत मानता है।

पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन हेतु शैलडन (1998) ने अनेक प्रमुख कारण बतायें है। उन्होनें कहा है कि पाठय-पुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रशासनिक तथा शैक्षिक फैसले लेने में अपनी भूमिका अदा करता है। जिसमें सम्मिलित होता है व्यावसायिक, वित्तीय एवं राजनैतिक। पाठयपुस्तक के मूल्यांकन से शिक्षक को यह तय करने में सहायता मिलती है कि विभिन्न प्रकार की जो पाठ्य-पुस्तके मौजूद है उनमें से बेहतर कौन सी है, इसके अतिरिक्त विषय-वस्तु से परिचित करना एवं

पाठय-पुस्तक के गुण-दोष से भी अवगत करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि पाठय-पुस्तक का विशलेषध शिक्ष्ज्ञक के वृति-विकास में मदद प्रदान करता है। कनिंगवर्थ (1995) तथा एलिस (1997) से सुझाव दिया कि पाठयपुस्तक का मूल्याकन शिक्षक को शुद्ध, उपयोगी, व्यवस्थित एवं परिपेक्ष्य अंर्तदृष्टि को अधिग्रहरण करने में सहायता करता है। पाठय-पुस्तक के मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक क्रियात्मक अनुसांधन तथा व्यावसायिक सशक्तिकरण कर सकता है। दुनिया राष्ट्र तथा समाज में होने वाले बदलावों एवं नये ज्ञान के सृजन को पाठय पुस्तकों ने समाहित कैसे एवं किन बिन्दुओं से इनका मूल्यांकन शिक्षक करें। पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन कई बिंदुओं पर निर्भर करता है। जिनमें से प्रमुख बिन्दुओं निम्नलिखित है–

NOTES

1. **शिक्षा का उददेश्य**—शिक्षा का महत्वपूर्ण उददेश्य यह है कि वह ज्ञान मीमांसा को पूर्ण करे एवं राष्ट्रीय मूल्यों और आदर्शो को धारोहर समझकर उन्हें समाज में बढ़ाए तथा सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ण करें। पाठ्य पुस्तक क्योंकि पाठयचर्या का दर्पण होता है इसलिए पाठ्य-पुस्तक में दिए गए शिक्षण क्रियाओं के माध्यम से विद्यायार्थी के अन्दर राष्ट्रीय मूल्य एवं आदर्शों को उत्पन्न किया जा सकता है। पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन राष्ट्रीय मूल्यों, सामाजिक आंकक्षाओं उसके प्रतिबिम्ब और विकास के आधार पर किया जाना चाहिये। शिक्षा के उद्देशय शिक्षा के स्तर एवं विषय के अनुसार भी तैयार किया जाता है इसलिए यह आवश्यक है कि पाठ्य पुस्तक का विशलेषण करते समय इन दोनों स्तरों के उद्देश्यों की पूर्ति हुई है अथवा नही उस का भी मूल्यांकन किया जाता है उदाहरण के तौर पर शिक्षा का उदेशय चरित्र तथा जिम्मेदार नागरिक तैयार करना होता है एवं वही पर विषय संबंधी उददेश्य हो सकते है जैसे विद्ययार्थी की अभिव्यक्ति की क्षमता, अभिवृत्तियों का विकास करना एवं विषय-वस्तु संबंधी जैसे चिंतन शक्ति, तर्क शक्ति, मूर्त एवं अमूर्त चितंन आदि का विकास करना। इन सभी का मूल्यांकन करना पाठ्य-पुस्तक शिक्षा से जूड़े उदेश्यों का विशलेषण के अंतर्गत आता है।

2. **विषय-वस्तु की रचना एवं प्रस्तुतीकरण**—पाठय पुस्तक की रचना तथा प्रस्तुतीकरण विषय-वस्तु से जुड़ी हुई होती है। भाषा संबंधी पाठय-पुस्तक की संरचना एवं प्रस्तुतीकरण, विज्ञान संबंधी पाठयपुस्तक की संरचना तथा प्रस्तुतीकरण से बिल्कुल भिन्न होगी क्योंकि दोनो विषयों की प्रकृति एक दूसरे से भिन्न है। जहां भाषा की पाठय-पुस्तक की रचना और प्रस्तुतीकरण में विद्यार्थियों में भाषा कौशल के विकास पर बल दिया जाएग वही विज्ञान की

पाठ्यपुस्तक में प्रयोगात्मक विकास पर बल होगा। पाठ्य-पुस्तक का विशलेषण करते समय इस बात पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है कि विषय-वस्तु की संरचना सरल से प्रारम्भ करके कठिन अवधारणों तक हो, इन अवधाराणओं का ज्यादा से ज्यादा उदाहरण की मदद से समझाया गया हो उदाहरण विद्यार्थियों की जिन्दगी से जुड़ा हुआ हो और इसके अतिरिक्त एक अवधारणा दूसरी अवधारणा को समझने में मददगार साबित हो, पाठय पुस्तक विशलेषण में इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि पाठ का प्रस्तुतीकरण रोचक ढ़ग से किया गया हो जैसे किसी कहानी के द्वारा, चित्रण द्वारा या उपयोग द्वारा। आज के समाज में ज्ञान का विस्फोट है और प्रतिदिन नए ज्ञान का सृजन हो रहा है एवं पाठय-पुस्तकों में इन्हें शामिल किया जाना चाहिए। इस आधार पर भी पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन होना चाहिए जो नई अवधारधा सम्मिलित की गई है उनमें आपस में संबंध है अथवा नहीं।

3. **बच्चे का मानसिक विकास**—पाठ्य-पुस्तक की संरचना अधिकतर बालक के मानसिक विकास के स्तर के आधार पर की जानी चाहिये, बालक जिस मानसिक स्तर के होते है पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु का चुनाव उसी उसी तरह किया जाना चाहिये। यह कहना गलत नही होगा कि पाठ्य-पुस्तक बच्चों के मानसिक विकास का सहभागी होना चाहिए, पाठय पुस्तक में बच्चों के मूर्त-अमूर्त तर्क करने की शक्ति को बढ़ावा मिलना चाहिये। पाठय पुस्तकों को बच्चे के सृजनात्मक और रचनात्मक विकास के लिए बीज का काम करना चाहिये। इसके अलावा भाषायी क्षमता, सामाजिक परिपक्वता, शरीर की दक्षता इत्यादि के विकास में पाठयपुस्तक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। एक शिक्षक को चाहिये कि इन बिंदुओं पर पाठय-पुस्तक का वह मूल्यांकन करें।

4. **अभिन्यास एवं रचना**—पाठ्य-पुस्तक की अभिन्यास और संरचना मूल्यांकन का एक महत्वूपर्ण बिंदु है। अभिन्यास तथा रचना से हमारा मलतब पाठ्यपुस्तक की बनावट से है पाठ्य-पुस्तक की बनावट में उसका वजन, छपाई लेखन के अक्षर, आकार इत्यादि सम्मिलित होते है शिक्षक जब पाठ्य-पुस्तक का मूल्यांकन करें तो इस बात पर ज्यादा ध्यान दे कि पाठ्य-पुस्तक बहुत भारी न हो, छपाई सुन्दर हो, अक्षर छात्रों के आयु अनुसार हो और आकार सामान्य हो जिससे छात्रों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। हाल के दिनों में यह बात सामने आई है कि स्कूलों में किताबों का बोझ बढ़ता जा रहा है जिससे

विद्यार्थी में शारीरिक समस्याऐं उत्पन्न हो रही है। प्रोफेसर यशपाल ने अपने रिपोर्ट "बोझ के बिना सीखने" में कहा है कि विद्यायार्थी पर दोहरा बोझ बढ़ रहा है एक तो दिमागी दूसरा शारीरिक जिसके कारण विद्यायार्थी में शिक्षा के प्रति अरूचि बढ़ी है। इसलिए जितना हो सके पाठ्य-पुस्तक को कम वजनदार, और अधिक आकर्षण का केन्द्र बनाया जाए।

5. **मानसिक स्तर का विकास—**विषय-वस्तु का विशलेषण विद्यार्थियों को मानसिक स्तर के आधार पर होनी चाहिये। मानसिक स्तर से यह अभिप्राय है है कि वह विषय-वस्तु जो छात्रों के मानसिक क्षमता को योग्य हो अथवा उनको समझने में कठिनाई न हो ऐसे विषय-वस्तु को पाठयपुस्तक में शमिल किया जाना चाहिए। पियाजे के अनुसार मानसिक स्तर की वृद्धि चार चरणों में होती है एवं स्तर के उपयुक्त छात्रों के भीतर उस तरह के क्षमता अथवा योग्यता का विकास होता है उदाहरण की तौर पर बाल्यकाल में मूर्त चिंतन ज्यादा प्रबल होता है इसलिए पाठ्य-पुस्तक में उन विषय-वस्तुओं को रखा जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी मूर्त चिंतन को विकास होने का अवसर प्राप्त हो इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक छात्रों की सामाजिक आर्थिक परिवेश को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना। विद्यार्थी के मानसिक स्तर को बढ़ाने में मदद मिले।

6. **उपयुक्त भाषा एवं शैली—**एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक हमेश विचारों तथा सामगियों को प्रयुक्त भाषा एवं शैली में अपने पाठकों तक पहुँचाता है। पाठ्य-पुस्तकों में भाषा एवं लेखन शैली छात्रों के आयु मानसिक स्तर एवं रूचि के अनुसार होनी चाहिये। यदि पाठ्य-पुस्तक छोटी कक्षाओं के लिए है तो उसे कहानी, वार्ता, कार्टून इत्यादि के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिये। पाठ्य पुस्तक लिखते समय सरल भाषा को उपयोग हो जिससे बालक आसानी से समझ सकें एवं वह उनके भाषायी क्षमता के अनुसार हो शब्दों तथा वाक्यों का चुनाव बालक के मानसिक स्तर के आधार पर हो। पाठ्य-पुस्तकों में अधिक चित्रण आलेखन इत्यादि का उपयोगी किया जायें। जिससे विद्यार्थी को समझने से सरलता हो, प्रत्येक विषय की अपनी प्रकृति एवं संरचना होती है और इसको ध्यान में रखकर पाठ्य-पुस्तकें लिखी होनी चाहिये। उदाहरण रूवरूप विज्ञान विषय का आधार तथ्य, सिद्धांत, नियम, प्रयोग, परिक्षण तथा परिणाम पर आधारित होते इसलिए पाठ्य-पुस्तक में ज्यादा से ज्यादा इनकी जगह होनी चाहिये। यहाँ तक उस विषय में उपयोग में होने वाले चिन्ह,

परिभाषा, शब्दावली जो सर्वमान्य हो उसे ही पाठय पुस्तक लिखते समय उपयोग किया जाना चाहिए। शिक्षक इन बिन्दुओं पर भी पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन करके पाठ्यपुस्तकों की उपयोगिता बढ़ा सकता है।

**NOTES**

शिक्षा आयोग (1964-66) ने अपने रिपोर्ट में लिखा है कि पाठ्य-पुस्तक को लिखने वाला व्यक्ति अपने विषय में विशेषज्ञ हो एवं निर्माण करते समय निम्न बातों का अत्याधिक ध्यान दें जैसे लेखन, छपाई, चित्रण इत्यादि जो छात्रों को प्रोत्साहित करें शिक्षक को उससे पढने के लिए शिक्षण अधिगम में सहायता मिलें।

## परीक्षा का विशलेषण

शिक्षा में मूल्यांकन का महत्वपूर्ण स्थान है मूल्यांकन शिक्षा की वह धुरी है जिसके आस पास शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया की संरचना की जाती है। बिना मूल्यांकन के हमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दोष-गुण गलतियों के बारे में पता नही लगता है। मूल्यांकन का महत्वपूर्ण कार्य यह है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार छात्रों के अधिगम में वृद्धि एवं वृद्धि का स्तर का पता लगाना होता है। अधिकतर मूल्यांकन के इन कार्यो को हम छात्रों के परीक्षा व उसके परिणामों से जोड़ते है। अगर परीक्षा का परिणाम अच्छा है तो यह दर्शाता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सही दिशा की तरफ है और छात्रों में ज्ञान की उपलब्धि हुई है। अगर ऐसा नही है तो यह अभिप्राय है कि दोनों ही काम ढंग से नही चल रहे है। परन्तु यह यथार्थ है परीक्षा का परिणाम बहुत हर तक परीक्षा में तैयार किया गया परीक्षा पत्र तय करता है। परीक्षा पत्र तैयार करना कोई साधारण काम नही है परीक्षा पत्र तैयार करना ठीक वैसे ही है जैसे छात्रों के चरित्र का निर्माण करना। परीक्षा पत्र तैयार करने के लिए उसे अनेक चरणों से होकर गुजरना होता है, जैसे कि परीक्षा का उद्देश्य, उद्देश्य प्राप्ति के लिए परीक्षा की योजना तैयार करना, परीक्षा की योजना के अंतर्गत विषय और विषय-वस्तु का चुनाव करना, विषय-वस्तु का भार, विषय-वस्तु से जुड़े विभिन्न वर्ग के प्रश्न का चयन जैसे—ज्ञान, बोध, प्रयोग इत्यादि एवं विभिन्न स्तर के सवाल जैसे निम्न, मध्यम तथा उच्च की रचना साथ ही साथ नाना प्रकार के प्रश्न जैसे वस्तुनिष्ठ एवं व्यक्तिनिष्ठ प्रश्नों की रचना। इसके अलावा प्रश्नों की भाषा व्याकरण योजना के अंर्तगत सम्मिलित किया जाता है। यह शोध से अवगत हुआ है कि अधिकत्तर सवाल पत्र जो राज्य स्तरीय परीक्षाओं में विद्ययार्थियों को उलब्धि परीक्षण केलिए दिये जाते है उनमें अधिकतर प्रश्न-पत्रों में दोष पाये जाते है जैसे प्रश्न पत्र की लम्बाई प्रश्नों में भाषा का प्रयोग, अपर्याप्त विषय-वस्तु का

निर्धारण, व्यक्ति निष्ठ प्रश्न इत्यादि एक अच्छा प्रश्न पत्र वहीं होता है जिसमें प्रश्न स्पष्ट उद्देश्यपूर्ण संक्षिप्त क्रमबद्ध तथा विचारोत्तेजक हो। यह माना जाता है कि प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए सवालों के योजनाबद्ध तरीके से तैयार करना, उपयुकत भाषा का उपयोग करना, प्रश्नों की सामनतापूर्ण वितरीत करना वैज्ञानिक दृष्टि से सही होना, सच्चाई से जबाव देना एवं बुद्धिमत्ता से उसे अनुसरण करना लाभदायक होता है। एक परीक्षा में सवाल पत्र की निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशलेषण किया जा सकता।

NOTES

1. **उद्देश्यों से मिलान**—उद्देश्य से मिलान का तात्पर्य परीक्षा के उद्देश्य से है। परीक्षा का उद्देश्य छात्रों की उपलब्धि परीक्षण से हो सकता है अथवा छात्रों का प्रांरभिक ज्ञान निर्धारित करना अथवा प्रवेश में उत्तीर्ण या किसी नौकरी से जुड़ा प्रवेश हो सकता है। सवाल पत्र बनाने से पहले परीक्षा के उदेश्यों का निर्धारण करें एवं उसी के अनुसार ही प्रश्न पत्र का निर्माण करें। उदाहरण स्वरूप परीक्षा लने का उद्देश्य विद्यार्थियों के विषय-वस्तु में होने वाली कठिनाईयों को उजागर करना है तो शिक्षक प्रश्न पत्र में उन प्रश्नों को अथवा शामिल अथवा तैयार करेगा जिससे उसे लक्षण का पता चले। सीधे शब्दों शिक्षक एक नैदानिक प्रश्न-पत्र तैयार करेगा।

2. **व्याप्त विषय-वस्तु का चुनाव**—प्रश्न पत्र तैयार करते समय यह अत्यन्त आवश्यक है कि सवालों को कुछ अध्ययन तक सीमित न रखें बल्कि जहाँ तक हो सकें सभी अध्यायों को शामिल करे जिससे विद्यायार्थी का व्यापक मूल्यांकन हो सकें। शिक्षक प्रश्न-पत्र का विशेलेषण करते समय इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये कि सवाल का चुनाव सभी अध्यायों से हुआ है अथवा नही।

3. **विषय-वस्तु का भार**—हर एक अध्याय और उनके अन्दर मौजूद विषय-वस्तु की एक महत्ता होती है और इस महत्ता का वरियताक्रम भी हो सकती है। लेकिन विषय वस्तु अधिक महत्ता वाली हो उन्हें अधिक बार देने की जरूरत होनी चाहिये एवं जिन विषय-वस्तु की महत्ता कम है उन्हें कम महत्ता मिलनी चाहये तथा यही प्रश्न-पत्र विशलेषण करते समय शिक्षक को ध्यान देने की जरूरत है।

4. **प्रश्नों का कमबद्ध विश्लेषण**—प्रश्न पत्र का विशलेषण करते समय इस बात पर शिक्षक अत्याधिक ध्यान केन्द्रित करे कि सवालों का जो क्रम

NOTES

प्रश्न-पत्र में अनुसरण किया गया है वह मनोवैज्ञानिक आधार पर हो जैसे प्रश्नों के क्रम सरल से कठिन का हो, ज्ञान से बोध तथा प्रयोग का हो, वस्तुनिष्ठ से व्यक्ति निष्ठ का हो, इस प्रकार के प्रश्न पत्र छात्रों को उसे हल करने में सुविधा करता है।

5. **सरल भाषा एवं निर्देशन में स्पष्टता**—प्रश्न पत्र में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका भाषा के प्रयोग की होती है। प्रश्न-पत्र तैयार करते समय उपयुक्त शब्दावली, मानक भाषा तथा भाषा में कम से कम अस्पष्टता का प्रयोग होना चाहिये जिससे कि छात्रों को सवालों को समझने एवं उतर देने में परेशानी न हो। इसके अलावा प्रश्न-पत्र विशलेषण करते समय यह भी महत्वपूर्ण होता है कि प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देशन में स्पष्टता कितनी है, निर्देशन में अस्पष्टता छात्रों में भ्रमक की स्थिति पैदा कर सकता है। अगर प्रश्न-पत्र में प्रश्न क्रमबद्ध तरीके तैयार किए गए है तो निर्देशन प्रश्न पत्र के प्रारम्भ में दिये जाने उचित होते है। अगर प्रश्न पत्र का भिन्न-भिन्न खंडो में विभक्त किया जाता तो खंडो के आधार पर निर्देशन दिया जाना चाहिए।

6. **प्रश्नों का कठिनाई स्तर**—प्रश्न पत्र के विशलेषण के आधार का एक चरण प्रश्नों का कठिनाई स्तर भी है। कठिनाई का स्तर तात्पर्य हैं कि प्रश्नों में क्षमता कि वह उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले छात्रों के बीच अंतर कर सके। प्रोफेसरल अनिल (2014) ने अपने शोध पत्र में म.प्र. माध्यामिक शिक्षा बोर्ड के गणिता परीक्षा-पत्र का मूल्यांकन करते समय पाया कि सन् 2006, 2007, एवं 2010 के पूछे गए प्रश्नों के स्तरों में कोई ज्यादा अंतर नही पाया गया और साथ ही साथ प्रश्नों में असपष्टता पाई गई, इसी तरह श्रीकांत 2007 ने 4 विभिन्न बोर्ड के सामाजिक विज्ञान के विश्लेषण में पाया। पंजाब, मिजोरम, कसोटका, मनिपुर के अधिकतर प्रशनों में असष्पटता है एवं प्रश्नों के परेशानी स्तर बहुत ही निम्न है एवं अधिकतर प्रश्न ज्ञान वर्ग से लिये गए है इसका तात्पर्य है प्रश्नों में विभिन्नता के साथ-साथ यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्नों में कठिनाई स्तर को बनाये रखना आवश्यक है एवं प्रश्नों को जितना हो सकें स्पष्ट रूप से (ब्लूम वर्गीकरण में उपयोग होने वाले क्रियात्मक शब्द का उचित प्रयोग) किया जाए।

7. **प्रश्नो के प्रकार**—प्रश्न दो प्रकार के होते है-वस्तुनिष्ठ एवं व्यक्तिनिष्ठ-वस्तुनिष्ठ प्रश्न वह होते है जहां छात्र उसे संक्षिप्त शब्दों में उसको

जबाव दें यह एक शब्द से लेकर एक लाइन के हो सकते है कभी कभी प्रश्नों के साथ कहे उतर भी दिये जाते है एवं सही उतर का चुनाव छात्र को करना पड़ता है वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनेक प्रकार से लाभदायक होते है जैसे—इसमें जाचंकर्ता को केवल सही और गलत को नम्बर देने होते है एवं जांचकर्ता का दृष्टिकोण का प्रभाव उतर जांचने में नही पड़ता है इसके अलावा अधिक से अधिक प्रश्न पत्र में सम्मति किए जा सकते है और विषय वस्तु को अधिक से अधिक व्यापक तौर पर जांचा जा सकता है इसके विपरीत व्यक्ति निष्ठ में प्रश्नों के संख्या कम होती है जांचकर्ता का अपना एक दृष्टिकोण होता है एवं व्यापक ढंग से समिम्ति नही किया जा सकता है, प्रोफ, अनिल 2014 एवं श्रीकांत 2007 ने अपने शोध पत्र में लिख है कि जब विश्लेषण किया तब पाया अधिकतर बोर्ड में वस्तुष्ठि प्रश्नों को प्रश्न पत्र में रखा जाता एवं उसका अनुपात भी प्रश्न पत्र में ज्यादा ह पर उनको संरचना भाषा एवं उतर सप्लाई छात्रों में भेद नही कर पाते है। इसलिए यह अनिवार्य है कि प्रश्न पत्र में दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल होने चाहिये एवं उनकी भाषा एवं संरचना पर अधिक जोर देना चाहिये।

NOTES

8. अंकन योजना किसी भी परीखा में अंकों का महत्वपूर्ण स्थान होता है अंक इस बात को दर्शाता है कि सवाल का भार कितना है साथ-साथ यह भ निश्चित करता है कि उस प्रश्न को हल करने के लिए शब्दों में लिखा जा सकता है अंक हमें यह भी बताता है कि किस अध्ययन/विषय वस्तु को प्रश्न-पत्र में कितना महत्ता है यह अत्यन्त आवश्यक है जानना के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के अंक हमेशा कम अंकित होते है एवं व्यक्ति निष्ठ प्रश्नों के अंक हमेशा अधिक अंकित किये जाते है। व्यक्तिनिष्ठ प्रश्नों के लिए अंकन योजना शिक्षक के लिए दिशा-निर्देशन का काम करती है क्योंकि एक उत्तर में किस भाग में कितने अंक देने है अगर यह अंक योजना में पूर्व से ही न तय किये जाएं तो अंतर-परीक्षक एंव आंतर परीक्षक विरोधाभास देखा जा सकता है इसलिए व्यक्तिनिष्ठ प्रश्नों के लिए यह अति अनिवार्य है कि अंकन योजना तैयार किया जाए। प्रो. अनिल (2014) एवं प्रो. श्रीकांत (2007) में अपने शोध में पाया कि उत्तर पुस्तिका जांच करते समय बोर्ड में अंकन योजना पर शिक्षक ध्यान नहीं देते एंव प्रश्न-पत्र भी अंकन योजना के अंतर्गत तैयार नहीं किये जाते। शिक्षक का एक महत्वपूर्ण कार्य यह कि शिक्षण-अधिगम के साथ-साथ वह छात्रों का परीक्षण भ करें इस परीक्षण की सूरत तथा उदेशय

अलग-अलग हो सकते है परन्तु एक सत्य है कि उस प्रश्न अनेक निर्माण अवसर निर्माण करने होते है, अधिकतर समय वह व्यक्तिनिष्ठ ही प्रश्न पत्र तैयार करता है ऐसे में यह अत्याधिक जरुरी है कि वह ऊपर दी गई बिन्दुओं को ध्यान में रखकर परीक्षा पत्र का निर्माण करें।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

1. शिक्षक वृत्ति विकास की अवधारणा स्पष्ट करते हुए अधिगम के उद्देश्य समझाइए।
2. इन्टरेनेअ के माध्यम से ज्ञान में वृद्धि कैसे की जा सकती है ?
3. संगोष्वी एवं सम्मेलन में शिक्ष्ज्ञक की सहभागिता का वर्णन कीजिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न—

1. ऑन-लाईन सहभागिता से आपका क्या अभिप्राय है ?
2. क्रियात्मक अनुसंधान से आप क्या समझते है ?

# 20 नैदानिक परीक्षण

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- अवधारणा
- विभिन्न प्रकार
- बुद्धिमाप परीक्षा
- अनुवृत्तिशापक प्रश्नावलियाँ
- कार्य सम्पादन परक
- रोर्शाक पद्धति
- आयुजनित परीक्षण
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य**— इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- अवधारणा
- विभिन्न प्रकार
- बुद्धिमाप परीक्षा
- अनुवृत्तिज्ञापक प्रश्नाबलियाँ
- कार्य सम्पादन परक
- रोर्शाक पद्धति आयुजनित परीक्षण

NOTES

## प्राक्कथन

व्यक्ति में किसी प्रकार की असामान्यता, अयोग्यता, अक्षमता, व्यतिक्रम या व्याधि के स्वरूप की ठीक पहचान अर्थात् निदान (डायग्नासिस) **नैदानिक परीक्षा** (Diagnostic Test) कहलती है। यह मनोशरीरिक अव्यवस्थाओं की ज्ञात लक्षणावली के आधार पर करने के लिए विज्ञों द्वारा सुस्थिर की गई जाँच की विशेष प्रणाली है।

नैदानिक परीक्षाओं की अब हजारों तरह की प्रश्नावलियाँ व पद्धतियाँ चल पड़ी है जिनमें व्यक्ति के मनोजगत् की सूक्ष्मतल विकृति की पहचान प्रायोगिक धरातल पर कर ली जाती है। ये परीक्षाएँ व्यक्तिगत रूप में भी होती हैं और समूहगत भी। आजकल समूह परीक्षाएँ (ग्रूप टेस्ट्स), शिक्षण संस्थाओं के द्वारा तथा सैनिक विभाग और कार्यालयीय कर्मचारियों की मदद से काफी मात्रा में संपन्न की जा रही हैं।

## अवधारणा

रोगादि की प्रारंभिक पहचान में और व्यक्ति की विशिष्ट कठिनाई या गलती करने के उसके बद्धमूल ढर्रे की सही पकड़ में ऐसी परीक्षाओं से बड़ी सहायता मिलती है। मनोविज्ञान में इनका निर्धारण सामान्य शिक्षा, व्यक्तित्व मूल्यांकन अथवा मनोरोग की विशेषावस्थाओं की दृष्टि से किया गया है। शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में इनसे छात्र की किसी विषय अथवा पाठ संबंधी खास कमजोरी ढूँढ़ निकाली जाती है और इसी के सहारे तदर्थ एक औपचारिक धरातल भी तैयार किया जाता है। पूर्ण निदान और भी अनेक संबंद्ध तथ्यों पर आधृता होता है, किन्तु ये परिक्षाएँ नैदानिक उपलब्धि में अच्छे खासे हथियार का काम करती हैं। कोई सधा सधाया ढंग, आले द्वारा हृदय-गति जाँचने की तरह, इनमें नहीं होता कि व्यक्ति अपने से कुछ भी न करे। इन जाँचों में व्यक्ति परीक्षण द्वारा उपस्थित की गई समस्या के प्रति अपनी निजी प्रतिक्रिया, चाहे वह आत्माभिव्यक्त की शैली में हो या वैकल्पिक उत्तरों के चुनाव के रूप में, व्यक्त करता है। यही प्रतिक्रिया नैदानिक मूल्यांकन के लिए सामग्री प्रस्तुत करती है। उमंगों, अभिरूचियों और विशिष्ट कार्यक्षमताओं की प्रकृति आँकनेवाली कुछ सुनिश्चित परीक्षाएँ भी इनमें योग देती हैं।

## विभिन्न प्रकार

NOTES

सामान्य पर्यवेक्षण (आबजर्वेशंस) की निष्पत्तियाँ इन परिक्षाओं की कोटि में नहीं आतीं, बशर्ते वे पर्यवेक्षण प्रयोगशाला के कड़े वैज्ञानिक प्रतिबंधों में न संपन्न हुए हों। हाँ, कुछ उन्मुक्त कार्यकलापों के वैज्ञानिक निरीक्षण में नैदानिक परीक्षा के सूत्र मिल जाते हैं।

नैदानिक परीक्षाओं के स्वरूप प्रमुख्यत: तीन हैं—

- प्रश्नोत्तरपरक,
- 'प्रक्षेपित' विचार की स्वभाव-मीमांसा-परक, तथा
- कार्य-संपादन-परक

किसी स्थिति में कैसी परीक्षा उपयुक्त होगी, इसपर प्राय: सामान्य स्वीकृत मत नहीं, यद्यपि इनकी उपादेयता सर्वमान्य है।

## प्रश्नोत्तरपरक परिक्षण

प्रश्नोत्तरपरक परीक्षओं में या तो परीक्षात्मक कसौटी पर कैसे कुछ मानक प्रश्न पूछे जाते हैं अथवा 'परिक्षार्थी' को निश्चित उत्तरों में से चुनना अथवा प्रतिक्रिया व्यक्त करना पड़ता है।

## बुद्धिमाप परिक्षा

'मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं के जनक' फ्रांस के मनोविद बिने ने अपनी प्रसिद्ध बुद्धिमान परीक्षा आयु के आधार पर तैयार किए गए मानक प्रश्नों द्वारा मानसिक आयु की खोज की। वास्तविक उम्र में उसमें भाग देकर बुद्धिलब्धि के अंक (IQ = इंटेलिजेंस कोशेंट) की प्राप्ति की जाती है। प्रश्नावालियाँ 2-3 साल की उम्र से 14-15 तक प्रति वर्ष की भिन्न-भिन्न हैं। प्रत्येक में प्राय: पाँच प्रश्न चुने जाते हैं। अधिक मेधावी लड़के की मानसिक उम्र उसकी वास्तविक आयु से अधिक होती है जब कि एक बोदे लड़के की कम बुद्धिलब्धि निकालने की निम्नलिखित रीति है (मान लिया कि लड़के की मा.आ. 12 तथा वा.आ. 10 वर्ष की है)

यहाँ 100 से गुणित करने का आशय दशमलव की दिक्कत से बचना है। 100 बुद्धिलब्धि वाले सामान्य होते हैं जिनकी मा.आ. तथा वा.आ. दोनों बराबर होती है।

NOTES

इससे नीचे जानेवाले अंकों के अनुसार जड़बुद्धि मूढ़, बोदा एवं इससे ऊपर के अंकों के अनुसार मेधावी अतिमेधावी, प्रजावान आदि का निर्धारण होता है। 1905 से 1911 तक बिने से साइमन के यहयोग ये प्रश्नावलियों के अनेक संशोधन और 1916 में स्टेंफोर्ड युनिवर्सिटी में टर्मन ने अपना प्रसिद्ध संशोधन प्रस्तुत किया।

**प्रश्नों के कुछ नमूने**

खिलौनों (यथा बिल्ली, कुत्ता) या तकिया आदि की पहचान (2 वर्ष)। लड़की तथा कोयले में कौन सी समानता है?

(8 वर्ष)। किसी साधारण वक्तव्य में निरर्थक शब्द की पहचान (11 वर्ष) इत्यादि।

**प्रैस्सी की 'X-O' परिक्षा**

प्रस्तुत किए गए शब्दवर्ग में से किसी शब्द को काट देने या वृत्त बनाकर घेर देने की क्रिया के कारण इनका नाम पड़ा है। व्यक्ति की संवेगात्मक भावनाओं का बोध शब्दविशेष के प्रति उसकी व्यक्त अभिरूचि के आधार पर किया जाता है। शब्दवर्गों के उदाहरण—

1. भोजन भद्द काला नंगा चूसना परीक्षार्थ चयन किए व्यक्ति को इन शब्दों में से सबसे कम अप्रिय लगने वाले को एक छोटे से वृत्त द्वारा घेर देना होना।

2. एक मुख्य शब्द (यथा, 'लड़की') के आगे प्रस्तुत किए गए कुछ शब्दों में से, जो उसकी राय में उससे सबसे अधिक संबंद्ध होगा, ढूंढ़ निकालना होगा।

   लड़की-स्वास्थ्य, देहयष्टि ऐब, कोमल, चढ़ाव।

3. अन्य अनेक प्रस्तुत शब्दवर्गों में से हर एक से अवांछित शब्दों को काट देना होगा। ऐसा एक शब्दवर्ग है—

   भिक्षा, कसम, धूम्रपान, छेड़खानी, थूकना।

इसी प्रकार के अन्य शब्दवर्ग हैं।

बहुत सी ऐसी प्रश्नावलियाँ हैं जिनके द्‌वारा व्यक्ति की अनुवृत्ति (ऐटीच्यूड) का पता चलता है। 'हाँ' या 'नहीं' में उनका उत्तर होता है। आजकल पत्रिकाओं में इस तरह की असंख्य प्रश्नावलियाँ प्रचलित हैं जो प्रायः प्रामाणित नहीं होतीं। अनुवृत्ति की पहचान के लिए ऐसे चुनाव संबंधी प्रश्न अथवा दो प्रकार के विचारों में से स्वरूवि के अनुकूल किसी एक को पसंद करने की समस्या आदि प्रारम्भ में थर्स्टन और लिकर्ट ने प्रस्तुत की थी। गार्डन ऐलपोर्ट की 'व्यक्तित्व' के मूल्यात्मक आदर्शों की परीक्षा के सवाल भी इसके अंतर्गत आ सकते हैं।

**कार्यसंपादनपरक (पर्फामेंस टेस्ट)**

इस ढंग की परीक्षाओं में एक समस्यामूलक या प्रयत्नसाध्य कार्य व्यक्ति की जाँच के लिए दिया जाता है। छोटे बच्चों को किसी आदमी की पूर्ण शक्ल एक निश्चित समय में बना देने का कार्य देना, किसी व्यूहमय पहेली को सुलझाने के लिए पहना, छात्र से कुछ पढ़ने के लिए कहकर उसकी शब्दोच्चारण संबंधी कठिनाइयों, वाक्यविन्यास एवं विरामचिन्हों के विषय में उसकी यही पहचान आदि तथ्यों का मूल्यांकन करना, किसी चीज को खोज निकालने के लिए कहना अथवा दुर्गम स्थान पर रखी गई किसी वस्तु को लाने के कार्य में व्यक्ति के प्रयत्नों की शैली, तात्कालिक सूझबूझ तत्परता आदि की परख करना इत्यादि कार्यसंपादनपरक परीक्षाएँ है। इसमें पोर्टियस की व्यूह पहेलियाँ (3 से 14 वर्ष तक के लड़कों की भिन्न अवस्थाओं के लिए भिन्न-भिन्न, थर्स्टन की विविध जाँच प्रणालियाँ, ड्यूरल की पठन-असुविधा-विश्लेषण (एनैलिसिस ऑव द रीडिंग डिफिकल्टीज) आदि अधिक प्रसिद्ध हैं।

कारीगर, कलाकार, बुद्धिजीवी, संगीतज्ञ आदि की विशिष्ट क्षमताओं (ऐप्टीच्यूड्स) की जाँच के लिए जो कुछ निर्धारित कार्य-संपादन-परीक्षाएँ हैं वे व्यक्ति की विभागीय अयोग्यता जाँचने में भी मददगार होती हैं

**'प्रक्षेपित' विचार-विश्लेषण-परक ('प्रोजेक्टिव' टेकनीक)**

प्रस्तुत किए गए, किंचित् असामान्य, (स्टिम्युलस) के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया ही, जो प्रायः रचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक प्रकृति की होती है, इन परीक्षाओं का विषय बनती है। इनके द्वारा व्यक्ति की कोई एक विशेष मनस्थिति अथवा विभागीय शाक्ति नहीं, बल्की संपूर्ण व्यक्तित्व ही उत्तरदाता होता है। प्रायः ये उत्तेजक सामान्य

NOTES

वस्तु नहीं होते, लेकिन कृत्रिम रचनात्मक प्रस्तुत हुआ करती है। व्यक्तित्व लक्षणों (पर्सनैलिटी ट्रेट्स) की परीक्षाओं को नैदानिक परीक्षाओं में लिया जाए या नहीं, इस पर विवाद भी है। परीक्षण इस अंकप्राप्ति (स्कोरिंग) के आधार पर अपनी धारण नहीं बनाता बल्कि व्यक्त उत्तरों की व्याख्या करता है। इन उत्तरों का कोई निश्चित मापदंड नहीं होता। इनके सहारे पूरे व्यक्तियों की कुछ खास खामियों को खोजने में सहायक मिलती है क्योंकि व्यक्ति के उन्हीं कुछ विचारों का प्रक्षेपण (प्रोजेक्शन) बाहर की ओर प्रस्तुत वस्तुओं के द्वारा हो जाता हैं।

**रोर्शाक पद्धति**

अविष्कारक स्विस मनोविद् हर्मान रोर्शाक हैं (1921)। रोशनाई के विभिन्न प्रकार के धब्बोंवाले दस कार्ड इसके उपकरण है। व्यक्ति इन्हें देखकर किसी जानवर, मानवाकृति अथवा प्राकृतिक वस्तु से इनका साम्य बताता है। कार्डों में पाँच काले, दो काले–लाल–संयुक्त और शेष तीन रंगीन होते हैं। ध्यान रखने की बातें ये होती हैं कि व्यक्ति किसी आकार की कल्पना पूरे को देखकर करता है अथवा अंश रूप में; काल्पनिक साम्यवाली वस्तु का कोई गुण या क्रिया बताता है या नहीं; साम्यस्थिर करने वाली वस्तु मनुष्य, पशु, प्राकृतिक उपादान आदि में से कौन सा तत्व है, आदि। रंगो के मेल अथवा शुद्ध रंग कार्ड व्यक्ति की न्यूनाधिक या आनुपातिक संवेगात्मकता (इमोशनैलिटी) दर्शाती है।

**विषयवस्तु के विशिष्ट बोध की परीक्षा (थीमेटिक एपर्सेप्शन टेस्ट TAT)**

रोर्शाक पद्धति से मिलती जुलती है। पहले की व्याख्या रूपात्मक (फार्मल) होती है जबकि इसकी विषयवस्तु (कंटेंट) संबंधी। इसकी प्रस्तुति एच.ए. मरे के माध्यम से हुई (1938)। इसमें चित्रों के आधार पर उसकी संभाव्य अंत: कथा बताने के लिए व्यक्मि को प्रेरित किया जाता हैं। उदा.— चित्र में एक स्त्री शायद किसी पीड़ा के कारण मुँह को हाथों से ढँके दर्वाजे से टिककर खड़ी हैं। व्याख्याकार अपने अंतर्निहित वास्तकविक व्यक्तित्व आधार पर विविध व्याख्याएँ करता है, जैसे— पेट या सिर दर्द, मतली, मृत्युशोक, यौन समागम की अतृप्ति आदि। व्याख्याओं द्वारा व्यक्ति का उद्देश्य, उसकी प्रवृत्ति, अनुभूति, आवश्यकता, प्रेरणा आदि का पता चलता है।

युंग ने शब्दसाहचर्य की परिक्षा चलाई जो काफी अपनाई गई, विशेषत: फ्रॉयडीय मनोचिकित्सा के मुक्त साहचर्य (फ्री एसोसिएशन) क्षेत्र में। 100 मानक शब्दों को रखकर एक एक के लिए जल्दी ही कोई ऐसा शब्द पूछा जाता है जो उसे तुरन्त प्रेरित करता हो। उदा.— 'योग्यता' के लिए तत्काल दिया गया सहचारी शब्द 'सौंदर्य', 'बलवान्' अथवा ऐसा ही और कुछ। युग के कथनानुसार चेतन धरातल पर एकाएक मिल जानेवाले इन शब्दों का सूत्रसंचालन गहरे अचेतन से होता है।

NOTES

टेंडलर (1930) ने आधे वाक्यों की अपनी तरीके से पूर्त्ति करने की परीक्षा प्रस्तुत की जिसमें व्यक्ति के मानसिक बौद्धिक गठन तथा दृष्टिकोण की थाह मिलती है।

**सन्दर्भ ग्रंथ**

1. इंसाइक्लोपीडिया ऑव सायकालॉजी (फिलासाफिकल लायब्रेरी, न्यूयार्क) के निबंध 'इटेलिजेंस टेस्ट', 'प्रोजेक्टिव टेकनीक' एवं रोर्शाक मेथड़;

2. साईकालाजी दि फंडामेंटल्स ऑव ह्यूमन एडजस्टमेंट (डॉ० नार्मेन मुन) प्रका. हूटन मिफ्लिन ऐंड कं., न्यूयार्क;

3. फांउडेशंस ऑव साइकालोजी (बोरिंग, लैंगफेल्ड प्रभृति) प्रका. एशिया पब्लि. हाउस।

4. ईसाइक्ला. ऑव एजुकेशनल रिसर्च में मैक्स वट का लेख 'डायग्नासिस' (मैकमिलंस);

5. फंडामेंटल कंसेप्ट्स इन क्लिनिकल सायकालोजी (शैफर: मैक्ग्रा हिल्स)।

आयुर्विज्ञान में मानव शरीर का स्वास्थ्य और उपचार मुख्यत: देखा जाता है। इसके लिए शरीर के अनेक परीक्षण किये जाते हैं। इन्हें **चिकित्सकीय परीक्षण** (Medical test) कहा जाता है। ये अनेक प्रकार के होते हैं:

- नाक और गले के सबसे ऊपरी भाग के लिए नेजोस्कोपी,
- स्वरयंत्र यानी लैरिंग्स के लिए डायरेक्ट लैरिंगोस्कोपी,
- सांस की नली के लिए ब्रोंकोस्कोपी,

NOTES

- छाती के मध्य में दिल, धमनियों आदि की जाँच के लिए मीडियास्टिनोस्कोप,
- खाने की नली के ऊपरी भाग की जाँच के लिए इसोफेगोस्कोपी,
- आमाशय के निचले हिस्से को देखने के लिए गेस्ट्रोडियोडिनोस्कोपी
- पेंक्रियास और पूरे बाइल सिस्टम को देखने के लिए एआरपीपी स्कोप का उपयोग किया जाता है।
- प्रोक्टोस्कोप रेक्टम् के लिए, सिग्मोयडोस्कोप
- बड़ी आंत के आखिरी सिरे की जाँच के लिए तथा
- कोलोनोस्कोप कोलोन की जाँच के लिए की जाती है।

इनके अलावा भी अनेक अन्य परीक्षण किये जाते हैं। इनमें रक्त और मूत्र परीक्षण, एक्सरे ईसीजी, कॉलेस्ट्रॉल के लिए लिपिड प्रोफाइल, ग्लूकोज स्तर परीक्षण, ईसीजी, सोनोग्राफी आदि आते हैं। अधिक आयु होने पर परीक्षण कराने पर भविष्य में स्वस्थ रह सकते हैं। जीवन शैली के कारण होने वाले रोगों की रोकथाम में मददगार होते हैं। इस बारे में सभी को पता होना चाहिए किस आयु में कौन–से परीक्षण कराएं, ताकि गंभीर रोगों के होने की आशंका खत्म की जा सके।

## आयु जनित परीक्षण

### 30 वर्ष

रक्त और मूत्र परीक्षण, चेस्ट एक्सरे तथा ईसीजी। कॉलेस्ट्रॉल के लिए लिपिड प्रोफाइल लेवल परीक्षण, ईसीजी, सोनोग्राफी।

- **कारण:** ये परीक्षण तनाव जनित रोगों जैसे रक्तचाप तथा मधुमेह की स्टीक सूचना देने में सक्षम होते हैं।
- **लाभ:** सोनोग्रफी, पोलिसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम की सूचना देगी, जिससे वजन में बढ़ोतरी मासिक में अनियमितता का समय पर इलाज हो सकता है। फेफड़ों के कैंसर, टीबी तथा एम्फीसिमा एक्सरे से शीघ्र पकड़ में आता है।

NOTES

### 35 वर्ष

30 वर्ष की आयु में कराए गए समस्त परीक्षण। इनके अलावा

- महिलाओं के लिए: पैप स्मीयर, मैमोग्राफी, रक्त परीक्षण, रक्तचाप।

**लाभः** थायरॉइड परीक्षण, थायरॉइड के डिसऑर्डर हाइपोथाराइडिज्म और हायपर थायरॉइडिज्म का पता करने में सहायता करता है। पैप स्मीयर सर्वोइकल कैंसर को प्रारम्भिक स्तर में ही बता कर सचेत कर देता है।

### 40 वर्ष

35 वर्ष की आयु में कराए जाने वाले समस्त परीक्षण और आंखों की जाँच।

- महिलाओं के लिए: पैप स्मीयर, पेट की सोनोग्राफी, मैमोग्राम।
- **कारणः** इस आयु में लोग कोलेस्ट्रॉल, रक्तचान तथा मधुमेह के प्रति बेहद संवेदनशील हो जाते हैं।
- **लाभः** दृष्टि कम होने के कारण सिरदर्द, थकान और अन्य कठिनाईयाँ हो सकती हैं। महिलाओं के लिए रजोनिवृत्ति के निकट होने के कारण सोनोग्राफी कराना ठीक रहता है, इससे एब्डोमन के समस्त अंग लिवर, तिल्ली, किडनी, पैंक्रियाज की भी स्क्रीनिंग हो जाती है।

### 45 वर्ष

रक्त, मूत्र, छाती एक्सरे, ईसीजी, लिपिड प्रोफाइल, रक्त शूगर, सोनोग्राफी, कार्डियक स्ट्रेस परिक्षण।

- महिलाओं के लिए: बोन डेसिटोमीट्री तथा मैमोग्राम।
- **कारणः** इस आयु में ह्वदय रोग होने की आशंका बढ़ जाती है।
- **लाभः** टू डी इको ह्वदय के फंक्शन की जानकारी देता है। रजोविवृत्ति पूर्व की इस स्थिति में महिलाओं के ऑस्टियोपोरोसिस होने का खतरा बढ़ जाता है। ये इसकी रोकथाम में सहायता करते हैं।

### 50 वर्ष

रक्त, मूत्र, ईसीजी, लिपिड प्रोफाइल, रक्त शर्करा, सोनोग्राफी, कार्डियक स्ट्रेस परीक्षण।

NOTES

- महिलाओं के लिए: गर्भाशय की सोनोग्राफी और ओवर स्ट्रेस परीक्षण।
- **कारण:** ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाती है, ह्वदय रोग होने की आशंका बढ़ती जाती है।
- **लाभ:** समय से परीक्षण कराने पर कैंसर की शुरूआती अवस्था में पहचान होने पर इलाज संभव है। कार्डियक स्ट्रेक परीक्षण कोरोनरी आर्टरी डिजीज की उपस्थिति तथा होने की संभावना बता देता है।

**55 वर्ष**

**प्रोस्टेट स्पेसिफिक एंटीजन परीक्षण**

- **कारण:** पीएसए एक तरफ का रक्त की जाँच है, तो प्रोस्टेट कैंसर की पहचान बताता है। यदि रक्त में इसकी मात्रा ज्यादा होती है, तो बायोप्सी करानी चाहिए।
- **लाभ:** समय से जाँच पर कैंसर को बढ़ने से रोका जा सकता है और प्रभावी इलाज संभव है।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—**

1. नैदनिक परीक्षण की अवधारणा स्पष्ट कीजिए तथा इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।
2. अनुवृत्तिसायक प्रश्नावलियों का विवेचन कीजिए।

**लघु उत्तरीय प्रश्न—**

1. वृद्धि परीक्षा से आप क्या समझते हैं?
2. रोर्शाक पद्धति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. आयुजनित परीक्षण से क्या अभिप्राय हैं?

# 21 वैयक्तिक अध्ययन एवं शिक्षक प्रोफाइल

NOTES

**अध्याय में सम्मिलित विषय सामग्री**

- प्राक्कथन
- वैयक्तिक अध्ययन विधि क्या हैं?
- वैयक्तिक अध्ययन की परिभाषाएँ
- वैयक्तिक अध्ययन के प्रकार
- वैयक्तिक अध्ययन की पक्रिया
- वैयक्तिक अध्ययन का महत्व
- वैयक्तिक अध्ययन के गुण
- व्यावसायिक विकास क्रियाएँ
- समुदाय की भागीदारी सम्मान
- कलाकृतियाँ
- परीक्षापयोगी प्रश्न

**उद्देश्य—** इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेगें:—

- वैयक्तिक अध्ययन विधि क्या है?
- वैयक्तिक अध्ययन की परिभाषाएँ
- वैयक्तिक अध्ययन के प्रकार
- वैयक्तिक अध्ययन की प्रक्रिया
- वैयक्तिक अध्ययन का महत्व
- वैयक्तिक अध्ययन के गुण
- समुदाय की भागीदारी सम्मान
- कलाकृतियाँ

## प्राक्कथन

वैयक्तिक अध्ययन या एकल अध्ययन पद्धति किसी व्यक्ति संस्था अथवा समुदाय के सर्वागीण अध्ययन की एक विशेष विधि है। वास्तविकता यह है कि संचार शोध अथवा सामाजिक अनुसंधान के अंतर्गत केवल सांख्यिकीय और परिणामत्मक प्रविधियों से ही अध्ययन करना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि अनेक तथ्य ऐसे होते है जिन्हें समझने के लिए गुणात्मक विधि द्वारा अध्ययन नितांत आवश्यक हो जाता है। संचार शोध में वैयक्तिक अध्ययन तब किए जाते है। जब शोध कर्ता को किसी घटना को समझने या उसकी वयाख्या करने में किया जाता है।

'वैयक्तिक अध्ययन का केंन्द्र सामान्यत: कोई व्यक्ति अथवा छोटा समूह होता है। वैयक्तिक अध्ययन में अध्ययन किए जाने वाले परिवर्तनीय तत्वों या घटनाओं की पहचान करने का अवसर मिलता है। वैयक्तिक अध्ययन में दस्तावेज, ऐतिहासिक कलाकृतियाँ, व्यवस्थित साक्षात्कार, सीधे प्रेक्षण और यहाँ तक कि पारम्परिक सर्वेक्षणों को भी शामिल किया जाता है।

समाज शास्त्र में वैयक्तिक अध्ययन का अनुप्रयोग सर्वप्रथम **हरबर्ट स्पेन्सर** ने किया था किन्तु व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप में इसका प्रयोग फ्रांस में परिवारों के आय-व्यय के अध्ययन के लिए **चार्ल्स लीप्ले** ने किया। **हिली विलियम** द्वारा बाल अपराधियों का अध्ययन करने के क्षेत्र में यह पद्धति उपयोगी सिद्ध हुई।

## वैयक्तिक अध्ययन विधि क्या है? What is case study method?

वैयक्तिक अध्ययन का अर्थ कई बार किसी व्यक्ति के निजी जीवन में अध्ययन से लगाया जाता है, जो कि उचित नहीं है। यह किसी भी सामाजिक इकाई: चाहे वह व्यक्ति हो या परिवार, समिति, संस्था, समूह आदि का विस्तृत एवं गहन अध्ययन है। इस प्रविधि का प्रयोग मनोचिकित्सा, समाज कार्य तथा अनुसंधान में किसी समस्या अथवा इकाई के सम्बन्ध में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त के लिए किया जाता है।

### विद्वानों ने वैयक्तिक अध्ययन की परिभाषाएँ निम्नवत् है—

**ओडम तथा जोचर के अनुसार**— वैयक्तिक अध्ययन एक ऐसी प्रविधि है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्तिगत कारक, चाहे वह एक संस्था हो, या एक व्यक्ति या समूह के जीवन की एक घटना मात्र हो, का विश्लेषण उस समूह की किसी भी अन्य इकाई के संदर्भ में किया जाता है।

**पी.वी.यंग**— वैयक्तिक अध्ययन किसी एक सामाजिक इकाई, चाहे वह व्यक्ति हो या परिवार, संस्था, सांस्कृतिक समूह अथवा समुदाय, के जीवन के अन्वेषण एवं विवेचन करने की पद्धति को कहते है।

**गुडे व हॉट**— वैयक्तिक अध्ययन सामाजिक तथ्यों को संगठित करने का वह तरीका है जिससे अध्ययन किए जाने वाले विषय के एकात्मक स्वभाव का संरक्षण हो सके। थोड़े से भिन्न रूप में यह एक पद्धति हैं जिसमें किसी सामाजिक इकाई को एक समग्र के रूप में देखा जाता है।

**बीसेन्ज तथा बीसेन्ज**— वैयक्तिक अध्ययन गुणात्मक विश्लेषण का एक विशेष स्वरूप है जिसके अंतर्गत किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा संस्था का अत्याधिक सावधानी पूर्वक और पूर्ण अवलोकन किया जाता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि 'वैयक्तिक अध्ययन पद्धति' के अंतर्गत किसी एक सामाजिक इकाई से संबंधित समस्त पक्षों का व्यापक, सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है। **एफ.एच.गिडिंग्स** के अनुसार, वैयक्तिक अध्ययन में अध्ययन की एक ईकाई एक व्यक्ति या उसके जीवन की एक घटना, एक राष्ट्र अथवा इतिहास का एक युग भी हो सकता है।

## वैयक्तिक अध्ययन के प्रकार (Types of case study)

- व्यक्ति का वैयक्तिक अध्ययन।
- समूह अथवा समुदाय वैयक्तिक अध्ययन।

### वैयक्तिक अध्ययन की कार्यप्रणाली (प्रक्रिया) (Procedure of case study)

वैयक्तिक अध्ययन की कार्यप्रणाली हो हम निम्नलिखित चरणों द्वारा स्पष्ट कर सकते है—

1. **समस्या के पक्षों का निर्धारण (Determination of the aspects of problem)**— वैयक्तिक अध्ययन के लिए सर्वप्रथम अध्ययन की इकाई या समस्या की प्रकृति का समुचित स्पष्टीकरण करना, इकाईयों का निर्धारण करना तथा अध्ययन क्षेत्र से पूर्णतः अवगत होना आवश्यक है। इस स्तर पर अध्ययनकर्ता को समस्या के विभिन्न पक्षों से संबंधित निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है—

NOTES

**समस्या का चुनाव**— वैयक्तिक अध्ययन के लिए समस्या का चयन नितांत जरूरी है, क्योंकि चुनी गयी समस्या के आधार पर ही कोई अध्ययन हो सकता है। जैसे बाल-अपराध, वैकल्पिक मीडिया, नागरिक पत्रकारिता आदि।

**इकाईयों का निर्धारण**— समस्या के चयन के उपरांत के इकाई का चयन बहुत जरूरी है। जैसे समस्या वैकल्पिक मीडिया है तो उसमें कौन सा माध्यम प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक आदि।

**इकाईयों की सख्यां का निर्धारण**— वैयक्तिक अध्ययन के लिए यह निर्धारण करना भी आवश्यक होता है कि अध्ययन की जाने वाली इकाईयों की संख्या क्या होगी। यह संख्या उपलब्ध साधनों और समय के अनुसार निर्धारण की जानी चाहिए।

**अध्ययन के क्षेत्र का निर्धारण**— अनुसंधान कर्ता द्वारा उस क्षेत्र का निर्धारण जरूरी है जहाँ अध्ययन करना है।

**विश्लेषण का क्षेत्र**— समस्या के विभिन्न पक्षों की विवेचना के लिए विश्लेषण क्षेत्र का वर्णन नितांत जरूरी है।

2. **घटनाओं का काल-क्रम**— समस्या की विवेचना के बाद विभिन्न घटनाओं के घटित होने के क्रम को ज्ञात किया जाता है। यह भी ज्ञात किया जाता है कि इस दौरान क्या-क्या परिवर्तन घटित हुए। घटनाओं के उतार चढ़ाव द्वारा भविष्य में होने वाले बदलावों को समझा जाता है।

3. **निर्धारण कारक या तत्व (Determinats)**— वैयक्तिक अध्ययन में उन कारकों का भी अध्ययन किया जाता है जो किसी घटना के घटित होने के उत्तरदायी होते है—

**प्रमुख कारक**— ये वे कारक है जो किसी घटना के घटित होने के लिए मूल रूप से उत्तरदायी है। जैसे व्यक्ति को अपराधी बनाने के लिए साथियों का योगदान या गरीबी।

**सहायक कारक**— ये वे कारक है जो प्रमुख कारकों की सहायता करते हैं। जैसे व्यक्ति को अपराधी बनाने में गरीबी के अतिरिक्त पुलिस का अत्याचार, माता-पिता का उपेक्षा पूर्ण व्यवहार एवं मानसिक तनाव आदि सहायक कारक है।

4. **विश्लेषण एवं निष्कर्ष**— यह वैयक्तिक अध्ययन का अंतिम चरण है जिसके अंतर्गत समस्त संकलित तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाते है।

## वैयक्तिक अध्ययन में तथ्य संकलन की प्रविधियाँ (Tools & Techniques of Data Collection in Case Study)

वैयक्तिक अध्ययन प्रविधि अन्य विधियों की भांति मात्र आंकड़े संकलन का एक उपकरण अथवा साधन बल्कि यह एक ऐसा तरीका है जिसमें इकाई का गहन अध्ययन किया जा सके। प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़े उपलब्ध करने पड़ते है ताकि इकाई के व्यवहार को ठीक से समझा जा सके।

**प्राथमिक सूचनाएँ संकलन की प्रविधियाँ**— प्राथमिक सूचनाएँ संकलन करने के मुख्य स्रोत एवं प्रविधियाँ निम्न है—

(i) साक्षात्कार (Interview)

(ii) अनुसूची (Schedule)

(iii) निरीक्षण (Observation)

**द्वितीय सूचनाएँ संकलन की प्रविधियाँ**— द्वितीयक सूचना संकलन करने की सबसे मुख्य प्रविधियाँ तथा उपकरण निम्नलिखित है—

(i) डायरियाँ तथा निजी पत्र

(ii) ज़ीवन इतिहास

## वैयक्तिक अध्ययन का महत्व (Importance of Case Study)

सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं के अत्याधिक सूक्ष्म और गहन अध्ययन में वैयक्तिक अध्ययन अत्याधिक व्यावहारिक तथा उपयोगी सिद्ध हुआ है। मनोचिकित्सक का मत है अधिकांश बीमारियाँ मन जनित होती है अतः इनका वैयक्तिक अध्ययन के द्वारा इलाज किया जा सकता हैं। **कूले (C.H. Cooley)** ने इस पद्धति को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'वैयक्तिक अध्ययन हमारे बोध ज्ञान को विकसित करती है, और जीवन के बारे में एक अंतदृष्टि प्रदान करती है।' कूले के इस कथन के संदर्भ में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के प्रमुखगुणों द्वारा उपयोगिता को निम्नांकित रूप में समझा जा सकता है—

NOTES

(i) **इकाई का गहन अध्ययन**— इसमें इकाईयों का गहन अध्ययन किया जा सकता है। समाज शास्त्री बर्गेस (Burgess) ने वैयक्तिक अध्ययन को सामाजिक सूक्ष्म दर्शन यंत्र कहा है।

(ii) **वैध प्राक्कल्पनाओं का निर्माण**— कई उपयोगी एवं वैध उपकल्पनाओं के निर्माण में वैयक्तिक अध्ययन सहायक होती है।

(iii) **अध्ययन प्रपत्रों के निर्माण में सहायक**— प्रत्येक संचार अथवा सामाजिक अनुसंधान कर्ता को वैयक्तिक अध्ययन के प्रयोग से अपने अध्ययन प्रपत्रों में सुधार का समुचित अवसर प्राप्त होता है।

(iv) **वर्गीकृत प्रतिचयन में सहायक**— वैयक्तिक अध्ययन पद्धति वर्गीकृत प्रतिचयन में अत्यंत यहायक पद्धति है।

(v) **विरोध इकाईयों का ज्ञान**— सामाजिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान में केवल विषय से संबंधित इकाईयों का अध्ययन ही पर्याप्त नहीं होता बल्कि जो इकाईयाँ विरोध या निरर्थक प्रतीत होती है, उनके द्वारा कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को ज्ञात किया जा सकता है।

(vi) **अनुसंधन कर्ता के ज्ञान का विस्तार**— अध्ययन कर्ता जब अध्ययन की जाने वाली इकाई के निकट संपर्क में आता है तो उसे अध्ययन के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण की एक स्वयं ही अंतदृष्टि प्राप्त हो जाती है। विषय के प्रति अध्ययनकर्ता की यह रूचि तथा ज्ञान बहुत बड़ी सीमा तक अध्ययन की सफलता में सहायक होते है।

(vii) **मनोवृत्तियों के अध्ययन में सहायक**— मनोवृत्तियों के संबंधित गुणात्मक विशेषताओं का अध्ययन करने में वैयक्तिक पद्धति सबसे उपयोगी एवं कारगर है।

(viii) **दीर्घ प्रेक्रियाओं का ज्ञान**— वैयक्तिक अध्ययन एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा अध्ययनकर्ता अध्ययन इकाई के अतीत, वर्तमान और भविष्य को समझकर तथा उनका समन्वय करके यथार्थ निष्कर्ष देने में सफल हो सकता है।

(xi) **प्रारम्भिक अध्ययन में सहायक**— किसी भी बड़े अनुसंधान को आरम्भ करने के लिए जरूरी होता है कि प्रारम्भिक स्तर पर प्राप्त कर ली जाये। ऐसा करने से समय के निर्धारण निदर्शन की प्राप्ति तथा

उपकरणों में सहायता मिलती है।

(x) **मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में सहायक**— मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में वैयक्तिक अध्ययन ज्यादा उपयोगी सिद्ध होता है।

NOTES

## वैयक्तिक अध्ययन की विशेषतायें (Characteristics of Case Study)

1. अध्ययन की विशेष इकाई का अध्ययन।
2. गुणात्मक अध्ययन।
3. गहन अध्ययन।
4. कारकों का अध्ययन।
5. अनेक स्रोतो एवं प्रविधियों का प्रयोग।

### अध्ययन की सीमायें या दोष (Limitations or Demerits of Case Study)

- अत्याधिक सीमित अध्ययन।
- दोष पूर्ण प्रलेखों पर निर्भरता।
- पक्षपात की संमस्या।
- प्रतिचयन (निदर्शन) का अभाव।
- परीक्षण संबंधी कठिनाइयाँ।

### वैयक्तिक अध्ययन की उपयोगिता या गुण (Utility or Merits of Case Study)

- गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन।
- इकाई से संबंधित पूर्ण ज्ञान।
- विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग।
- प्रारम्भिक अन्वेषणों में उपयोगी।
- व्यक्तिगत अनुभव में वृद्धि।
- दीर्घकालीन घटनाओं तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन।
- विकास संबंधि अध्ययनों में सहायक।
- व्यक्तित्वों का अध्ययन।

## वैयक्तिक पद्धति (अध्ययन) तथा सांख्यिकीय पद्धति (Case Study & Statistical Method)

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति सामान्यत: गुणात्मक अध्ययनों एवं सांख्यिकीय पद्धतिपरिमणात्मक (गणनात्मक) पद्धतियों में अधिक उपयोगी है फिर भी दोनों परस्पर संबंधित है तथा पूरक पद्धतियाँ है। संक्षेपत: वैयक्तिक अध्ययन पद्धति तथा सांख्यिकीय पद्धति में निम्नलिखित अंतर है—

| अंतर का बिन्दु | वैयक्तिक अध्ययन | सांख्यिकीय पद्धति |
|---|---|---|
| अध्ययन की प्रकृति | गुणात्मक/वर्णनात्मक | परिणामत्मक/विवेचनात्मक |
| अध्ययन का क्षेत्र | सीमित | विस्तृत |
| इकाईयों का संख्या | सीमित | समग्र या विशाल समूह |
| इकाईयों का चयन | बिना प्रतिचयन के सीमित एवं दोषपूर्णसामान्यीकरण | सामान्यीकरण संभव |
| निश्चितता एवं परिशुद्धता | कम निश्चितता<br>कम परिशुद्धता<br>कम विश्वसनीयत<br>कम स्पष्टता | अधिक निश्चिता<br>अधिक परिशुद्धता<br>अधिक विश्वसनीयता<br>अधिक स्पष्टता |

उपर्युक्त में अंतर बिन्दु की स्पष्टत: समझ एक वस्तुनिष्ठ शोध को प्रदर्शित करता है। वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के सयुंक्तता से एक प्रभावगामी शोध की सत्सता को बढ़ा देता है।

### एक व्यावसायिक पोर्टफोलियो में क्या शमिल करना

एक पेशेवर पोर्टफोलियो अपनी शैक्षिक कैरियर में एक महत्वपूर्ण कारक है। यह एक शिक्षक के रूप में अपनी शाक्तियों तथा अनुभवों को प्रदर्शिद करता है। अपने शिक्षक कैरियर के दौरान, आप अपने पेशेवर पोर्टफोलियो में शामिल करने के लिए और अधिक सामग्री इकट्ठा करेगा। एक पेशेवर पोर्टवर पोर्टफोलियो न केवल वर्तमान शिक्षकों के लिए नए शिक्षक उम्मीदारों के लिए जरूरी हो, लेकिन यह भी आवश्यक है। यह अपने शिक्षक प्रयासों का मूल्यांकन उपकरण के रूप में प्रशासन द्वारा इस्तेमाल किया जा सकता।

### पृष्ठभूमि की जानकारी

पृष्ठभूमि की जानकारी अपने शिक्षण कैरियर के कंकाल तत्व सम्मिलित हैं। यह आपके फिर से शुरू, अपने शैक्षिक लक्ष्यों और दर्शन, और पिछले शिक्षण संदर्भों की

वर्णन शामिल हैं। आपका फिर से शुरू हो सकता है और पॉलिश एक शिक्षक के रूप में एक कैरियर प्राप्त करने हेतु अपने उद्देश्य को प्रतिबिंबित करना चाहिए। शैक्षिक लक्ष्यों और दर्शन एक प्रशिक्षक के रूप में अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों की एक रूपरेखा होना चाहिए। इतना ही नहीं इस दस्तावेज मदद नियोक्ताओं अपनी प्राथमिकताएँ का मूल्यांकन करता है, लेकिन यह भी शिक्षण के लिए अपने उद्देश्य की याद दिलाता है। आप शिक्षा के उद्देश्य, छात्र की भूमिका, और कक्षा एवं समुदाय में शिक्षक की भूमिका को संबोधित किया जाना चाहिए।

**व्यावसायिक विकास क्रियाएँ**

एक शिक्षक के रूप में अपने क्रेडेंशियल पद के लिए अपनी उपयुक्तता का एक नियोक्ता के मूल्यांकन में बहुत महत्वपूर्ण हैं। दस्तावेज इस क्षेत्र में सम्मिलित करने के लिए आनकी शिक्षा, कर रहे हैं लाइसेंस, प्रमाणपत्र, काम इतिहास, प्रस्तुतियों शिक्षण और भाग लिया कार्यशालाएँ। आप चिंता है कि आप अपने पोर्टफोलियो के इस क्षेत्र में कमी कर रहे हैं, एक संकेत है कि अधिक प्रयास अपने शिक्षण योग्यता को विकसित करने में खर्च करने की जरूरत के रूप में यह ले लो।

**समुदाय की भागीदारी सम्मान**

एक शिक्षक अपने समुदाय में एक महत्वपूर्ण आंकड़ा है। जब भावी शिक्षकों को काम पर रखने नियोक्ता सामुदायिक भागीदारी के लिए लग रही है। ऐसे संगठनों अथवा स्वयं सेवक के प्रयासों में पदों के रूप में, अपने समुदाय सेवा इतिहास शामिल करें।

हाल ही में सम्मान, छात्रवृत्ति अथवा पुरस्कारों सहित द्वारा एक उम्मीदवार के रूप में अपने गौरव चिह्नित करें। स्कूलों उनके शिक्षकों की उत्कृष्टता के बारे में बात करने के लिए गर्व है। अकादमिक पुरस्कार एक शिक्षक के रूप में अपने उत्कृष्ट क्षमता के लक्षण हैं।

**कलाकृतियों**

कलाकृतियों अपने शिक्षक अनुभव के रूप में ठोस उदाहरण सेवा करते हैं। इन पाठ योजनाओं, विद्यार्थी काम करते हैं और माता-पिता न्यूजलेटर का उदाहरण सम्मिलित हैं। कलाकृतियों के साथ साथ प्रत्येक दस्तावेज के विस्तृत व्याख्या की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, यह बजाएं कि आपके संरचित सबक योजना है, जबकि छात्रों का ध्यान बनाए रखने के लिए यह संभव विषयों की एक किस्म को कवर करने के लिए किया। अथवा यह बताएँ कि आपके माता-पिता न्यूजलेटर

NOTES

कक्षा की गतिविधियों और बेहतर शिक्षक अभिभावक संबंधों के बारे में सूचित माता-पिता रखा।

## परीक्षापयोगी प्रश्न

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

1. वैयक्तिक अध्ययन की विधि से आप क्या समझतें है? इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. वैयक्तिक अध्ययन की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।
3. व्यावसायिक पोर्टफोलियों में क्या शामिल करना चाहिए? वर्णन कीजिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न—

1. वैयक्तिक अध्ययन के प्रकार लिखिए।
2. वैयक्तिक अध्ययन की विशेषताओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।
3. समुदाय की भागीदारी एवं सम्मान स्पष्ट कीजिए।
4. व्यसवसयिक विकास की क्रियाएँ स्पष्ट कीजिए।

●●

**MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY**

Raja Bhoj Marg (Kolar Road), Bhopal - 462016,

Phone : 91-755-2424660, Fax : 91-755-2424640

Website :www.bhojvirtualuniversity.com